CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

33

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

४३
स

श्री स्वामी ...नन्द सरस्वती पुस्तकालय, ...

श्री स्वामी ...नन्द सरस्वती पुस्तकालय, ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामुनि आदिकवि श्रीवाल्मीकिप्रणीत

श्रीरामायण महाकाव्य

[पञ्चम भाग]

(५)

किष्किन्धा-काण्ड

(हिन्दी अनुवाद और उपसंहार सहित)

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अध्यक्ष, स्वाध्याय-मण्डल,

पारडी (जि० सूरत)

प्रथम वार

संवत् २००९ शके १८७४, सन १९५२

मूल्य ४) रु०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुद्रक और प्रकाशक

वसंत श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.

भारत-मुद्रणालय, आनन्दाश्रम, किल्ला-पारडी (जि. सूरत)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री वाल्मीकि रामायणकी

किष्किन्धा कांड की

विषयसूची

सर्ग	विषय	पृष्ठ
१	सुग्रीव रामलक्ष्मणको देखकर चिन्ताक्रान्त होता है	१
२	हनुमान रामलक्ष्मणसे मिलने जाता है	२०
३	हनुमानकी योग्यता	२४
४	रामलक्ष्मण सुग्रीवके पास जाते हैं	३०
५	राम और सुग्रीवकी मित्रता होती है	३५
६	सीताके आभूषण सुग्रीव रामको दिखाता है	३९
७	रामकी मित्रतासे सुग्रीवको आनन्द	४३
८	रामने सुग्रीवसे अपने मनकी कही	४७
९	सुग्रीव बालिके साथ युद्धके लिये जाता है और उसे वहाँ मरा जानकर राज्यपर बैठता है	५३
१०	लौटनेपर बालि सुग्रीवपर क्रोध करता है, बालि और सुग्रीवकी शत्रुता	५७
११	सुग्रीव बालिको आह्वान देता है, बालि सुग्रीवका पराभव करता है	६२
१२	पहचानके लिये सुग्रीवके गलेमें माला डालकर उसे राम पुनः युद्धके लिये भेजता है	७५
१३	सुग्रीव पुनः बालिको आह्वान देता है	८२

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्ग	विषय
१४	राम वृक्षकी ओटमें रहता है और सुग्रीव युद्धकी तैयारीसे खडा रहता है
१५	ताराने बालिको युद्धमें न जानेकी सलाह दी
१६	बालि युद्धमें जाता है और रामके बाणसे मरता है
१७	बालि जख्मी होकर गिरजानेके बाद छिपकर मारनेके लिये रामकी निन्दा करता है
१८	राम उसे यथोचित उत्तर देता है
१९-२३	ताराका शोक
२४	बन्धु वधके कारण सुग्रीवका शोक
२५	राम उसकी सान्त्वना करता है
२६	सुग्रीवका राज्याभिषेक तथा अंगदका यौवराज्याभिषेक
२७	वर्षामें माल्यवान पर्वतपर रामका निवास
२८	सीताविरहके कारण रामका शोक
२९	वानरवीरोंको एकत्रित करनेकी सुग्रीवकी आज्ञा
३०	रामका शोक और सुग्रीवका सन्देश
३१	लक्ष्मण सुग्रीवके पास जाता है
३२	लक्ष्मणके आगमनकी सूचना हनुमान् बालिको देता है
३३	सुग्रीव ताराको लक्ष्मणके पास भेजता है
३४	लक्ष्मण सुग्रीवसे प्रतिज्ञा पालनके लिये कहता है
३५	तारा लक्ष्मणका क्रोध शान्त करती है
३६	सुग्रीव लक्ष्मणकी भेंट
३७	वानरवीर एकत्रित हुए
३८	सुग्रीव रामके पास जाता है
३९	वानरसेना निरीक्षण
४०	सीताके शोधकी योजना
४१-४५	वानरोंको सीताकी खोजके लिये भेजा जाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्ग	विषय	पृष्ठ
३	बालिका आत्मवृत्त	२७९
७–५२	वानर सीताकी खोज करते हैं	२८२
३	समुद्र दर्शन	३०३
४	वानरोंकी उद्विग्नता	३०८
५	अंगदका सुग्रीवविषयक संशय	३११
६	वानर और संपातीकी भेंट	३१४
७	वानर और संपातीका भाषण	३१८
८	संपातीने सीताका पता बतलाया	३२०
९	लंकामें जानेकी तैयारी	३२५
०–६३	संपातीका वृत्त-कथन	३२९
४-६७	हनुमान्की उडान	३४०

समालोचना

सुग्रीवकी सावधानी, परायोंपर अविश्वास	३६१
कामवश हुआ तरुण	३६३
लक्ष्मणकी अक्षम्य भूल	३६५
हनुमान्की विद्वत्ता	३६६
रामकी दीनता	३६८
समदुःखी वीरोंकी मित्रता	३६९
हस्तान्दोलनसे सख्य	३७१
सीताकी निशानी	३७३
स्वकीयोंसे विरोध और परायोंसे स्नेह	३८२
राजकीय सत्य	३८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

बालिका वध निर्दोष है	३
रामके जीवनका एकमात्र प्रसङ्ग	३
ताराका शोक	३
सुग्रीवका शोक	३
बालिका और्ध्वदेहिक संस्कार	३
सुग्रीवका राज्याभिषेक	३
सुग्रीव, रुमा और तारा	
सूज्ञ हनुमान्	३
मोहक स्त्री	३
अंगदका सुग्रीवविषयक मत	४
बैलकी उपमा	४
सुवर्णका रंग	
वानरवेष	
किष्किन्धा काण्डके सूक्तियां	४
,, ,, की उपमा	४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किष्किन्धाकाण्ड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमहामुनि-वाल्मीकि-प्रणीतं

श्री रा मा य ण म्।

किष्किन्धा—काण्डम्।

प्रथमः सर्गः।

स तां पुष्करिणीं गत्वा पद्मोत्पलझषाकुलाम्।
रामः सौमित्रिसहितो विललापाकुलेन्द्रियः १
तत्र दृष्ट्वैव तां हर्षादिन्द्रियाणि चकाशिरे।
स कामवशमापन्नः सौमित्रिमिदमब्रवीत् २
सौमित्रे शोभते पम्पा वैदूर्यविमलोदका।
फुल्लपद्मोत्पलवती शोभिता विविधैर्द्रुमैः ३
सौमित्रे पश्य पम्पायाः काननं शुभदर्शनम्।
यत्र राजन्ति शैला वा द्रुमाः सशिखरा इव ४
मां तु शोकाभिसंतप्तमाधयः पीडयन्ति वै।
भरतस्य च दुःखेन वैदेह्या हरणेन च ५

लक्ष्मण समेत राम कमल, फकुला और मछलियोंसे भरी हुई उस पम्पा नामवाली पुष्करिणीके पास जाकर व्याकुलित चित्त हो विलाप करने लगे ॥ १॥ उस पुष्करिणीको देखकर ही मन रामकी इन्द्रियां हर्षसे बाहर हो गईं और कामके वशमें प्राप्त हुए वे राम लक्ष्मणसे यह बोले ॥ २ ॥ हे लक्ष्मण ! वैदूर्यके समान निर्मल जालवाली, फूले हुए कमल और फकुलोंवाली तथा अनेक वृक्षोंसे शोभित हुई पम्पा सुशोभित है ॥ ३ ॥ हे लक्ष्मण ! सुन्दर है देखना जिसका ऐसे पम्पाके वनको देखो जहां पर पर्वत समान वृक्ष मानों शिखर समेत हैं ऐसी शोभा देते हैं ॥ ४ ॥ भरतके दुःख तथा सीताके हरनेसे शोकसंतप्त हुए मुझे वसन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोकार्तस्यापि मे पम्पा शोभते चित्रकानना ।
व्यवकीर्णा बहुविधैः पुष्पैः शीतोदका शिवा ६
नलिनैरपि संछन्ना ह्यत्यर्थशुभदर्शना ।
सर्पव्यालानुचरिता मृगद्विजसमाकुला ७
अधिकं प्रविभात्येतन्नीलपीतं तु शाद्वलम् ।
द्रुमाणां विविधैः पुष्पैः परिस्तोमैरिवार्पितम् ८
पुष्पभारसमृद्धानि शिखराणि समन्ततः ।
लताभिः पुष्पिताग्राभिरुपगूढानि सर्वतः ९
सुखानिलोयं सौमित्रे कालः प्रचुरमन्मथः ।
गन्धवान्सुरभिर्मासो जातपुष्पफलद्रुमः १०
पश्य रूपाणि सौमित्रे वनानां पुष्पशालिनाम् ।
सृजतां पुष्पवर्षाणि वर्षं तोयमुचामिव ११
प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः ।
वायुवेगप्रचालिताः पुष्पैरवकिरन्ति गाम् १२

ऋतु पीडित सा कर रहा है ॥ ५ ॥ चित्र विचित्र वनवाली, अनेक प्रका पुष्पोंसे व्याप्त, शीतल जलवाली, कल्याणकारी पम्पा शोकपीडित मुझ को भली मालूम पडती है ॥ ६ ॥ कमलोंसे ढकी हुई, अत्यन्त शुभ-दर्शनवाली, समस्त सर्पोंसे अनुचरित, हिरण और पक्षियों से समाकुल है ॥ ७ ॥

यह नील, पीत तथा हरित प्रदेश विविध वृक्षों और पुष्पोंसे सघन बहुत ही सुशोभित है ॥ ८ ॥ फूलों के भारसे बढे हुए तथा फूली हुई लताओं से छिपे हुए जिनके शिखर हैं ॥ ९ ॥ हे लक्ष्मण ! सुखदायक पवनवाला और बढ जाता है काम जिसमें ऐसा यह समय है और गन्धवान्, मनोज्ञ तथा उत्पन्न हुए हैं फूल फल जिसमें ऐसा यह मास है ॥ १० ॥ हे लक्ष्मण ! जैसे मेघ जलको छोडे इस प्रकार पुष्प वर्षाको छोडते, फूलोंवाले वनोंके रूपोंको देखो ॥ ११ ॥ अनेक प्रकारके व के वृक्ष वायुवेगसे प्रचालित हो फूलोंसे पत्थरोंकी भूमि ढकते हैं ॥ १२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः ।
कुसुमैः पश्य सौमित्रे क्रीडतीव समन्ततः १३
विक्षिपन्विविधाः शाखा नगानां कुसुमोत्कटाः ।
मारुतश्चलितस्थानैः षट्पदैरनुगीयते १४
मत्तकोकिलसन्नादैर्नर्तयन्निव पादपान् ।
शैलकन्दरनिष्क्रान्तः प्रगीत इव चानिलः १५
तेन विक्षिपतात्यर्थं पवनेन समन्ततः ।
अमी संसक्तशाखाग्रा ग्रथिता इव पादपाः १६
स एव सुखसंस्पर्शो वाति चन्दनशीतलः ।
गन्धमभ्यवहन्पुण्यं श्रमापनयनोऽनिलः १७
अमी पवनविक्षिप्ता विनदन्तीव पादपाः ।
षट्पदैरनुकूजद्भिर्वनेषु मधुगान्धिषु १८
गिरिप्रस्थेषु रम्येषु पुष्पवद्भिर्मनोरमैः ।
संसक्तशिखराः शैला विराजन्ति महाद्रुमैः १९

हे लक्ष्मण! देखो गिर गये, गिर रहे और वृक्षोंपर स्थित फूलोंसे खेलता हुआ सा पवन है ॥ १३ ॥ पवन वृक्षोंकी अधखिले फूलोंवाली अनेक शाखाओंको कंपाता हुआ स्थानसे चलायमान हुए भौरोंसे पीछेसे गाया जा रहा है ॥ १४ ॥

मतवाली कोकिलाओंके शब्दसे वृक्षोंको नचाता हुआ सा और पर्वतकी कन्दराओंसे निकला पवन मानो गानेको उद्यत हुआ है ॥ १५ ॥ अनेक प्रकार प्रेरणा करते हुए उस पवनसे समीपमें लगगई हैं शाखा जिनकी ऐसे ये वृक्ष (मालाके समान) गुथे हुएसे हैं ॥ १६ ॥ सुखदायक है छूना जिसका और चन्दनके समान शीतल, तथा श्रमको दूर करनेवाला यह पवन पुष्पोंकी गन्ध को बहाता हुआ सा चल रहा है ॥ १७ ॥ मधुकी गन्धवाले वनोंमें भौंरा जिनके पीछे शब्द कर रहे हैं ऐसे पवनसे कँप रहे ये वृक्ष मानो शब्द कर रहे हैं ॥१८॥ रमणीक पर्वतोंके पत्थरोंमें मनो-रम, पुष्पवाले, वृक्षोंसे लगे हुए पर्वत शोभा दे रहे हैं ॥१९॥ फूलोंसे

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पसंछन्नशिखरा मारुतोत्क्षेपचञ्चलाः ।
अमी मधुकरोत्तंसाः प्रगीता इव पादपाः २०
सुपुष्पितांस्तु पश्यैतान्कर्णिकारान्समन्ततः ।
हाटकप्रतिसंछन्नान्नरान्पीताम्बरानिव २१
अयं वसन्तः सौमित्रे नानाविहगनादितः ।
सीतया विप्रहीणस्य शोकसंदीपनो मम २२
मां हि शोकसमाक्रान्तं संतापयति मन्मथः ।
हृष्टं प्रवदमानश्च समाह्वयति कोकिलः २३
एष दात्यूहको हृष्टो रम्ये मां वननिर्झरे ।
प्रणदन्मन्मथाविष्टं शोचयिष्यति लक्ष्मण २४
श्रुत्वैतस्य पुरा शब्दमाश्रमस्था मम प्रिया ।
मामाहूय प्रमुदिता परमं प्रत्यनन्दत २५
एवं विचित्राः पतगा नानारावविराविणः ।
वृक्षगुल्मलताः पश्य संपतन्ति समन्ततः २६

ढके हुए हैं शिखर जिनके और पत्रनके चलनेसे चञ्चल हुए और भौंरा ही हैं मस्तक जिनके ऐसे वृक्ष गाए हुएसे हैं ॥ २० ॥

चारों ओरसे फूली हुई कनेरोंको देखो, सुवर्णसे ढके हुए पीतवस्त्रधारी मनुष्योंके समान ॥ २१ ॥ हे लक्ष्मण ! अनेक पक्षियोंसे शब्दायमान यह वसन्त सीता से हीन मुझको शोक बढानेवाला है ॥ २२ ॥ शोकमें डूबे हुए मुझे कामदेव दुःख देता है और प्रसन्न हो कर शब्द करता हुआ यह कोकिल पक्षी मुझे बुलाता सा है ॥ २३ ॥ हे लक्ष्मण ! रमणीक जलके झरनोंमें शब्द करता यह प्रसन्नतायुक्त दात्यूहक नामक पक्षी कामदेवसे पीडित मुझे शोक कराता है ॥ २४ ॥ आश्रम पर स्थित, प्रसन्नतायुक्त, मेरी प्रिया इसके शब्दको पहिले सुनकर मुझे बुलाकर अत्यन्त प्रसन्न हुई थी ॥ २५ देखो, इस प्रकार अनेक तरहके शब्द करते विचित्र पक्षी वृक्ष, गुल्म, लताओं पर जहां तहां फिरते हैं ॥ २६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विमिश्रा विहगाः पुंभिरात्मव्यूहाभिनन्दिताः ।
भृङ्गराजप्रमुदिताः सौमित्रे मधुरस्वराः २७
अस्याः कूले प्रमुदिताः संघशः शकुनास्त्विह ।
दात्यूहरतिविक्रन्दैः पुंस्कोकिलरुतैरपि २८
स्वनन्ति पादपाश्चेमे ममानङ्गप्रदीपकाः ।
अशोकस्तबकाङ्गारः षट्पदस्वननिःस्वनः २९
मां हि पल्लवताम्रार्चिर्वसन्ताग्निः प्रधक्ष्यति ।
न हि तां सूक्ष्मपक्ष्माक्षीं सुकेशीं मृदुभाषिणीम् ३०
अपश्यतो मे सौमित्रे जीवितेऽस्ति प्रयोजनम् ।
अयं हि रुचिरस्तस्याः कालो रुचिरकाननः ३१
कोकिलाकुलसीमान्तो दयिताया ममानघ ।
मन्मथायाससंभूतो वसन्तगुणवर्धितः ३२
अयं मां धक्ष्यति क्षिप्रं शोकाग्निर्न चिरादिव ।
अपश्यतस्तां वनितां पश्यतो रुचिरान्द्रुमान् ३३

अपने झुंडवालोंसे तारीफ की गई भृङ्गराजकी झङ्कारसे प्रसन्न हुई मधुर स्वरवाली और अपने पतियोंसे मिली ये पक्षिणी हैं इन्हें देखो ॥ २७ ॥ इसके किनारे पर प्रसन्न हुए पक्षियोंके झुंड हैं, मेरे कामदेवको बढानेवाले ये वृक्ष दात्यूह पक्षीके शब्द और पुंस्कोकिलोंके शब्दसे स्वयं शब्द कर रहे हैं ॥२८॥ अशोकके गुच्छा हैं अङ्गार जिसके भौंराका शब्द ही है शब्द जिसका और लाल पत्ता ही है ज्वाला जिसकी ऐसा वसन्त रूपी अग्नि मुझे जलाता है ॥ २९ ॥ हे लक्ष्मण ! छोटे बिन्नोंवाली हैं आंखें जिसकी, सुन्दर केशवाली, मीठा बोलनेवाली उस सीताको न देखते हुए मुझे जीनेसे कुछ प्रयोजन नहीं है ॥ ३० ॥

हे पापरहित लक्ष्मण ! सुन्दर वनवाला और कोकिलोंके शब्दसे आकुल हैं चारों सीमा जिसकी ऐसा यह समय उस मेरी प्यारीका प्यारा था ॥ ३१ ॥ कामदेवके बढनेसे उत्पन्न हुआ, वसन्त के गुणोंसे बढाया यह शोक रूपी अग्नि मुझे शीघ्र ही जलाना चाहता है ॥ ३२ ॥ उस प्रियाको नहीं देखते तथा रुचिर वृक्षोंको देखते हुए मेरा यह कामदेव बढ जायगा ॥३३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममायमात्मप्रभवो भूयस्त्वमुपयास्यति ।
अदृश्यमाना वैदेही शोकं वर्धयतीह मे ३४
दृश्यमानो वसन्तश्च स्वेदसंसर्गदूषकः ।
मां हि सा मृगशावाक्षी चिन्ताशोकबलात्कृतम् ३५
संतापयति सौमित्रे क्रूरश्चैत्रवनानिलः ।
अमी मयूराः शोभन्ते प्रनृत्यन्तस्ततस्ततः ३६
स्वैः पक्षैः पवनोद्धूतैर्गवाक्षैः स्फाटिकैरिव ।
शिखिनीभिः परिवृतास्त एते मदमूर्छिताः ३७
मन्मथाभिपरीतस्य मम मन्मथवर्धनाः ।
पश्य लक्ष्मण नृत्यन्तं मयूरमुपनृत्यति ३८
शिखिनी मन्मथार्तैषा भर्तारं गिरिसानुनि ।
तामेव मनसा रामां मयूरोप्यनुधावति ३९
वितत्य रुचिरौ पक्षौ रुतैरुपहसन्निव ।
मयूरस्य वने नूनं रक्षसा न हृता प्रिया ४०

न दीख पडती हुई सीता और स्वेद (पसीना) के संसर्गको दूर करनेवाला दिखाई देता हुआ यह वसन्त मेरे शोकको बढाता है ॥ ३४ ॥

हे लक्ष्मण ! इस समय हिरनके बच्चेके समान नेत्रवाली सीता और क्रूर चैत्र तथा वनका पवन चिन्ता, शोकके वशमें प्राप्त हुए मुझे दुःख देते हैं ॥ ३५॥ स्फटिकके गवाक्ष (झरोखों) के समान पवनसे कपे हुए अपने पंखोंसे इधर उधर नाचते हुए ये मयूर (मोर) शोभा देते हैं ॥ ३६ ॥ मोरनियों से संयुक्त और मदमें मूर्च्छित हुए ये कामदेवसे व्याप्त हुए मेरे कामदेवको बढानेवाले हैं ॥ ३७ ॥ हे लक्ष्मण ! देखो पर्वतोंके शिखरों पर कामदेवसे पीडित हुई यह मोरनी नाचते हुए पतिके पीछे नाचती है ॥ ३८ ॥ मनसे मयूर भी रुचिर पंखोंको फैलाकर आवाजसे हंसता हुआ सा उस प्यारी स्त्रीके पीछे दौडता है ॥ ३९ ॥ निश्चय मयूर की प्रिया राक्षसने नहीं हर ली है, इससे रमणीक वनोंमें स्त्रीके साथ वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मान्नृत्याति रम्येषु वनेषु सह कान्तया ।
मम त्वयं विना वासः पुष्पमासे सुदुःसहः ४१
पश्य लक्ष्मण संरागस्तिर्यग्योनिगतेष्वपि ।
अधुना शिखिनी कामाद्भर्तारमभिवर्तते ४२
ममाप्येवं विशालाक्षी जानकी जातसंभ्रमा ।
मदनेनाभिवर्तेत यदि नापहृता भवेत् ४३
पश्य लक्ष्मण पुष्पाणि निष्फलानि भवन्ति मे ।
पुष्पभारसमृद्धानां वनानां शिशिरात्यये ४४
रुचिराण्यपि पुष्पाणि पादपानामतिश्रिया ।
निष्फलानि महीं यान्ति समं मधुकरोत्करैः ४५
नदन्ति कामं शकुना मुदिताः संङ्घशः कलम् ।
आह्वयन्त इवान्योन्यं कामोन्मादकरा मम ४६
वसन्तो यदि तत्रापि यत्र मे वसति प्रिया ।
नूनं परवशा सीता सापि शोचत्यहं यथा ४७

नाचतीं है ॥ ४० ॥ मेरा बिना स्त्रीके चैत्रमासमें रहना दुःसह है ॥ ४१ ॥

हे लक्ष्मण ! तिर्यग्योनि (पशुपक्षी) आदि में भी रागको देखो जो यह मोरनी कामसे पतिके समीपमें रमती है ॥ ४२ ॥ मुझे भी इस प्रकार विशाल नेत्रवाली शीघ्रतायुक्त सीता कामदेवसे वर्तती यदि वह न हरी जाती ॥ ४३ ॥ हे लक्ष्मण ! देखो फूलोंके भारसे बढे हुए वनोंके फूल वसन्तमें मेरे लिये निष्फल हैं ॥ ४४ ॥ वृक्षोंके अत्यन्त कांतिसे रुचिर भी फूल निष्फल हो भौरोंके झुंडोंके साथ भूमि पर गिरते हैं ॥ ४५ ॥ मेरे कामको बढानेवाले प्रसन्नचित्तपक्षी झुंडके झुंड आपसमें पुकारते हुए से मधुर शब्द करते हैं ॥ ४६ ॥

यदि जहां पर मेरी प्रिया वास करती है वहां पर भी वसन्त होगा तो पराये वशमें प्राप्त हुई सीता मेरे समान सोच करती होगी ॥ ४७ ॥ जहां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नूनं न तु वसन्तस्तं देशं स्पृशति यत्र सा ।
कथं ह्यसितपद्माक्षी वर्तयेत्सा मया विना ४८
अथवा वर्तते तत्र वसन्तो यत्र मे प्रिया ।
किं करिष्यति सुश्रोणी सा तु निर्भर्त्सिता परैः ४९
श्यामा पद्मपलाशाक्षी मृदुभाषा च मे प्रिया ।
नूनं वसन्तमासाद्य परित्यक्ष्यति जीवितम् ५०
दृढं हि हृदये बुद्धिर्मम संपरिवर्तते ।
नालं वर्तयितुं सीता साध्वी मद्विरहं गता ५१
मयि भावो हि वैदेह्यास्तत्त्वतो विनिवेशितः ।
ममापि भावः सीतायां सर्वथा विनिवेशितः ५२
एष पुष्पवहो वायुः सुखस्पर्शो हिमावहः ।
तां विचिन्तयतः कान्तां पावकप्रतिमो मम ५३
सदा सुखमहं मन्ये यं पुरा सह सीतया ।
मारुतः स विना सीतां शोकसंजननो मम ५४

पर सीता है उस देशमें वसन्त निश्चय न होगा तब भी मेरे विना काले कमलके समान नेत्रवाली सीता कैसे जीवेगी ॥ ४८ ॥ अथवा जहांपर मेरी प्रिया है वहां वसन्त मौजूद है तब भी वह क्या करेगी क्योंकि वह तो दूसरोंने रोक ली है ॥ ४९ ॥ युवावस्थाके मध्यभागमें स्थित, कमलके समान नेत्रवाली, पूर्वसे ही कोमल बोलनेवाली सीता वसन्तको पाकर जीवन छोड देगी ॥ ५० ॥ मेरे हृदयमें यह बुद्धि दृढ रूपसे इस समय वर्त रही है कि मेरे वियोगको प्राप्त हुई पतिव्रता सीता जी नहीं सकती ॥ ५१ ॥ सीताका अनुराग मेरे बीचमें एक तत्त्वसे भरा हुआ है और मेरा अनुराग सीतामें हर समय है ॥ ५२ ॥ सीताकी याद करते हुए मुझ को यह फूलोंकी गन्धको बहानेवाला अर्थात् सुगन्ध, सुखस्पर्श वाला अर्थात् मन्द और हिमके समान अर्थात् शीतल वायु अग्निके समान है ॥ ५३ ॥

मैं पहिले सीताके साथ जिसे हमेशा सुखदायक मानता था वही पवन सीताके विना मेरे शोकको बढाता है ॥ ५४ ॥ जो काक पक्षी सीताके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तां विनाथ विहङ्गोसौ पक्षी प्रणादितस्तदा ।
वायसः पादपगतः प्रहृष्टमभिकूजति ५५
एष वै तत्र वैदेह्या विहगः प्रतिहारकः ।
पक्षी मां तु विशालाक्ष्याः समीपमुपनेष्यति ५६
पश्य लक्ष्मण संनादं वने मदविवर्धनम् ।
पुष्पिताग्रेषु वृक्षेषु द्विजानामवकूजताम् ५७
विक्षिप्तां पवनेनैतामसौ तिलकमञ्जरीम् ।
षट्पदः सहसाभ्येति मदोद्धूतामिव प्रियाम् ५८
कामिनामयमत्यन्तमशोकः शोकवर्धनः ।
स्तबकैः पवनोत्क्षिप्तैस्तर्जयन्निव मां स्थितः ५९
अमी लक्ष्मण दृश्यन्ते चूताः कुसुमशालिनः ।
विभ्रमोत्सिक्तमनसः साङ्गरागा नरा इव ६०
सौमित्रे पश्य पम्पायाश्चित्रासु वनराजिषु ।
किंनरा नरशार्दूल विचरन्ति यतस्ततः ६१

वियोगके समय आकाशमें कठिन शब्द करता था वही अब वृक्षपर बैठा आनन्दयुक्त शब्द करता है ॥५५॥ वहां पर वियोग की सूचना देनेवाला यह पक्षी अब मुझे विशालाक्षी सीताके समीप पंहुचावेगा ॥५६॥ हे लक्ष्मण! फूले हैं अग्रभाग जिनके ऐसे वृक्षोंपर शब्द करते पक्षियोंके मद बढानेवाले स्वरको सुनो ॥ ५७ ॥ यह भौंरा मदसे कांपती हुई प्रिया के समान वायुसे कंपती हुई तिलकमंजरीके पास एकदम जाता है ॥ ५८ ॥

कामियों के अत्यन्त शोकको बढानेवाला यह अशोक पवनसे कंपते हुए गुच्छोंसे मुझे डर लगाता हुआ सा स्थित है ॥ ५९ ॥ फूलवाले (बौरवाले) और अङ्गराग समेत ये आम विलाससे गर्वित है मन जिनका अर्थात् रागी नरोंके समान दिखाई पडते हैं ॥ ६० ॥ हे नरश्रेष्ठ लक्ष्मण! देखो पम्पाकी चित्रित वनपाङ्क्तियोंपर किन्नर जहां तहां विचरते हैं ॥६१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इमानि शुभगन्धीनि पश्य लक्ष्मण सर्वशः।
नलिनानि प्रकाशन्ते जले तरुणसूर्यवत् ६२
एषा प्रसन्नसलिला पद्मनीलोत्पलायुता।
हंसकारण्डवाकीर्णा पम्पा सौगन्धिकायुता ६३
जले तरुणसूर्याभैः षट्पदाहतकेसरैः।
पङ्कजैः शोभते पम्पा समन्तादभिसंवृता ६४
चक्रवाकयुता नित्यं चित्रप्रस्थवनान्तरा।
मातङ्गमृगयूथैश्च शोभते सलिलार्थिभिः ६५
पवनाहतवेगाभिरूर्मीभिर्विमलेऽम्भसि।
पङ्कजानि विराजन्ते ताड्यमानानि लक्ष्मण ६६
पद्मपत्रविशालाक्षीं सततं प्रियपङ्कजाम्।
अपश्यतो मे वैदेहीं जीवितं नाभिरोचते ६७
अहो कामस्य वामत्वं यो गतामपि दुर्लभाम्।
स्मारयिष्यति कल्याणीं कल्याणतरवादिनीम् ६८

हे लक्ष्मण! देखो यह शुभगन्धवाले कमल जलमें चारों तरफ दोपहरके सूर्यके समान शोभा देते हैं॥ ६२॥ पवित्र जलवाली कमल और फफुलायुक्त हंस और कारण्डवोंसे व्याप्त सौगन्धिकों (एक प्रकारके कमलों) से युक्त यह पम्पा है॥ ६३॥

तरुण सूर्यके समान, भौरोंसे आहत हैं केसर जिनके ऐसे कमलोंसे चारों ओरसे घिरी हुई पम्पा शोभती है॥ ६४॥ हमेशा चकवा चकवियोंसे शोभित, चित्र विचित्र तीर हैं जलके पाहिनावे जिसके ऐसी पम्पा जलकी इच्छावाले हाथी तथा हरिणोंके झुण्डोंसे शोभती है॥ ६५॥ हे लक्ष्मण! पवनसे उत्पन्न हुए हैं वेग जिनमें ऐसी लहरोंसे ताडना किये गये कमल विमल जलमें शोभा देते हैं॥ ६६॥ पद्मपत्रवत् विशाल नेत्रवाली और सदा कमलोंको प्यार करनेवाली वैदेही को बिना देखे मुझे जीवन अच्छा नहीं लगता॥ ६७॥

अहो! कामकी वामता (उलटापन) देखो जो दूर गई हुई, दुर्लभ, कल्याण बोलने वाली, कल्याणी सीताको स्मरण कराता है॥ ६८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्यो धारयितुं कामो भवेदभ्यागतो मया।
यदि भूयो वसन्तो मां न हन्यात्पुष्पितद्रुमः ६९
यानि स्म रमणीयानि तया सह भवन्ति मे।
तान्येवारमणीयानि जायन्ते मे तया विना ७०
पद्मकोशपलाशानि द्रष्टुं दृष्टिर्हि मन्यते।
सीताया नेत्रकोशाभ्यां सदृशानीति लक्ष्मण ७१
पद्मकेसरसंसृष्टो वृक्षान्तरविनिःसृतः।
निःश्वास इव सीताया वाति वायुर्मनोहरः ७२
सौमित्रे पश्य पम्पाया दक्षिणे गिरिसानुषु।
पुष्पितां कर्णिकारस्य यष्टिं परमशोभिताम् ७३
अधिकं शैलराजोयं धातुभिस्तु विभूषितः।
विचित्रं सृजते रेणुं वायुवेगविघट्टितम् ७४
गिरिप्रस्थास्तु सौमित्रे सर्वतः संप्रपुष्पितैः।
निष्पत्रैः सर्वतो रम्यैः प्रदीप्ता इव किंशुकैः ७५

यदि फुलादिये हैं द्रुम (वृक्ष) जिसने ऐसा वसन्त फिर मुझे न मारे तो आज आया हुआ कामदेव मुझसे धारण किया जा सकता है ॥ ६९ ॥ सीताके साथ जो मुझको रमणीय थे वही उसके विना अरमणीय हैं ॥ ७० ॥ हे लक्ष्मण ! कमलकोशके पत्तोंको देखकर सीताके नेत्रकोशों के समान वे हैं ऐसा दृष्टि मानती है ॥ ७१ ॥ पद्मोंके केसरोंसे मिला और वृक्षोंके बीचसे निकला मनोहर वायु सीताके श्वासके समान चलता है ॥ ७२ ॥

हे लक्ष्मण ! पम्पाके दक्षिण पर्वतके शिखरपर फूली हुई कनेरकी परम सुन्दर यष्टि (डण्ठली) को देखो ॥ ७३ ॥ धातुओंसे विभूषित यह शैलराज वायुके वेगसे विघट्टित हुई विचित्रित रजको अधिक त्यागता है ॥ ७४ ॥ हे लक्ष्मण ! पहाडोंकी चट्टानें तो चारों ओरसे फूले हुए, पत्तेरहित, सब ओरसे रमणीक, ढाकोंसे चमकसी रही हैं ॥ ७५ ॥ पम्पाके तीर पर उपजे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पम्पातीररुहाश्चेमे संसिक्ता मधुगन्धिनः।
मालतीमल्लिकापद्मकरवीराश्च पुष्पिताः ७६
केतक्यः सिंदुवाराश्च वासन्त्यश्च सुपुष्पिताः।
मातुलिङ्गाश्च पूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च सर्वशः ७७
चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला बकुलास्तथा।
चम्पकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ७८
पद्मकाश्चैव शोभन्ते नीलाशोकाश्च पुष्पिताः।
लोध्राश्च गिरिपृष्ठेषु सिंहकेसरपिञ्जराः ७९
अङ्कोलाश्च कुरण्टाश्च चूर्णकाः पारिभद्रकाः।
चूताः पाटलयश्चापि कोविदाराश्च पुष्पिताः ८०
मुचुकुन्दार्जुनाश्चैव दृश्यन्ते गिरिसानुषु।
केतकोद्दालकाश्चैव शिरीषाः शिंशपा धवाः ८१
शाल्मल्यः किंशुकाश्चैव रक्ताः कुरवकास्तथा।
तिनिशा नक्तमालाश्च चन्दनाः स्यन्दनास्तथा ८२
हिन्तालास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ८३

मिले हुए मधुकी गन्धवाले मालती, मल्लिका, फूलेहुए करवीर, केतकी, सिन्धुवार, फूली हुई वासन्ती, गन्धयुक्त माधवी, कुन्दगुल्म, चिरिबिल्व, महुआ, वञ्जुल, बकुल, चम्पक, तिलक, फूले हुए नागवृक्ष, जलकदम्ब, वरण, खजूर, पद्मक, और फूले हुए नीले अशोक शोभा दे रहे हैं। ॥ ७६–७९ ॥

पर्वतके शिखरों पर सिंह के केसर के समान वर्णवाले लोध, अङ्कोल, कुरण्ट, चूर्णक (एक प्रकार की शाल्मली), नींब, आम, पाटल, कचनार, नारङ्गी, अर्जुन दिखाई पडते हैं ॥ ८०–८१ ॥ केतक, उद्दालक, शिरीष, शिंशुप, धव, शाल्मली, ढाक, कुरवक, तितिश, नक्तमाल, चन्दन, स्पन्दन, हिन्ताल, तिलक, और नागवृक्ष फूले हुए हैं ॥ ८२ ॥ हे लक्ष्मण ! फूले हुए और फूली हुई लताओंसे घिरे हुए रुचिरवृक्षोंको यहां पम्पाके समीपमें देखो ॥ ८३ ॥ वायुसे हल गई हैं या टूट गई हैं शाखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पितान्पुष्पिताग्राभिर्लताभिः परिवेष्टितान् ।
द्रुमान्पश्येह सौमित्रे पम्पाया रुचिरान्बहून् ८४
वातविक्षिप्तविटपान्यथासन्नान्द्रुमानिमान् ।
लताः समनुवर्तन्ते मत्ता इव वरस्त्रियः ८५
पादपात्पादपं गच्छञ्छैलाच्छैलं वनाद्वनम् ।
वाति नैकरसास्वादसंमोदित इवानिलः ८६
केचित्पर्याप्तकुसुमाः पादपा मधुगन्धिनः ।
केचिन्मुकुलसंवीताः श्यामवर्णा इवाबभुः ८७
इदं मृष्टमिदं स्वादु प्रफुल्लमिदमित्यपि ।
रागरक्तो मधुकरः कुसुमेष्वेव लीयते ८८
निलीय पुनरुत्पत्य सहसान्यत्र गच्छति ।
मधुलुब्धो मधुकरः पम्पातीरद्रुमेष्वसौ ८९
इयं कुसुमसंघातैरुपस्तीर्णा सुखाकृता ।
स्वयं निपतितैर्भूमिः शयनप्रस्तरैरिव ९०

जिनकी ऐसे, समीपस्थ इन वृक्षोंको लता मदमाती श्रेष्ठ स्त्रियोंके समान लगी हुई हैं ॥ ८४ ॥ वृक्षसे वृक्षको शैलसे शैलको और वन से वनको जाता हुआ अनेक प्रकारके रसोंको चाखनेवाला यह पवन प्रसन्न सा चलता है ॥ ८५ ॥ कोई काफी फूलवाले और मधुकी गन्ध वाले वृक्ष हैं और कोई मुकुल (अधखिले फूलों) से व्याप्त श्याम वर्णके समान शोभा दे रहे हैं ॥ ८६ ॥

यह रम्य है, यह रसवाला है, यह फूला है इस प्रकार रागसें मत्त हुआ भौंरा फूलोंमें छिप जाता है ॥ ८७ ॥ रसका लोभी भौंरा पम्पाके तीरके वृक्षोंमें क्षणमात्र स्थित होकर फिर उडकर एकदम और जगह चला जाता है ॥ ८८ ॥ अपने आप गिरे अर्थात् अति सुकुमार फूलोंसे व्याप्त हुई यह भूमि सोनेके विस्तरके समान सुखावह है ॥ ८९ ॥ हे लक्ष्मण ! पर्वतके शिखरों पर बिखरे हुए अनेक पुष्पोंने पत्थरोंको अनेक प्रकारके यथा पीत रक्त आदि कर दिये हैं ॥ ९० ॥ हे लक्ष्मण ! वसन्तमें फूलोंका उत्पन्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविधा विविधैः पुष्पैस्तैरेव नगसानुषु।
विस्तीर्णाः पीतरक्ताभाः सौमित्रे प्रस्तराः कृताः ९१
हिमान्ते पश्य सौमित्रे वृक्षाणां पुष्पसंभवम्।
पुष्पमासे हि तरवः संघर्षादिव पुष्पिताः ९२
आह्वयन्त इवान्योन्यं नगाः षट्पदनादिताः।
कुसुमोत्तंसविटपाः शोभन्ते बहु लक्ष्मण ९३
एष कारण्डवः पक्षी विगाह्य सलिलं शुभम्।
रमते कान्तया सार्धं काममुद्दीपयन्निव ९४
मन्दाकिन्यास्तु यदिदं रूपमेतन्मनोहरम्।
स्थाने जगति विख्याता गुणास्तस्या मनोरमाः ९५
यदि दृश्येत सा साध्वी यदि चेह वसेमहि।
स्पृहयेयं न शक्राय नायोध्यायै रघूत्तम ९६
न ह्येवं रमणीयेषु शाद्वलेषु तया सह।
रमतो मे भवेच्चिन्ता न स्पृहान्येषु वा भवेत् ९७

होना देखो ॥ ९१ ॥ वसन्तमें संघर्षसे फूले वृक्ष भौरोंसे शब्दायमान हुए आपसमें बुलाते से हैं। हे लक्ष्मण! फूलोंसे ऊंची हो गई हैं शाखा जिनकी ऐसे वृक्ष शोभा देते हैं ॥ ९२ ॥

यह कारण्डव पक्षी शुभ जलको विलोडन कर अर्थात् उसमें तैरकर मेरे कामको बढाता हुआ स्त्रीके साथ रमण करता है ॥ ९३ ॥ जैसा कि इस पम्पाका रूप है वैसा ही मन्दाकिनी का मनोहर रूप है, मनोरम और जगतमें विख्यात उसके गुण युक्त ही हैं ॥ ९४ ॥ हे रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ लक्ष्मण! यदि पतिव्रता सीता दिखाई पड जावे, यदि यहां हम वास करें तो इन्द्र पदवी तथा अयोध्याके लिये कभी भी इच्छा न करेंगे ॥ ९५ ॥ इस प्रकार रमणीय घासोंमें उस सीताके साथ रमण करते हुए मुझको चिन्ता न होगी, न अन्य (इन्द्रत्वादिकों) में इच्छा होगी ॥९६॥ अनेक प्रकारक फूलोंसे श्रेष्ठ गुच्छोंवाले ये वृक्ष इस वनमें उस सीताके विना मेरे मनको घबराहटमें डालते हैं ॥ ९७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी हि विविधैः पुष्पैस्तरवो विविधच्छदाः।
काननेऽस्मिन्विना कान्तां चिन्तामुत्पादयन्ति मे ९८
पश्य शीतजलां चेमां सौमित्रे पुष्करायुताम्।
चक्रवाकानुचरितां कारण्डवनिषेविताम् ९९
प्लवैः क्रौञ्चैश्च संपूर्णां महामृगनिषेविताम्।
अधिकं शोभते पम्पा विकूजद्भिर्विहंगमैः १००
दीपयन्तीव मे कामं विविधा मुदिता द्विजाः।
श्यामां चन्द्रमुखीं स्मृत्वा प्रियां पद्मनिभेक्षणाम् १०१
पश्य सानुषु चित्रेषु मृगीभिः सहितान्मृगान्।
मां पुनर्मृगशावाक्ष्या वैदेह्या विरहीकृतम्॥
व्यथयन्तीव मे चित्तं संचरन्तस्ततस्ततः १०२
अस्मिन्सानुनि रम्ये हि मत्तद्विजगणाकुले।
पश्येयं यदि तां कान्तां ततः स्वस्ति भवेन्मम १०३
जीवेयं खलु सौमित्रे मया सह सुमध्यमा।
सेवेत यदि वैदेही पम्पायाः पवनं शुभम् १०४

हे लक्ष्मण! शीतल जलवाली, कमलयुक्त, चकवा चकवियोंसे अनुचरित, कारण्डव (जलमुर्गों) से सेवित, प्लव और क्रौन्चोंसे सम्पूर्ण, वराह तथा मृगोंसे सेवित इस पम्पाको देखो ॥९८॥ शब्द करते हुए पक्षियों से पम्पा अधिक शोभायमान है ॥९९॥ श्यामा, चन्द्रमुखी और कमलके समान नेत्रवाली प्रियाका स्मरण करके स्थित हुए मेरे कामको प्रसन्न हुए अनेक तरहके पक्षी बढाते हैं॥१००॥ विचित्र शिखरोंपर हरिणियोंके सहित हरिणोंको देखो और हरिणके बच्चेके समान नेत्रवाली सीतासे रहित मुझे देखो ॥१०१॥ मदयुक्त पक्षियोंसे भरे हुए इस रमणीय शिखर पर जहां तहां घूमते हुए हरिण मेरे चित्तको दुःखी करते हैं ॥१०२॥ यदि उस कान्ताको देखूं तो मेरा कल्याण हो ॥ १०३ ॥

हे लक्ष्मण ! यदि मेरे साथ सीता पम्पाके सुखकारी पवनको सेवे तो मैं जीवूं ॥१०४॥ हे लक्ष्मण ! कमलोंकी सुगन्धिको बहानेवाले, कल्याणकारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्मसौगन्धिकवहं शिवं शोकविनाशनम्।
धन्या लक्ष्मण सेवन्ते पम्पाया वनमारुतम् १०५
श्यामा पद्मपलाशाक्षी प्रिया विरहिता मया।
कथं धारयति प्राणान्विवशा जनकात्मजा १०६
किं नु वक्ष्यामि धर्मज्ञं राजानं सत्यवादिनम्।
जनकं पृष्टसीतं तं कुशलं जनसंसदि १०७
यामामनुगता मन्दं पित्रा प्रस्थापितं वनम्।
सीता धर्मं समास्थाय क्व नु सा वर्तते प्रिया १०८
तया विहीनः कृपणः कथं लक्ष्मण धारये।
या मामनुगता राज्याद्भ्रष्टं विहतचेतसम् १०९
तच्चार्वञ्चितपद्माक्षं सुगन्धि शुभमव्रणम्।
अपश्यतो मुखं तस्याः सीदतीव मतिर्मम ११०
स्मितहास्यान्तरयुतं गुणवन्मधुरं हितम्।
वैदेह्या वाक्यमतुलं कदा श्रोष्यामि लक्ष्मण १११

और शोकका नाश करनेवाले, पम्पाके उपवनपवनको धन्यपुरुष ही सेवते हैं ॥१०५॥ श्यामा, पद्मके पत्तेके समान नेत्रवाली विवश हुई, प्रिया सीता कैसे प्राणोंको धारण करती होगी ? ॥१०६॥ धर्मज्ञ, सत्यवादी राजा जनकसे मनुष्य समाजमें सीताकी कुशल पूछा गया मैं क्या कहूंगा ॥१०७॥ पिता द्वारा वनको भेजे हुए ऐसे मन्दभागी मेरे पीछे सत्पथमें स्थित हो जो सीता चली थी वह मेरी प्रिया कहां है ? ॥ १०८ ॥

हे लक्ष्मण ! उस सीताके विना कृपण मैं कैसे प्राणोंको धारण करूं जो विकल हृदयवाले, राज्यसे हीन मेरे पीछे चली थी ॥ १०९ ॥ श्रेष्ठ चिह्नोंवाली हैं आंखें जिसमें, सुन्दर, सुगन्धयुक्त, शुभ, व्रणरहित ऐसे सीताके मुखको विना देखे मेरा मन दुःखता सा है ॥ ११० ॥ हे लक्ष्मण मन्द मुसकानयुक्त गुणवाला मधुर, और हितकारी सीताका वाक्य कब सुनूंगा ॥ १११ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्य दुःखं वने श्यामा मां मन्मथविकर्शितम् ।
नष्टदुःखेव हृष्टेव साध्वी साध्वभ्यभाषत ११२
किं नु वक्ष्याम्ययोध्यायां कौसल्यां हि नृपात्मज ।
क सा स्नुषेति पृच्छन्तीं कथं चापि मनस्विनीम् ११३
गच्छ लक्ष्मण पश्य त्वं भरतं भ्रातृवत्सलम् ।
न ह्यहं जीवितुं शक्तस्तामृते जनकात्मजाम् ११४
इति रामं महात्मानं विलपन्तमनाथवत् ।
उवाच लक्ष्मणो भ्राता वचनं युक्तमव्ययम् ११५
संस्तम्भ राम भद्रं ते मा शुचः पुरुषोत्तम ।
नेदृशानां मतिर्मन्दा भवत्यकलुषात्मनाम् ११६
स्मृत्वा वियोगजं दुःखं त्यज स्नेहं प्रिये जने ।
अतिस्नेहपरिष्वङ्गाद्वर्तिरार्द्रापि दह्यते ११७
यदि गच्छति पातालं ततोऽभ्यधिकमेव वा ।
सर्वथा रावणस्तात न भविष्यति राघव ११८

श्यामा वह सीता वनमें दुःख पाकर भी कामसे पीडित मुझसे दुःखरहित और प्रसन्नचित्तके समान अच्छे प्रकार बोलती थी ॥ ११२ ॥ हे लक्ष्मण अयोध्यामें जाकर " वह मेरी पुत्रवधू कहां है " यह पूछती हुई अतिमनस्विनी कौसल्यासे क्या कहूंगा ॥ ११३ ॥ हे लक्ष्मण ! तुम जाओ भाइयोंसे प्यार करने वाले भरतको देखो, मैं उस सीताके विना नहीं जी सकता ॥ ११४ ॥

इस प्रकार विलाप करते रामने सागरमें टूटी हुई नावके समान शोकका पार न पाया ॥ ११५ ॥ इस प्रकार अनाथकी तरह विलाप करते महात्मा रामसे भाई लक्ष्मण युक्त वचन बोले॥ ११६ ॥ हे पुरुषोत्तम राम ! तुम्हारा कल्याण हो ! धैर्य धारो, शोक न करो, उज्ज्वल आत्मावालोंकी बुद्धि इस प्रकार मन्द नहीं होती ॥ ११७ ॥ वियोगके दुःखको स्मरण कर प्रियजनोंमें स्नेहको त्यागो, अत्यन्त स्नेह (चिकनाई) के लगनेसे भीगी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवृत्तिर्लभ्यतां तावत्तस्य पापस्य रक्षसः।
ततो हास्यति वा सीतां निधनं वा गमिष्यति ११९
यदि याति दितेर्गर्भं रावणः सह सीतया।
तत्राप्येनं हनिष्यामि न चेद्दास्यति मैथिलीम् १२०
स्वास्थ्यं भद्र भजस्वार्य त्यज्यतां कृपणा मतिः।
अर्थो हि नष्टकार्यार्थैरयत्नैर्नाधिगम्यते १२१
उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम् १२२
उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु।
उत्साहमात्रमाश्रित्य प्रतिलप्स्याम जानकीम् १२३
त्यज्यतां कामवृत्तत्वं शोकं संन्यस्य पृष्ठतः।
महात्मानं कृतात्मानमात्मानं नावबुद्ध्यसे १२४
एवं संबोधितस्तेन शोकोपहतचेतनः।
त्यज्य शोकं च मोहं च रामो धैर्यमुपागमत् १२५

हुई भी बत्ती जलती है ॥ ११८ ॥ हे राम ! यदि रावण पातालमें चला जाये या इससे भी अधिक चला जावे तब भी नहीं बच सकता ॥ ११९ ॥ आदिमें उस पापी राक्षसकी प्रवृत्ति, (वृत्तान्त) प्राप्त करें, तदनन्तर वह सीताको छोडेगा या मृत्युको पावेगा ॥ १२० ॥ यदि सीताको रावण न छोडेगा और सीता सहित अदितिके गर्भमें चला जायगा तब भी तो उसे मार डालेंगे ॥ १२१ ॥

हे आर्य ! कल्याणकारिणी स्वस्थता को सेवो और कृपणमति को त्यागो, नष्ट हो गये हैं कार्यार्थ जिन्होंके ऐसे मनुष्य प्रयोजनको विना यत्नके नहीं प्राप्त कर सकते ॥ १२२ ॥ हे आर्य ! उत्साह ही बलवान है, उत्साहसे अच्छा बल और नहीं है उत्साह समेत मनुष्यको इस लोकमें कुछ दुर्लभ नहीं ॥ १२३ ॥ उत्साहवाले पुरुष कार्योंमें दुःखी नहीं होते, उत्साह मात्रके सहारेसे हम सीताको पावेंगे ॥ १२४ ॥ शोकको पीछे छोड कर काम वृत्तिको त्यागो, आत्मज्ञान युक्त क्या बडे अपने आत्मा को नहीं जानते ? ॥ १२५ ॥ शोकसे व्याकुल हो गई है बुद्धि जिनकी ऐसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोऽभ्यतिक्रामदव्यग्रस्तामचिन्त्यपराक्रमः।
रामः पम्पां सुरुचिरां रम्यां पारिप्लवद्रुमाम् १२६
निरीक्षमाणः सहसा महात्मा सर्वं वनं निर्झरकन्दरं च।
उद्विग्नचेताः सह लक्ष्मणेन विचार्य दुःखोपहतः प्रतस्थे २७
तं मत्तमातङ्गविलासगामी गच्छन्तमव्यग्रमना महात्मा।
स लक्ष्मणो राघवमिष्टचेष्टो ररक्ष धर्मेण बलेन चैव १२८
तावृष्यमूकस्य समीपचारी चरन्ददर्शाद्भुतदर्शनीयौ।
शाखामृगाणामधिपस्तरस्वी वितत्रसे नैव विचेष्टचेष्टम् १२९
स तौ महात्मा गजमन्दगामी शाखामृगस्तत्र चरंश्चरन्तौ।
दृष्ट्वा विषादं परमं जगाम चिन्तापरीतो भयभारभग्नः १३०
तमाश्रमं पुण्यसुखं शरण्यं शदैव साखामृगसेवितान्तम्।

राम को जब लक्ष्मण ने उक्त प्रकारसे चेताया तब शोक और मोहको छोडकर वह धैर्यको प्राप्त हुए ॥१२५॥ अचिन्तनीय हैं पराक्रम जिनका ऐसे राम स्वस्थतायुक्त हुए रुचिर और रमणीक चञ्चल वृक्षोंवाली पम्पासे निकल गये ॥ १२६ ॥

महात्मा, उद्विग्नचित्त वाले, दुःखसे पीडित राम सब वन तथा झरने और कन्दराओंको देखते हुए विचार कर चल दिये ॥१२७॥ मतवाले हाथीके सदृश विलासयुक्त गमन करने वाले, खेदरहित मन वाले, महात्मा लक्ष्मण स्वस्थचित्त हो जाते हुए उन रामकी धर्म और बलसे रक्षा करते जाते थे ॥ १२८ ॥ ऋष्यमूकके समीपमें घूमने वाले, बलवान्, वानरोंके स्वामी विचरते हुए (सुग्रीव) ने अद्भुतदर्शनों वाले उन दोनोंको देखा और देख कर वह डर गया तथा कुछ चेष्टा न की ॥ १२९ ॥ महात्मा, गजके समान मन्द चलने वाला, चिन्तायुक्त, भयके भारसे पीडित वानर (सुग्रीव) वहां पर बहुत काल तक घूमते हुए उन दोनोंको देखकर परम खेदको प्राप्त हुआ ॥१३०॥ महाबलशाली उन राम लक्ष्मणको देखकर डरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रस्ताश्च दृष्ट्वा हरयो विजग्मुर्महौजसौ राघवलक्ष्मणौ तौ १३१

इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥१॥ [१३१]

द्वितीयः सर्गः ।

तौ तु दृष्ट्वा महात्मानौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
वरायुधधरौ वीरौ सुग्रीवः शङ्कितोऽभवत् १
उद्विग्नहृदयः सर्वा दिशः समवलोकयन् ।
न व्यतिष्ठत कस्मिंश्चिद्देशे वानरपुङ्गवः २
नैव चक्रे मनः स्थातुं वीक्षमाणौ महाबलौ ।
कपेः परमभीतस्य चित्तं व्यवससाद ह ३
चिन्तयित्वा स धर्मात्मा विमृश्य गुरुलाघवम् ।
सुग्रीवः परमोद्विग्नः सर्वैस्तैर्वानरैः सह ४
ततः स सचिवेभ्यस्तु सुग्रीवः प्लवगाधिपः ।
शशंस परमोद्विग्नः पश्यंस्तौ रामलक्ष्मणौ ५
एतौ वनमिदं दुर्गं वालिप्रणिहितौ ध्रुवम् ।

हुए वानर पवित्र, सुखयुक्त, शरणके देने वाले और हमेशा वानरोंसे सेवित उस आश्रमको चले गये ॥ १३१ ॥

॥ यहाँ प्रथम सर्ग समाप्त हुआ ॥

महात्मा, वीर, श्रेष्ठ आयुधवाले, राम लक्ष्मणको देखकर सुग्रीव शङ्कित हो गया ॥ १ ॥ भयभीत हो गया है मन जिसका ऐसा सुग्रीव सब दिशाओंको देखता हुआ किसी एक स्थान पर न बैठ सका ॥ २ ॥ महाबली रामलक्ष्मणको देखकर (सुग्रीव का) मन अपने स्थान पर न रहा और अत्यन्त भयभीत सुग्रीव का चित्त दुःखित हो गया ॥ ३ ॥ राजधर्ममें है बुद्धि जिसकी ऐसा सुग्रीव सब मंत्रियोंके साथ चिन्ता कर और गुरुलाघवको विचार कर बड़ा दुःखी हो गया ॥ ४ ॥ तदनन्तर बहुत दुःखी हुए वानरोंके स्वामी सुग्रीवने उन दोनों राम लक्ष्मणको देख मन्त्रियों से कहा ॥ ५ ॥ ये वीर वस्त्रधारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छद्मना चीरवसनौ प्रचरन्ताविहागतौ　　६
ततः सुग्रीवसचिवा दृष्ट्वा परमधन्विनौ।
जग्मुर्गिरितटात्तस्मादन्यच्छिखरमुत्तमम्　　७
ते क्षिप्रमभिगम्याथ यूथपा यूथपर्षभम्।
हरयो वानरश्रेष्ठं परिवार्योपतस्थिरे　　८
एवमेकायनगताः प्लवमाना गिरेर्गिरिम्।
प्रकम्पयन्तो वेगेन गिरीणां शिखराणि च　　९
ततः शाखामृगाः सर्वे प्लवमाना महाबलाः।
बभञ्जुश्च नगांस्तत्र पुष्पितान्दुर्गमाश्रितान्　　१०
आप्लवन्तो हरिवराः सर्वतस्तं महागिरिम्।
मृगमार्जारशार्दूलांस्त्रासयन्तो ययुस्तदा　　११
ततः सुग्रीवसचिवाः पर्वतेन्द्रे समाहिताः।
संगम्य कपिमुख्येन सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः　　१२
ततस्तु भयसंत्रस्तं वालिकिल्बिषशङ्कितम्।
उवाच हनुमान्वाक्यं सुग्रीवं वाक्यकोविदः　　१३

निश्चय ही वालिके भेजे हुए इस दुर्गम वनमें बहानेसे घूमते हुए यहां आये हैं ॥ ६ ॥

तदनन्तर सुग्रीवके मंत्री बडे धनुषधारियोंको देख कर उस पर्वतके तटसे अन्य उत्तम शिखर पर चले गये ॥ ७ ॥ अब यूथपति वानर यूथपोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवके पास पहुंच उसको चारों ओरसे घेर कर बैठ गये ॥ ८ ॥ फिर भी पर्वत से पर्वत पर कूदते और वेगसे पर्वतोंके शिखरोंको कंपाते हुए, इस प्रकार वे एक स्थानपर प्राप्त हो गये ॥ ९ ॥ तदनन्तर कूदते हुए महाबली वानरोंने दुर्गके आश्रित, फूले हुए वृक्ष तोड डाले ॥ १० ॥ हरिण, मार्जार, शार्दूल इनको डराते हुए वे वानर कूदते हुए उस महागिरिपर चले गये ॥ ११ ॥ पर्वतका आश्रय लिये हुए सुग्रीवके मंत्री सुग्रीवसे मिलकर सब हाथ जोडकर स्थित हो गये ॥ १२ ॥

तदनन्तर वाक्य जाननेमें चतुर हनुमान् भयभीत हुए, तथा वालिके पापसे शङ्कित हुए सुग्रीव से वाक्य बोला ॥ १३ ॥ सबोंको वालिकृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संभ्रमस्त्यज्यतामेष सर्वैर्वालिकृते महान् ।
मलयोऽयं गिरिवरो भयं नेहास्ति वालिनः १४
यस्मादुद्विग्नचेतास्त्वं विद्रुतो हरिपुङ्गव ।
तं क्रूरदर्शनं क्रूरं नेह पश्यामि वालिनम् १५
यस्मात्तव भयं सौम्य पूर्वजात्पापकर्मणः ।
स नेह वाली दुष्टात्मा न ते पश्याम्यहं भयम् १६
अहो शाखामृगत्वं ते व्यक्तमेव प्लवंगम ।
लघुचित्ततयात्मानं न स्थापयसि यो मतौ १७
बुद्धिविज्ञानसंपन्न इङ्गितैः सर्वमाचर ।
न ह्यबुद्धिङ्गतो राजा सर्वभूतानि शास्ति हि १८
सुग्रीवस्तु शुभं वाक्यं श्रुत्वा सर्वं हनूमतः ।
ततः शुभतरं वाक्यं हनूमन्तमुवाच ह १९
दीर्घबाहू विशालाक्षौ शरचापासिधारिणौ ।
कस्य न स्याद्भयं दृष्ट्वा ह्येतौ सुरसुतोपमौ २०

बडा संभ्रम त्यागना चाहिये, यह मलय नामक ऋष्यमूकका एक हिस्स पर्वत है, यहां वालीसे कुछ भय नहीं है ॥ १४ ॥ हे वानरोंमें श्रेष्ठ जिससे दुःखित चित्त होकर तुम भागे हो उस क्रूरदृष्टिवाले क्रूर वाली को मैं यहां नहीं देखता ॥ १५ ॥ हे सौम्य ! पाप कर्म करनेवाले जिस बडे भाईसे तुमको भय है वह दुष्टात्मा वाली यहाँ नहीं है और न मैं तुम्हारे लिये भय समझता हूं ॥ १६ ॥ अहो वानर ! शाखामृगत्व तुमने प्रकट ही किया, जो तुम हलका चित्त होनेके कारण आत्माको बुद्धि में नहीं स्थित करते ॥ १७ ॥ बुद्धि और विज्ञानसे युक्त तुम इशारोंसे सब कार्य करो, अबुद्धि वाला राजा सब प्राणियोंका शासन नहीं कर सकता ॥ १८ ॥

सुग्रीव हनुमान्‌के सब शुभवाक्यको सुन कर पीछेसे अत्यन्त शुभवाक्य हनुमान्‌से बोले ॥ १९ ॥ बडी भुजावाले, धनुषबाण और तलवार धारण किये, देवपुत्रोंके समान इन दोनोंको देखकर किसको भय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वालिप्रणिहितावेव शङ्केऽहं पुरुषोत्तमौ ।
राजानो बहुमित्राश्च विश्वासो नात्र हि क्षमः २१
अरयश्च मनुष्येण विज्ञेयाश्छद्मचारिणः ।
विश्वस्तानामविश्वस्ताश्छिद्रेषु प्रहरन्त्यपि २२
कृत्येषु वाली मेधावी राजा नो बहुदर्शिनः ।
भवन्ति परहन्तारस्ते ज्ञेयाः प्राकृतैर्नरैः २३
तौ त्वया प्राकृतेनैव गत्वा ज्ञेयौ प्लवंगम ।
इङ्गितानां प्रकारैश्च रूपव्याभाषणेन च २४
लक्षयस्व तयोर्भावं प्रहृष्टमनसौ यदि ।
विश्वासयन्प्रशंसाभिरिङ्गितैश्च पुनः पुनः २५
ममैवाभिमुखं स्थित्वा पृच्छ त्वं हरिपुङ्गव ।
प्रयोजनं प्रवेशस्य वनस्यास्य धनुर्धरौ २६
शुद्धात्मानौ यदि त्वेतौ जानीहि त्वं प्लवंगम ।
व्याभाषितैर्वा रूपैर्वा विज्ञेया दुष्टतानयोः २७

होगा ? ।। २० ।। वालीके भेजे हुए ये पुरुषोत्तम हैं यह मैं शङ्का करता हूं, राजा लोग बहुत मित्रवाले होते हैं, इस विषयमें विश्वास करना योग्य नहीं ॥ २१ ॥ मनुष्यको छिपे आचरणवाले वैरी पहिचानने चाहिये, अविश्वासी वैरी विश्वसित मनुष्योंके छिद्रोंमें प्रहार करते हैं ॥ २२ ॥ कृत्योंमें वाली बुद्धिमान् है, राजा बहुत उपायोंके जाननेवाले और शत्रुके मारनेवाले होते ही हैं, वे दीनवेष मनुष्योंको अच्छी तरह जान लेने चाहियें ।। २३ ।।

हे वानर ! उन दोनोंको चेष्टाओंके प्रकार और रूप तथा भाषणसे दीनकी तरह जाकर पहिचानो ॥ २४ ॥ यदि शुद्ध भाववाले हो तो प्रशंसा और उनके अनुकूल चेष्टा करके बार बार विश्वास करा उनके अभिप्रायको अर्थात् वनागमनप्रायोजनको पूछो ॥ २५ ॥ हे हरिपुङ्गव । तुम मेरे ही अनुकूल स्थापित कर इस वनमें घूमनेका प्रयोजन धनुषधारियोंसे पूछो ॥ २६ ॥ हे प्लवङ्गम ! यदि ये शुद्धात्मा हों तो पहिचानो अथवा इनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्येवं कपिराजेन संदिष्टो मारुतात्मजः।
चकार गमने बुद्धिं यत्र तौ रामलक्ष्मणौ २८

तथेति संपूज्य वचस्तु तस्य कपिः सुभीतस्य दुरासदस्य।
महानुभावो हनुमान्ययौ तदा स यत्र रामोऽतिबली सलक्ष्मणः २९

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे द्वितीयः सर्गः [१६०]॥२॥

तृतीयः सर्गः ।

वचो विज्ञाय हनुमान्सुग्रीवस्य महात्मनः।
पर्वतादृष्यमूकात्तु पुप्लुवे यत्र राघवौ १

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान्मारुतात्मजः।
भिक्षुरूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः २

ततश्च हनुमान्वाचा श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया।
विनीतवदुपागम्य राघवौ प्रणिपत्य च ३

आबभाषे च तौ वीरौ यथावत्प्रशशंस च।
संपूज्य विधिवद्वीरौ हनुमान्वानरोत्तमः ४

दुष्टता और अदुष्टता भाषणसे जानो ॥ २७ ॥ इस तरह कपिराजने आज्ञा दी, तब पवनपुत्र हनुमान्‌जो जहां राम लक्ष्मण थे वहां जानेकी बुद्धि की ॥ २८ ॥ भीत, दुरासद उस कपिके वचनको " ऐसा ही होगा " यह सत्कार कर महानुभाव हनुमान् जिस स्थानपर राम तथा अतिबली लक्ष्मण थे वहां गये ॥ २९ ॥

॥ यहाँ द्वितीय सर्ग समाप्त ॥

हनुमान् महात्मा सुग्रीवका वचन समझ कर ऋष्यमूक पर्वतसे जहां पर राम लक्ष्मण थे वहां को शीघ्र चले ॥ १ ॥ पवनके पुत्र कपि हनुमान्‌ने वञ्चक बुद्धि होनेके कारण वानरके रूपको त्याग कर भिक्षुरूपको धारण कर लिया ॥ २ ॥ तदनन्तर हनुमान्‌ने सविनय उन दोनोंके समीप पहुंच कर और नमस्कार कर मनोज्ञ सुन्दर वाणीसे वार्तालाप किया और उन दोनों वीरोंकी यथावत् प्रशंसा की ॥ ३ ॥ पवनके पुत्र, वीर, हनुमान् सत्यपराक्रम वाले उन दोनोंका विधिवत् पूजन कर भक्तिसे कोमल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उवाच कामतो वाक्यं मृदु सत्यपराक्रमौ।
राजर्षिदेवप्रतिमौ तापसौ संशितव्रतौ ५
देशं कथमिमं प्राप्तौ भवन्तौ वरवर्णिनौ।
त्रासयन्तौ मृगगणानन्यांश्च वनचारिणः ६
पम्पातीररुहान्वृक्षान्वीक्षमाणौ समन्ततः।
इमां नदीं शुभजलां शोभयन्तौ तरस्विनौ ७
धैर्यवन्तौ सुवर्णाभौ कौ युवां चीरवाससौ।
निःश्वसन्तौ वरभुजौ पीडयन्ताविमाः प्रजाः ८
सिंहविप्रेक्षितौवीरौ महाबलपराक्रमौ।
शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ ९
श्रीमन्तौ रूपसंपन्नौ वृषभश्रेष्ठविक्रमौ।
हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ १०
प्रभया पर्वतेन्द्रोऽसौ युवयोरवभासितः।
राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ ११

वाक्य वाले ॥ ४ ॥ राजर्षि और देवताओंके तुल्य, तपस्वी, व्रतधारी, श्रेष्ठ ब्रह्मचारी आप इस देशमें कैसे प्राप्त हुए हो ॥ ५ ॥ हरिण तथा अन्य वनचारियोंको भय लगाते और चारों ओरसे पम्पाके तीरवाले वृक्षोंको देखते, इस शुभ जलवाली नदीको सुशोभित करते, तपस्वी, धैर्ययुक्त, सुवर्ण सदृश कान्ति वाले और चीर वस्त्रधारी तुम कौन हो ? ॥ ६–७ ॥

श्वास लेते, श्रेष्ठ भुजावाले, इस प्रजाको पीडित करते, सिंहके समान दृष्टि वाले, वीर, सिंहसे भी अति बल तथा पराक्रमवाले, इन्द्र धनुषके समान धनुष ग्रहण कर शत्रुओंके नाश करनेवाल, शोभायुक्त, रूप सम्पन्न, वृषभ (बैल) के समान श्रेष्ठ विक्रमवाले, हाथीके सूंडके समान भुजावाले, प्रकाशमान मनुष्योंमें श्रेष्ठ तुम कौन हो॥ ८–१० ॥ तुम दोनों की कान्ति से यह पर्वत प्रकाशित हो गया है ॥ ११ ॥ राज्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्मपत्रेक्षणौ वीरौ जटामण्डलधारिणौ ।
अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकादिहागतौ १२
यदृच्छयेव संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ वसुंधराम् ।
विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवरूपिणौ १३
सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदाविव गोवृषौ ।
आयताश्च सुवृत्ताश्च बाहवः परिघोपमाः १४
सर्वभूषणभूषार्हाः किमर्थं न विभूषिताः ।
उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुं पृथिवीमिमाम् १५
ससागरवनां कृत्स्नां विन्ध्यमेरुविभूषिताम् ।
इमे च धनुषी चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने १६
प्रकाशेते यथेन्द्रस्य वज्रे हेमविभूषिते ।
संपूर्णाश्च शितैर्बाणैस्तूणाश्च शुभदर्शनाः १७
जीवितान्तकरैर्घोरैर्ज्वलद्भिरिव पन्नगैः ।
महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ १८

के योग्य; देवोंके समान, कमलपत्रके समान नेत्रवाले, वीर, जटाम-
ण्डलधारी, आपसमें सदृश, देवलोकसे आये हुए वीरोंके समान, अ-
इच्छासे पृथिवीपर आये हुए चन्द्र और सूर्यके समान, वि-
छातीवाले, वीर मनुष्य, देवरूपी, सिंहके समान कन्धे वाले, म-
उत्साहवाले, मदयुक्त बैलके समान स्थित तुम दोनों यहां कैसे प्राप्त
हो ॥ १२।१३।१४ ॥

घुटनों तक लम्बी, अच्छी तरह गोल, परिघके समान, सब भूषण
भूषण करने योग्य भुजा हैं सो क्यों नहीं भूषित कीं ॥ १५ ॥ समुद्र
वन समेत, विन्ध्य और मेरूसे विभूषित, समस्त, इस पृथ्वीकी रक्षा क
योग्य तुम दोनोंको मैं मानता हूं ॥ १६ ॥ चित्र, चिकने, चित्रलेपयु
सुवर्णसे भूषित यह धनुष् इस तरह शोभा देते हैं जैसे इन्द्रके
॥ १७ ॥ जीवनका अन्त करनेवाले, घोर, श्वास लेते हुए सर्पोंके सम
पैने बाणोंसे भरे हुए और शुभ दर्शनवाले दो तरकस हैं ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड्गावेतौ विराजेते निर्मुक्तभुजगाविव ।
एवं मां परिभाषन्तं कस्माद्वै नाभिभाषथः १९
सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद्वानरपुङ्गवः ।
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद्भ्रमति दुःखितः २०
प्राप्तोऽहं प्रेषितस्तेन सुग्रीवेण महात्मना ।
राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान्नाम वानरः २१
युवाभ्यां स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति ।
तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम् २२
भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकारणात् ।
ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम् २३
एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ ।
वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किंचन २४
एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ।
प्रहृष्टवदनः श्रीमान्भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम् २५
सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।

विशाल, तपे सुवर्णके भूषणवाले ये खड्ग केंचुली रहित सर्पके समान शोभा देते हैं ॥ १९ ॥ इस तरह बातचीत करते हुए मुझसे क्यों (तुम) नहीं बोलते ? ॥ २० ॥

एक सुग्रीव नामक, वीर, धर्मात्मा, वानर यूथपति है, भाईने निकाल दिया है; अतएव दुःखित हो जगत्में घूमता है ॥ २१ ॥ वानरोंके राजा उन महात्मा सुग्रीवने भेजा ऐसा मैं हनुमान् नामक वानर हूं ॥ २२ ॥ धर्मात्मा सुग्रीव तुम दोनोंके साथ मित्रता चाहता है उसके मन्त्री, पवन-कुमार भिक्षुरूपसे ढके हुए, सुग्रीवके प्रियकी कामनासे यहां पर प्राप्त हुए, इच्छा सदृश गमन करनेवाले, इच्छा सदृश रूपधारी मुझे जानो ॥ २३-२४ ॥ ऐसा कह वक्ताओंमें कुशल हनुमान् वाक्यके जाननेवाले उन वीर राम लक्ष्मणसे फिर कुछ न बोले ॥ २५ ॥

यह हनुमान्का वचन सुनकर प्रसन्नचित्त श्रीमान् रामचन्द्रजी समीपमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमिहागतः २६
तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तमरिंदमम् २७
नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम् २८
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहुव्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम् २९
न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित् ३०
अविस्तरमसंदिग्धमविलम्बितमव्यथम्,
उरस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमस्वरम् ३१
संस्कारक्रमसंपन्नामद्रुतामविलम्बिताम्।
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहारिणीम् ३२
अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यञ्जनस्थया।

स्थित भाई लक्ष्मणसे बोले ॥ २६ ॥ यह वानरोंके राजा महात्मा सुग्री का मन्त्री है उन्हींकी कांक्षा करते हुए मेरे पास आया है ॥ २७ ॥ वैरियोंका नाश करनेवाले लक्ष्मण! वाक्योंके जाननेवाले, सुग्रीवके मन्त्री को मधुर वाक्योंसे स्नेहयुक्त भाषण करो ॥ २८ ॥ ऋग्वेदकी शिक्षा रहित तथा यजुर्वेदके धारण रहित और सामवेदके ज्ञान रहित (मनुष्य) ऐसा भाषण नहीं कर सकता ॥ २९ ॥ इसने निश्चय ही समस्त व्याकरण अच्छी तरह सुना है क्योंकि इसने बहुत वाक्य कहते हुए भी कोई अपशब्द (अशुद्ध शब्द) नहीं कहा ॥ ३० ॥ इसके न मुखमें न नेत्रोंमें न ललाट न भ्रुकुटियोंमें और न अन्य गात्रोंमें कहीं दोष मालूम हुआ है ॥ ३१ ॥ शब्द प्रपञ्चरहित, पद और वर्णोंके सन्देह रहित, न बहुत शीघ्र, न बहुत विलम्बयुक्त, उरःस्थ और कण्ठगत (मध्यम) वाक्य मध्यम स्वरमें वर्तमान है ॥ ३२ ॥

संस्कारयुक्त (व्याकरणकृत शब्दशुद्धि युक्त) क्रमयुक्त, शीघ्रता रहित

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्य नाराध्यते चित्तमुद्यतासेररेरपि ३३
एवंविधो यस्य दूतो न भवेत्पार्थिवस्य तु ।
सिद्ध्यन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतयोऽनघ ३४
एवंगुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः ।
तस्य सिद्ध्यन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः ३५
एवमुक्तस्तु सौमित्रिः सुग्रीवसचिवं कपिम् ।
अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञं पवनात्मजम् ३६
विदिता नौ गुणा विद्वन्सुग्रीवस्य महात्मनः ।
तमेव चावां मार्गावः सुग्रीवं प्लवगेश्वरम् ३७
यथा ब्रवीषि हनुमन्सुग्रीववचनादिह ।
तत्तथा हि करिष्यावो वचनात्तव सत्तम ३८
त्तस्य वाक्यं निपुणं निशम्य प्रहृष्टरूपः पवनात्मजः कपिः ।
नः समाधाय जयोपपत्तौ सख्यं तदा कर्तुमियेष ताभ्याम् ३९
यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे तृतीय सर्गः ।॥३॥ [१९९]

लस्य रहित, कल्याणी, मनोहर वाणीका उच्चारण करता है ॥ ३३ ॥
दय कण्ठ और शिरमें स्थित इस चित्रवाणीसे किसका चित्त संतुष्ट नहीं
सकता ? तलवार लिये हुए वैरीका भी हो सकता है ॥ ३४ ॥ हे
क्ष्मण ! जिस राजाका इस प्रकारका दूत न हो उसके कार्योंकी सिद्धि
से हो सकती है ॥ ३५ ॥ ऐसे गुण गणोंसे युक्त जिसके कार्यसाधक हों
सके सब व्यवहार दूतके वाक्योंसे प्रेरित हो सिद्ध होते हैं ॥ ३६ ॥
ब इस प्रकार [रामने] लक्ष्मणसे कहा तब वाक्यके जाननेवाले लक्ष्मण
ग्रीवके मन्त्री, वाक्यज्ञ, पवनपुत्र, हनुमान्‌से बोले ॥ ३७ ॥ हे विद्वन्!
ात्मा सुग्रीवके गुण हमें विदित हैं, हम दोनों वानरेश्वर सुग्रीवको ही
लाश करते हैं । हे हनुमान्! सुग्रीवके वचनसे जैसा तुम यहां
हते हो तुम्हारे वाक्यसे हम वैसा ही करेंगे ॥ ३८ ॥ प्रसन्न रूपवाले,
नके पुत्र, हनुमान्‌ने लक्ष्मणके निपुण वाक्यको सुनकर वालिके जीननेमें
न लगाकर उन दोनोंके साथ मित्रता करनेकी इच्छा की ॥ ३९ ॥
॥ यहाँ तृतीय सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्थः सर्गः ।

ततः प्रहृष्टो हनुमान्कृत्यवानिति तद्वचः ।
श्रुत्वा मधुरभावं च सुग्रीवं मनसा गतः १
भाव्यो राज्यागमस्तस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
यदयं कृत्यवान्प्राप्तः कृत्यं चैतदुपागतम् २
ततः परमसंहृष्टो हनूमान्प्लवगोत्तमः ।
प्रत्युवाच ततो वाक्यं रामं वाक्यविशारदम् ३
किमर्थं च वनं घोरं पम्पाकाननमण्डितम् ।
आगतः सानुजो दुर्गं नानाव्यालमृगायुतम् ४
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा लक्ष्मणो रामचोदितः ।
आचचक्षे महात्मानं रामं दशरथात्मजम् ५
राजा दशरथो नाम द्युतिमान्धर्मवत्सलः ।
चतुर्वर्ण्यं स्वधर्मेण नित्यमेवाभिपालयन् ६
न द्वेष्टा विद्यते तस्य स तु द्वेष्टि न कंचन ।
स तु सर्वेषु भूतेषु पितामह इवापरः ७

तदनन्तर "रामचन्द्र कार्यवाले हैं" यह समझकर प्रसन्न हुए हनुमान् [लक्ष्मणका] मधुर भाषण सुनकर मनसे सुग्रीवके पास पहुंचे ॥ १ ॥ जिससे कि ये कार्यवाले आये हैं इससे महात्मा सुग्रीवका राज्यागम होनेवाला है अर्थात् राज्य आनेवाला है और यह कृत्य समीप ही है ॥ २ ॥ तदनन्तर अत्यन्त प्रसन्न हुए वक्ताओं और वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् रामसे वाक्य बोले ॥ ३ ॥ भाई समेत तुम क्यों घोर, पम्पाके उपवनसे शोभित कठिन, अनेक सर्प तथा मृगोंसे युक्त इस वनमें आये हो ॥ ४ ॥ हनुमान्के उस वचनको सुनकर रामसे आज्ञा दिये लक्ष्मणने महात्मा रामका 'ये दशरथके पुत्र हैं' यह परिचय दिया ॥ ५ ॥

प्रकाशमान् धर्मके प्रेमी दशरथ नाम राजा चारों वर्णोंकी अपने धर्मसे नित्य रक्षा करते थे ॥ ६ ॥ उनका कोई वैरी न था और न वह किसीसे वैर करते थे और वह समस्त प्राणियोंमें दूसरे ब्रह्माके समान थे, पूर्ण हैं दक्षिण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टवानाप्तदक्षिणैः ।
तस्यायं पूर्वजः पुत्रो रामो नाम जनैः श्रुतः ८
शरण्यः सर्वभूतानां पितुर्निर्देशपारगः ।
ज्येष्ठो दशरथस्यायं पुत्राणां गुणवत्तरः ९
राजलक्षणसंयुक्तः संयुक्तो राज्यसंपदा ।
राज्याद्भ्रष्टो मया वस्तुं वने सार्धमिहागतः १०
भार्यया च महाभाग सीतयानुगतो वशी ।
दिनक्षये महातेजाः प्रभयेव दिवाकरः ११
अहमस्यावरो भ्राता गुणैर्दास्यमुपागतः ।
कृतज्ञस्य बहुज्ञस्य लक्ष्मणो नाम नामतः १२
सुखार्हस्य महार्हस्य सर्वभूतहितात्मनः ।
ऐश्वर्येण विहीनस्य वनवासे रतस्य च १३
रक्षसापहृता भार्या रहिते कामरूपिणा ।
तच्च न ज्ञायते रक्षः पत्नी येनास्य वा हृता १४

जिनकी ऐसे अग्निष्टोम आदि यज्ञ भी उन्होंने किये थे ॥ ७ ॥ सब जीवोंको शरण देनेवाले, पिताकी आज्ञाका पालन करनेवाले ये उन्हींके पहिले पुत्र राम नामसे मनुष्योंमें विख्यात हैं ॥ ८ ॥ दशरथके पुत्रोंमें वीर, गुणवान्, राजाओंके चिन्होंसे संयुक्त और राज्यलक्ष्मीसे युक्त यह हैं ॥ ९ ॥ इन्द्रियों-को वशमें रखनेवाले, महातेजस्वी राम राज्यसे भ्रष्ट हो मेरे साथ और अपनी स्त्री सीताके साथ वनमें वसनेको आये थे जैसे महातेजवाले सूर्य सायङ्कालके समय अपनी कांतिके साथ ॥ १० ॥ किये उपकारको मानने-वाले, अधिक ज्ञानवाले इन रामचन्द्रजीका छोटा भाई लक्ष्मण नाम मैं गुणोंके कारण इनका दास हो रहा हूं ॥ ११ ॥

सुखके योग्य, ऐश्वर्यके योग्य, सब जीवोंपर हित करनेवाले, ऐश्वर्यसे हीन, वनवासके आश्रित इन रामकी स्त्री कामरूपी राक्षसने अकेलेमें हर ली, उस राक्षसको हम नहीं जानते जिसने इनकी स्त्री हरी है ॥ १२-१३ ॥ दितिका पुत्र हनुमान जो शापसे राक्षस हो गया था उसने वानरे-श्वर सुग्रीवको समर्थ बताया है ॥ १४ ॥ महाबली सुग्रीव तुम्हारी स्त्रीके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दनुर्नाम दितेः पुत्रः शापाद्राक्षसतां गतः ।
आख्यातस्तेन सुग्रीवः समर्थो वानराधिपः १५
स ज्ञास्यति महावीर्यस्तव भार्यापहारिणम् ।
एवमुक्त्वा दनुः स्वर्गं भ्राजमानो दिवं गतः १६
एतत्ते सर्वमाख्यातं याथातथ्येन पृच्छतः ।
अहं चैव च रामश्च सुग्रीवं शरणं गतौ १७
एष दत्त्वा च वित्तानि प्राप्य चानुत्तमं यशः ।
लोकनाथः पुरा भूत्वा सुग्रीवं नाथमिच्छति १८
सीता यस्य स्नुषा चासीच्छरण्यो धर्मवत्सलः ।
तस्य पुत्रः शरण्यस्य सुग्रीवं शरणं गतः १९
सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणं पुरा ।
गुरुर्मे राघवः सोऽयं सुग्रीवं शरणं गतः २०
यस्य प्रसादे सततं प्रसीदेयुरिमाः प्रजाः ।
स रामो वानरेन्द्रस्य प्रसादमभिकाङ्क्षते २१
येन सर्वगुणोपेताः पृथिव्यां सर्वपार्थिवाः ।
मानिताः सततं राज्ञा सदा दशरथेन वै २२

हरनेवालेको जानेंगे ऐसा कह प्रकाशमान् हो दनु सुख पूर्वक स्वर्गको चला गया ॥ १५ ॥ पूछते हुए तुमसे यह ज्योंका त्यों कह दिया है ॥ १६ ॥ हम और राम सुग्रीवके शरण आये हैं ॥ १७ ॥ यह राम धनोंका दान करके अतिश्रेष्ठ यशको पाकर पहिले संसारके स्वामी होकर अब सुग्रीवको स्वामी चाहते हैं ॥ १८ ॥ पहिले जिनके पिता धर्मके प्रेमी, शरणागतोंकी रक्षा करनेवाले थे उन्हींके पुत्र जो शरण देनेवाले हैं वे सुग्रीवकी शरण आये हैं ॥ १९ ॥ जो सब लोगको पहिले शरण देनेवाले थे वही धर्मात्मा मेरे बडे भाई राम सुग्रीवकी शरण आये हैं ॥ २० ॥

इक्ष्वाकुओंके कुलमें उत्पन्न हुए, धर्ममें स्थित, पिताकी आज्ञाके पालन करनेवाले ये दशरथके पुत्र राम हैं ॥ २१ ॥ वनमें वास करते, नियत चित्त महात्मा रामकी स्त्री रावणने हरली है इससे सुग्रीवकी शरण आये हैं ॥ २२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्यायं पूर्वजः पुत्रास्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ।
सुग्रीवं वानरेन्द्रं तु रामः शरणमागतः ॥ २३
शोकाभिभूते रामे तु शोकार्ते शरणं गते ।
कर्तुमर्हति सुग्रीवः प्रसादं सह यूथपैः ॥ २४
एवं ब्रुवाणं सौमित्रिं करुणं साश्रुपातनम् ।
हनूमान्प्रत्युवाचेदं वाक्यं वाक्यविशारदः ॥ २५
ईदृशा बुद्धिसंपन्ना जितक्रोधा जितेन्द्रियाः ।
द्रष्टव्या वानरेन्द्रेण दिष्टथा दर्शनमागताः ॥ २६
स हि राज्याच्च विभ्रष्टः कृतवैरश्च वालिना ।
हृतदारो वने त्रस्तो भ्रात्रा विनिकृतो भृशम् ॥ २७
करिष्यति स साहाय्यं युवयोर्भास्करात्मजः ।
सुग्रीवः सह चास्माभिः सीतायाः परिमार्गणे ॥ २८
इत्येवमुक्त्वा हनुमाञ्श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ।

जिनके प्रसन्न होनेपर सब प्रजा प्रसन्न होती थी वही राम वानरेन्द्र सुग्रीवकी प्रसन्नता चाहते हैं । जिन राजा दशरथने सब गुणोंसे युक्त समस्त राजा हमेशा सम्मानित किये थे उन्हींके बडे बेटे तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध राम हैं सो सुग्रीवके शरण आये हैं ॥ २३ ॥ शोकसे तिरस्कृत किये, शोकपीडित रामके शरण आनेपर वानरोंके स्वामी सुग्रीव प्रसाद करनेके योग्य हैं ॥ २४ ॥

करुणायुक्त पूर्वोक्त प्रकारसे कहते तथा आंसू सहित नेत्रवाले लक्ष्मणसे वाक्यके जाननेवाले हनुमान् बोले ॥ २५ ॥ ऐसे बुद्धि युक्त, क्रोध तथा इन्द्रियोंके जीतनेवाले सुग्रीवके देखनेके योग्य हैं यह आनन्द हुआ जो आपके दर्शन हुए ॥ २६ ॥ वालीने बांधा है वैर जिनसे और हरली है स्त्री जिनकी तथा भाईसे ठगे गये और राज्यभ्रष्ट सुग्रीव वनमें निकाल दिये गये हैं ॥ २७ ॥ सूर्यके पुत्र वह सुग्रीव हमारे साथ सीताके ढूंढनेमें आपका सहाय करेंगे ॥ २८ ॥ वह हनुमान् इस प्रकार मधुर वचन कह मधुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बभाषे साधु गच्छामः सुग्रीवमिति राघवम् २९
एवं ब्रुवन्तं धर्मात्मा हनूमन्तं स लक्ष्मणः।
प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं प्रोवाच राघवम् ३०
कपिः कथयते हृष्टो यथायं मारुतात्मजः।
कृत्यवान्सोपि संप्राप्तः कृत्यकृत्योऽसि राघव ३१
प्रसन्नमुखवर्णश्च व्यक्तं हृष्टश्च भाषते।
नानृतं वक्ष्यते वीरो हनूमान्मारुतात्मजः ३२
ततः स सुमहाप्राज्ञो हनूमान्मारुतात्मजः।
जगामादाय तौ वीरौ हरिराजाय राघवौ ३३
भिक्षुरूपं परित्यज्य वानरं रूपमास्थितः।
पृष्ठमारोप्य तौ वीरौ जगाम कपिकुञ्जरः ३४
स तु विपुलयशाः कपिप्रवीरः पवनसुतः कृतकृत्यवत्प्रहृष्टः।
गिरिवरमुरुविक्रमः प्रयातः स शुभमतिः सह रामलक्ष्मणाभ्याम् ३
इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे चतुर्थः सर्गः ॥४॥ [२

वाणीसे रामसे बोले "हम सब सुग्रीवके पास चलें" ॥ २९ ॥ धर्मात्म लक्ष्मण उक्त प्रकारसे कहते हुए हनुमानकी यथायोग्य पूजा कर रामचन्द जीसे बोले ॥ ३० ॥ हे राम! पवनके पुत्र ये कपि प्रसन्न होकर कहते वह सुग्रीव भी कार्यवाले हैं इससे आप कृतकृत्य हैं ॥ ३१ ॥ प्रसन्न मुख रङ्गवाले, हृष्ट, वायुके पुत्र हनुमान् ठीक कहते हैं झूठ नहीं कहेंगे ॥ ३२॥

तदनन्तर महाबुद्धिमान् हनुमान् सुग्रीवके पास वीर राम लक्ष्मण ले गये ॥ ३३ ॥ भिक्षुके रूपको त्याग कर वानरके रूपमें स्थित हुए कपि कुञ्जर हनुमान् उन वीरोंको पीठपर चढाकर चले गये ॥ ३४ ॥ महायशस्वी वानरोंमें श्रेष्ठ, अत्यन्त पराक्रमवाले, शुभ बुद्धिवाले वायुके पुत्र, हनुमान् मा कार्य पूर्ण होगया इस प्रकार प्रसन्न हुए राम लक्ष्मणके साथ (ऋश्यमूक पर्वतको चल दिये ॥ ३५ ॥

॥ यहाँ चौथा सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चमः सर्गः ।

ऋष्यमूकात्तु हनुमान्गत्वा तं मलयं गिरिम् ।
आचचक्षे तदा वीरौ कपिराजाय राघवौ १
अयं रामो महाप्राज्ञ संप्राप्तो दृढविक्रम ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा रामोऽयं सत्यविक्रमः २
इक्ष्वाकूणां कुले जातो रामो दशरथात्मजः ।
धर्मे निगदितश्चैव पितुर्निर्देशकारकः ३
राजसूयाश्वमेधैश्च वह्निर्येनाभितर्पितः ।
दक्षिणाश्च तथोत्सृष्टा गावः शतसहस्रशः ४
तपसा सत्यवाक्येन वसुधा तेन पालिता ।
स्त्रीहेतोस्तस्य पुत्रोऽयं रामोऽरण्यं समागतः ५
तस्यास्य वसतोऽरण्ये नियतस्य महात्मनः ।
रावणेन हृता भार्या स त्वां शरणमागतः ६
भवता सख्यकामौ तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
प्रगृह्य चार्चयस्वेतौ पूजनीयतमावुभौ ७

उस समय हनुमान्‌ने ऋष्यमूकसे मलयपर्वतपर जाकर वीर राम लक्ष्मणका सुग्रीवसे परिचय कराया ॥ १ ॥ यह महाबुद्धिमान् दृढपराक्रम-वाले राम भाई लक्ष्मणके साथ प्राप्त हुए हैं यह राम सत्यपराक्रमी हैं ॥ २ ॥ इक्ष्वाकुओंके कुलमें उत्पन्न हुए दशरथके पुत्र राम हैं धर्ममें स्थित और पिताकी आज्ञाके पालन करनेवाले हैं ॥ ३ ॥ अरण्यमें वसते हुए संयमी महात्मा रामकी स्त्री रावणने हरली है सो आपके शरण आये हैं ॥ ४ ॥ राजसूय और अश्वमेधोंसे जिन्होंने अग्निको तृप्त किया था तथा सैकडों हजारों गौयें दानमें दी थीं, तपस्या और सत्य वाक्यसे पृथ्वी जिन्होंने पालन की थी उन्हींके पुत्र ये राम स्त्रीके हेतुसे तुम्हारे शरण प्राप्त हुए हैं ॥ ५ – ६ ॥

भाई राम, और लक्ष्मण आपसे मित्रताकी कामना करते हैं पूजने योग्य इन दोनोंका सत्कार करके पूजो ॥ ७ ॥ प्रसन्नचित्त सुग्रीवने हनुमान्-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं सुग्रीवो वानराधिपः ।
दर्शनीयतमो भूत्वा प्रीत्योवाच च राघवम् ८
भवान्धर्मविनीतश्च सुतपाः सर्ववत्सलः ।
आख्याता वायुपुत्रेण तत्त्वतो मे भवद्गुणाः ९
तन्ममैवैष सत्कारो लाभश्चैवोत्तमः प्रभो ।
यत्त्वमिच्छसि सौहार्दं वानरेण मया सह १०
रोचते यदि मे सख्यं बाहुरेष प्रसारितः ।
गृह्यतां पाणिना पाणिर्मर्यादा बध्यतां ध्रुवा ११
एतत्तु वचनं श्रुत्वा सुग्रीवस्य सुभाषितम् ।
संप्रहृष्टमना हस्तं पीडयामास पाणिना १२
हृष्टः सौहृदमालम्ब्य पर्यष्वजत पीडितम् १३
ततो हनूमान्संत्यज्य भिक्षुरूपमरिन्दमः ।
काष्ठयोः स्वेन रूपेण जनयामास पावकम् १४
दीप्यमानं ततो वह्निं पुष्पैरभ्यर्च्य सत्कृतम् ।
तयोर्मध्ये तु सुप्रीतो निदधौ सुसमाहितः १५

का वाक्य सुनकर ज्वररहित होकर रामचन्द्रसे जो घोर भय था उसक त्याग दिया ॥ ८ ॥ वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीव मनुष्यका रूप कर अत्यन्त देखने योग्य होकर प्रीतिपूर्वक रामसे बोले ॥ ९ ॥ आप धर्ममें शिक्षित बलयुक्त, सबसे प्रीति रखनेवाले हैं हनुमान्ने आपके गुण अच्छेप्रकार मुझ से कहे हैं ॥ १० ॥ प्रभो ! सो यह मेरा सत्कार है और उत्तम लाभ है कि आप मुझ वानरके साथ मित्रता चाहते हैं ॥ यदि मित्रभावकी रु है तो यह बाहु मैंने पसारी है, हाथसे हाथको पकडिये और स्थिर व्यवस्थ बांधिये ॥ ११ ॥

सुग्रीवसे कहे हुए इस वचनको सुनकर प्रसन्नचित्त हुए रामने हाथ हाथको पकडा ॥ १२ ॥ हृदयकी प्यारी मित्रताको पाकर अच्छे प्रका आपसमें मिले ॥ १३ ॥ तदनन्तर वैरियोंका नाश करनेवाले हनुमान् भिक्षुरूपको त्याग कर अपने रूपसे अग्निको काष्ठोंमें उत्पन्न किया ॥ १४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततोऽग्निं दीप्यमानं तौ चक्रतुश्च प्रदक्षिणम् ।
सुग्रीवो राघवश्चैव वयस्यत्वमुपागतौ १६
ततः सुप्रीतमनसौ तावुभौ हरिराघवौ ।
अन्योन्यमभिवीक्षन्तौ न तृप्तिमभिजग्मतुः १७
त्वं वयस्योसि हृद्यो मे एकं दुःखं सुखं च नौ ।
सुग्रीवो राघवं वाक्यमित्युवाच प्रहृष्टवत् १८
ततः सुपर्णबहुलां भङ्क्त्वा शाखां सुपुष्पिताम् ।
सालस्यास्तीर्य सुग्रीवो निषसाद सराघवः १९
लक्ष्मणायाथ संहृष्टो हनुमान्मारुतात्मजः ।
शाखां चन्दनवृक्षस्य ददौ परमपुष्पिताम् २०
ततः प्रहृष्टः सुग्रीवः श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ।
प्रत्युवाच तदा रामं हर्षव्याकुललोचनः २१
अहं विनिकृतो राम चरामीह भयार्दितः ।
हृतभार्यो वने त्रस्तो दुर्गमेतदुपाश्रितः २२

तब प्रकाशित और सत्कृत की हुई अग्निको फूलोंसे पूजकर प्रसन्न तथा एकान्त चित्त हो [हनुमान्‌ने] राम और सुग्रीवके बीचमें रख दिया ॥ १५ ॥ फिर प्रकाशित हुई अग्निकी [उन दोनोंने] प्रदक्षिणा की और सुग्रीव तथा राम मित्रताको प्राप्त हो गये ॥ १६ ॥ तदनंतर प्रसन्न मनवाले उन दोनों सुग्रीव और रामने एक दूसरेको देखते हुए तृप्ति न पाई ॥ १७ ॥ सुग्रीवसे रामसे प्रसन्न हो बोले कि तुम मेरे मित्र हो, प्यारे हो और हमारा तुम्हारा सुख दुःख एक ही है ॥ १८ ॥

अनन्तर सुग्रीव बहुत पत्तोंवाली, अच्छे पुष्पोंसे युक्त साल वृक्षकी शाखाको तोडकर और बिछाकर रामचन्द्र समेत बैठ गये ॥ १९ ॥ वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्‌ने प्रसन्न हो अति पुष्पित चंदन वृक्षकी शाखा लक्ष्मणको [बैठनेके लिये] दी ॥ २० ॥ तदनन्तर प्रसन्न और हर्षसे व्याकुल हैं नेत्र जिसके ऐसे सुग्रीव मीठी वाणीसे श्रेष्ठ वाक्य रामसे बोले ॥ २१ ॥ हे राम !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोऽहं त्रस्तो वने भीतो वसाम्युद्भ्रान्तचेतनः ।
वालिना निकृतो भ्रात्रा कृतवैरश्च राघव २३
वालिनो मे महाभाग भयार्तस्याभयं कुरु ।
कर्तुमर्हसि काकुत्स्थ भयं मे न भवेद्यथा २४
एवमुक्तस्तु तेजस्वी धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
प्रत्यभाषत काकुत्स्थः सुग्रीवं प्रहसन्निव २५
उपकारफलं मित्रं विदितं मे महाकपे ।
वालिनं तं वधिष्यामि तव भार्यापहारिणम् २६
अमोघाः सूर्यसंकाशा ममेमे निशिताः शराः ।
तस्मिन्वालिनि दुर्वृत्ते निपतिष्यन्ति वेगिताः २७
कङ्कपत्रप्रतिच्छन्ना महेन्द्राशनिसंनिभाः ।
तीक्ष्णाग्रा ऋजुपर्वाणः सरोषा भुजगा इव २८
तमद्य वालिनं पश्य तीक्ष्णैराशीविषोपमैः ।

भयसे पीडित भाईसे निकाला हुआ और जिसकी भार्या हर ली गई ऐसा मैं यहां पर विचरता हूं और सताये हुए मैंने वनमें इस दुर्गका आश्रय लिया है ॥ २२ ॥ ऐसा सताया बार बार डराया हुआ मैं व्याकुल बुद्धि वाला हो इस वनमें वसता हूं। हे राम! भाई वालीने वैर बांधकर मुझे निकाल दिया है ॥ २३ ॥ हे महाभाग! वालीसे भयभीत हुए मुझको अभय करो। हे काकुत्स्थ! मुझको भय न हो ऐसा करने में आप योग्य हैं ॥ २४ ॥

तेजस्वी, धर्मके जाननेवाले धर्मप्रेमी रामसे जब ऐसा कहा तब राम मुसकराते हुए सुग्रीवसे बोले ॥ २५ ॥ हे कपिराज! मित्रका फल उपकार ही है यह मैं जानता हूं, तुम्हारी स्त्रीको हरनेवाले उस वालीको मैं मारूंगा, ये न चूकनेवाले, सूर्य समान दीप्तिवाले, तीक्ष्ण, तीव्रगतिवाले, कङ्कपत्र से ढके हुए, इन्द्रवज्रकी तुलनावाले, तीक्ष्ण धारवाले, सीधे परवाले क्रोधित सर्पोंके समान उस दुराचारी वालीपर गिरेंगे ॥ २६–२८ ॥ और सर्पके समान बाणोंसे घायल हुये वालीको पृथ्वीपर गिरे हुए पर्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरैर्विनिहतं भूमौ प्रकीर्णमिव पर्वतम् २९
स तु तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्यात्मनो हितम् ।
सुग्रीवः परमप्रीतः परमं वाक्यमब्रवीत् ३०
तव प्रसादेन नृसिंह वीर प्रियां च राज्यं च समाप्नुयामहम् ।
तथा कुरु त्वं नरदेव वैरिणं यथा न हिंस्यात्स पुनर्ममाग्रजम् ३१
सीताकपीन्द्रक्षणदाचराणां राजीवहेमज्वलनोपमानि ।
सुग्रीवरामप्रणयप्रसङ्गे वामानि नेत्राणि समं स्फुरन्ति ३२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥५॥ [२६६]

षष्ठः सर्गः ।

पुनरेवाब्रवीत्प्रीतो राघवं रघुनन्दनम् ।
अयमाख्याति ते राम सेवको मन्त्रिसत्तमः १
हनूमान्यन्निमित्तं त्वं निर्जनं वनमागतः ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वसतश्च वने तव २
रक्षसापहृता भार्या मैथिली जनकात्मजा ।
त्वया वियुक्ता रुदती लक्ष्मणेन च धीमता ३

समान आज तुम देखोगे ॥ २९ ॥

रामके अपनेको हितकारी उस वचनको सुनकर अति प्रसन्न हुए सुग्रीव वाक्य बोले ॥ ३० ॥ हे नृसिंह राम ! आपके प्रसादसे जैसे मैं प्रिया और राज्यको पाऊं वैसा ही आप कीजिये । हे नरदेव ! मेरे बडे भाई वैरीको आप मारिये ॥ ३१ ॥ सीता, वालि और राक्षसोंके कमल, सोना और अग्निके समान वामनेत्र सुग्रीव और रामकी मित्रताके समय एक साथ फडकने लगे ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ पांचवा सर्ग समाप्त हुआ ॥

प्रसन्न हुआ [सुग्रीव] फिर भी रघुवंशी रामसे बोला ॥ १ ॥ हे राम ! यह मन्त्रियोंमें श्रेष्ठ, मन्त्री हनुमान् मुझसे कहता था कि किस कारणसे तुम निर्जन वनमें आये हो ॥ २ ॥ भाई लक्ष्मणके साथ वनमें वसते हुए तुम्हारी स्त्री जनकपुत्री सीता राक्षसने हर ली है ॥ ३ ॥ तुमसे और बुद्धि–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तरं प्रेप्सुना तेन हत्वा गृध्रं जटायुषम् ।
भार्यावियोगजं दुःखं प्रापितस्तेन रक्षसा ४
भार्यावियोगजं दुःखं न चिरात्त्वं विमोक्ष्यसे ।
अहं तामानयिष्यामि नष्टां वेदश्रुतीमिव ५
रसातले वा वर्तन्तीं वर्तन्तीं वा नभस्तले ।
अहमानीय दास्यामि तव भार्यामरिन्दम ६
इदं तथ्यं मम वचस्त्वमवेहि च राघव ।
न शक्या सा जरयितुमपि सेन्द्रैः सुरासुरैः ७
तव भार्या महाबाहो भक्ष्यं विषकृतं यथा ।
त्यज शोकं महाबाहो तां कान्तामानयामि ते ८
अनुमानात्तु जानामि मैथिली सा न संशयः ।
ह्रियमाणा मया दृष्टा रक्षसा रौद्रकर्मणा ९
क्रोशन्ती राम रामेति लक्ष्मणेति च विस्वरम् ।
स्फुरन्ती रावणस्याङ्के पन्नगेन्द्रवधूर्यथा १०

मान् लक्ष्मणसे अलग हुई, रोती सीता अवसरकी प्रतीक्षावाले राक्षसने गृध्र जटायुको मारकर हरकर भार्याके वियोगसे उत्पन्न दुःख आपको दिया है ॥ ४ ॥ तुम स्त्रीके वियोगसे उत्पन्न हुए दुःखको जल्दी ही त्यागोगे । मैं उस सीताको नष्ट हुई वेदश्रुतिके समान लाऊंगा ॥ ५ ॥

हे वैरियोंका दमन करनेवाले! आपकी स्त्रीको चाहे वह पातालमें या आकाशमें हो लाकर आपको दूंगा ॥ ६ ॥ हे महाबाहो राम! इस मेरे वचनको तुम सत्र जानो कि तुम्हारी स्त्री सीताको विषके भोजनके समान इन्द्र समेत देव तथा दैत्योंकी पचानेकी शक्ति नहीं है ॥ ७ - ८ ॥ हे महाबाहो! तुम शोकको त्यागो मैं तुम्हारी स्त्रीको लाऊंगा। अनुमानसे जानता हू कि वह सीता ही थी इसमें सन्देह नहीं ॥९॥ क्रूरकर्मा राक्षससे हरी हुई मैंने वह देखी थी। "हे राम! हे लक्ष्मण!" इस प्रकार बुरे स्वरसे चिल्लाती थी नागराजकी भार्याके समान वह रावणकी गोदमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मना पञ्चमं मां हि दृष्ट्वा शैलतले स्थितम् ।
उत्तरीयं तया त्यक्तं शुभान्याभरणानि च ११
तान्यस्माभिर्गृहीतानि निहितानि च राघव ।
आनयिष्याम्यहं तानि प्रत्यभिज्ञातुमर्हसि १२
तमब्रवीत्ततो रामः सुग्रीवं प्रियवादिनम् ।
आनयस्व सखे शीघ्रं किमर्थं प्रविलम्बसे १३
एवमुक्तस्तु सुग्रीवः शैलस्य गहनां गुहाम् ।
प्रविवेश ततः शीघ्रं राघवप्रियकाम्यया १४
उत्तरीयं गृहीत्वा तु स तान्याभरणानि च ।
इदं पश्येति रामाय दर्शयामास वानरः १५
ततो गृहीत्वा वासस्तु शुभान्याभरणानि च ।
अभवद्बाष्पसंरुद्धो नीहारेणेव चन्द्रमाः १६
सीतास्नेहप्रवृत्तेन स तु बाष्पेण दूषितः ।
हा प्रियेति रुदन्धैर्यमुत्सृज्य न्यपतत्क्षितौ १७

फडकती थी ॥ १० ॥ मुझ सहित पांच वानरोंको पर्वतके शिखरपर बैठा देखकर उत्तरीयवस्त्र (ऊपरका वस्त्र अर्थात् दुपट्टा आदि) और श्रेष्ठ गहने उसने डाले थे ॥ ११ ॥ हे राम ! वे हमने उठा लिये और रख लिये मैं उनको लाता हूं आप उनको पहिचानिये ॥ १२ ॥

इसके अनन्तर राम प्रियवादी सुग्रीवसे बोले हे सखे ! जल्द लाओ देर क्यों करते हो ॥ १३ ॥ ऐसा कहनेपर तब सुग्रीव पर्वतकी गहरी गुफामें रामके प्रिय करनेकी इच्छासे शीघ्रतासे घुसा ॥ १४ ॥ सुग्रीवने उत्तरीयवस्त्र और शुभ आभूषणोंको लेकर "यह देखो" ऐसा कह रामको दिखाये ॥ १५ ॥ तदनन्तर राम उस वस्त्र और श्रेष्ठ आभूषणोंको लेकर तुषारसे छिपे हुए चन्द्रमाके समान आंसुओंसे भर गये ॥ १६ ॥ सीताके स्नेहसे उत्पन्न हुए आंसुओंसे भरे हुए राम 'हा प्रिये' ऐसा रोते हुए धैर्य त्याग पृथ्वीपर गिर पड़े ॥ १७ ॥ उस श्रेष्ठ अलङ्कारको बार बार हृदयसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदि कृत्वा स बहुशस्तमलंकारमुत्तमम् ।
निशश्वास भृशं सर्पो बिलस्थ इव रोषितः १८
अविच्छिन्नाश्रुवेगस्तु सौमित्रिं प्रेक्ष्य पार्श्वतः ।
परिदेवयितुं दीनं रामः समुपचक्रमे १९
पश्य लक्ष्मण वैदेह्या संत्यक्तं ह्रियमाणया ।
उत्तरीयमिदं भूमौ शरीराद्भूषणानि च २०
शाद्वलिन्यां ध्रुवं भूम्यां सीतया ह्रियमाणया ।
उत्सृष्टं भूषणमिदं तथा रूपं हि दृश्यते २१
एवमुक्तस्तु रामेण लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत् ।
नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले २२
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ।
ततस्तु राघवो वाक्यं सुग्रीवमिदमब्रवीत् २३
ब्रूहि सुग्रीव कं देशं ह्रियन्ती लक्षिता त्वया ।
रक्षसा रौद्ररूपेण मम प्राणप्रिया हृता २४
क्व वा वसति तद्रक्षो महद्व्यसनदं मम ।

लगाकर बिलमें स्थित क्रोधित सर्पके समान श्वास लेने लगे ॥ १८ ॥ न
रुका है आंसुओंका वेग जिनका ऐसे राम समीपमें लक्ष्मणको देख
दीनतापूर्वक विलाप करने लगे ॥ १९ ॥

हे लक्ष्मण! हरी हुई सीताने शरीरसे भूषण और वस्त्र पृथ्वीपर
थे इन्हें देखो ॥ २० ॥ हरी गई सीताने निश्चय ही हरी घासकी भूमि
ये भूषण डाले थे ऐसा ही रूपसे ज्ञात होता है ॥ २१ ॥ जब रामने ऐ
कहा तब लक्ष्मण बोले मैं न बाजूओंको जानता हूं और न कुण्डलों
नूपुर (बिछियों) को पहिचानता हूं [ये वही हैं] क्योंकि प्रति
चरण छूता था ॥ २२ ॥ तदनन्तर दीन हुए राम सुग्रीवसे बोले ॥ २
हे सुग्रीव मेरे प्राणोंकी प्यारी भयानक रूपवाले राक्षससे हरी हुई
किस जगह तुमने देखी थी यह बताओ ॥ २४ ॥ मुझको बड़े दुः
देनेवाला वह राक्षस कहां वसता है? जिसके कारण मैं सब राक्षसों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यन्निमित्तमहं सर्वान्नाशयिष्यामि राक्षसान् २५
हरता मैथिलीं येन मां च रोषयता ध्रुवम् ।
आत्मनो जीवितान्ताय मृत्युद्वारमपावृतम् २६
मम दयिततमा हृता वनाद्रजनिचरेण विमथ्य येन सा ।
कथय मम रिपुं तमद्य वै प्लवगपते यमसंनिधिं नयामि २७

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे षष्ठः सर्गः ।६।[२९३]

सप्तमः सर्गः ।

एवमुक्तस्तु सुग्रीवो रामेणार्तेन वानरः ।
अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं सबाष्पं बाष्पगद्गदः १
न जाने निलयं तस्य सर्वथा पापरक्षसः ।
सामर्थ्यं विक्रमं वापि दौष्कुलेयस्य वा कुलम् २
सत्यं तु प्रतिजानामि त्यज शोकमरिंदम ।
करिष्यामि तथा यत्नं यथा प्राप्स्यसि मैथिलीम् ३
रावणं सगणं हत्वा परितोष्यात्मपौरुषम् ।
तथास्मि कर्ता न चिराद्यथा प्रीतो भविष्यसि ४

मारूंगा ।। २५ ।। सीताको हरकर तथा मुझे अतिशय क्रोधित करके उस राक्षसने अपने जीवनके अन्तके लिये मृत्यु द्वार खोल लिया है ।। २६ ।। हे सुग्रीव ! जिस राक्षसने मेरी प्यारी वनसे बलात्कार हरली है तुम उस वैरीको बताओ मैं उसे आज यमलोकको पहुंचाऊंगा ।। २७ ।।

॥ यहाँ छठा सर्ग समाप्त हुआ ॥

पीडित रामके ऐसा कहनेपर आंसुओंसे गद्गद हुए सुग्रीव हाथ जोड-कर रोते हुए बोले ॥ १ ॥ कि मैं उस दुष्कुलोत्पन्न पापी राक्षसके स्थान सामर्थ्य, विक्रम वा कुलको अच्छे प्रकार नहीं जानता ॥ २ ॥ हे अरिन्दम मैं तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूं तुम शोकको त्यागो जैसे तुम सीताको पाओगे उसी तरह मैं उपाय करूंगा ॥ ३ ॥ मैं सेना समेत रावणको मार कर अपने पुरुषार्थको तृप्तकर शीघ्र ही वैसा करूंगा जिससे कि आप प्रसन्न होंगे ॥ ४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलं वैक्लव्यमालम्ब्य धैर्यमात्मगतं स्मर।
त्वद्विधानां न सदृशमीदृशं बुद्धिलाघवम् ५
मयापि व्यसनं प्राप्तं भार्याविरहजं महत्।
नाहमेव हि शोचामि धैर्यं न च परित्यजे ५
नाहं तामनुशोचामि प्राकृतो वानरोऽपि सन्।
महात्मा च विनीतश्च किं पुनर्धृतिमान्महान् ७
बाष्पमापतितं धैर्यान्निग्रहीतुं त्वमर्हसि।
मर्यादां सत्त्वयुक्तानां धृतिं नोत्स्रष्टुमर्हसि ८
व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे।
विमृशंश्च स्वया बुद्ध्या धृतिमान्नावसीदति ९
बालिशस्तु नरो नित्यं वैक्लव्यं योऽनुवर्तते।
स मज्जत्यवशः शोके भाराक्रान्तेव नौर्जले १०
एषोऽञ्जलिर्मया बद्धः प्रणयात्त्वां प्रसादये।
पौरुषं श्रय शोकस्य नान्तरं दातुमर्हसि ११

विकलताका सहारा छोडो, अपनेमें स्थित धैर्यको भजो, आप सदृश पुरुषोंके लिये ऐसी तुच्छता योग्य नहीं, ऐसा जानिये ॥ ५ ॥ स्त्रीके हरनेसे उत्पन्न हुआ बडा दुःख मैंने भी पाया है तो भी मैं ऐसा सोक नहीं करता और न धैर्यको त्यागता हूं ॥ ६ ॥ जब मैं साधारण वानर होकर भी उसका शोक नहीं करता तो फिर आप महात्मा सुशिक्षित तथा धैर्यशील होकर क्यों ऐसा करते हैं ? ॥ ७ ॥ आप आये हुए आंसुओंको धैर्यसे रोकने योग्य हो और आपको सत्त्वमें स्थित पुरुषोंकी मर्यादारूप धृतिको कभी न छोडना चाहिये ॥ ८ ॥ धैर्य युक्त मनुष्य दुःखमें, धनके नाश हो जानेमें, जीवनके नाश करनेवाले भयमें अपनी बुद्धिसे विचार कर दुःखी नहीं होता है ॥ ९ ॥

जो अज्ञानी मनुष्य हमेशा दीनताका अनुसरण करता है वह विवश होकर शोकमें डूबता है जैसे बोझा भरी हुई नांव जलमें डूब जाती है ॥ १० ॥ यह अञ्जलि मैंने बांधी है नम्रतासे आपको प्रसन्न करता हूं [आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये शोकमनुवर्तन्ते न तेषां विद्यते सुखम्।
तेजश्च क्षयते तेषां न त्वं शोचितुमर्हसि १२
शोकेनाभिप्रपन्नस्य जीविते चापि संशयः।
स शोकं त्यज राजेन्द्र धैर्यमाश्रय केवलम् १३
हितं वयस्यभावेन ब्रूमि नोपादिशामि ते।
वयस्यतां पूजयन्मे न त्वं शोचितुमर्हसि १४
मधुरं सांत्वितस्तेन सुग्रीवेण स राघवः।
मुखमश्रुपरिक्लिन्नं वस्त्रान्तेन प्रमार्जयत् १५
प्रकृतिस्थस्तु काकुत्स्थः सुग्रीववचनात्प्रभुः।
संपरिष्वज्य सुग्रीवमिदं वचनमब्रवीत् १६
कर्तव्यं यद्वयस्येन स्निग्धेन च हितेन च।
अनुरूपं च युक्तं च कृतं सुग्रीव तत्त्वया १७
एष च प्रकृतिस्थोऽहमनुनीतस्त्वया सखे।
दुर्लभो हीदृशो बन्धुरस्मिन्काले विशेषतः १८

पुरुषार्थका सहारा लो, शोकको अवसर न दो॥ ११ ॥ जो शोकका आश्रय लेते हैं उनको सुख नहीं होता और उनका तेज भी क्षीण हो जाता है इससे आप शोक न करो ॥ १२ ॥ शोकसे युक्त मनुष्यके जीवनमें भी सन्देह होता है। हे राजेन्द्र ! तुम शोकको छोडो और केवल धैर्यका आश्रय लो ॥ १३ ॥ मैं मित्रभावसे हित बातको कहता हूं आपको उपदेश नहीं करता, मेरी मित्रताका सत्कार करते हुए आप शोक मत करो ॥ १४ ॥

उस सुग्रीवने जब रामको ऐसे मोठेपनसे समझाया तो उन्होंने आंसुओंसे भरे हुए मुखको वस्त्रके किनारेसे पूंछा ॥ १५ ॥ सुग्रीवके वचनसे स्वस्थचित्त हो रामचन्द्र उसको आलिंगन कर यह वचन बोले ॥ १६ ॥ हे सुग्रीव ! हितैषी और विश्वासी मित्रको जो करना चाहिये उसके अनुरूप और युक्त ही तुमने किया है ॥ १७ ॥ हे मित्र ! तुमसे समझाया हुआ मैं स्वस्थचित्त हुआ हूं, ऐसा बन्धु, विशेष करके इस कालमें, मिलना दुर्लभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं तु यत्नस्त्वया कार्यो मैथिल्याः परिमार्गणे ।
राक्षसस्य च रौद्रस्य रावणस्य दुरात्मनः १९
मया च यदनुष्ठेयं विस्रब्धेन तदुच्यताम् ।
वर्षास्विव च सुक्षेत्रे सर्वं संपद्यते तव २०
मया च यदिदं वाक्यमभिमानात्समीरितम् ।
तत्त्वया हरिशार्दूल तत्त्वमित्युपधार्यताम् २१
अनृतं नोक्तपूर्वं मे न च वक्ष्ये कदाचन ।
एतत्ते प्रतिजानामि सत्येनैव शपाम्यहम् २२
ततः प्रहृष्टः सुग्रीवो वानरैः सचिवैः सह ।
राघवस्य वचः श्रुत्वा प्रतिज्ञातं विशेषतः २३
एवमेकान्तसंपृक्तौ ततस्तौ नरवानरौ ।
उभावन्योन्यसदृशं सुखं दुःखमभाषताम् २४
महानुभावस्य वचो निशम्य हरिर्नृपाणामधिपस्य तस्य ।
कृतं स मेने हरिवीरमुख्यस्तदा च कार्यं हृदयेन विद्वान् [२५]

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे सप्तमः सर्गः [७]

है ॥ १८ ॥ पर तुमको सीता और दुराचारी रौद्र, राक्षस रावणके ढूंढ़ने यत्न करना चाहिये ॥ १९ ॥ विश्वासी मुझको जो करना चाहिये कहो। वर्षा ऋतु में अच्छे खेतके समान मुझ में सब उत्पन्न हो सकता है ॥ २० ॥

हे वानरोंमें श्रेष्ठ! मैंने जो यह वाक्य अभिमानसे कहा था उसे सच समझो ॥ २१ ॥ मैंने न पहिले कभी झूठ कहा है और न कभी कहूंगा यह तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं और सत्यकी शपथ (सौगंद) खाता हूं ॥ २२ ॥ तब रामका वचन विशेष कर प्रतिज्ञाको सुनकर वानरमंत्रियों सहित सुग्रीव प्रसन्न हो गये॥२३॥ इस प्रकार एकांतमें मिले हुए दोनों नर वानरोंने एक दूसरेके सदृश सुखदुःखको कहा ॥ २४ ॥ वीर वानर प्रमुख विद्वान् सुग्रीवने महानुभाव, मनुष्योंमें श्रेष्ठ रामका वचन सुन हृदयसे अपने कार्यको किया हुआ माना ॥ २५ ॥

॥ यहाँ सप्तम सर्ग समाप्त ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टमः सर्गः ।

परितुष्टस्य सुग्रीवस्तेन वाक्येन हर्षितः ।
लक्ष्मणस्याग्रजं शूरमिदं वचनमब्रवीत् १
सर्वथाहमनुग्राह्यो देवतानां न संशयः ।
उपपन्नो गुणोपेतः सखा यस्य भवान्मम २
शक्यं खलु भवेद्राम सहायेन त्वयानघ ।
सुरराज्यमपि प्राप्तुं स्वराज्यं किमुत प्रभो ३
सोऽहं सभाज्यो बन्धूनां सुहृदां चैव राघव ।
यस्याग्निसाक्षिकं मित्रं लब्धं राघववंशजम् ४
अहमप्यनुरूपस्ते वयस्यो ज्ञास्यसे शनैः ।
न तु वक्तुं समर्थोऽहं त्वयि आत्मगतान्गुणान् ५
महात्मनां तु भूयिष्ठं त्वद्विधानां कृतात्मनाम् ।
निश्चला भवति प्रीतिर्धैर्यमात्मवतां वर ६
रजतं वा सुवर्णं वा शुभान्याभरणानि च ।
अविभक्तानि साधूनामवगच्छन्ति साधवः ७

उस वाक्यसे प्रसन्न हुए वानर सुग्रीव लक्ष्मणके सामने रामसे यह वचन बोले ॥ १ ॥ मैं निश्चय ही देवताओंका सर्वथा प्यारा हो गया जिस मेरे उचित गुणोंसे युक्त आप मित्र हुए हैं ॥ २ ॥ हे पाप रहित राम ! हे प्रभो ! आपके सहायसे मैं देवोंके राज्यको भी पा सकता हूं फिर अपने राज्यका क्या कहना है अर्थात् उसे तो अवश्य पा सकूंगा ॥ ३ ॥ हे राम ! जिसके रघुवंशी राम अग्निकी साक्षीसे मित्र हुए हैं वह मैं बन्धु और मित्रोंसे पूजने योग्य हूं ॥ ४ ॥ मैं भी तुम्हारे अनुरूप हूं—यह आप शनैः शनैः जान जांयगे। मैं अपने में स्थित गुणोंको स्वयं नहीं कह सकता ॥ ५ ॥

महात्मा ज्ञानयुक्त आप सदृशोंकी प्रीति अतिशय निश्चल होती है जैसे आत्मज्ञानियोंका सन्तोष ॥ ६ ॥ मित्रोंके चांदी या सोना वस्त्र या विना भाग किये हुए आभरण मित्र पाते हैं ॥ ७ ॥ धनवान् हो या निर्धन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आढ्यो वापि दरिद्रो वा दुःखितः सुखितोऽपि वा ।
निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्यः परमा गतिः ८
धनत्यागः सुखत्यागो देशत्यागोऽपि वानघ ।
वयस्यार्थे प्रवर्तन्ते स्नेहं दृष्ट्वा तथाविधम् ९
तत्तथेत्यब्रवीद्रामः सुग्रीवं प्रियदर्शनम् ।
लक्ष्मणस्याग्रतो लक्ष्म्या वासवस्येव धीमतः १०
ततो रामं स्थितं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महाबलम् ।
सुग्रीवः सर्वतश्चक्षुर्वने लोलमपातयत् ११
स ददर्श ततः सालमविदूरे हरीश्वरः ।
सुपुष्पमीषत्पत्राढ्यं भ्रमरैरुपशोभितम् १२
तस्यैकां पर्णबहुलां शाखां भङ्क्त्वा सुशोभिताम् ।
रामस्यास्तीर्य सुग्रीवो निषसाद सराघवः १३
तावासीनौ ततो दृष्ट्वा हनूमानपि लक्ष्मणम् ।
शालशाखां समुत्पाट्य विनीतमुपवेशयत् १४

दुःखी हो या सुखी निर्दोष हो वा सदोष [मित्रकी] मित्र ही परम गति है ॥ ८ ॥ अपने स्नेहके समान मित्रका स्नेह देखकर मित्रके लिये धन त्यागना, सुखका त्यागना और देहका त्यागना भी प्रवृत्त होता है ॥ ९ ॥ कान्तिमें इन्द्र के समान स्थित, बुद्धिमान् लक्ष्मण के आगे रामने प्रियबोलने वाले सुग्रीव से "यह सच है ।" यह कह दिया ॥ १० ॥

तदनन्तर राम और महाबली लक्ष्मणको ठहरा देखकर सुग्रीव वनमें चारों ओर देखने लगे ॥ ११ ॥ तब वानरोंके स्वामी उस सुग्रीवने श्रेष्ठ फूलवाले पत्तोंसे युक्त और भौंरोंसे शोभित सालके वृक्षको समीपमें देखा ॥ १२ ॥ उस सालकी बहुत पत्तोंवाली, अच्छे प्रकार पुष्पित एक शाखाको तोड़कर और बिछाकर राम सहित सुग्रीव बैठ गये ॥ १३ ॥ तदनन्तर उन दोनोंको बैठा देखकर हनुमान्ने भी सालवृक्षकी शाखाको तोडकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखोपविष्टं रामं तु प्रसन्नमुदधिं यथा ।
सालपुष्पावसंकीर्णे तस्मिन्गिरिवरोत्तमे १५
ततः प्रहृष्टः सुग्रीवः श्लक्ष्णया शुभया गिरा ।
उवाच प्रणयाद्रामं हर्षव्याकुलिताक्षरम् १६
अहं विनिकृतो भ्रात्रा चराम्येष भयार्दितः ।
ऋष्यमूकं गिरिवरं हृतभार्यः सुदुःखितः १७
सोहं त्रस्तो भये मग्नो वने संभ्रान्तचेतनः ।
वालिना निकृतो भ्रात्रा कृतवैरश्च राघव १८
वालिनो मे भयार्तस्य सर्वलोकाभयंकर ।
ममापि त्वमनाथस्य प्रसादं कर्तुमर्हसि १९
एवमुक्तस्तु तेजस्वी धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
प्रत्युवाच स काकुत्स्थः सुग्रीवं प्रहसन्निव २०
उपकारफलं मित्रमपकारोऽरिलक्षणम् ।
अद्यैव तं वधिष्यामि तव भार्यापहारिणम् २१

लक्ष्मणको बिठलाया ॥ १४ ॥ पश्चात् फल और फूलोंसे भरे हुए उस श्रेष्ठ पर्वत पर सुखपूर्वक बैठे हुए, समुद्रके समान गम्भीर, सर्वप्रिय रामसे प्रसन्न हुए सुग्रीव मधुरवाणीमें आनन्दसे व्याकुलित अक्षरवाले वाक्यको नम्रतासे बोले ॥ १५–१६ ॥

भाईसे तिरस्कृत किया हुआ भयसे पीडित, भार्याहीन, दुःखयुक्त मैं यहां विचरता हूं ॥ १७ ॥ हे राम ! डरा हुआ, भयमें डूबा, विकल बुद्धि--वाला, वालीसे अनादरको प्राप्त हुआ और भाई वालीसे वैर बंधा हुआ मैं यहां बसता हूं ॥ १८ ॥ हे सब लोकोंको अभय देनेवाले ! वालीके भयसे पीडित मुझ अनाथके ऊपर तुम प्रसाद करनेके योग्य हो ॥ १९ ॥ उक्त--प्रकारसे कहे गये, तेजस्वी, धर्मज्ञ और धर्मप्रेमी राम सुग्रीवसे मुसकराते हुए बोले ॥ २० ॥ मित्रका फल उपकार होता है और अपकार करना वैरी-का चिन्ह है, अतः तुम्हारी स्त्रीके हरनेवाले उस (वाली) को आज ही मैं मारूगा ॥ २१ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इमे हि मे महाभाग पत्रिणस्तिग्मतेजसः ।
कार्तिकेयवनोद्भूताः शरा हेमविभूषिताः २२
कङ्कपत्रपरिच्छन्ना महेन्द्राशनिसंनिभाः ।
सुपर्वाणः सुतीक्ष्णाग्राः सरोषा भुजगा इव २३
वालिसंज्ञममित्रं ते भ्रातरं कृतकिल्बिषम् ।
शरैर्विनिहतं पश्य विकीर्णमिव पर्वतम् २४
राघवस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवो वाहिनीपतिः ।
प्रहर्षमतुलं लेभे साधुसाध्विति चाब्रवीत् २५
राम शोकाभिभूतोऽहं शोकार्तानां भवान्गतिः ।
वयस्य इति कृत्वा हि त्वय्यहं परिदेवये २६
त्वं हि पाणिप्रदानेन वयस्यो मेऽग्निसाक्षिकम् ।
कृतः प्राणैर्बहुमतः सत्येन च शपाम्यहम् २७
वयस्य इति कृत्वा च विस्रब्धः प्रवदाम्यहम् ।
दुःखमन्तर्गतं तन्मे मनो हरति नित्यशः २८
एतावदुक्त्वा वचनं बाष्पदूषितलोचनः ।

महावेगवाले, पंखयुक्त, क्रूर तेजवाले, शरके वनमें उत्पन्न हुए, सुवर्ण[से] शोभित, कङ्कके पत्रोंसे ढके हुए, इन्द्रवज्रके समान, श्रेष्ठ पुंखवाले, [क्रोध] समेत सर्पके समान पैने मुखवाले ये मेरे बाण हैं ॥ २२–२३ ॥ [तुम्हारे] इन बाणोंसे जिसने अपराधको किया है ऐसे भाई नामधारी [शत्रु], वालीको टूटे हुए पर्वतके समान मरा हुआ देख लेना ॥ २४ ॥ राघ[वके] वचनको सुनकर सेनापति सुग्रीव अत्यन्त हर्षको प्राप्त हुआ और 'साधु [साधु] साधु !' यह कहने लगा ॥ २५ ॥

हे राम ! मैं शोकसे आक्रान्त हो रहा हूं, शोकपीडितोंके आपही [गति] हैं, मित्र बनाकर मैं तुम्हारे समीपमें विलाप करता हूं ॥ २६ ॥ [आप] हाथके पकडनेसे अग्निकी साक्षीमें आप मित्र हुए हो, मेरे [प्राणों]से भी अधिक प्यारे हो, मैं सत्यकी शपथ खाता हूं ॥ २७ ॥ मित्र [बना]कर मैं विश्वस्त हो जो भीतरी दुःख मेरे मनको नित्य हरता है [उसको] कहता हूं ॥ २८ ॥ इतना वचन कह आसुओंसे भर गये हैं नेत्र जिनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाष्पदूषितया वाचा नोच्चैः शक्नोति भाषितुम् २९
बाष्पवेगं तु सहसा नदीवेगमिवागतम् ।
धारयामास धैर्येण सुग्रीवो रामसंनिधौ ३०
स निगृह्य तु तं बाष्पं प्रमृज्य नयने शुभे ।
विनिःश्वस्य च तेजस्वी राघवं पुनरूचिवान् ३१
पुराहं वालिना राम राज्यात्स्वादवरोपितः ।
परुषाणि च संश्राव्य निर्धूतोऽस्मि बलीयसा ३२
हृता भार्या च मे तेन प्राणेभ्योऽपि गरीयसी ।
सुहृदश्च मदीया ये संयता बन्धनेषु ते ३३
यत्नवांश्च स दुष्टात्मा मद्विनाशाय राघव ।
बहुशस्तत्प्रयुक्ताश्च वानरा निहता मया ३४
शङ्कया त्वेतयाहं च दृष्ट्वा त्वामपि राघव ।
नोपसर्पाम्यहं भीतो भये सर्वे हि बिभ्यति ३५
केवलं हि सहाया मे हनुमत्प्रमुखास्त्विमे ।

सुग्रीव आंसुओंसे रुकी हुई वाणीसे ऊंचे स्वरसे न बोल सके ॥ २९ ॥ एकदम नदीके वेगके समान आये हुए आंसुओंके वेगको सुग्रीवने रामके समीपमें धैर्यसे रोक लिया ॥ ३० ॥ तेजस्वी सुग्रीव उन आंसुओंको रोक कर, श्रेष्ठ नेत्रोंको पौंछकर और लम्बी श्वास लेकर रामसे बोले ॥ ३१ ॥

हे राम ! प्रथम तो मैं बलवान् वालीसे यौवराज्य पदसे उतारा हुआ और कठोर वाक्य सुनाकर तिरस्कृत किया गया हूं, [फिर] उसने प्राणोंसे भी प्यारी मेरी स्त्री हरली और जो कुछ मेरे मित्र थे वे सब कारागृहमें डाल दिये ॥ ३२-३३ ॥ हे राम ! दुष्ट आत्मावाला वाली मेरे नाशके लिये उपाय कर रहा है उसके नियुक्त किये हुए बहुतसे वानर मैंने मारे हैं ॥ ३४ ॥ हे राम ! इसी शङ्कासे यहां आपको देख कर भयभीत हो मैं आपके समीप नहीं गया था क्योंकि भयसें सब डरते है ॥ ३५ ॥ केवल

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतोहं धारयाम्यद्य प्राणान्कृच्छ्रगतोपि सन् ३६
एते हि कपयः स्निग्धा मां रक्षन्ति समन्ततः ।
सह गच्छन्ति गन्तव्ये नित्यं तिष्ठन्ति चास्थिते ३७
संक्षेपस्त्वेष मे राम किमुक्त्वा विस्तरं हि ते ।
स मे ज्येष्ठो रिपुर्भ्राता वाली विश्रुतपौरुषः ३८
तद्विनाशेपि मे दुःखं प्रमृष्टं स्यादनन्तरम् ।
सुखं मे जीवितं चैव तद्विनाशनिबन्धनम् । ३९
एष मे राम शोकान्तः शोकार्तेन निवेदितः ।
दुःखितः सुखितो वापि सख्युर्नित्यं सखा गतिः ४०
श्रुत्वैतच्च वचो रामः सुग्रीवमिदमब्रवीत् ।
किंनिमित्तमभूद्वैरं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ४१
सुखं हि कारणं श्रुत्वा वैरस्य तव वानर ।
आनन्तर्याद्विधास्यामि संप्रधार्य बलाबलम् ४२

ये हनुमान् आदि मेरे सहायक है, इसीसे मैं कष्टमें प्राप्त हुआ भी प्राणोंको धारण कर रहा हूं ॥ ३६ ॥

ये ही हितैषी वानर सब ओरसे मेरी रक्षा करते हैं–मेरे चलने पर चलते हैं और स्थित होनेपर नित्य मेरे पास रहते हैं ॥ ३७ ॥ हे रघु... मेरे कहनेका सार यही है, विस्तारपूर्वक कहनेसे क्या लाभ ? वह जो ... बडा भाई प्रसिद्ध बलवाला वैरी वाली है उसीके नाशके अनन्तर ... दुःख नष्ट होगा, मेरा जीवन और सुख उसके नाशसे ही बँधा हुआ ... ॥ ३८–३९ ॥ हे राम । यही मेरे शोकका अन्त है जो शोक... मैंने निवेदन कर दिया, दुःखी हो या सुखी मित्र की मित्र ही ... है ॥ ४० ॥

इस वचनको सुनकर राम सुग्रीवसे बोले–किस कारण वैर हुआ ... यह मैं अच्छी तरह सुनना चाहता हूं ॥ ४१ ॥ हे वानर । तुम्हारे ... कारण सुनकर बलाबल अर्थात् वैरका कारण बडा है या वैर यह विचार... पीछेसे तुम्हारे सुखका विधान करूंगा ॥ ४२ ॥ बलवान् मेरा क्रोध ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलवान्हि ममामर्षः श्रुत्वा त्वामवमानितम्।
वर्धते हृदयोत्कम्पी प्रावृड्वेग इवाम्भसः ४३
हृष्टः कथय विस्रब्धो यावदारोप्यते धनुः।
सृष्टश्च हि मया बाणो निरस्तश्च रिपुस्तव ४४
एवमुक्तस्तु सुग्रीवः काकुत्स्थेन महात्मना।
प्रहर्षमतुलं लेभे चतुर्भिः सह वानरैः ४५
ततः प्रहृष्टवदनः सुग्रीवो लक्ष्मणाग्रजे।
वैरस्य कारणं तत्त्वमाख्यातुमुपचक्रमे ४६

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० किष्किन्धाकाण्डे अष्टमः सर्गः ।८।[३६४]

नवमः सर्गः।

वाली नाम मम भ्राता ज्येष्ठः शत्रुनिषूदनः।
पितुर्बहुमतो नित्यं मम चापि तथा पुरा १
पितर्युपरते तस्मिञ्ज्येष्ठोयमिति मन्त्रिभिः।
कपी नामीश्वरो राज्ये कृतः परमसंमतः २

...मानित हुए तुमको सुनकर हृदयको कंपाता हुआ वर्तमान है जैसे वर्षा-ऋतुमें जलका वेग ॥ ४३ ॥ प्रसन्न और विश्वसित हो तुम कहो जब तक कि मैं धनुषको चढाऊं, मैंने बाण छोडा और तुम्हारे वैरीका नाश हुआ यह समझो ॥ ४४ ॥ महात्मा रामने सुग्रीवसे ऐसा कहा तब वह चारों वानरोंके साथ अतुल आनन्दको प्राप्त होगया ॥ ४५ ॥ तदनन्तर प्रसन्न-वदन सुग्रीवने रामचन्द्रके प्रति वैरके मूल कारणको कहना प्रारम्भ किया ॥ ४६ ॥

॥ यहाँ आठवा सर्ग समाप्त हुआ ॥

वैरियोंका नाश करनेवाला वालीनाम मेरा बडा भाई है, हमेशा पिता उसको बहुत मानते थे और उसी प्रकार मैं भी पहिले उसको बहुत मानता था ॥ १ ॥ हमारे पिताके मर जानेपर मंत्रियोंने "यह बडा है" ऐसा समझकर उसे सर्वसम्मतिसे वानरोंका राजा बना दिया ॥ २ ॥ बाप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

राज्यं प्रशासतस्तस्य पितृपैतामहं महत् ।
अहं सर्वेषु कालेषु प्रणतः प्रेष्यवात्स्थितः ३
मायावी नाम तेजस्वी पूर्वजो दुन्दुभेः सुतः ।
तेन तस्य महद्वैरं वालिनः स्त्रीकृतं पुरा ४
स तु सुप्ते जने रात्रौ किष्किन्धाद्वारमागतः ।
नर्दति स्म सुसंरब्धो वालिनं चाह्वयद्रणे ५
प्रसुप्तस्तु मम भ्राता नर्दतो भैरवस्वनम् ।
श्रुत्वा न ममृषे वाली निष्पपात जवात्तदा ६
स तु वै निःसृतः क्रोधात्त हन्तुमसुरोत्तमम् ।
वार्यमाणस्ततः स्त्रीभिर्मया च प्रणतात्मना ७
स तु निर्धूय ताः सर्वा निर्जगाम महाबलः ।
ततोहमपि सौहार्दान्निःसृतो वालिना सह ८
स तु मे भ्रातरं दृष्ट्वा मां च दूरादवस्थितम् ।
असुरो जातसंत्रासः प्रदुद्राव तदा भृशम् ९

दादोंसे बडे राज्यको पालन करते हुए उसके पास मैं सर्वदा दा[स] समान नम्र हुआ रहता था ॥ ३ ॥ मायावी नामक एक तेजस्वी दुन्दुभिका बडा पुत्र था उसके साथ वालीका स्त्रीके कारण बड़ा वैर यह पहिले सुना गया है ॥ ४ ॥ वह आधी रात्रिमें किष्किन्धाके द्वा[र] आया और क्रोधित हो शब्द करने लगा और वालीको लडनेके [लिये] आहूत किया ॥ ५ ॥

सोता हुआ मेरा भाई वाली गर्जते हुए उसका भयानक शब्द सु[न] न सह सका और वेगसे बाहर निकला ॥६॥ वह उस दैत्यके मारनेको क्रो[ध से] बाहर निकला, तदनन्तर नम्र हुए मैंने और स्त्रियोंने उसका नि[वारण] किया ॥ ७ ॥ महाबली वाली हम सबोंको फटकार कर बाहर नि[कला] उसके साथ मैं भी स्नेहसे बाहर निकला ॥ ८ ॥ मेरे भ्राता और दूर[से] मुझको देख कर उत्पन्न हुआ है भय जिसको ऐसा वह दैत्य वहांसे [तेज] दौडने लगा ॥ ९ ॥ भयभीत हुए उसके दौडनेपर हम दोनों भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मिन्द्रवति संत्रस्ते ह्यावां द्रुततरं गतौ ।
प्रकाशोऽपि कृतो मार्गश्चन्द्रेणोद्गच्छता तदा १०
स तृणैरावृतं दुर्गं धरण्या विवरं महत् ।
प्रविवेशासुरो वेगादावामासाद्य विष्ठितौ ११
तं प्रविष्टं रिपुं दृष्ट्वा बिलं रोषवशं गतः ।
मामुवाच ततो वाली वचनं क्षुभितेन्द्रियः १२
इह तिष्ठाद्य सुग्रीव बिलद्वारि समाहितः ।
यावदत्र प्रविश्याहं निहन्मि समरे रिपुम् १३
मया त्वेतद्वचः श्रुत्वा याचितः स परंतपः ।
शापयित्वा स मां पद्भ्यां प्रविवेश बिलं ततः १४
तस्य प्रविष्टस्य बिलं साग्रः संवत्सरो गतः ।
स्थितस्य च बिलद्वारि स कालो व्यत्यवर्तत १५
अहं तु नष्टं तं ज्ञात्वा स्नेहादागतसंभ्रमः ।
भ्रातरं न प्रपश्यामि पापशङ्कि च मे मनः १६

दौडे और उदय होते हुए चन्द्रमाने मार्गमें प्रकाश कर दिया ॥ १० ॥

वह असुर तृणोंसे ढके हुए दुर्गरूप पृथ्वीके बडे बिलमें जल्दीसे घुस गया और हम दोनों वहां खडे रह गये ॥ ११ ॥ रोषके वशमें प्राप्त हुआ तथा चलायमान हो गई हैं इन्द्रियां जिसकी ऐसा वाली उस वैरीको बिलमें घुसा देखकर मुझसे बोला ॥ १२ ॥ हे सुग्रीव ! तुम स्वस्थचित्त हो बिलके द्वारपर तबतक बैठो जबतक कि मैं इसमें घुसकर एकदम वैरीको न मार दूं ॥ १३ ॥ मैंने यह वचन सुनकर परमतपस्वी वालीके साथ घुसनेकी प्रार्थना की, किन्तु वह मुझे अपने पैरोंकी शपथ देकर बडे बिलमें घुस गया ॥ १४ ॥ बिलमें घुसे हुए वालीको सम्पूर्ण वर्ष व्यतीत हो गया और द्वारपर खडे हुए मुझे भी एक वर्ष बीत गया ॥ १५ ॥

मैं उसको नष्ट हुआ जानकर स्नेहसे भ्रमयुक्त हो गया और भाईको न देखा इससे मेरा मन उसकी मृत्युकी आशङ्का करने लगा ॥ १६ ॥ बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अथ दीर्घस्य कालस्य बिलात्तस्माद्विनिःसृतम् ।
सफेनं रुधिरं दृष्ट्वा ततोहं भृशदुःखितः १७
नर्दतामसुराणां च ध्वनिर्मे श्रोत्रमागतः ।
न रतस्य च सङ्ग्रामे क्रोशतोपि स्वनो गुरोः १८
अहं त्ववगतो बुद्ध्या चिह्नैस्तैर्भ्रातरं हतम् ।
पिधाय च बिलद्वारं शिलया गिरिमात्रया १९
शोकार्तश्चोदकं कृत्वा किष्किन्धामागतः सखे ।
गूहमानस्य मे तत्त्वं यत्नतो मन्त्रिभिः श्रुतम् २०
ततोहं तैः समागम्य समेतैरभिषेचितः ।
राज्यं प्रशासतस्तस्य न्यायतो मम राघव २१
आजगाम रिपुं हत्वा दानवं स तु वानरः ।
अभिषिक्तं तु मां दृष्ट्वा क्रोधात्संरक्तलोचनः २२
मदीयान्मन्त्रिणो बद्ध्वा परुषं वाक्यमब्रवीत् ।
निग्रहे च समर्थस्य तं पापं प्रति राघव २३

समयके अनन्तर उस बिलसे फेन समेत लाल वर्णका रुधिर निकला, उसे देखकर बडा दुःखी हुआ ॥ १७ ॥ गर्जते हुए दैत्योंकी ध्वनि मेरे कान तक आई और संग्राममें परास्त हुए तथा चिल्लाते हुए भाईका शब्द नहीं मेरे कान तक आया ॥ १८ ॥ मैं बुद्धिसे समझा कि भाई मारा गया, मैंने मित्र ! पर्वतकी शिलासे बिलके द्वारको रोककर शोकपीडित हुआ मैं जलाञ्जलि दान (तर्पण) करके किष्किन्धापुरीको वापिस आ गया ॥ १९ ॥ [वालीके मरणको] यत्न पूर्व छिपाते हुए भी मुझसे मन्त्रियोंने यथार्थ वार्ता सुन ली, तदनन्तर सबोंने मिलकर मेरा अभिषेक कर दिया ॥ २० ॥

हे राम ! न्यायसे राज्यका शासन करते हुए मेरे सामने वाली उस दैत्यको मारकर आया ॥ २१ ॥ लाल हो रहे हैं नेत्र जिसके ऐसा वाली राज्यपर स्थित मुझे देखकर मेरे मन्त्रियोंको बांधकर कठोर वाक्य बोला ॥ २२ ॥ हे राम ! दण्ड देनेमें समर्थ भी मेरी भाईके गौरवसे बंधी हुई बुद्धि उस पापीके प्रति न लौटी ॥ २३ ॥ वह मेरा भाई वैरीको मारकर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न प्रावर्तत मे बुद्धिर्भ्रातृगौरवयन्त्रिता ।
हत्वा शत्रुं स मे भ्राता प्रविवेश पुरं तदा   २४
मानयंस्तं महात्मानं यथावच्चाभिवादयम् ।
उक्ताश्च नाशिषस्तेन प्रहृष्टेनान्तरात्मना   २५
नत्वा पादावहं तस्य मुकुटेनास्पृशं प्रभो ।
अपि वाली मम क्रोधान्न प्रसादं चकार सः   २६

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे नवमः सर्गः ॥९॥ [३९०]

दशमः सर्गः ।

ततः क्रोधसमाविष्टं संरब्धं तमुपागतम् ।
अहं प्रसादयांचक्रे भ्रातरं हितकाम्यया   १
दिष्ट्यासि कुशली प्राप्तो निहतश्च त्वया रिपुः ।
अनाथस्य हि मे नाथस्त्वमेको नाथ नन्दन   २
इदं बहुशलाकं ते पूर्णचन्द्रमिवोदितम् ।
छत्रं सवालव्यजनं प्रतीच्छस्व मया धृतम्   ३
आर्तस्तस्य बिलद्वारि स्थितः संवत्सरं नृप ।

नगरीमें आया । उस महात्माका सम्मान करते हुए मैंने अभिवादन किया २४ तौ भी उसने सन्तुष्ट हुई आत्मा से आशीर्वाद न दिया ॥ २५ ॥ हे प्रभो ! मैंने नव कर उसके पैरोंको मुकुटसे भी छुआ तौ भी वाली क्रोधके कारण मुझसे प्रसन्न न हुआ ॥ २६ ॥

॥ यहाँ नववा सर्ग समाप्त हुआ ॥

तदनन्तर क्रोधपूर्ण, क्रोधसूचक चेष्टायुक्त, पास आये हुए उस भाईको अपने कल्याणकी इच्छासे मैं प्रसन्न करने लगा ॥ १ ॥ ईश्वरकी कृपासे आप कुशलपूर्वक आगये हो और शत्रुको आपने मार दिया है। हे अनाथनन्दन ! मुझ अनाथके आप ही एक नाथ हो ॥ २ ॥ मुझसे अर्पण किये, बहुत शलाखोंवाले, उदय हुए पूर्णचन्द्रके समान, चामर सहित इस छत्रको ग्रहण करो ॥ ३ ॥ हे राजन् ! हे नाथ ! पीडित हुआ मैं बिलके द्वारपर वर्ष भर तक स्थित रहा, इसके अनन्तर बिलसे निकले हुए रक्तको द्वारपर देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दृष्ट्वा च शोणितं द्वारि बिलाच्चापि समुत्थितम् ४
शोकसंविग्नहृदयो भृशं व्याकुलितेन्द्रियः ।
अपिधाय बिलद्वारं शैलशृङ्गेण तत्तदा ५
तस्माद्देशादपाक्रम्य किष्किन्धां प्राविशं पुनः ।
विषादात्त्विह मां दृष्ट्वा पौरैर्मन्त्रिभिरेव च ६
अभिषिक्तो न कामेन तन्मे क्षन्तुं त्वमर्हसि ।
त्वमेव राजा मानार्हः सदा चाहं यथा पुरा ७
राजभावे नियोगोऽयं मम त्वद्विरहात्कृतः ।
सामात्यपौरनगरं स्थितं निहतकण्टकम् ८
न्यासभूतमिदं राज्यं तव निर्यातयाम्यहम् ।
मा च रोषं कृथाः सौम्य मम शत्रुनिषूदन ९
याचे त्वां शिरसा राजन्मया बद्धोऽयमञ्जलिः ।
बलादस्मिन्समागम्य मन्त्रिभिः पुरवासिभिः १०
राज्यभावे नियुक्तोऽहं शून्यदेशजिगीषया ।

शोकपूर्ण हृदय तथा व्याकुलेन्द्रिय हो बिलके द्वारको पर्वतकी शिर ढांककर उस स्थानसे निकल किष्किन्धामें लौट आया ॥ ४ ॥

यहां दुःखसे आये हुए मुझे देखकर नगरवासी तथा मन्त्रियोंने अभिषेक कर दिया, मेरी इच्छासे नहीं किया गया, सो आप क्षमा की ॥ ६ ॥ तुम ही सदा मानने योग्य राजा हो और मैं जैसे पहिले था समान हूं, मैंने आपके वियोगसे यह राजभावमें अपनेको नियुक्त कि था ॥ ७ ॥ मंत्री, नगरवासी और नगर समेत, कण्टकरहित, धरोहर सम इस तुम्हारे राज्यको मैं चलाता था ॥ ८ ॥ हे सौम्य ! मेरे ऊपर क्रोध मत क हे शत्रुओंके नाश करनेवाले ! शिरसे तुम्हारी प्रार्थना करता हूं, हे राज मैंने यह अञ्जलि बांधी है ॥ ९ ॥ नगरवासी और मन्त्रियोंने मिल राजासे शून्य देशको वशमें रखनेकी इच्छासे जबरदस्ती मुझे नियुक्त दिया था ॥ १० ॥

मधुर बोलते हुए मुझे वह वानर वाली झिडक करके और ' तुझे धि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्निग्धमेवं ब्रुवाणं मां स विनिर्भर्त्स्य वानरः ११
धिक्त्वामिति च मामुक्त्वा बहु तत्तदुवाच ह ।
प्रकृतीश्च समानीय मन्त्रिणश्चैव संमतान् १२
मामाह सुहृदां मध्ये वाक्यं परमगर्हितम् ।
विदितं वो मया रात्रौ मायावी स महासुरः १३
मां समाह्वयत क्रुद्धो युद्धाकाङ्क्षी तदा पुरा ।
तस्य तद्भाषितं श्रुत्वा निःसृतोऽहं नृपालयात् १४
अनुयातश्च मा तूर्णमयं भ्राता सुदारुणः ।
स तु दृष्ट्वैव मां रात्रौ सद्वितीयं महाबलः १५
प्राद्रवद्भयसंत्रस्तो वीक्ष्यावां समुपागतौ ।
अभिद्रुतस्तु वेगेन विवेश स महाबिलम् १६
तं प्रविष्टं विदित्वा तु सुघोरं सुमहद्बिलम् ।
अयमुक्तोथ मे भ्राता मया तु क्रूरदर्शनः १७
अहत्वा नास्ति मे शक्तिः प्रतिगन्तुमितः पुरीम् ।
बिलद्वारि प्रतीक्ष त्वं यावदेनं निहन्म्यहम् १८

है' ऐसा मुझसे कहकर बहुतसी बातें कहने लगा ॥ ११ ॥ वह सब ओरसे मंत्रियों और प्रजाओंको बुलाकर मित्रोंके बीचमें मेरे प्रति अतिनिन्दित वाक्य बोला ॥ १२ ॥ तुम सबको यह विदित ही है जो युद्धकी इच्छावाले, दुर्बुद्धि, क्रूर, मायावी महासुरने मुझे रात्रिमें [युद्धार्थ] बुलाया था ॥१३॥ उसका वह वचन सुनकर मैं राजभवनसे निकला और कठोर हृदय भ्राता जल्दीसे मेरे पीछे गया था ॥ १४ ॥ महाबली वह दैत्य दूसरे भाई समेत मुझे रात्रिमें देखकर भयभीत हो भागा और हम दोनों भी उसे देखकर पीछे भागे ॥ १५ ॥

पीछेसे भगाये जानेपर वह वेगसे बडे बिलमें घुस गया ॥ १६ ॥ घोर उस दैत्यको बडे बिलमें घुसा हुआ जानकर मैंने इस क्रूर दर्शनवाले भाईसे कहा ॥ १७ ॥ इसे विना मारे नगरको लौटनेकी मेरी शक्ति नहीं है जबतक मैं इसे मारूं तबतक तुम बिलके द्वारपर प्रतीक्षा करो ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स्थितोऽयमिति मत्वाहं प्रविष्टस्तु दुरासदम्।
तं मे मार्गयतस्तत्र गतः संवत्सरस्तदा १९
स तु दृष्टो मया शत्रुरनिर्वेदाद्भयावहः।
निहतश्च मया सद्यः स सर्वैः सह बन्धुभिः २०
तस्यैव च प्रवृत्तेन रुधिरौघेण तद्बिलम्।
पूर्णमासीद्दुराक्रामं स्तनतस्तस्य भूतले २१
सूदयित्वा तु तं शत्रुं विक्रान्तं तमहं सुखम्।
निष्क्रामं नेह पश्यामि बिलस्य पिहितं मुखम् २२
विक्रोशमानस्य तु मे सुग्रीवेति पुनः पुनः।
यतः प्रतिवचो नास्ति ततोऽहं भृशदुःखितः २३
पादप्रहारैस्तु मया बहुभिः परिपातितम्।
ततोऽहं तेन निष्क्रम्य पथा पुरमुपागतः २४
तत्रानेनास्मि संरुद्धो राज्यं मृगयतात्मनः।
सुग्रीवेण नृशंसेन विस्मृत्य भ्रातृसौहृदम् २५

"यह स्थित है" यह समझ कर तब मैं घोर बिलमें घुस गया [illegible] उसको तलाश करते हुए मुझको एक वर्ष बीत गया ॥ १९ ॥ भयान[illegible] वह शत्रु मैंने देखा और मैंने उस असुरको वहां बन्धुओं समेत बि[illegible] कष्टके मार डाला ॥ २० ॥ भूमितलपर गर्जते हुए उसका वह बिल उ[illegible] मुखसे निकलते रुधिरप्रवाहसे पूर्ण हो दुराक्रमणीय हो गया ॥ २१ ॥ पराक्रमी, उस दुन्दुभिके पुत्र वैरीको मारकर निकलते हुए मुझे बिल[illegible] ढका हुआ द्वार न दिखाई पडा ॥ २२ ॥

'हे सुग्रीव !' इस प्रकार बार बार चिल्लाते हुए मुझे जब लौट[illegible] उत्तर न मालूम पडा तब मैं बडा दुःखी हो गया ॥ २३ ॥ मैंने बहुत[illegible] पैरोंके प्रहारसे उसे तोड डाला, तब मैं उस रंध्रमार्गसे निकलकर नगरमें आया हूं ॥ २४ ॥ अपने लिये राज्यकी चाहना करते हुए इस दुष्ट सुग्रीवने भ्रातृस्नेहको भुलाकर बिलमें मुझे बन्द कर दिया ॥ २५ ॥ दूर हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवमुक्त्वा तु मां तत्र वस्त्रेणैकेन वानरः ।
तदा निर्वासयामास वाली विगतसाध्वसः २६
तेनाहमपाविद्धश्च हृतदारश्च राघव ।
तद्भयाच्च महीं सर्वां क्रान्तवान्सवनार्णवाम् २७
ऋष्यमूकं गिरिवरं भार्याहरणदुःखितः ।
प्रविष्टोऽस्मि दुराधर्षं वालिनः कारणान्तरे २८
एतत्ते सर्वमाख्यातं वैरानुकथनं महत् ।
अनागसा मया प्राप्तं व्यसनं पश्य राघव २९
वालिनश्च भयात्तस्य सर्वलोकभयापह ।
कर्तुमर्हसि मे वीर प्रसादं तस्य निग्रहात् ३०
एवमुक्तः स तेजस्वी धर्मज्ञो धर्मसंहितम् ।
वचनं वक्तुमारेभे सुग्रीवं प्रहसन्निव ३१
अमोघाः सूर्यसंकाशा निशिता मे शरा इमे ।
तस्मिन्वालिनि दुर्वृत्ते पतिष्यन्ति रुषान्विताः ३२
यावत्तं न हि पश्येयं तव भार्यापहारिणम् ।

भय जिसका ऐसे वानर वालीने वहां पर मुझसे ऐसा कह एक वस्त्रके साथ मुझे बाहर निकाल दिया ॥ २६ ॥ हे राम! उस वालीने मुझे मारा और स्त्री हरली, उसीके भयसे मैं वन तथा समुद्र समेत सब पृथ्वीपर घूमा था ॥ २७ ॥ स्त्रीके हर जानेसे दुःखित हुआ मैं एक और कारणसे वाली जिसपर नहीं घुस सकता ऐसे श्रेष्ठ ऋश्यमूक पर्वतपर आया ॥ २८ ॥

यह आपसे वैरका बडा कारण सब कह दिया, हे राम ! विना कारण मैंने दुःख प्राप्त किया है इसे देखो ॥ २९ ॥ हे सब लोगोंको अभय करनेवाले ! हे वीर! वालीके भयसे पीडित मुझपर उसे दण्ड देकर कृपा करो ॥ ३० ॥ इस प्रकार कहे गये तेजस्वी और धर्मके जाननेवाले राम मुसकराते हुए धर्मयुक्त वचन सुग्रीवसे कहने लगे ॥ ३१ ॥ सफल, सूर्यसमान, वेगवाले, पैने ये मेरे बाण दुश्चरित्रवाले उस वालीपर गिरेंगे ॥ ३२ ॥ जबतक तुम्हारी स्त्रीके हरनेवाले वालीको मैं नहीं देखता तभीतक पापी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तावत्स जीवेत्पापात्मा वाली चारित्रदूषकः ३३
आत्मानुमानात्पश्यामि मग्नस्त्वं शोकसागरे ।
त्वामहं तारयिष्यामि बाढं प्राप्स्यसि पुष्कलम् ३४
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा हर्षपौरुषवर्धनम् ।
सुग्रीवः परमप्रीतः सुमहद्वाक्यमब्रवीत् ३५

इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे दशम सर्गः ॥१०॥ [४३

एकादशः सर्गः ।

रामस्य वचनं श्रुत्वा हर्षपौरुषवर्धनम् ।
सुग्रीवः पूजयांचक्रे राघवं प्रशशंस च १
असंशयं प्रज्वलितैस्तीक्ष्णैर्मर्मातिगैः शरैः ।
त्वं दहेः कुपितो लोकान्युगान्त इव भास्करः २
वालिनः पौरुषं यत्तद्यच्च वीर्यं धृतिश्च या ।
तन्ममैकमनाः श्रुत्वा विधत्स्व यदनन्तरम् ३
समुद्रात्पश्चिमात्पूर्वं दक्षिणादपि चोत्तरम् ।

दुश्चरित्र वह वाली जीता है ॥ ३३ ॥ मैं अपने अनुमानसे तुम्हें शोकसाग[र में] डूबा हुआ देखता हूं मैं तुम्हें [शोकसागरसे] तारूंगा और तुम सम[स्त] कामनाओंको पावोगे ॥ ३४ ॥ अपनेको हितकारी ऐसा रामका वा[क्य] सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए सुग्रीव बड़ा वाक्य बोले ॥ ३५ ॥

॥ यहाँ दसवा सर्ग समाप्त हुआ ॥

आनन्द और पुरुषार्थका बढानेवाला रामका वचन सुनकर सुग्रीव[ने] रामकी पूजा और प्रशंसा की ॥ १ ॥ इसमें संदेह नहीं कि क्रोधित हुए तु[म] जलते हुए तेज, मर्मवेधी बाणोंसे संसारको जला सकते हो जैसे युग[के] अन्तमें सूर्य जलती हुई, तेज, मर्मवेधी अपनी किरणोंसे संसारको ज[ला] देता है ॥ २ ॥ वालीका जो पुरुषार्थ, वीर्य तथा धीरज है उसे एकाग्र[मन] होकर मुझसे सुनो, सुनकर पीछे उसे मारना ॥ ३ ॥ सूर्यके न निकलने[से] ही पश्चिमके समुद्रसे पूर्वके तक और दक्षिणके समुद्रसे उत्तरके तक आ[ते]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रामत्यनुदिते सूर्ये वाली व्यपगतक्लमः ४
अग्राण्यारुह्य शैलानां शिखराणि महान्त्यपि ।
ऊर्ध्वमुत्पात्य तरसा प्रतिगृह्णाति वीर्यवान् ५
बहवः सारवन्तश्च वनेषु विविधा द्रुमाः ।
वालिना तरसा भग्ना बलं प्रथयतात्मनः ६
महिषो दुन्दुभिर्नाम कैलासशिखरप्रभः ।
बलं नागसहस्रस्य धारयामास वीर्यवान् ७
स वीर्योत्सेकदुष्टात्मा वरदानेन मोहितः ।
जगाम स महाकायः समुद्रं सरितां पतिम् ८
ऊर्मिमन्तमतिक्रम्य सागरं रत्नसंचयम् ।
मम युद्धं प्रयच्छेति तमुवाच महार्णवम् ९
ततः समुद्रो धर्मात्मा समुत्थाय महाबलः ।
अब्रवीद्वचनं राजन्नसुरं कालचोदितम् १०
समर्थो नास्मि ते दातुं युद्धं युद्धविशारद ।
श्रूयतां त्वभिधास्यामि यस्ते युद्धं प्रदास्यति ११

रहित हुआ वाली घूम आता है ॥ ४ ॥ बलवान् वाली पर्वतोंके ऊपर चढकर और बडे बडे शिखरोंको बलसे ऊपर उछालकर फिर पकड लेता है ॥ ५ ॥ अपने बलको प्रसिद्ध करते हुए वालीने बडे बडे सारवाले वृक्ष बलसे वनमें तोडे हैं ॥ ६ ॥

हे रघुश्रेष्ठ ! विस्तारपूर्वक इस कथाको भी सुनो कि ॥ ७ ॥ क्रूर कर्मवाले वालीने कैलासके शिखर जैसी प्रभावाले पापी, दुन्दुभि नामक महिष (भैंसाका रूपधारी) को किस प्रकार मारा था ॥ ८ ॥ बलवान् कोई दुन्दुभि नामक बडा दैत्य था और हजार हाथियोंके समान बलधारी था ॥९॥ दुर्बुद्धि, बडे शरीरवाला, वरदानसे मोहित हुआ वह दैत्य बलके गर्वसे नदियोंके स्वामी समुद्रके पास गया ॥ १० ॥ रत्नोंका है संचय जिसमें ऐसे लहरों युक्त सागरको तिरस्कृत कर वह "मेरे लिये युद्ध [का अवसर] दो" यह समुद्रसे बोला ॥ ११ ॥ हे राम ! तदनन्तर महाबली, धर्मात्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शैलराजो महारण्ये तपस्विशरणं परम्।
शङ्करश्वशुरो नाम्ना हिमवानिति विश्रुतः १२
महाप्रस्रवणोपेतो बहुकन्दरनिर्झरः।
स समर्थस्तव प्रीतिमतुलां कर्तुमर्हति १३
तं भीतमिति विज्ञाय समुद्रमसुरोत्तमः।
हिमवद्वनमागम्य शरश्चापादिव च्युतः १४
ततस्तस्य गिरेः श्वेता गजेन्द्रप्रतिमाः शिलाः।
चिक्षेप बहुधा भूमौ दुन्दुभिर्विननाद च १५
ततः श्वेताम्बुदाकारः सौम्यः प्रीतिकराकृतिः।
हिमवानब्रवीद्वाक्यं स्व एव शिखरे स्थितः १६
क्लेष्टुमर्हसि मां न त्वं दुन्दुभे धर्मवत्सल।
रणकर्मस्वकुशलस्तपस्विशरणो ह्यहम् १७
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा गिरिराजस्य धीमतः।
उवाच दुन्दुभिर्वाक्यं क्रोधात्संरक्तलोचनः १८

समुद्र उठकर कालसे प्रेरित हुए दैत्यसे बोला ॥ १२ ॥ हे युद्धविशा तुझे युद्ध देनेको मैं समर्थ नहीं हूं। सुनो, उसे बतलाता हूं जो तुमको [का अवसर] देगा ॥ १३ ॥

बड़े वनमें तपस्वियोंको नित्य शरण देनेवाला, महादेवका श्वशुर हिम नामक प्रसिद्ध पर्वत है ॥ १४ ॥ जो अनेक झरनाओंसे संयुक्त और कन्दरा तथा पाषाणोंके छिद्रवाला है वह संग्राममें तुम्हारी अत्यन्त प्रस करनेको समर्थ है ॥ १५ ॥ दैत्योंमें श्रेष्ठ [दुन्दुभि] "यह भयभीत ऐसा समुद्रको समझकर धनुषसे निकले बाणके समान हिमवान्के व चला आया ॥ १६ ॥ इसके अनन्तर दुन्दुभि उस पर्वतकी श्वेत, हा समान बड़ी शिलाओंको बहुत प्रकार भूमिपर फेंकने लगा और शब्द लगा ॥ १७ ॥ अनन्तर श्वेत मेघके समान आकृतिवाला, सौम्य, प्रसन्न और अपने शिखरपर बैठा हिमवान् वाक्य बोला ॥ १८ ॥ हे धर्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि युद्धेसमर्थस्त्वं मद्भयाद्वा निरुद्यमः ।
तमाचक्ष्व प्रदद्यान्मे यो हि युद्धं युयुत्सतः १९
हिमवानब्रवीद्वाक्यं श्रुत्वा वाक्यविशारदः ।
अनुक्तपूर्वं धर्मात्मा क्रोधात्तमसुरोत्तमम् २०
वाली नाम महाप्राज्ञ शक्रपुत्रः प्रतापवान् ।
अध्यास्ते वानरः श्रीमान्किष्किन्धामतुलप्रभाम् २१
स समर्थो महाप्राज्ञस्तव युद्धविशारदः ।
द्वन्द्वयुद्धं स दातुं ते नमुचेरिव वासवः २२
तं शीघ्रमभिगच्छ त्वं यदि युद्धमिहेच्छसि ।
स हि दुर्मर्षणो नित्यं शूरः समरकर्मणि २३
श्रुत्वा हिमवतो वाक्यं कोपाविष्टः स दुन्दुभिः ।
जगाम तां पुरीं तस्य किष्किन्धां वालिनस्तदा २४
धारयन्माहिषं वेषं तीक्ष्णशृङ्गो भयावहः ।

दुन्दुभे ! तुम मुझे क्लेश देनेके योग्य नहीं, मैं युद्धकार्यमें निपुण नहीं हूं, मैं तो तपस्वियोंको शरण देनेवाला हूं ॥ १७ ॥

बुद्धिमान् उस हिमवान्के इस वचनको सुनकर क्रोधसे लाल हो गये हैं नेत्र जिसके ऐसा दुन्दुभि कहने लगा ॥ १८ ॥ यदि तुम युद्धमें असमर्थ हो या मेरे भयसे निरुद्योग हो गये हो तो उसे बताओ जो युद्धकी इच्छावाले मुझको आज युद्ध देवे अर्थात् मुझसे युद्ध करे ॥ १९ ॥ वाक्य कहनेमें चतुर और धर्मात्मा हिमवान् क्रोध करके अश्रुतपूर्व वाक्यको असुरसे बोला ॥ २० ॥ इन्द्र समान पराक्रमी बडा बुद्धिमान् वाली नामक वानर अतुलनीय कान्तिवाली किष्किन्धा नामक नगरीमें बसता है ॥ २१ ॥ युद्धमें निपुण, महाबुद्धिमान्, वानर वाली तेरे साथ बडा द्वन्द्वयुद्ध करनेको समर्थ है जैसे कि इन्द्र नमुचिके प्रति ॥ २२ ॥ यदि तुम युद्धकी इच्छा करते हो तो यहां से शीघ्र उसके पास जाओ, वह शूर युद्धकर्ममें नित्य ही अजेय है ॥ २३ ॥

तब हिमवान्के वाक्यको सुनकर क्रोधित हुआ दुन्दुभि वालीकी पुरी किष्किन्धाको गया ॥ २४ ॥ पैंने शृङ्गवाला तथा भयदायक वह भैंसाके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रावृषीव महामेघस्तोयपूर्णो नभस्तले २५
ततस्तु द्वारमागम्य किष्किन्धाया महाबलः।
ननर्द कम्पयन्भूमिं दुन्दुभिर्दुन्दुभिर्यथा २६
समीपजान्द्रुमान्भञ्जन्वसुधां दारयन्खुरैः।
विषाणेनोल्लिखन्दर्पात्तद्वारं द्विरदो यथा २७
अन्तःपुरगतो वाली श्रुत्वा शब्दममर्षणः।
निष्पपात सह स्त्रीभिस्ताराभिरिव चन्द्रमाः २८
मितं व्यक्ताक्षरपदं तमुवाच स दुन्दुभिम्।
हरीणामीश्वरो वाली सर्वेषां वनचारिणाम् २९
किमर्थं नगरद्वारमिदं रुद्ध्वा विनर्दसे।
दुन्दुभे विदितो मेऽसि रक्ष प्राणान्महाबल ३०
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वानरेन्द्रस्य धीमतः।
उवाच दुन्दुभिर्वाक्यं क्रोधात्संरक्तलोचनः ३१
न त्वं स्त्रीसंनिधौ वीर वचनं वक्तुमर्हसि।
मम युद्धं प्रयच्छाद्य ततो ज्ञास्यामि ते बलम् ३२

रूपको धारण करके ऐसे गया जैसे जलसे भरा हुआ महामेघ वर्षा ऋतु आकाशमें विचरे ॥ २५ ॥ तदनन्तर महाबली दुन्दुभि किष्किन्धाके द्वार आकर भूमिको कंपाता हुआ, समीपके वृक्षोंको तोडता हुआ, खुरोंसे भूमि खोदता हुआ और हाथी जैसे दांतोंसे खोदे इस प्रकार शृङ्गोंसे किष्कि पुरीके द्वारको खोदता हुआ नगाडेके समान गर्जने लगा ॥ २६-२ शत्रुके शब्दको न सहनेवाला भीतर स्थितवाली शब्दको सुनकर स्त्रियों [घरसे] निकला जैसे तारागणों समेत चन्द्रमा निकले ॥ २८ ॥

वनवासी सब वानरोंका स्वामी वाली दुन्दुभिसे परिमित (तुली हु प्रकट अक्षर तथा पदवाली वाणी बोला ॥ २९ ॥ हे दुन्दुभे! इस न द्वारको रोककर तू क्यों गर्जता है मैंने जान लिया, हे महाबल! तू प्राणोंको बचा ॥ ३० ॥ बुद्धिमान् वानरेन्द्रके वचनको सुनकर क्रोधसे हो गये हैं नेत्र जिसके ऐसा दुन्दुभि बोला ॥ ३१ ॥ हे वीर! तुम स्त्रि समीपमें ऐसा वचन कहनेके योग्य नहीं हो, मेरे साथ युद्ध करो तब तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा धारयिष्यामि क्रोधमद्य निशामिमाम्।
गृह्यतामुदयः स्वैरं कामभोगेषु वानर ३३
दीयतां संप्रदानं च परिष्वज्य च वानरान्।
सर्वशाखामृगेन्द्रस्त्वं संसाधय सुहृज्जनम् ३४
सुदृष्टां कुरु किष्किन्धां कुरुष्वात्मसमं पुरे।
क्रीडस्व च समं स्त्रीभिरहं ते दर्पशासनः ३५
यो हि मत्तं प्रमत्तं वा भग्नं वा रहितं कृशम्।
हन्यात्स भ्रूणहा लोके त्वद्विधं मदमोहितम् ३६
स प्रहस्याब्रवीन्मन्दं क्रोधात्तमसुरेश्वरम्।
विसृज्य ताः स्त्रियः सर्वास्ताराप्रभृतिकास्तदा ३७
मत्तोऽयमिति मामंस्था यद्यभीतोऽसि संयुगे।
मदोऽयं संप्रहारेऽस्मिन्वीरपानं समर्थ्यताम् ३८
तमेवमुक्त्वा संक्रुद्धो मालामुत्क्षिप्य काञ्चनीम्।
पित्रा दत्तां महेन्द्रेण युद्धाय व्यवतिष्ठत ३९

बलको जानूंगा ॥ ३२ ॥ अथवा आज इस रात्रिमें अपने क्रोधको मैं रोके रहूंगा, हे वानर ! सूर्य्यके उदय होनेतक तुम काम भोगमें इन स्त्रियोंके साथ आसक्त रहो ॥ ३३ ॥ वानरोंसे मिलकर उनको देने योग्य वस्तु दे आओ, सब वानरोंके स्वामी तुम मित्रोंको आदर मानसे प्रसन्न कर आओ ॥ ३४ ॥ किष्किन्धापुरीको अच्छी तरह देख भाल लो और अपने पुत्रोंमेंसे किसीको राज्यासिंहासन भी दे दो और स्त्रियोंके साथ आज रमण कर लो क्योंकि पीछेसे मैं तुम्हारे अहंकारको तोड़ूंगा ॥ ३५ ॥ जो पुरुष मत्त, असावधान, आयुधरहित, सोते हुए और तुम्हारे समान मोहितको मारता है वह संसारमें गर्भहत्याके पापको पाता है ॥ ३६ ॥

वाली मन्द मुसकान करके तारा आदि सब स्त्रियोंको हटाकर उस दैत्यसे क्रोधसे बोला ॥ ३७ ॥ यदि तुम संग्राम करनेमें निडर हो, तब तो मुझे मत-वाला न समझो; कारण कि यह स्त्रियों करके उपजा हुआ मद युद्धमें बल होनेके अर्थ वीरोंके मदपानके समान जानो ॥ ३८ ॥ क्रोधित हुआ वाली उस दैत्यसे ऐसा कहकर पिता इन्द्रसे दी हुई सोनेकी मालाको पहिनकर युद्धके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषाणयोर्गृहीत्वा तं दुन्दुभिं गिरिसंनिभम् ।
अविध्यत तदा वाली विनदन्कपिकुञ्जरः ४०
वाली व्यापादयांचक्रे ननर्द च महास्वनम् ।
श्रोत्राभ्यामथ रक्तं तु तस्य सुस्राव पात्यतः ४१
तयोस्तु क्रोधसंरम्भात्परस्परजयैषिणोः ।
युद्धं समभवद्घोरं दुन्दुभेर्वालिनस्तथा ४२
अयुध्यत तदा वाली शक्रतुल्यपराक्रमः ।
मुष्टिभिर्जानुभिः पद्भिः शिलाभिः पादपैस्तथा ४३
परस्परं घ्नतोस्तत्र वानरासुरयोस्तदा ।
आसीद्धीनोसुरो युद्धे शक्रसूनुर्व्यवर्धत ४४
तं तु दुन्दुभिमुद्यम्य धरण्यामभ्यपातयत् ।
युद्धे प्राणहरे तस्मिन्निष्पिष्टो दुन्दुभिस्तदा ४५
स्रोतोभ्यो बहु रक्तं तु तस्य सुस्राव पात्यतः ।
पपात च महाबाहुः क्षितौ पञ्चत्वमागतः ४६

लिये खडा होगया॥ ३९ ॥ वानरोंमें हाथीके समान उस वालीने शब्द क पर्वत समान दुन्दुभिको शृङ्गोंसे पकडकर घुमाया ॥४०॥ वालीने उसे भूमि पटक दिया और स्वयं महान् शब्द करने लगा, गिरते हुए दैत्यके कानों रुधिर निकलने लगा॥ ४१ ॥

परस्पर जीतकी इच्छा करते उन दोनों वाली तथा दुन्दुभिका क्रो वेगसे घोर युद्ध हुआ ॥ ४२ ॥ इन्द्रसम बलवाला वाली मुट्ठी, घुटना, शिला और वृक्षोंसे उस समय युद्ध करने लगा ॥ ४३ ॥ परस्पर मारते हुए वानर दैत्यके युद्धमें दैत्य दुःखी हो गया अर्थात् हीन बल हो गया वाली [का बल] बढ गया॥४४॥

उस दैत्यको वालिने उठाकर भूमिपर पटक दिया, तब प्र हरने वाले युद्धमें दुन्दुभि पिस गया॥४५॥ गिरते हुए उसके छिद्रोंमेंसे ब रक्त निकलने लगा, बडे शरीरवाला दैत्य मरणको प्राप्त हुआ भूमि गिर पडा ॥४६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं तोलयित्वा बाहुभ्यां गतसत्त्वमचेतनम् ।
चिक्षेप वेगवान्वाली वेगेनैकेन योजनम् ४७
तस्य वेगप्रविद्धस्य वक्त्रात्क्षतजाबिन्दवः ।
प्रपेतुर्मारुतोत्क्षिप्ता मतङ्गस्याश्रमं प्रति ४८
तान्दृष्ट्वा पतितांस्तत्र मुनिः शोणितविप्रुषः ।
क्रुद्धस्तस्य महाभाग चिन्तयामास को न्वयम् ४९
येनाहं सहसा स्पृष्टः शोणितेन दुरात्मना ।
कोऽयं दुरात्मा दुर्बुद्धिरकृतात्मा च बालिशः ५०
इत्युक्त्वा स विनिष्क्रम्य ददर्श मुनिसत्तमः ।
महिषं पर्वताकारं गतासुं पतितं भुवि ५१
स तु विज्ञाय तपसा वानरेण कृतं हि तत् ।
उत्ससर्ज महाशापं क्षेप्तारं वानरं प्रति ५२
इह तेनाप्रवेष्टव्यं प्रविष्टस्य वधो भवेत् ।
वनं मत्संश्रयं येन दूषितं रुधिरस्रवैः ५३
क्षिपता पादपाश्चेमे संभग्नाश्चासुरीं तनुम् ।

बलवान् वालीने ज्ञानरहित मरे हुए उस दैत्यको भुजाओंसे तोलकर वेगसे एक योजन दूर फेंक दिया ॥ ४७ ॥ वेगसे फेंके गये उस दैत्यके मुखसे पवनसे उडाई गई रुधिरकी बूंदें मतङ्ग ऋषिके आश्रमपर गिरीं ॥ ४८ ॥ महा भाग मुनि वहां उसकी गिरी हुई उन रक्तकी बूंदोंको देखकर क्रुद्ध हो ' यह कौन है ' ऐसा सोचने लगे ॥ ४९ ॥ यह कौन दुष्टात्मा, दुर्बुद्धि अन्तःकरणको वशमें न करनेवाला मूर्ख है जिस पापीने मेरा एक दम रक्तसे स्पर्श करा दिया, ऐसा कह निकल कर श्रेष्ठ मुनिने पर्वतसमान प्राणहीन भूमि पर गिरे हुए महिष (दैत्य) को देखा ॥५०-५१॥

मुनिने तपके प्रभावसे यह वालीका कार्य समझ कर फेंकनेवाले वालीके प्रति घोर शाप दिया ॥ ५२ ॥ जिसने रक्त बिन्दुओंसे मेरे वनको दूषित किया और असुरके शरीरको यहां फेंक कर वृक्ष तोडे वह यहां न, घुसे यदि घुसे तो नष्ट हो जाय ॥ ५३ ॥ यदि दुर्बुद्धि वह चारों ओरसे एक योजन पूरे मेरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समन्तादाश्रमं पूर्णं योजनं मामकं यदि ५४
आगमिष्यति दुर्बुद्धिर्व्यक्तं स न भविष्यति।
ये चास्य सचिवाः केचित्संश्रिता मामकं वनम् ५५
न च तैरिह वस्तव्यं श्रुत्वा यान्तु यथासुखम्।
तेऽपि वा यदि तिष्ठन्ति शपिष्ये तानपि ध्रुवम् ५६
वनेऽस्मिन्मामके नित्यं पुत्रवत्परिरक्षिते।
पत्राङ्कुरविनाशाय फलमूलाभवाय च ५७
दिवसश्चाद्य मर्यादा यं द्रष्टा श्वोऽस्मि वानरम्।
बहुवर्षसहस्राणि स वै शैलो भविष्यति ५८
ततस्ते वानराः श्रुत्वा गिरं मुनिसमीरिताम्।
निश्चक्रमुर्वनात्तस्मात्तान्दृष्ट्वा वालिरब्रवीत् ५९
किं भवन्तः समस्ताश्च मतङ्गवनवासिनः।
मत्समीपमनुप्राप्ता अपि स्वस्ति वनौकसाम् ६०
ततस्ते कारणं सर्वं तथा शापं च वालिनः।
शशंसुर्वानराः सर्वे वालिने हेममालिने ६१

आश्रममें आवेगा तो अवश्य नष्ट हो जायगा ॥ ५४ ॥ और जो उसके मित्र वनमें स्थित हैं वे यहां न बसें सुनकर सुखपूर्वक चले जावें पुत्रके समान रक्षा किये हुए इस मेरे वनमें पत्ते, अङ्कुर, फल और जडोंके नाशके यदि वे भी ठहरेंगे तो उन्हें भी शाप दूंगा ॥ ५५-५७ ॥ इस शापकी यह दिन मर्यादा है कल सबेरेसे जिस वानरको मैं देखूंगा वही बहुत वर्षों लिये पर्वत हो जायगा ॥ ५८ ॥

इसके अनन्तर वे वानर मुनिसे कही हुई वाणी (शाप) को सु उस वनसे निकले उन्हें देखकर वाली बोला ॥ ५९ ॥ मतङ्गके वनमें रहने तुम सब क्यों मेरे समीप आये हो ? वानरोंका कल्याण तो है ?॥ ६० ॥ तदन उन सब वानरोंने सुवर्ण मालाधारी वालीसे समस्त कारण तथा वा शाप देना कह दिया ॥ ६१ ॥ वाली वानरोंसे कहे हुए इस वचनको सु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतच्छ्रुत्वा तदा वाली वचनं वानरेरितम्।
स महर्षिं समासाद्य याचते स्म कृताञ्जलिः ६२
महर्षिस्तमनादृत्य प्रविवेशाश्रमं प्रति।
शापधारणभीतस्तु वाली विह्वलतां गतः ६३
ततः शापभयाद्भीतो ऋष्यमूकं महागिरिम्।
प्रवेष्टुं नेच्छति हरिर्द्रष्टुं वापि नरेश्वर ६४
तस्याप्रवेशं ज्ञात्वाहमिदं राम महावनम्।
विचरामि सहामात्यो विषादेन विवर्जितः ६५
एषोऽस्थिनिचयस्तस्य दुन्दुभेः संप्रकाशते।
वीर्योत्सेकान्निरस्तस्य गिरिकूटनिभो महान् ६६
इमे च विपुलाः सालाः सप्तशाखावलम्बिनः।
यत्रैकं घटते वाली निष्पत्रयितुमोजसा ६७
एतदस्यासमं वीर्यं मया राम प्रकाशितम्।
कथं तं वालिनं हन्तुं समरे शक्ष्यसे नृप ६८

महर्षिके पास पहुंच कर हाथ जोडकर बोला ॥६२॥ उस समय महर्षि उसका अनादर करके आश्रममें चले गये और शापके धारण करनेसे भयभीत हुआ वाली व्याकुल हो गया ॥ ६३ ॥

हे नरेश्वर ! शापके भयसे डरा हुआ वाली तबसे महागिरि ऋश्यमूक पर जाने वा उसके देखनेकी इच्छा नहीं करता ॥ ६४ ॥ हे राम ! यहां पर उस वालीके न आनेको जान विषादरहित तथा मंत्रियों समेत मैं इस महावनमें विचरता हूं ॥ ६५ ॥ बलके घमंडसे पराजित हुए उस दुन्दुभिका पहाडके समान यह सूखा शरीर प्रकाशित हो रहा है ॥ ६६ ॥ ये लम्बी शाखांवाले [छता बांधे] बडे सात सालके वृक्ष हैं इन्हे वाली अपने बलसे एक एक करके पत्ररहित करनेकी चेष्टा करता था अथवा इन सबको एक ही बारमें निष्पत्र करनेमें समर्थ था ॥ ६७ ॥ हे राम ! यह वालीका अतुलनीय बल मैंने कह दिया, हे नृप ! उस वालीको समरमें तुम कैसे मार सकोगे ? ॥ ६८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा ब्रुवाणं सुग्रीवं प्रहसँल्लक्ष्मणोऽब्रवीत् ।
कस्मिन्कर्मणि निर्वृत्ते श्रद्दध्या वालिनो वधम् ॥ ६९
तमुवाचाथ सुग्रीवः सप्त सालानिमान्पुरा ।
एवमेकैकशो वाली विव्याधाथ स चासकृत् ॥ ७०
रामो निदारयेदेषां बाणेनैकेन च द्रुमम् ।
वालिनं निहतं मन्ये दृष्ट्वा रामस्य विक्रमम् ॥ ७१
हतस्य महिषस्यास्थि पादेनैकेन लक्ष्मण ।
उद्यम्य प्रक्षिपेच्चापि तरसा द्वे धनुःशते ॥ ७२
एवमुक्त्वा तु सुग्रीवो रामं रक्तान्तलोचनः ।
ध्यात्वा मुहूर्तं काकुत्स्थं पुनरेव वचोऽब्रवीत् ॥ ७३
शूरश्च शूरमानी च प्रख्यातबलपौरुषः ।
बलवान्वानरो वाली संयुगेष्वपराजितः ॥ ७४
दृश्यन्ते चास्य कर्माणि दुष्कराणि सुरैरपि ।
यानि संचिन्त्य भीतोऽहमृष्यमूकमुपाश्रितः ॥ ७५

ऐसा कहते हुए सुग्रीवसे लक्ष्मण हंस कर बोले, तुम किस कार्यके लेने पर वालीके वधकी सम्भावना करोगे ? ॥ ६९ ॥ सुग्रीव बोले-वालीने इन सातों सालोंके वृक्षोंको एक साथ तथा अलग अलग करके अनेक वेधा था ॥ ७० ॥ राम भी इनमेंसे एक वृक्षको एक बाणसे विदीर्ण कर दें लक्ष्मण ! और मरे हुए महिषकी अस्थियोंको एक पैरसे उठाकर दो धनुष (आठ सौ हाथ) फेंक दें, तो मैं रामका पराक्रम देखकर वाली मरा हुआ समझूंगा ॥ ७१-७२ ॥ लाल हो गये हैं नेत्रोंके कोने जिनके रामसे ऐसा कह करके सुग्रीव मनमें विचार कर फिर रामसे बोला ॥ ७३ ॥ शूरोंका मारनेवाला, प्रसिद्ध बल और पुरुषार्थ वाला, संग्राममें जीत वाला बलवान् वानर वाली है ॥ ७४ ॥

इसके कर्म देवताओंसे भी दुष्कर हैं ऐसे दिखलाई पडते हैं जिनका स्मरण कर भयभीत हुए मैंने ऋश्यमूकका आश्रय लिया है ॥ ७५ ॥ जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमजय्यमधृष्यं च वानरेन्द्रममर्षणम् ।
विचिन्तयन्नमुं चापि ऋष्यमूकममुं त्वहम् ७६
उद्विग्नः शङ्कितश्चाहं विचरामि महावने ।
अनुरक्तैः सहामात्यैर्हनुमत्प्रमुखैर्वरैः ७७
उपलब्धं च मे श्लाघ्यं सन्मित्रं मित्रवत्सल ।
त्वामहं पुरुषव्याघ्र हिमवन्तमिवाश्रितः ७८
किं तु तस्य बलज्ञोऽहं दुर्भ्रातुर्बलशालिनः ।
अप्रत्यक्षं तु मे वीर्यं समरे तव राघव ७९
न खल्वहं त्वां तुलये नावमन्ये न भीषये ।
कर्मभिस्तस्य भीमैश्च कातर्यं जनितं मम ८०
कामं राघव ते वाणी प्रमाणं धैर्यमाकृतिः ।
सूचयन्ति परं तेजो भस्मच्छन्नमिवानलम् ८१
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सुग्रीवस्य महात्मनः ।
स्मितपूर्वमतो रामः प्रत्युवाच हरिं प्रति ८२

जीता जा सके और न जिसका तिरस्कार किया जा सके ऐसे क्रोधी वालीका स्मरण करके मैं इस ऋश्यमूक पर्वतको नहीं त्यागता हूं ॥ ७६ ॥ पीछे चलने वाले, श्रेष्ठ, हनुमान् आदि मंत्रियोंके साथ दुःखी और भयभीत हुआ मैं इस महावनमें विचरता हूं ॥ ७७ ॥

हे मित्र वत्सल ! मैंने प्रशंसनीय श्रेष्ठ मित्रको पाया है हे पुरुषव्याघ्र ! मैंने हिमवान्के सदृश आपका आश्रय (सहारा) लिया है ॥ ७८ ॥ किन्तु बलशाली उस दुष्ट भाईके बलको मैं जानता हूं, हे राम ! आपका बल संग्राममें मैंने नहीं देखा है ॥ ७९ ॥ मैं न तो आपकी तुलना करता हूं, न आपका अपमान करता हूं, और न भय दिखाता हूं, किन्तु उसके भयानक कर्मोंसे मुझे भय पैदा हो गया है ॥ ८० ॥ हे राम ! तुम्हारी वाणी, बुद्धि, अचञ्चलता और आकृति भस्मसे ढके हुए अग्निके समान तुम्हारे परमतेजको अतिशय सूचित करतीं हैं ॥ ८१ ॥

महात्मा सुग्रीवके उस वचनको सुनकर प्रभु राम सुग्रीवसे हास्यपूर्वक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि न प्रत्ययोऽस्मासु विक्रमे तव वानर ।
प्रत्ययं समरे श्लाघ्यमहमुत्पादयामि ते ८३
एवमुक्त्वा तु सुग्रीवं सान्त्वयँल्लक्ष्मणाग्रजः ।
राघवो दुन्दुभेः कायं पादाङ्गुष्ठेन लीलया ८४
तोलयित्वा महाबाहुश्चिक्षेप दश योजनम् ।
असुरस्य तनुं शुष्कां पादाङ्गुष्ठेन वीर्यवान् ८५
क्षिप्तं दृष्ट्वा ततः कायं सुग्रीवः पुनरब्रवीत् ।
लक्ष्मणस्याग्रतो रामं तपन्तमिव भास्करम् ८६
हरीणामग्रतो वीरमिदं वचनमर्थवत् ८७
आर्द्रः समांसः प्रत्यग्रः क्षिप्तः कायः पुरा सखे ।
परिश्रान्तेन मत्तेन भ्रात्रा मे वालिना तदा ८८
लघुः संप्रति निर्मांसस्तृणभूतश्च राघव ।
क्षिप्त एवं प्रहर्षेण भवता रघुनन्दन ८९

बोले ॥ ८२ ॥ हे वानर! यदि तुमको हमारे पराक्रममें विश्वास नहीं है संग्राममें प्रशंसाके योग्य विश्वासको उत्पन्न कराते हैं ॥ ८३ ॥ समझा सुग्रीवसे रामचन्द्रने ऐसा कहकर दुन्दुभिके शरीरको पैरके अंगूठेसे देह पूर्वक तोलकर दशयोजनकी दूरी पर फेंक दिया। दैत्यके सूखे पहिलेकी अपेक्षा हलके शरीरको पैरके अंगूठेसे फेका हुआ देखकर फिर रामसे बोला लक्ष्मणके सामने रामसे [सुग्रीव] यह बोले॥८४-८७॥ हे मित्र! हे राम! भीगा मांसयुक्त और कुछ कुछ प्राणों युक्त पहिले (वाली ने) शरीर फेंका था इस समय तो हलका, रहित तथा तृणके समान है ॥ ८८ ॥

हे राम! थके हुए तथा मदयुक्त मेरे भाई वालीने तब ऐसे ही फेंका था और आपने भी फेका है सो यहां पर यह नहीं ज्ञात हो सक आपका बल अधिक है या उसका। हे राम! भीगा और सूखा-इन बडा अन्तर है ॥ ८९ ॥ हे तात! इसीसे तुम्हारे तथा उसके बलों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नात्र शक्यं बलं ज्ञातुं तव वा तस्य वाधिकम् ।
आर्द्रं शुष्कमिति ह्येतत्सुमहद्राघवान्तरम् ९०
स एव संशयस्तात तव तस्य च यद्बलम् ।
सालमेकं विनिर्भिद्य भवेद्व्यक्तिबलाबले ९१
कृत्वैतत्कार्मुकं सज्यं हस्तिहस्तमिवापरम् ।
आकर्णपूर्णमायम्य विसृजस्व महाशरम् ९२
मं हि सालं प्रहितस्त्वया शरो न संशयोऽत्रास्ति विदारयिष्यति ।
लं विमर्शेन मम प्रियं ध्रुवं कुरुष्व राजन्प्रतिशापितो मया॥९३॥
था हि तेजःसु वरः सदा रविर्यथा हि शैलो हिमवान्महाद्रिषु ।
था चतुष्पत्सु च केसरी वरस्तथा नराणामसि विक्रमे वरः॥९४॥

र्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्ड एकादशः सर्गः ।११। [५१९]

द्वादशः सर्गः ।

एतच्च वचनं श्रुत्वा सुग्रीवस्य सुभाषितम् ।
प्रत्ययार्थं महातेजा रामो जग्राह कार्मुकम् १
स गृहीत्वा धनुर्घोरं शरमेकं च मानदः ।

देह मौजूद है एक सालको तुम वेध दो तो बलाबलका ज्ञान हो जायगा ॥९०-९१॥ हाथीके शूंडके समान लम्बे इस धनुषको चढाकर और कान क खींच कर बडे बाणको छोडो ॥ ९२ ॥ तुमसे छोडा हुआ यह बाण इस ालको विदीर्ण कर देगा—इसमें सन्देह नहीं; अब विचार न करो मेरे प्रिय ार्यको करो, हे राजात्मज ! मैं तुमको सौगन्द दिलाता हूं ॥ ९३ ॥ जैसे जस्वियोंमें सूर्य सदा श्रेष्ठ हैं और पर्वतोंमें हिमवान् जैसे श्रेष्ठ है और से चौपायोंमें सिंह श्रेष्ठ है इसी प्रकार मनुष्योंमें आप श्रेष्ठ हैं ॥ ९४ ॥

॥ यहाँ ग्यारह सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुग्रीवसे कहे हुए इस वचनको सुनकर विश्वासके वास्ते महातेजस्वी मने धनुष् उठाया ॥ १ ॥ सत्कारके देनेवाले अथवा अभिमानका नाश करने ाले रामने घोर धनुष् और एक बाणको उठाकर प्रत्यञ्चा (तांत) के शब्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सालमुद्दिश्य चिक्षेप पूरयन्स रवैर्दिशः २
स विसृष्टो बलवता बाणः स्वर्णपरिष्कृतः ।
भित्वा तालान्गिरिप्रस्थं सप्तभूमिं विवेश ह ३
सायकस्तु मुहूर्तेन तालान्भित्त्वा महाजवः ।
निष्पत्य च पुनस्तूर्णं तमेव प्रविवेश ह ४
तान्दृष्ट्वा सप्त निर्भिन्नान्सालान्वानरपुङ्गवः ।
रामस्य शरवेगेन विस्मयं परमं गतः ५
स मूर्ध्ना न्यपतद्भूमौ प्रलम्बी कृतभूषणः ।
सुग्रीवः परमप्रीतो राघवाय कृताञ्जलिः ६
इदं चोवाच धर्मज्ञं कर्मणा तेन हर्षितः ।
रामं सर्वास्त्रविदुषां श्रेष्ठं शूरमवास्थितम् ७
सेन्द्रानपि सुरान्सर्वांस्त्वं बाणैः पुरुषर्षभ ।
समर्थः समरे हन्तुं किं पुनर्वालिनं प्रभो ८

से दिशाओंको पूर्ण करते हुए सालका निशाना बनाकर बाणको छोड़ा
बलवान् रामसे छोडा हुआ वह सुवर्णभूषित बाण पर्वतशिखर पा
सातों सालोंको भेद कर भूमिमें घुस गया ॥ ३ ॥ बडे वेगवाला बाण
फोडकर प्रविष्ट हो गया और थोडे ही कालमें निकलकर फिर शी
अपने तरकसमें घुस गया ॥ ४ ॥

रामके बाणके वेगसे विंधे हुए सातों सालोंको देखकर सुग्रीव
आश्चर्यको प्राप्त हो गया ॥ ५ ॥ (पेटके बल भूमि पर लेटनेसे) लम्बमा
हो गये हैं भूषण जिसके ऐसा वह सुग्रीव अत्यन्त प्रसन्न हो राम
आगे हाथ जोडकर शिर झुका भूमिपर गिर पडा ॥ ६ ॥ और उस कार्यसे
हुआ सुग्रीव धर्मज्ञ, सम्पूर्ण अस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ, शूर, स्थित हुए रामसे
वचन बोला ॥ ७ ॥ हे पुरुषर्षभ ! हे प्रभो ! तुम इन्द्र समेत समस्त देवों
संग्राममें बाणोंसे मार सकते हो फिर वालीका क्या कहना ॥ ८ ॥ हे काकु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येन सप्त महातालाः गिरिर्भूमिश्च दारिता ।
बाणेनैकेन काकुत्स्थ स्थाता ते को रणाग्रतः ९
अद्य मे विगतः शोकः प्रीतिरद्य परा मम ।
सुहृदं त्वां समासाद्य महेन्द्रवरुणोपमम् १०
तमद्यैव प्रियार्थं मे वैरिणं भ्रातृरूपिणम् ।
वालिनं जहि काकुत्स्थ मया बद्धोऽयमञ्जलिः ११
ततो रामः परिष्वज्य सुग्रीवं प्रियदर्शनम् ।
प्रत्युवाच महाप्राज्ञो लक्ष्मणानुगतं वचः १२
अस्माद्गच्छाम किष्किन्धां क्षिप्रं गच्छ त्वमग्रतः ।
गत्वा चाह्वय सुग्रीव वालिनं भ्रातृगन्धिनम् १३
सर्वे ते त्वरितं गत्वा किष्किन्धां वालिनः पुरीम् ।
वृक्षैरात्मानमावृत्य ह्यतिष्ठन्गहने वने १४
सुग्रीवोऽप्यनदद्घोरं वालिनो ह्वानकारणात् ।
गाढं परिहितो वेगान्नादैर्भिन्दन्निवाम्बरम् १५

र तुमने सात सालके वृक्ष, पर्वत और भूमि एक बाणसे फाड डाली उन हारे सामने रणमें कौन स्थित हो सकता है ? ॥ ९ ॥ इन्द्र तथा वरुणके ान तुम्हें मित्रको पाकर आज मेरा शोक दूर हुआ और आज ही मुझे मप्रसन्नता हुई ॥ १० ॥ हे राम ! मैं हाथ जोडता हूं, तुम आज ही मेरी रकामनाके वास्ते भाई रूप वैरी वालीको मारो ॥ ११ ॥

तदनन्तर महाबुद्धिमान् राम प्रियबोलने वाले सुग्रीवको आलिङ्गन कर क्ष्मणसे सम्मत यह वचन बोले ॥ १२ ॥ हे सुग्रीव ! यहांसे किष्किन्धा चलें, तुम जल्दीसे अगाडी जाओ और जाकर भ्रातृहिंसक वालीको कारो ॥ १३ ॥ वे सब शीघ्र ही वालीकी नगरी किष्किन्धामें जाकर क्षोंसें अपने आपको छिपा कर घने वनमें बैठ गये ॥ १४ ॥ अच्छी तरह बांध लिया है कटिवस्त्र जिसने ऐसा सुग्रीव वालिके बुलानेके कारणसे वेग-त्मक गर्जनासे आकाशको वेधता हुआ सा घोर शब्द करने लगा ऐसे ॥ १५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं श्रुत्वा निनदं भ्रातुः क्रुद्धो वाली महाबलः ।
निष्पपात सुसंरब्धो भास्करोऽस्ततटादिव १६
ततः सुतुमुलं युद्धं वालिसुग्रीवयोरभूत् ।
गगने ग्रहयोर्घोरं बुधाङ्गारकयोरिव १७
तलैरशनिकल्पैश्च वज्रकल्पैश्च मुष्टिभिः ।
जघ्नतुः समरेऽन्योन्यं भ्रातरौ क्रोधमूर्च्छितौ १८
ततो रामो धनुष्पाणिस्तावुभौ समुदैक्षत ।
अन्योन्यसदृशौ वीरावुभौ देवाविवाश्विनौ १९
यन्नावगच्छत्सुग्रीवं वालिनं वापि राघवः ।
ततो न कृतवान्बुद्धिं मोक्तुमन्तकरं शरम् २०
एतस्मिन्नन्तरे भग्नः सुग्रीवस्तेन वालिना ।
अपश्यन्राघवं नाथमृष्यमूकं प्रदुद्रुवे २१
क्लान्तो रुधिरसिक्ताङ्गः प्रहारैर्जर्जरीकृतः ।
वालिनाभिद्रुतः क्रोधात्प्रविवेश महावनम् २२

महाबली, कठोर और क्रुद्ध हुआ वाली भाईके उस शब्दको सुनकर जैसे सूर्य अस्त पर्वतके तटसे निकले ॥ १६ ॥

तदनन्तर वाली और सुग्रीवका घोर तुमुल युद्ध हुआ जैसे आ बुध और मङ्गल ग्रहोंका होवे ॥ १७ ॥ अशनिसे कुछ ही कम तल(तथा वज्रसे कुछ ही कम मुष्टियोंसे वे दोनों क्रोधमूर्छित हुए भाई परस्पर मारने लगे ॥ १८ ॥ तदनन्तर धनुषधारी राम परस्पर सदृश, अश्विनीकुमार नामक देवोंके समान उन दोनोंको देखकर सुग्रीव वालीको न पहचान सके, इसीसे नाश करनेवाले बाणको छोडनेकी रामने न की ॥ १९ – २० ॥

इसी अवसरमें उस वालीसे ताडन किया हुआ सुग्रीव रामको रक्षक न देखकर ऋष्यमूककी ओर भाग गया ॥ २१ ॥ थका, जिसके रुधिरसे भीग रहे हैं, चोटोंसे जर्जरीभूत सुग्रीव वालीसे क्रोधसे जाकर महावनमें प्रविष्ट हो गया ॥ २२ ॥ सुग्रीवको वनमें घुसता दे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं प्रविष्टं वनं दृष्ट्वा वाली शापभयात्ततः।
मुक्तो ह्यसि त्वमित्युक्त्वा स निवृत्तो महाबलः २३
राघवोऽपि सह भ्रात्रा सह चैव हनूमता।
तदेव वनमागच्छत्सुग्रीवो यत्र वानरः २४
तं समीक्ष्यागतं रामं सुग्रीवः सहलक्ष्मणम्।
ह्रीमान्दीनमुवाचेदं वसुधामवलोकयन् २५
आह्वयस्वेति मामुक्त्वा दर्शयित्वा च विक्रमम्।
वैरिणा घातयित्वा च किमिदानीं त्वया कृतम् २६
तामेव वेलां वक्तव्यं त्वया राघव तत्त्वतः।
वालिनं न निहन्मीति ततो नाहमितो व्रजे २७
तस्य चैवं ब्रुवाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
करुणं दीनया वाचा राघवः पुनरब्रवीत् २८
सुग्रीव श्रूयतां तात क्रोधश्च व्यपनीयताम्।
कारणं येन बाणोऽयं स मया न विसर्जितः २९

…तेजस्वी वाली शापके भयसे डरकर "जाओ तुम्हें छोड दिया" ऐसा … लौट आया और क्रोधयुक्त, महाबली वाली लौटकर अपनी नगरीमें …या ॥ २३ ॥ रामचन्द्र भी भाई लक्ष्मण तथा हनुमान्के साथ उसी …में आये जहां वानर सुग्रीव था ॥ २४ ॥

…लक्ष्मण समेत रामको आया देखकर लज्जित हुआ सुग्रीव पृथ्वीकी ओर …ता हुआ यह दीन वचन बोला ॥ २५ ॥ मुझे अपना बल दिखाकर …र "वालीको बुलाओ" यह कह कर और वैरीसे घात करा कर इस …मय यह आपने क्या किया ? ॥ २६ ॥ हे राम ! आपको उसी समय …व सच कह देना था कि मैं वालीको नहीं मारूंगा तो मैं यहांसे न जाता। …का क्या कारण है जो समर्थ आपने उसे न मारा ? ॥ २७ ॥ दीन वाणी … इस प्रकार महात्मा सुग्रीवके कहने पर राम सदय हो फिर बोले ॥ २८ ॥ … सुग्रीव ! क्रोधको दूर करो; हे मित्र ! जिस कारणसे मैंने वह बाण नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलंकारेण वेषेण प्रमाणेन गतेन च ।
त्वं च सुग्रीव वाली च सदृशौ स्थः परस्परम् ३०
स्वरेण वर्चसा चैव प्रेक्षितेन च वानर ।
विक्रमेण च वाक्यैश्च व्यक्तिं वां नोपलक्षये ३१
ततोऽहं रूपसादृश्यान्मोहितो वानरोत्तम ।
नोत्सृजामि महावेगं शरं शत्रुनिबर्हणम् ३१
जीवितान्तकरं घोरं सादृश्यात्तु विशङ्कितः ।
मूलघातो न नौ स्याद्धि द्वयोरिति कृतो मया ३३
त्वयि वीर विपन्ने हि अज्ञानाल्लाघवान्मया ।
मौढ्यं च मम बाल्यं च ख्यापितं स्यात्कपीश्वर ३४
दत्ताभयवधो नाम पातकं महदद्भुतम् ।
अहं च लक्ष्मणश्चैव सीता च वरवर्णिनी ३५
त्वदधीना वयं सर्वे वनेऽस्मिञ्छरणं भवान् ।
तस्माद्युध्यस्व भूयस्त्वं मा माशङ्कीश्च वानर ३६

छोडा उसे सुनो ॥ २९ ॥ हे सुग्रीव ! तुम और वाली अलङ्कार, ऊंचाई और गमनसे दोनों सदृश हो ॥ ३० ॥

हे वानर ! स्वर, तेज, दृष्टि, विक्रम और वाक्योंसे तुम दोनोंको मैं नहीं जान सका, हे वानरोत्तम ! अतः मैं रूपसदृश होनेके कारण पड गया ॥ ३१ ॥ 'सदृश होनेके कारण दोनोंका ही मुझसे मू (प्राणनाश) न हो जाय' यह शंका करके महावेगवाले शत्रु कारी, जीवनके अन्त करनेवाले, घोर बाणको मैंने नहीं छोडा ॥ ३२ हरीश्वर ! अज्ञान तथा शीघ्रतासे तुम वीरके मर जाने पर मेरी मूढता बालकता ही प्रसिद्ध होती ॥ ३३ अभय दिये हुएका मारना महान् कहा जाता है–यह सब जानते हैं ॥ ३४ ॥ हम और लक्ष्मण और श्रेष्ठ वाली सीता ये सब आपके ही आधीन हैं और इस वनमें आप ही (रक्षक हैं ॥ ३५ ॥ हे वानर ! इससे तुम फिर युद्ध करो और मेरी शंका न करो, हे सुग्रीव ! इस मुहूर्तसे संग्राममें एक बाणसे परास्त तथा भूमि पर लोटते हुए वालीको देखो ॥ ३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतन्मुहूर्तं तु मया पश्य वालिनमाहवे।
निरस्तमिषुणैकेन चेष्टमानं महीतले ३७
अभिज्ञानं कुरुष्व त्वमात्मनो वानरेश्वर।
येन त्वामभिजानीयां द्वन्द्वयुद्धमुपागतम् ३८
गजपुष्पीमिमां फुल्लामुत्पाट्य शुभलक्षणाम्।
कुरु लक्ष्मण कण्ठेऽस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ३९
ततो गिरितटे जातामुत्पाट्य कुसुमायुताम्।
लक्ष्मणो गजपुष्पीं तां तस्य कण्ठे व्यसर्जयत् ४०
स तया शुशुभे श्रीमाल्लँतया कण्ठसक्तया।
मालयेव बलाकानां ससंध्य इव तोयदः ४१
विभ्राजमानो वपुषा रामवाक्यसमाहितः।
जगाम सह रामेण किष्किन्धां पुनराप सः ४२

त्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे द्वादशः सर्गः ॥१२॥ [५६१]

हे वानरेश्वर ! तुम अपनी पहिचानका कुछ चिन्ह धारण कर लो जिससे न्द्व युद्धमें लडते हुए तुमको मैं जान सकूं ॥ ३७-३८ ॥ हे लक्ष्मण ! भ चिन्हवाली फूली हुई गजपुष्पी नामक इस लताको उखाड कर हात्मा सुग्रीवके कण्ठमें डाल दो ॥ ३९ ॥ इसके अनन्तर पर्वतके तटपर त्पन्न हुई फूलोंसे युक्त उस गजपुष्पीको उखाडकर लक्ष्मणने सुग्रीवके ण्ठमें डाल दिया ॥ ४० ॥ श्रीमान् सुग्रीव कण्ठमें पडी हुई उस मालासे से शोभा देने लगे जैसे रात्रिके समय आकाशमें नक्षत्रकी मालासे पूर्ण-ासीका चन्द्र शोभा देता है ॥ ४१ ॥ बलाका (बगलियों) की मालासे ध्या समयके मेघके समान शरीरसे शोभा देते हुए सुग्रीव रामके वाक्यसे रित हो रामके साथ वालिसे पालन की हुई किष्किन्धा नगरीको (फिर) ये ॥ ४२ ॥

॥ यहाँ बारहवाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रयोदशः सर्गः ।

ऋष्यमूकात्स धर्मात्मा किष्किन्धां लक्ष्मणाग्रजः ।
जगाम सह सुग्रीवो वालिविक्रमपालिताम् १
समुद्यम्य महच्चापं रामः काञ्चनभूषितम् ।
शरांश्चादित्यसंकाशान्गृहीत्वा रणसाधकान् २
अग्रतस्तु ययौ तस्य राघवस्य महात्मनः ।
सुग्रीवः संहतग्रीवो लक्ष्मणस्य महाबलः ३
पृष्ठतो हनुमान्वीरो नलो नीलश्च वीर्यवान् ।
तारश्चैव महातेजा हरियूथपयूथपः ४
ते वीक्षमाणा वृक्षांश्च पुष्पभारावलम्बिनः ।
प्रसन्नाम्बुवहाश्चैव सरितः सागरंगमाः ५
कन्दराणि च शैलांश्च निर्दराणि गुहास्तथा ।
शिखराणि च मुख्यानि दरीश्च प्रियदर्शनाः ६
वैदूर्यविमलैस्तोयैः पद्मैश्चाकोशकुड्मलैः ।
शोभितान्सजलान्मार्गे तटाकांश्चावलोकयन् ७

लक्ष्मणके बडे भाई धर्मात्मा राम सुवर्णसे भूषित बडे धनुष्को उठा और रणके सिद्ध करनेवाले सूर्य समान बाणोंको लेकर सुग्रीवके साथ ऋ मूक पर्वतसे वालिके विक्रमसे पालित किष्किन्धाको गये ॥ १-२ ॥ मह रामके आगे गठी हुई गर्दनवाला सुग्रीव चला और महाबली लक्ष्मण पी चले, उनके पीछे वीर हनूमान्, वानर नल, महातेजस्वी नील और वान यूथपति तार चला ॥ ३-४ ॥ उन्होंने फूलोंके भारसे झुके हुए वृक्षोंको पवित्र जल बहानेवाली, समुद्रमें गिरनेवाली नदियोंको कन्दरा, निर्दर, देवखातोंके बिल, मुख्यशिखर और प्रिय दर्शन वाली गुफा देखते हुए वैडूर्य समान उज्ज्वल पत्तोंवाले और थोडे खिले फूलों कमलोंसे शोभित तथा जल समेत और कारण्ड, सारस, हंस, वञ्जुल, कुक्कुट, चक्रवाक तथा अन्य पक्षियोंसे शब्दायमान तालाबोंको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

कारण्डैः सारसैर्हंसैर्वञ्जुलैर्जलकुक्कुटैः।
चक्रवाकैस्तथा चान्यैः शकुनैः प्रतिनादितान् ८
मृदुशष्पाङ्कुराहारान्निर्भयान्वनचारिणाम्।
चरतां सर्वतः पश्यन्स्थलीषु हरिणान्स्थितान् ९
तटाकवैरिणश्चापि शुक्लदन्तविभूषितान्।
घोरानेकचरान्वन्यान्द्विरदान्कूलघातिनः १०
मत्तान्गिरितटोद्धुष्टान्पर्वतानिव जङ्गमान्।
वानरान्द्विरदप्रख्यान्महीरेणुसमुक्षितान् ११
वने वनचरांश्चान्यान्खेचरांश्च विहंगमान्।
पश्यन्तस्त्वरिता जग्मुः सुग्रीववशवर्तिनः १२
तेषां तु गच्छतां तत्र त्वरितं रघुनन्दनः।
द्रुमषण्डवनं दृष्ट्वा रामः सुग्रीवमब्रवीत् १३
एष मेघ इवाकाशे वृक्षषण्डः प्रकाशते।
मेघसंघातविपुलं पर्यन्तकदलीवृतम् १४
किमेतज्ज्ञातुमिच्छामि सखे कौतूहलं मम।

—देखा॥ ५,–८,॥
उन्होंने कोमल घासके अङ्कुरोंके खाने वाले, भयरहित, वनवासी और भूमि पर चारों ओर विचरते हुए हरिणोंको देखा॥ ९॥ सुग्रीवके वशवर्ती उन्होंने तालावोंके वैरी, श्वेतदन्तोंसे भूषित, अलग अलग विचरनेवाले, वनवासी, दो दन्तवाले, किनारोंके तोडनेवाले, पर्वतके किनारोंके खोदनेवाले, चलनेवाले पहाडोंके समान, मेघके सदृश, भूमिकी धूलिसे लिपटे हुए, घोर, मत्त हाथियोंको और अन्य वनचारी और आकाशचारी पक्षियोंको वनमें देखते हुए शीघ्र ही गमन किया॥ १०–१२॥ वहां उनके शीघ्रतापूर्वक गमन करते हुए रघुवंशी रामने एक वृक्षसमूहके वनको देखकर सुग्रीवसे कहा॥ १३॥ मेघके समूहसे बढा हुआ तथा चारों ओर केलोंसे संयुक्त आकाशमें मेघके समान यह वृक्षोंका झुण्ड शोभा देता है॥ १४॥ हे सखे! यह क्या है? यह मैं जानना चाहता हूं, मुझे बडा

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौतूहलापनयनं कर्तुमिच्छाम्यहं त्वया १५
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः ।
गच्छन्नेवाचचक्षेथ सुग्रीवस्तन्महद्वनम् १६
एतद्राघव विस्तीर्णमाश्रमं श्रमनाशनम् ।
उद्यानवनसंपन्नं स्वादुमूलफलोदकम् १७
अत्र सप्तजना नाम मुनयः शंसितव्रताः ।
सप्तैवासन्नधः शीर्षा नियतं जलशायिनः १८
सप्तरात्रे कृताहारा वायुनाचलवासिनः ।
दिवं वर्षशतैर्याताः सप्तभिः सकलेवराः १९
तेषामेतत्प्रभावेण द्रुमप्राकारसंवृतम् ।
आश्रमं सुदुराधर्षमपि सेन्द्रैः सुरासुरैः २०
पक्षिणो वर्जयन्त्येतत्तथान्ये वनचारिणः ।
विशन्ति मोहाद्येप्यत्र न निवर्तन्ति ते पुनः २१
विभूषणरवाश्चात्र श्रूयन्ते सकलाक्षराः ।
तूर्यगीतस्वनश्चापि गन्धो दिव्यश्च राघव २२

कुतूहल है, मैं तुमसे अपने आश्चर्यको दूर करना चाहता हूं ॥ १५ ॥ हे महात्मा रामके उस वचनको सुनकर सुग्रीवने चलते हुए ही उस घो[र] वनका वृत्तान्त सुनाया ॥ १६ ॥ हे राम ! यह श्रमका नाश करनेवा[ला] वाटिका तथा वनोंसे युक्त, स्वादयुक्त, मूल फल और जलवाला, विस्ती[र्ण] आश्रम है ॥ १७ ॥ यहां पर प्रसिद्ध व्रतवाले, नीचेको शिर किये, [जल]में सोनेवाले सप्तजन नामक सात मुनि वास करते थे ॥ १८ ॥ वायुका आ[हार] सात रात्रियोंमें एकबार करते थे; वे सातसौ वर्षोंमें शरीर समेत स्वर्ग[को] चले गये ॥ १९ ॥

ऐसे प्रभाववाले उन ऋषियोंका वृक्ष तथा प्राकारसे संयुक्त, इन्द्र[के] सुर और असुरोंसे दुराधर्ष यह आश्रम है ॥ २० ॥ पक्षी तथा अन्य वन[चर] इस आश्रमसे दूर रहते हैं । जो अज्ञानके कारण उसमें घुस जाते हैं वे नहीं लौटते ॥ २१ ॥ हे राम ! वहां पर आभूषणोंका शब्द और अक्षरोंवाले तूर्य तथा गीतोंके शब्द सुनाई देते हैं और दिव्य सुगन्धि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रेताग्नयोऽपि दीप्यन्ते धूमो ह्येष प्रदृश्यते।
वेष्टयन्निव वृक्षाग्रान्कपोताङ्गारुणो घनः　२३
एते वृक्षाः प्रकाशन्ते धूमसंसक्तमस्तकाः।
मेघजालप्रतिच्छन्ना वैदूर्यगिरयो यथा　२४
कुरु प्रणामं धर्मात्मंस्तेषामुद्दिश्य राघव।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा प्रयतः संहताञ्जलिः　२५
प्रणमन्ति हि ये तेषामृषीणां भावितात्मनाम्।
न तेषामशुभं किंचिच्छरीरे राम विद्यते　२६
ततो रामः सह भ्राता लक्ष्मणेन कृताञ्जलिः।
समुद्दिश्य महात्मानस्तानृषीनभ्यवादयत्　२७
अभिवाद्य च धर्मात्मा रामो भ्राता च लक्ष्मणः।
सुग्रीवो वानराश्चैव जग्मुः संहृष्टमानसाः　२८
ते गत्वा दूरमध्वानं तस्मात्सप्तजनाश्रमात्।
ददृशुस्तां दुराधर्षां किष्किन्धां वालिपालिताम्　२९

है ॥ २२ वहां त्रेताग्नियें भी प्रकाशित हैं, कपोतके अङ्गके समान रङ्गवाला, घोर धुआं वृक्षके अग्रभागोंको चिपटता हुआ सा प्रकाश करता है ॥ २३ ॥ जिनके मस्तकों पर धुआं लगा हुआ है ऐसे ये वृक्ष शोभायमान हैं जैसे मेघके जालसे ढके हुए वैडूर्यके वृक्ष शोभा देवें ॥ २४ ॥ हे धर्मात्मन् राम! तुम लक्ष्मण भाईके साथ हाथ जोडकर नम्र हो इनको प्रणाम करो ॥ २५ ॥ जो भावितात्मावाले उन मुनियोंको प्रणाम करते हैं, हे राम! उनके शरीरमें कुछ अशुभ नहीं रहता ॥ २६ ॥

तदनन्तर भाई लक्ष्मण समेत रामने हाथ जोडकर उन मुनियोंको लक्ष्य करके अभिवादन किया ॥ २७ ॥ धर्मात्मा राम उनके भाई, सुग्रीव और अन्य वानर वे सब नमस्कार करके प्रसन्न होकर चल दिये ॥ २८ ॥ उस सप्तजन नामक आश्रमसे दूर तक मार्ग चलकर दुर्जेय और वालिके विक्रमसे पालित किष्किन्धाको उन्होंने देखा ॥२९॥ तदनन्तर प्रकाशमान हैं श्रेष्ठ तेज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततस्तु रामानुजरामवानराः प्रगृह्य शस्त्राण्युदितोग्रतेजसः ।
पुरीं सुरेशात्मजवीर्यपालितां वधाय शत्रोः पुनरागतास्त्विह ॥
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० किष्किन्धाकाण्डे त्रयोदशः सर्गः १३[५१

चतुर्दशः सर्गः ।

सर्वे ते त्वरितं गत्वा किष्किन्धां वालिनः पुरीम् ।
वृक्षैरात्मानमावृत्य व्यतिष्ठन्गहने वने १
विसार्य सर्वतो दृष्टिं कानने काननप्रियः ।
सुग्रीवो विपुलग्रीवः क्रोधमाहारयद्भृशम् २
ततस्तु निनदं घोरं कृत्वा युद्धाय चाह्वयत् ।
परिवारैः परिवृतो नादैर्भिन्दन्निवाम्बरम् ॥
गर्जन्निव महामेघो वायुवेगपुरःसरः ३
अथ बालार्कसदृशो दृप्तसिंहगतिस्ततः ।
दृष्ट्वा रामं क्रियादक्षं सुग्रीवो वाक्यमब्रवीत् ४
हरिवागुरया व्याप्तां तप्तकाञ्चनतोरणाम् ।

जिनके ऐसे राम, लक्ष्मण और वानर शस्त्रोंको उठाकर शत्रुके वधके लि वालिके वीर्यसे पालित पुरीको फिर आये ॥ ३० ॥

यहाँ १३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ

वे सब शीघ्रही वालिपालित किष्किन्धा नगरीमें जाकर वृक्षोंसे अपने ढककर गहन वनमें बैठ गये ॥ १ ॥ वनसे प्रेम रखनेवाले और गर्द गर्दनवाले सुग्रीवने वनमें सब ओर दृष्टि फैलाकर अत्यन्त क्रोधको धा कर लिया ॥ २ ॥ तदनन्तर साथियोंसे संयुक्त वह सुग्रीव घोर शब्द वायुका वेग जिसके पहिले है ऐसे मेघके समान गर्जता हुआ सा और श आकाशको फोडता हुआ सा [वाली को] युद्धके लिये बुलाने लगा ॥ इसके पश्चात् बाल सूर्यके समान तथा अहङ्कारी सिंहके समान गमन वाला सुग्रीव क्रियाकुशल रामको देखकर वाक्य बोला ॥ ४ ॥ वानर वागुरा [मृगोंको फंसानेवाले जाल] से व्याप्त अर्थात् अन्योंसे दुष्प्र तपे हुए सुवर्णके तोरणवाली, ध्वजा तथा यन्त्रोंसे युक्त किष्किन्धा न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्ताः स्म ध्वजयन्त्राढ्यां किष्किन्धां वालिनः पुरीम् ५
प्रतिज्ञा या कृता वीर त्वया वालिवधे पुरा ।
सफलां कुरु तां क्षिप्रं लतां काल इवागतः ६
एवमुक्तस्तु धर्मात्मा सुग्रीवेण स राघवः ।
तमेवोवाच वचनं सुग्रीवं शत्रुसूदनः ७
कृताभिज्ञानचिह्नस्त्वमनया गजसाह्वया ।
लक्ष्मणेन समुत्पाट्य एषा कण्ठे कृता तव ८
शोभसेऽप्यधिकं वीर लतया कण्ठसक्तया ।
विपरीत इवाकाशे सूर्यो नक्षत्रमालया ९
अद्य वालिसमुत्थं ते भयं वैरं च वानर ।
एकेनाहं प्रमोक्ष्यामि बाणमोक्षेण संयुगे १०
मम दर्शय सुग्रीव वैरिणं भ्रातृरूपिणम् ।
वाली विनिहतो यावद्वने पांसुषु चेष्टते ११
यदि दृष्टिपथं प्राप्तो जीवन्स विनिवर्तते ।
ततो दोषेण मा गच्छेत्सद्यो गर्हेच्च मां भवान् १२

वालीकी पुरीमें हम सब आगये ॥ ५ ॥ हे वीर ! पहिले जो तुमने वालिके वधकी प्रतिज्ञा की थी उसे शीघ्रही सफल करो जैसे फलका समय लताको फलयुक्त कर देता है ॥ ६ ॥

सुग्रीवने रामसे ऐसा कहा तब धर्मात्मा, शत्रुओंका नाश करनेवाले राम सुग्रीवसे यह वचन बोले ॥ ७ ॥ इस गजपुष्पी मालासे तुम्हारी पहिचान मालूम पडती है जो कि लक्ष्मणने उखाड कर तुम्हारे कण्ठमें डाल दी है ॥ ८ ॥ हे वीर ! कण्ठमें पडी हुई लतासे तुम अधिक शोभा देते हो जैसे आकाशमें नक्षत्रमालासे युक्त सूर्य शोभा देता है ॥ ९ ॥ हे वानर ! आज वालिसे उत्पन्न हुए तुम्हारे भयको संग्राममें छूटे हुए एक बाणसे दूर कर दूंगा ॥ १० ॥ हे सुग्रीव ! भाई रूपी वैरीको मुझे दिखाओ, मरा हुआ वाली वनमें धूलिमें लोटेगा ॥ ११ ॥ वह वाली मेरे दृष्टि मार्गको प्राप्त होकर फिर जीता हुआ यदि लौट जाय तो आप शीघ्रही मेरे पास आवें और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्यक्षं सप्त ते ताला मया बाणेन दारिताः।
ततो वेत्सि बलेनाद्य वालिनं निहतं रणे १३
अनृतं नोक्तपूर्वं मे चिरं कृच्छ्रेऽपि तिष्ठता।
धर्मलोभपरीतेन न च वक्ष्ये कथंचन १४
सफलां च करिष्यामि प्रतिज्ञां जहि संभ्रमम्।
प्रसूतं कलमक्षेत्रं वर्षेणेव शतक्रतुः १५
तदाह्वाननिमित्तं च वालिनो हेममालिनः।
सुग्रीव कुरु तं शब्दं निष्पतेद्येन वानरः १६
जितकाशी जयश्लाघी त्वया चाधर्षितः पुरात्।
निष्पतिष्यत्यसङ्गेन वाली स प्रियसंयुगः १७
रिपूणां धर्षितं श्रुत्वा मर्षयन्ति न संयुगे।
जानन्तस्तु स्वकं वीर्यं स्त्रीसमक्षं विशेषतः १८
स तु रामवचः श्रुत्वा सुग्रीवो हेमपिङ्गलः।
ननर्द क्रूरनादेन विनिर्भिन्दन्निवाम्बरम् १९

दोषसे मेरी निन्दा करें ॥ १२ ॥ तुम्हारे सामने मैंने एक बाणसे सालोंके वृक्षोंको बींध डाला था, उसी बलसे आज वालीको मेरे मारा हुआ समझो ॥ १३ ॥

हे वीर! धर्मके लोभसे व्याप्त मैंने कष्टमें भी पूर्व झूठ नहीं बोला न बोलूंगा॥१४॥ तुम भ्रमको त्यागो मैं प्रतिज्ञाको सफल करूंगा जैसे खेतमें उत्पन्न हुए अनाजको वर्षासे फलयुक्त कर देते हैं ॥ १५ ॥ हे सुग्रीव तुम सुवर्णके मालाधारी वालीको बुलानेके अभिप्रायसे उस शब्दको जिससे वाली बाहर निकले ॥ १६ ॥ [सर्वत्र] जीत होनेसे प्रकाशमान बलकी प्रशंसा करनेवाला, प्रिय है संग्राम जिसको तथा तुमसे पहिले पराजित हुआ वह वाली शीघ्र ही निकलेगा ॥ १७ ॥ संग्राममें अपने क्रमके जाननेवाले शूर वैरियोंसे किये हुए तिरस्कारको नहीं सहते; विशेष कर स्त्रियोंके समक्षमें किये गये तिरस्कारको तो कभी नहीं सहते ॥ १८ ॥

सुवर्णके समान पीला सुग्रीव रामके वचनको सुनकर क्रूर शब्दसे आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र शब्देन वित्रस्ता गावो यान्ति हतप्रभाः ।
राजदोषपरामृष्टाः कुलस्त्रिय इवाकुलाः   २०
द्रवन्ति च मृगाः शीघ्रं भग्ना इव रणे हयाः ।
पतन्ति च खगा भूमौ क्षीणपुण्या इव ग्रहाः   २१
ततः स जीमूतकृतप्रणादो नादं ह्यमुं च त्वरया प्रतीतः ।
सूर्यात्मजः शौर्यविवृद्धतेजाः सरित्पतिर्वानिलचञ्चलोर्मिः २२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे चतुर्दशः सर्गः ॥१४॥ [६१३]

पञ्चदशः सर्गः ।

अथ तस्य निनादं तं सुग्रीवस्य महात्मनः ।
शुश्रावान्तःपुरगतो वाली भ्रातुरमर्षणः   १
श्रुत्वा तु तस्य निनदं सर्वभूतप्रकम्पनम् ।
मदश्चैकपदे नष्टः क्रोधश्चापादितो महान्   २
ततो रोषपरीताङ्गो वाली स कनकप्रभः ।
उपरक्त इवादित्यः सद्यो निष्प्रभतां गतः   ३

को फोडता हुआ सा गर्जने लगा ॥ १९ ॥ उसके शब्दसे डरी हुई गायें सुखकी कान्तिसे हीन होकर भागने लगीं जैसे राजाके न रहनेसे परपुरुषोंसे आक्रान्त कुलीन स्त्रियें व्याकुल हो भागें ॥ २० ॥ संग्राममें डरे हुए घोडोंके समान हरिण भागने लगे और पक्षी भूमि पर गिरने लगे जैसे पुण्यहीन होकर ग्रह गिरें ॥ २१ ॥ तदनन्तर मेघके समान शब्दवाले और प्रसिद्ध तथा शूरताके कारण बढ गया है तेज जिसका ऐसे सूर्यपुत्र सुग्रीवने ऐसा शब्द किया जैसे पवनसे चलायमान लहरोंवाला समुद्र करे ॥ २२ ॥

यहाँ १४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ

अब महा धैर्ययुक्त भाई सुग्रीवकी गर्जनाको स्त्रियोंके भवनमें स्थित, असहिष्णु, वालीने सुना ॥ १ ॥ सब प्राणियोंको कंपाने वाला सुग्रीवका गर्जन सुनकर वालीका मद एकदम नष्ट हो गया और महान् क्रोध उत्पन्न हुआ ॥ २ ॥ सन्ध्या समयके धूपके समान कान्तिवाला, रोषसे व्याप्त अङ्ग वाला वाली ग्रहणकालके सूर्यके समान शीघ्र ही कान्तिहीन हो गया ॥ ३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाली दंष्ट्राकरालस्तु क्रोधाद्दीप्ताग्निलोचनः ।
भात्युत्पतितपद्माभः समृणाल इव ह्रदः ४
शब्दं दुर्मर्षणं श्रुत्वा निष्पपात ततो हरिः ।
वेगेन च पदन्यासैर्दारयन्निव मेदिनीम् ५
तं तु तारा परिष्वज्य स्नेहाद्दर्शितसौहृदा ।
उवाच त्रस्तसंभ्रान्ता हितोदर्कमिदं वचः ६
साधु क्रोधमिदं वीर नदीवेगमिवागतम् ।
शयनादुत्थितः काल्यं त्यज भुक्तामिव स्रजम् ७
काल्यमेतेन सङ्ग्रामं करिष्यसि च वानर ।
वीर ते शत्रुबाहुल्यं फल्गुता वा न विद्यते ८
सहसा तव निष्क्रामो मम तावन्न रोचते ।
श्रूयतामभिधास्यामि यन्निमित्तं निवार्यते ९
पूर्वमापतितः क्रोधात्स त्वामाह्वयते युधि ।
निष्पत्य च निरस्तस्ते हन्यमानो दिशो गतः १०

बडी दाढों वाला और क्रोधसे प्रकाशित अग्निके समान वाली समेत, खिले हुए कमलों वाले ह्रद (तालाब) के समान देने लगा ॥ ४ ॥ इसके अनन्तर असहनीय शब्दको सुनकर वाली चरणोंके धरनेके कारण भूमिको तोडता हुआ सा निकला ॥ ५ ॥

तारा मित्रता दिखाती तथा भय और शीघ्रतायुक्त होती हुई वालीको आलिङ्गन कर आगेको हित देनेवाला वचन बोली ॥ ६ वीर ! नदीके वेगके समान आये हुए इस क्रोधको सबेरेके समय शयन हुआ पुरुष जैसे भोगी हुई मालाको त्याग देता है इस तरह निःशेष ॥ ७ ॥ हे वानर ! हे वीर ! कल सुबह इससे संग्राम करोगे तो (हीनता) वा शत्रुका गौरव नहीं हो जायगा ॥ ८ ॥ एकदम तुम्हारा निकलना मुझे तो अच्छा नहीं लगता । सुनो, कहती हूं जिस कारण तुमको रोकती हूं ॥ ९ ॥ पहिले आया हुआ और तुमसे क्रोध पूर्वक निरस्त किया हुआ तथा हीन होकर जो दिशाओंमें भागा ऐसा (सुग्रीव) फिर आकर तुम्हें आहूत करता है ॥ १० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वया तस्य निरस्तस्य पीडितस्य विशेषतः ।
इहैत्य पुनराह्वानं शङ्कां जनयतीव मे ११
दर्पश्च व्यवसायश्च यादृशस्तस्य नर्दतः ।
निनादस्य च संरम्भो नैतदल्पं हि कारणम् १२
नासहायमहं मन्ये सुग्रीवं तमिहागतम् ।
अवष्टब्धसहायश्च यमाश्रित्यैष गर्जति १३
प्रकृत्या निपुणश्चैव बुद्धिमांश्चैव वानरः ।
नापरीक्षितवीर्येण सुग्रीवः सख्यमेष्यति १४
पूर्वमेव मया वीर श्रुतं कथयतो वचः ।
अङ्गदस्य कुमारस्य वक्ष्याम्यद्य हितं वचः १५
अङ्गदस्तु कुमारोऽयं वनान्तमुपनिर्गतः ।
प्रवृत्तिस्तेन कथिता चारैराप्तैर्निवेदिता १६
अयोध्याधिपतेः पुत्रौ शूरौ समरदुर्जयौ ।
इक्ष्वाकूणां कुले जातौ प्रथितौ रामलक्ष्मणौ १७
सुग्रीवप्रियकामार्थं प्राप्तौ तत्र दुरासदौ ।

पीडित तथा तुमसे विशेष तिरस्कृत हुए उसका यहां आकर फिर बुलाना मुझे शङ्कामें डालता है ॥ ११ ॥ गर्जते हुए इसका अहङ्कार, यत्न, शब्द और क्रोध जैसा है इसका कोई अल्प कारण नहीं ॥ १२ ॥ यहां आये हुए सुग्रीवको सहायक हीन मैं नहीं समझती, अतः वह सहाययुक्त ही है जिसके आश्रयसे ऐसा गर्जता है ॥ १३ ॥ स्वभावसे ही निपुण और बुद्धिमान् वानर सुग्रीव है विना परीक्षा किये हुए बलवालेके साथ सुग्रीव (कभी) नहीं आवेगा ॥ १४ ॥ हे वीर ! मैंने कहते हुए कुमार अङ्गदसे जो वचन पहिले ही सुना है उस हितके वचनको तुमसे कहूंगी ॥१५॥ यह अङ्गद कुमार उपवनके समीपमें गया था, सत्यवादी गुप्तचरोंसे सुनाई हुई यह वार्ता उसने (मुझसे) कही थी ॥ १६ ॥

दशरथके पुत्र संग्राममें दुर्जय इक्ष्वाकुओंके कुलमें उत्पन्न, प्रसिद्ध, शूर राम लक्ष्मण सुग्रीवकी प्रिय कामनाके वास्ते वहां आये हैं ॥ १७ ॥ प्रसिद्ध, संग्राममें कठोर, शत्रुकी सेनाको मारनेवाले, युगान्तकी प्रज्वलित अग्निके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स ते भ्रातुर्हि विख्यातः सहायो रणकर्मणि १८
रामः परबलामर्दी युगान्ताऽग्निरिवोत्थितः ।
निवासवृक्षः साधूनामापन्नानां परां गतिः १९
आर्तानां संश्रयश्चैव यशसश्चैकभाजनम् ।
ज्ञानविज्ञानसंपन्नो निदेशे निरतः पितुः २०
धातूनामिव शैलेन्द्रो गुणानामाकरो महान् ।
तत्क्षमो न विरोधस्ते सह तेन महात्मना २१
दुर्जयेनाप्रमेयेण रामेण रणकर्मसु ।
शूर वक्ष्यामि ते किंचिन्न चेच्छाम्यभ्यसूयितुम् २२
श्रूयतां क्रियतां चैव तव वक्ष्यामि यद्धितम् ।
यौवराज्येन सुग्रीवं तूर्णं साध्वभिषेचय २३
विग्रहं मा कृथा वीर भ्रात्रा राजन्यवीयसा ।
अहं हि ते क्षमं मन्ये तेन रामेण सौहृदम् २४
सुग्रीवेण च संप्रीतिं वैरमुत्सृज्य दूरतः ।
लालनीयो हि ते भ्राता यवीयानेष वानरः २५

समान राम तुम्हारे भाईके सहायक हैं ॥ १८ ॥ साधुओंके आश्रय शरणागतोंकी परमगति, दुःखितोंके सहारे और यशके एकमात्र ज्ञान और विज्ञानसे युक्त, पिताकी आज्ञामें तत्पर, धातुओंकी खान पहाड़ जैसे गुणोंकी खान, ऐसे राम हैं ॥ १९-२० ॥ रण कार्योंमें और अप्रमेय उस महात्मा रामके साथ तुम्हारा विरोध करना अच्छा ॥ २१ ॥ हे शूर ! मैं तुमसे जो कुछ कहती हूं उससे तुम्हारे विषयमें उत्पन्न करनेकी इच्छा नहीं करती । तुमको जो हितकारी है उसे कहती उसे सुनो और करो ॥ २२ ॥

हे वीर ! युवराजपदसे सुग्रीवका शीघ्र ही अभिषेक करो; हे बलवान् भाईके साथ बिगाड मत करो ॥ २३ ॥ मैं उन रामके साथ तु मित्रता और सुग्रीवके साथ दूरसे ही वैरको छोड़कर सुप्रीति समझती हूं ॥ २४ ॥ उस छोटे भाई वानर सुग्रीवसे तुम्हें प्यार चाहिये, वहां रहे या समीपमें रहे हर हालतमें तुम्हारा भाई ही है ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र वा सन्निहस्थो वा सर्वथा बन्धुरेव ते ।
न हि तेन समं बन्धुं भुवि पश्यामि कंचन २६
दानमानादिसत्कारैः कुरुष्व प्रत्यनन्तरम् ।
वैरमेतत्समुत्सृज्य तव पार्श्वे स तिष्ठतु २७
सुग्रीवो विपुलग्रीवो महाबन्धुर्मतस्तव ।
भ्रातृसौहृदमालम्ब्य नान्या गतिरिहास्ति ते २८
यदि ते मत्प्रियं कार्यं यदि चावैषि मां हिताम् ।
याच्यमानः प्रियत्वेन साधु वाक्यं कुरुष्व मे २९
प्रसीद पथ्यं शृणु जल्पितं हि मे न रोषमेवानुविधातुमर्हसि ।
क्षमो हि ते कोशलराजसूनुना न विग्रहः शक्रसमानतेजसा ३०
तदा हि तारा हितमेव वाक्यं तं वालिनं पथ्यमिदं बभाषे ।
न रोचते तद्वचनं हितस्य कालाभिपन्नस्य विनाशकाले ३१
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे पञ्चदशः सर्गः ।१५। [६४४]

उसके समान भाईको मैं भूमि पर नहीं देखती, दान मान आदि सत्कारसे उसे अपना समीपवर्ती करलो ॥ २६ ॥ इस वैरको छोडकर बडी गर्दनवाला सुग्रीव तुम्हारे समीपमें रहे, वह सदा तुम्हारा भाईही माना जाता है ॥ २७ ॥ भाईसे मित्रता करो, तुम्हारे लिये यहां और कोई सहारा नहीं है ॥ २८ ॥

यदि तुम्हें मेरा प्रिय करना है, यदि मुझे हितैषिणी जानते हो तो प्रयत्नसे प्रार्थना किये हुए तुम मेरे शुभ वाक्यको करो ॥ २९ ॥ तुम प्रसन्न होवो, हितकारी मेरे कथनको सुनो और तुम्हें क्रोध न करना चाहिये, इन्द्र समान तेजस्वी रामके साथ तुम्हारा विरोध करना ठीक नहीं ॥ ३० ॥ उस समय ताराने उस वालीसे यह हितकारी पथ्य (उचित) वचन कहा, कालसे बंधे हुए उस वालीको विनाश कालके समय पर उसका वचन अच्छा नहीं लगा ॥ ३१ ॥

॥ यहां १५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥

तामेवं ब्रुवतीं तारां ताराधिपनिभाननाम्।
वाली निर्भर्त्सयामास वचनं चेदमब्रवीत् १
गर्जतोऽस्य सुसंरब्धं भ्रातुः शत्रोर्विशेषतः।
मर्षयिष्यामि केनापि कारणेन वरानने २
अधर्षितानां शूराणां समरेष्वनिवर्तिनाम्।
धर्षणामर्षणं भीरु मरणादतिरिच्यते ३
सोढुं न च समर्थोऽहं युद्धकामस्य संयुगे।
सुग्रीवस्य च संरम्भं हीनग्रीवस्य गर्जितम् ४
न च कार्यो विषादस्ते राघवं प्रति मत्कृते।
धर्मज्ञस्य कृतज्ञश्च कथं पापं करिष्यति ५
निवर्तस्व सह स्त्रीभिः कथं भूयोऽनुगच्छसि।
सौहृदं दर्शितं तावन्मयि भक्तिस्त्वया कृता ६
प्रतियोत्स्याम्यहं गत्वा सुग्रीवं जहि संभ्रमम्।
दर्पं चास्य विनेष्यामि न च प्राणैर्वियोक्ष्यते ७

चन्द्रमाके समान मुखवाली और पूर्वोक्त प्रकारसे कहती हुई ता
वालीने झिड़का और यह वचन कहा ॥ १ ॥ हे वरानने ! विशेष का
रूप गर्जते हुए इस भाईके क्रोधको मैं किस कारण सह लूं ॥ २ ॥ हे
कभी तिरस्कारको न प्राप्त हुए और संग्राममें पीछेको नहीं लौटे ऐसे शू
अपमानका सहलेना मरणसे भी अधिक है ॥ ३ ॥ युद्धकी इच्छा
दुबली गर्दनवाले संग्राममें गर्जते हुए सुग्रीवका क्रोध मैं सहनेमें
नहीं हूं ॥ ४ ॥ रामके प्रति मेरे विषयमें तुम खेद मत करो, धर्मज्ञ
कृतज्ञ राम पापको कैसे करेंगे ॥ ५ ॥

हे तारे ! स्त्रियोंके साथ लौट जा, फिर क्यों पीछे आती है । मेरे
तूने मित्रता दिखलाई और भक्ति भी दर्शाई ॥ ६ ॥ तू भ्रमको त्याग
जाकर सुग्रीवसे प्रतियुद्ध करूंगा । उसके अभिमान मात्रको दूर क
जानसे नहीं मारूंगा ॥ ७ ॥ युद्धमें स्थित उसकी कामनाको मैं पूरा क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहं ह्याजिस्थितस्यास्य करिष्यामि यदीप्सितम् ।
वृक्षैर्मुष्टिप्रहारैश्च पीडितः प्रतियास्यति ८
न मे गर्वितमायस्तं सहिष्यति दुरात्मवान् ।
कृतं तारे सहायत्वं दर्शितं सौहृदं मयि ९
शापितासि मम प्राणैर्निवर्तस्व जनेन च ।
अलं जित्वा निवर्तिष्ये तमहं भ्रातरं रणे १०
तं तु तारा परिष्वज्य वालिनं प्रियवादिनी ।
चकार रुदती मन्दं दक्षिणा सा प्रदक्षिणाम् ११
ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मन्त्रविद्विजयैषिणी ।
अन्तःपुरं सह स्त्रीभिः प्रविष्टा शोकमोहिता १२
प्रविष्टायां तु तारायां सह स्त्रीभिः स्वमालयम् ।
नगर्या निर्ययौ क्रुद्धो महासर्प इव श्वसन् १३
स निःश्वस्य महारोषो वाली परमवेगवान् ।
सर्वतश्चारयन्दृष्टिं शत्रुदर्शनकाङ्क्षया १४

और वृक्ष तथा मुष्टि प्रहारोंसे पीडित हुआ वह लौट जायगा ॥ ८ ॥ दुष्टा-मा वह मेरे गर्व और प्रयत्नको नहीं सह सकेगा; हे तारे ! तूने सहाय भी रा किया और मित्रता भी दिखलाई ॥ ९ ॥ अपने प्राण और जयसे तुझे ौगन्द देता हूं-तू लौट जा और मैं उस भाईको रणमें जीतकर लौटूंगा १० ॥ प्रिय बोलनेवाली तथा चतुर ताराने उस वालीका आलिङ्गन रके मन्द मन्द रोते हुए प्रदक्षिणा की ॥ ११॥

तदनन्तर विजयकी इच्छा करनेवाली तारा मन्त्रोंके अनुकूल स्वस्ति ाचन करके शोकसे मोहित हो स्त्रियोंके साथ महलमें चली गई ॥ १२ ॥ स्त्रयोंके साथ ताराके महलमें चले जानेपर क्रोधित हुआ वाली बडे सर्पके मान श्वास लेता हुआ नगरसे निकला ॥ १३ ॥ महातेजस्वी और परम-रोषी वाली श्वास लेकर शत्रुके देखनेकी इच्छासे चारों ओर दृष्टिको ैलाता हुआ (चलदिया) ॥ १४ ॥ इसके अनन्तर श्रीमान् वालीने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स ददर्श ततः श्रीमान्सुग्रीवं हेमपिङ्गलम्।
सुसंवीतमवष्टब्धं दीप्यमानमिवानलम् १५
तं स दृष्ट्वा महाबाहुः सुग्रीवं पर्यवस्थितम्।
गाढं परिदधे वासो वाली परमकोपनः १६
स वाली गाढसंवीतो मुष्टिमुद्यम्य वीर्यवान्।
सुग्रीवमेवाभिमुखो ययौ योद्धुं कृतक्षणः १७
श्लिष्टं मुष्टिं समुद्यम्य संरब्धतरमागतः।
सुग्रीवोऽपि समुद्दिश्य वालिनं हेममालिनम् १८
तं वाली क्रोधताम्राक्षं सुग्रीवं रणकोविदम्।
आपतन्तं महावेगमिदं वचनमब्रवीत् १९
एष मुष्टिर्महान्बद्धो गाढः सुनियताङ्गुलिः।
मया वेगविमुक्तस्ते प्राणानादाय यास्यति २०
एवमुक्तस्तु सुग्रीवः क्रुद्धो वालिनमब्रवीत्।
तव चैव हरन्प्राणान्मुष्टिः पततु मूर्धनि २१

सुवर्णके समान पीले, तथा अग्निके समान प्रकाशमान, कमर बांध
दृढतासे खडे हुए सुग्रीवको देखा ॥ १५ ॥ महाबली सुग्रीवको खडा हुआ
देखकर परमक्रोधी वालीने अच्छे प्रकार वस्त्रको कमरसे बांधा ॥ १६ ॥

फेंट बांधे वह बलवान् वाली मुट्ठी उठाकर युद्धका अवसर पाकर सुग्रीवके
सामने गया ॥ १७ ॥ सुग्रीव भी सुवर्णकी माला धारण किये वालीको
उद्दिष्ट करके चिपटी हुई मुट्ठी बांधकर अत्यन्त क्रोधसे आया ॥ १८ ॥
क्रोधसे लाल हो रहे हैं नेत्र जिसके ऐसा वाली रणमें कुशल, महावेगसे
आते हुए सुग्रीवसे यह बोला ॥ १९ ॥ मिली हुई अङ्गुलियोंवाली
और बडी यह मुट्ठी मैंने बांधी है, मेरेसे वेगसे छोडी यह तेरे प्राण
लेकर लौटेगी ॥ २० ॥ इस प्रकार सम्बोधित सुग्रीव क्रोधित होकर वालीसे
बोले- यह मुट्ठी तेरे ही मस्तक पर प्राणोंको हरती हुई गिरेगी ॥ २१ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताडितस्तेन तं क्रुद्धः समभिक्रम्य वेगतः ।
अभवच्छोणितोद्गारो सापीड इव पर्वतः　२२
सुग्रीवेण तु निःशङ्कं सालमुत्पाट्य तेजसा ।
गात्रेष्वभिहतो वाली वज्रेणेव महागिरिः　२३
स तु वृक्षेण निर्भग्नः सालताडनविह्वलः ।
गुरुभारभराक्रान्ता नौः ससार्थेव सागरे　२४
तौ भीमबलविक्रान्तौ सुपर्णसमवेगितौ ।
प्रयुद्धौ घोरवपुषौ चन्द्रसूर्याविवाम्बरे　२५
परस्परममित्रघ्नौ छिद्रान्वेषणतत्परौ ।
ततोवर्धत वाली तु बलवीर्यसमान्वितः　२६
सूर्यपुत्रो महावीर्यः सुग्रीवः परिहीयत ।
वालिना भग्नदर्पस्तु सुग्रीवो मन्दविक्रमः　२७
वालिनं प्रति सामर्षो दर्शयामास राघवम् ।
वृक्षैः सशाखैः शिखरैर्वज्रकोटिनिभैर्नखैः　२८

इस वाली द्वारा (धैर्यके समयको) उल्लङ्घन कर ताडन किये अतएव क्रुद्ध तथा वेगयुक्त सुग्रीव झरना युक्त पर्वतके समान रक्तको छोडने लगा ॥२२॥ सुग्रीवने अपने तेजसे निःशङ्क हो सालको उखाडकर वालीके शरीरमें उससे इस तरह ताडन किया जैसे वज्रसे बडे पर्वतको ताडन किया जाय ॥ २३ ॥ सालके ताडन करनेसे विकल हुआ वाली ऐसे चलायमान हो गया जैसे भारीबोझासे दबी हुई नाव चलायमान हो जावे ॥ २४ ॥ वे भयानक बल और विक्रमवाले, गरुडके समान वेग वाले, घोर शरीरधारी, परस्पर शत्रुको मारनेवाले और छिद्रके ढूंढनेमें तत्पर वे दोनों आकाशमें (पूर्णमासीके) चन्द्र और सूर्यके समान बढ गये ॥ २५ ॥ इसके अनन्तर बल और वीर्ययुक्त वाली बढने लगा ॥ २६ ॥ और महाबली, सूर्यका पुत्र, सुग्रीव हीन होने लगा। वालीने तोडदिया है अहङ्कार जिसका ऐसा सुग्रीव मन्दविक्रम हो ॥ २७ ॥ वालीके प्रति क्रोधयुक्त हो शीघ्रता दिखाने लगा। चोटी और शाखा समेत वृक्ष, शिखर, वज्रके किनारेके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुष्टिभिर्जानुभिः पद्भिर्बाहुभिश्च पुनः पुनः ।
तयोर्युद्धमभूद्घोरं वृत्रवासवयोरिव २९
तौ शोणिताक्तौ युध्येतां वानरौ वनचारिणौ ।
मेघाविव महाशब्दैस्तर्जमानौ परस्परम् ३०
हीयमानमथापश्यत्सुग्रीवं वानरेश्वरम् ।
प्रेक्षमाणं दिशश्चैव राघवः स मुहुर्मुहुः ३१
ततो रामो महातेजा आर्तं दृष्ट्वा हरीश्वरम् ।
स शरं वीक्षते वीरो वालिनो वधकाङ्क्षया ३२
ततो धनुषि संधाय शरमाशीविषोपमम् ।
पूरयामास तच्चापं कालचक्रमिवान्तकः ३३
तस्य ज्यातलघोषेण त्रस्ताः पत्ररथेश्वराः ।
प्रदुद्रुवुर्मृगाश्चैव युगान्त इव मोहिताः ३४
युक्तस्तु वज्रनिर्घोषः प्रदीप्ताशनिसंनिभः ।
राघवेण महाबाणो वालिवक्षसि पातितः ३५

समान नख, मुष्टियां, जानु, पैर, और भुजाओंसे बार बार उन दो युद्ध वृत्रासुर और इन्द्रके समान हुआ ॥ २८ २९ ॥ रक्तसे भीगे हुए मेघोंके समान बडे शब्दोंसे आपसमें एक दूसरेको तर्जित करते हुए वनचारी वानरोंने युद्ध किया ॥ ३० ॥

रामने बार बार दिशाओंको देखते तथा हीन बल हुए वानर सुग्रीवको देखा ॥ ३१ ॥ तदनन्तर महातेजस्वी वीर रामने सुग्रीवको देखकर वालिके वधकी इच्छासे बाणको देखा ॥ ३२ ॥ इसके सर्पके समान बाणको धनुष पर धरकर रामने चापको इस प्रकार जैसे यमराज कालचक्रको चढावे ॥ ३३ ॥ उसके प्रत्यञ्चा और तलके भययुक्त हुए श्रेष्ठ पक्षी और मृग युगान्त कालके सदृश मोहित हो उधर दौडने लगे ॥ ३४ ॥ वज्रके समान शब्दवाला और बिजलीके चमकने वाला महाबाण राम द्वारा छोडा जाकर वालीके वक्षःस्थल(पर गिरा ॥ ३५ ॥ बलसे गर्विष्ठ हुआ, महातेजस्वी, वानरोंका स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततस्तेन महातेजा वीर्ययुक्तः कपीश्वरः।
वेगेनाभिहतो वाली निपपात महीतले ३६
इन्द्रध्वज इवोद्भूतः पौर्णमास्यां महीतले।
आश्वयुक्समये मासि गतसत्त्वो विचेतनः ३७
बाष्पसंरुद्धकण्ठस्तु वाली चार्तस्वरः शनैः ३८
नरोत्तमः काल इवान्तकोपमं शरोत्तमं काञ्चनरूपभासितम्।
ससर्ज दीप्तं तमभित्रमर्दनं सधूममग्निं मुखतो यथा हरः ३९
यथोक्षितः शोणिततोयविस्रवैः प्रपुष्पिताशोक इवाचलोद्धतः।
विचेतनो वासवसूनुराहवे प्रभंशितेन्द्रध्वजवत्क्षितिंगतः ४०
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० किष्किन्धाकाण्डे षोडशः सर्गः १६ [५९१]

सप्तदशः सर्गः।

ततः शरेणाभिहतो रामेण रणकर्कशः।
पपात सहसा वाली निकृत्त इव पादपः १
स भूमौ न्यस्तसर्वाङ्गस्तप्तकाञ्चनभूषणः।
अपतद्देवराजस्य मुक्तरश्मिरिव ध्वजः २

उस बाणसे हत होकर भूमितल पर वेगसे गिर गया ॥ ३६ ॥ जैसे आश्विन मासकी पूर्णमासीको इन्द्रकी ध्वजा पृथ्वी पर गिरे ॥ ३७ ॥ वाली शोभा-रहित, बेहोश, आंसुओंसे रुके हुए कण्ठवाला तथा आर्तस्वर हो गया ॥ ३८ ॥ पुरुषोंमें श्रेष्ठ रामने युगान्तके मृत्युके सदृश सुवर्ण और चान्दीसे भूषित वैरियोंके नाश करनेवाले प्रकाशित बाणको छोडा जैसे महादेव धूम समेत अग्निको मुखसे छोडें ॥ ३९ ॥ तब रक्त और जलके गिरनेसे भीगे पवनसे कम्पाये हुए पुष्पित अशोकके समान तथा बेहोश हुआ इन्द्रका पुत्र वाली समरमें गिराई हुई इन्द्रध्वजाके समान भूमि पर गिर पडा ॥ ४० ॥

यहाँ सतरहवाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

समरमें कठोर वाली राम द्वारा शरसे मारा हुआ एकदम गिर पडा जैसे कटा हुआ वृक्ष गिर पडे ॥ १ ॥ भूमि पर पडा है समस्त शरीर जिसका और तपे हुए सुवर्णके भूषण वाला वाली, छोड दी गई है रस्सी जिसकी

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्मिन्निपतिते भूमौ हर्यृक्षाणां गणेश्वरे ।
नष्टचन्द्रमिव व्योम न व्यराजत मेदिनी ३

भूमौ निपतितस्यापि तस्य देहं महात्मनः ।
न श्रीर्जहाति न प्राणा न तेजो न पराक्रमः ४

शक्रदत्ता वरा माला काञ्चनी रत्नभूषिता ।
दधार हरिमुख्यस्य प्राणांस्तेजः श्रियं च सा ५

स तया मालया वीरो हैमया हरियूथपः ।
संध्यानुगतपर्यन्तः पयोधर इवाभवत् ६

तस्य माला च देहश्च मर्मघाती च यः शरः ।
त्रिधेव रचिता लक्ष्मीः पतितस्यापि शोभते ७

तदस्त्रं तस्य वीरस्य स्वर्गमार्गप्रभावनम् ।
रामबाणासनक्षिप्तमावहत्परमां गतिम् ८

तं तथा पतितं सङ्ख्ये गतार्चिषमिवानलम् ।
ययातिमिव पुण्यान्ते देवलोकादिहच्युतम् ९

ऐसी इन्द्रकी ध्वजाके समान, गिर पडा ॥ २ ॥ वानरोंके स्वामी वालीके भूमि पर गिर पडने पर चन्द्रहीन आकाशके समान पृथ्वीने ... न दी ॥ ३ ॥ भूमिपर गिरे हुए भी उस महात्मा वालीके देहको न ... न प्राण, न तेज और न पराक्रमने छोडा ॥ ४ ॥ इन्द्रसे दी हुई ... मणिसे भूषित सुवर्णकी मालाने वानरोंमें मुख्य वालीके प्राण, तेज ... शोभाको धारण कर लिया ॥ ५ ॥

वानरोंका यूथपति वीर वाली उस सुवर्णकी मालासे सन्ध्या... मेघके समान शोभा देने लगा ॥ ६ ॥ माला, देह और मर्मघाती ... तीन जगह स्थित हुए तेजके समान, गिरे हुए भी उसको शोभा ... ॥ ७ ॥ स्वर्गके मार्गके प्रभाववाले और रामके धनुषसे छूटे उस बाणने ... को परमगति दी ॥ ८ ॥ उस समय सङ्ग्राममें गिरे हुए ज्वालाहीन ... सदृश, उन रामको बडा मान कर शनैः शनैः देखने वाले, पुण्यके ... देवलोकसे गिरे हुए ययातिके समान और युगके अन्तमें कालसे भू...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यमिव कालेन युगान्ते भुवि पातितम्।
महेन्द्रमिव दुर्धर्षमुपेन्द्रमिव दुःसहम् १०
महेन्द्रपुत्रं पतितं वालिनं हेममालिनम्।
व्यूढोरस्कं महाबाहुं दीप्तास्यं हरिलोचनम् ११
लक्ष्मणानुचरो रामो ददर्शोपससर्प च।
तं तथा पतितं वीरं गतार्चिषमिवानलम् १२
बहुमान्य च तं वीरं वीक्ष्यमाणं शनैरिव।
उपयातौ महावीर्यौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ १३
तं दृष्ट्वा राघवं वाली लक्ष्मणं च महाबलम्।
अब्रवीत्परुषं वाक्यं प्रश्रितं धर्मसंहितम् १४
स भूमावल्पतेजोसुर्निहतो नष्टचेतनः।
अर्थसंहितया वाचा गर्वितं रणगर्वितम् १५
पराङ्मुखवधं कृत्वा कोऽत्र प्राप्तस्त्वया गुणः।
यदहं युद्धसंरब्धस्त्वत्कृते निधनं गतः १६

गिराये गये सूर्यके सदृश गिरे हुए, इन्द्रके समान दुर्धर्ष और दुःसह, सुवर्णमालाधारी, सिंहके समान छातीवाले, महाबाहु, प्रकाशित मुखवाले, कपिल नेत्र वाले, इन्द्रके पुत्र वालीको लक्ष्मण जिनके पीछे हैं ऐसे रामने देखा और उसके समीपको चले ॥ ९, १०, ११, १२ ॥

ज्वालाहीन अग्निके समान उक्त प्रकारसे गिरे हुए वीर रामको बडा मान कर मन्द मन्द देखते वीर वालीके समीपमें महाबली भाई राम लक्ष्मण आये ॥ १३ ॥ राम और महाबली लक्ष्मणको देखकर वाली विनीत, धर्म युक्त पर कठोर वाक्यको बोला ॥ १४ ॥ आंसुओंसे रुक गया है कण्ठ जिसका, भूमि पर थोडा रह गया है तेज तथा प्राण जिसके, घायल हुआ, ज्ञान रहित हुआ, संग्राममें अहंकारी, कीचडमें अटके हाथीके समान, वाली गर्वित रामको देखकर प्रयोजन युक्त, वाणीसे आर्त हो बोला ॥ १५-१६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुलीनः सत्त्वसंपन्नस्तेजस्वी चरितव्रतः।
रामः करुणवेदी च प्रजानां च हिते रतः १७
सानुक्रोशो महोत्साहः समयज्ञो दृढव्रतः।
इत्येतत्सर्वभूतानि कथयन्ति यशो भुवि १८
दमः शमः क्षमा धर्मो धृतिः सत्त्वं पराक्रमः।
पार्थिवानां गुणा राजन्दण्डश्चाप्यपकारिषु १९
तान्गुणान्संप्रधार्याहमग्र्यं चाभिजनं तव।
तारया प्रतिषिद्धः सन्सुग्रीवेण समागतः २०
न मामन्येन संरब्धं प्रमत्तं वेद्धुमर्हसि।
इति मे बुद्धिरुत्पन्ना बभूवादर्शने तव २१
स त्वां विनिहतात्मानं धर्मध्वजमधार्मिकम्।
जाने पापसमाचारं तृणैः कूपमिवावृतम् २२
सतां वेषधरं पापं प्रच्छन्नमिव पावकम्।

शास्त्रोंसे प्यार रखनेवाले, कुलीन, सत्वयुक्त, तेजस्वी, व्रतधारी तुम के पुत्र प्रसिद्ध हो ॥ १७ ॥ दूसरेके साथ युद्धमें आसक्तका वध करके क्या उत्कर्ष प्राप्त कर लिया जो कि अन्य (आप) से युद्ध न करता मैं बाणसे हृदय में घायल कर दिया गया ॥ १८ ॥

"दयाके जाननेवाले, प्रजाके हितमें दत्तचित्त, दयायुक्त अर्थात् स्वभाववाले, उत्साहके जीतनेवाले अर्थात् उत्साह समेत, आ जाननेवाले, दृढ व्रतधारी राम हैं" –इस प्रकार तुम्हारे यशको पर प्राणी गाते हैं ॥ १९ ॥ हे राजन्! इन्द्रियोंका वशमें रखना, शान्त रखना, क्षमा, धर्म, धैर्य, सत्य, पराक्रम और अपराधियोंको देना ये राजाओंके गुण हैं ॥ २० ॥ उन गुणोंका विचारकर और श्रेष्ठ उत्पन्न हुआ तुम्हें समझ कर तारासे निषेध किया हुआ भी मैं सु पास आया ॥ २१ ॥

"अन्यसे युद्ध करते हुए युद्ध परवश मुझसे युद्ध नहीं करेंगे" यह तुम्हारे दर्शनसे प्रथम मुझको उत्पन्न हुई थी ॥ २२ ॥ मैं आत्माका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहं त्वामभिजानामि धर्मच्छद्माभिसंवृतम् २३
विषये वा पुरे वा ते यदा पापं करोम्यहम्।
न च त्वामवजानेहं कस्मात्त्वं हंस्यकिल्बिषम् २४
फलमूलाशनं नित्यं वानरं वनगोचरम्।
मामिहाप्रतियुध्यन्तमन्येन च समागतम् २५
त्वं नराधिपतेः पुत्रः प्रतीतः प्रियदर्शनः।
लिङ्गमप्यास्ति ते राजन्दृश्यते धर्मसंहितम् २६
कः क्षत्रियकुले जातः श्रुतवान्नष्टसंशयः।
धर्मलिङ्गप्रतिच्छन्नः क्रूरं कर्म समाचरेत् २७
त्वं राघवकुले जातो धर्मवानिति विश्रुतः।
अभव्यो भव्यरूपेण किमर्थं परिधावसे २८
सामदानं क्षमा धर्मः सत्यं धृतिपराक्रमौ।
पार्थिवानां गुणा राजन्दण्डश्चाप्यपकारिषु २९

करने वाला, धर्मध्वजी, अधार्मिक, पापचरणी तुमको तृणोंसे ढके हुए कुएंके समान नहीं जानता था ॥ २३ ॥ सत्पुरुषोंके भेष वाले पर पापी, अग्निके समान, धर्मछलसे संयुक्त तुमको मैं ऐसा नहीं जानता था ॥ २४ ॥ तुम्हारे देश और नगरमें कुछ अपराध मैंने नहीं किया और न तुम्हारा अपमान किया, फिर तुमने पापरहित, फलमूलोंके खानेवाले, यहां तुमसे युद्ध न करते हुए, अन्यके साथ लडते हुए, वनचारी वानर मुझको किस कारणसे मारा ? ॥ २५-२६ ॥

हे राजन् ! अधर्मसे किया हुआ तुम्हारा चिन्ह स्पष्ट ही है; क्षत्रियके कुलमें उत्पन्न हुआ, शास्त्रज्ञाता, सन्देहरहित, धर्मके चिन्होंसे ढका हुआ कौन पुरुष क्रूर कर्मको कर सकता है अर्थात् कोई नहीं ॥ २७ ॥ हे राम ! "राजकुलमें उत्पन्न हुए और धर्मवान् हैं" इस प्रकार प्रसिद्ध, क्रूर तुम सौम्यरूपसे क्यों विचरते हो ? ॥ २८ ॥ हे राजन् ! साम, दान, क्षमा, धर्म, सत्य, धृति, पराक्रम और अपराधियोंमें दण्डनिपातन करना ये राजाओंके गुण हैं ॥ २९ ॥ हे राम ! मूल और फलोंके भोजन करनेवाले हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वयं वनचरा राम मृगा मूलफलाशिनः।
एषा प्रकृतिरस्माकं पुरुषस्त्वं नरेश्वर ३०
भूमिर्हिरण्यं रूपं च निग्रहे कारणानि च।
तत्र कस्ते वने लोभो मदीयेषु फलेषु वा ३१
नयश्च विनयश्चोभौ निग्रहानुग्रहावपि।
राजवृत्तिरसंकीर्णा न नृपाः कामवृत्तयः ३२
त्वं तु कामप्रधानश्च कोपनश्चानवस्थितः।
राजवृत्तेषु संकीर्णः शरासनपरायणः ३३
न तेऽस्त्यपचितिर्धर्मे नार्थे बुद्धिरवस्थिता।
इन्द्रियैः कामवृत्तः सन्कृष्यसे मनुजेश्वर ३४
हत्वा बाणेन काकुत्स्थ मामिहानपराधिनम्।
किं वक्ष्यसि सतां मध्ये कर्म कृत्वा जुगुप्सितम् ३५
राजहा ब्रह्महा गोघ्नश्चोरः प्राणिवधे रतः।
नास्तिकः परिवेत्ता च सर्वे निरयगामिनः ३६

वनचर मृग अर्थात् वानर हैं यह हमारी प्रकृति है और तुम पुरुष स
उनमें भी राजा हो ॥ ३० ॥ (लोकमें) भूमि, सुवर्ण, चांदी ये विरु
कारण होते हैं– इनमें अथवा अन्य वनमें मेरे फलोंमें तुम्हारी क्या
च्छा है ? ॥ ३१ ॥ नीति और अनीति, दण्ड– दया यह राजवृत्ति
ग्रहण करनी चाहिये, कामवृत्ति वाले राजा न हों अर्थात् स्वेच्छासे
नीति, अनीति, दण्ड और दया न करे ॥ ३२ ॥ तुम तो कामी,
मर्यादाहीन राजवृत्तोंसे हीन, केवल धनुषमें तत्पर हो ॥ ३३ ॥

हे राजन् ! तुम्हारी धर्ममें श्रद्धा नहीं है और न धनमें बुद्धि स्थित
कामवृत्त होनेके कारण इन्द्रियोंसे खींचे जा रहे हो ॥ ३४ ॥ हे ककुत्स्थ
राम ! अपराधहीन मुझे बाणसे मारकर निन्दित कर्म करके सत्पु
बीचमें तुम क्या कहोगे ? ॥ ३५ ॥ राजा, ब्राह्मण, गौ तथा अन्य प्राणि
मारनेवाला, चोर, नास्तिक, और परिवेत्ता (ज्येष्ठ भाईका विव
होनेसे पूर्व छोटा भाई जो विवाह कर लेता है वह परिवेत्ता कहलाता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूचकश्च कदर्यश्च मित्रघ्नो गुरुतल्पगः ।
लोकं पापात्मनामेते गच्छन्ते नात्र संशयः ३७
आधार्यं चर्म मे सद्भिः रोमाण्यस्थि च वर्जितम् ।
अभक्ष्याणि च मांसानि त्वद्विधैर्धर्मचारिभिः ३८
पञ्च पञ्चनखा भक्ष्या ब्रह्मक्षत्रेण राघव ।
शल्यकः श्वाविधो गोधा शशः कूर्मश्च पञ्चमः ३९
चर्म चास्थि च मे राम न स्पृशन्ति मनीषिणः ।
अभक्ष्याणि च मांसानि सोऽहं पञ्चनखो हतः ४०
तारया वाक्यमुक्तोऽहं सत्यं सर्वज्ञया हितम् ।
तदतिक्रम्य मोहेन कालस्य वशमागतः ४१
त्वया नाथेन काकुत्स्थ न सनाथा वसुंधरा ।
प्रमदा शीलसंपूर्णा पत्येव च विधर्मणा ४२
शठो नैकृतिकः क्षुद्रो मिथ्याप्रश्रितमानसः ।
कथं दशरथेन त्वं जातः पापो महात्मना ४३

सब नरकको जाते हैं ॥ ३६ ॥ चुगलखोर, लोभी, मित्रको मारनेवाला, गुरुशय्या पर चढने वाला (गुरु स्त्रीके साथ गमन करनेवाला) ये सब पापियोंके लोकको जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं ॥ ३७ ॥ सत्पुरुषोंको मेरा चर्म भी धारण करने योग्य नहीं है और रोम तथा अस्थि (हड्डी) भी वर्जित हैं और तुम सदृश धर्मचारियोंके खानेके योग्य मेरा मांस भी नहीं है ॥ ३८ ॥

हे राम ! ब्राह्मण और क्षत्रियोंको पञ्चनखवाले पांच खाने चाहिये। गेंडा, सेई, गोह, शश (खरगोश) और कूर्म (कछवा) ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! बुद्धिमान् मनुष्य मेरे चर्म और हड्डियोंको छूते भी नहीं हैं और हमारे मांस भी अभक्ष्य हैं ऐसे मुझको तुमने मार डाला ॥ ४० ॥ सर्वज्ञा ताराने मुझसे सत्य वाक्य कहा था, उसको मैं मोहसे उल्लङ्घन कर (यहां) कालके वशमें आया ॥ ४१ ॥ हे राम ! तुम स्वामीसे पृथ्वी सनाथ नहीं है, जैसे शीलयुक्त स्त्री धूर्त पतिसे सनाथ नहीं होती ॥ ४२ ॥ महात्मा दशरथसे शठ, अपकारसे जीनेवाले, नीच कर्म करनेवाले, झूठे, शान्त मनवाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छिन्नचारित्र्यकक्ष्येण सतां धर्मातिवर्तिना।
त्यक्तधर्माङ्कुशेनाहं निहतो रामहास्तिना ४४
अशुभं चाप्ययुक्तं च सतां चैव विगर्हितम्।
वक्ष्यसे चेदृशं कृत्वा सद्भिः सह समागतः ४५
उदासीनेषु योस्मासु विक्रमोयं प्रकाशितः।
अपकारिषु ते राम नैवं पश्यामि विक्रमम् ४६
दृश्यमानस्तु युध्येथा मया युधि नृपात्मज।
अद्य वैवस्वतं देवं पश्येस्त्वं निहतो मया ४७
त्वयादृश्येन तु रणे निहतोहं दुरासदः।
प्रसुप्तः पन्नगेनेव नरः पापवशं गतः ४८
सुग्रीवप्रियकामेन यदहं निहतस्त्वया।
मामेव यदि पूर्वं त्वमेतदर्थमचोदयः।
मैथिलीमहमेकाह्ना तव चानीतवान्भवेः ४९

पापी तुम कैसे पैदा हुए ? ॥ ४३ ॥ टूट गई हैं चालचलन रूपी नेकी शृङ्खला जिसकी, और श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्मको जो मर्यादा रूप है उल्लङ्घन कर चलनेवाले, और छोड दिया है धर्मरूपी अङ्कुशने जिसको रामरूपी हाथीने मुझे मार डाला ॥ ४४ ॥

अशुभ, अयोग्य और श्रेष्ठोंसे निन्दित ऐसे कार्यको करके सत्पुरुषोंसे मिलकर तुम क्या कहोगे ? ॥ ४५ ॥ हे राजन् ! उदासीन हमपर जो यह विक्रम तुमने प्रकाशित किया है उस पराक्रमको मैं अपकारियों (अपराध करनेवाले रावणादिकों) पर (प्रकट हुआ) नहीं देखता ॥ ४६ ॥ हे राजपुत्र ! दिखलाई देकर यदि तुम मुझसे युद्ध करते तो मुझसे निहत होकर आज ही यमराजको देखते ॥ ४७ ॥ दुरासद मुझको छिपे हुए तुमने इस स्थलमें मारा, जैसे नशेके वशमें प्राप्त हो सोता हुआ मनुष्य सर्पसे मारा जाय ॥ ४८ ॥ यदि तुम पहिले ही मुझे इस कार्यके लिये प्रेरणा करते तो मैं सीताको तथा तुम्हारी स्त्री के हरनेवाले दुष्ट राक्षसको एक दिनमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राक्षसं च दुरात्मानं तव भार्यापहारिणम्।
कण्ठे बद्धा प्रदद्यां ते निहतं रावणं रणे ५०
न्यस्तां सागरतोये वा पाताले वापि मैथिलीम्।
आनयेयं तवादेशाच्छ्वेतामश्वतरीमिव ५१
युक्तं यत्प्राप्नुयाद्राज्यं सुग्रीवः स्वर्गते मयि।
अयुक्तं यदधर्मेण त्वयाहं निहतो रणे ५२
काममेवंविधो लोकः कालेन विनियुज्यते।
क्षमं चेद्भवतो प्राप्तमुत्तरं साधु चिन्त्यताम् ५३
इत्येवमुक्त्वा परिशुष्कवक्त्रः शराभिघाताद्व्यथितो महात्मा।
समीक्ष्य रामं रविसंनिकाशं तूष्णीं बभौ वानरराजसूनुः ५४
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे सप्तदशः सर्गः ॥१७॥ [०३८]

अष्टादशः सर्गः।

इत्युक्तः प्रश्रितं वाक्यं धर्मार्थसहितं हितम्।
परुषं वालिना रामो निहतेन विचेतसा १

ा देता ॥ ४९ ॥ जिस रावणके हेतुसे ही सुग्रीवकी प्रियकामनासे तुमने मुझे मार दिया उसी युद्धमें निहत रावणको कण्ठमें बांधकर मैं तुम्हें दे देता ॥ ५० ॥

समुद्रके जल या पातालमें स्थित हुई सीताको मैं तुम्हारी आज्ञासे ला देता, जैसे हयग्रीव श्वेताश्वतरीरूप श्रुतिको पातालसे लाया था ॥ ५१ ॥ मेरे मर जानेपर सुग्रीव राज्य पावे यह तो योग्य है और जो कि तुमने अधर्मसे मुझे संग्राममें मारा यह योग्य है ॥ ५२ ॥ संसार इस मरणरूप कार्यमें यथेष्ट नियुक्त किया जाता है अर्थात् संसारका मरण धर्म स्वाभाविक ही है। यदि छिपकर मारना तुमने उचित किया तो उत्तर दीजिये ॥ ५३ ॥ ऐसा कहकर सूख गया है मुख जिसका तथा शरके लगनेसे पीडित हुआ महात्मा, इन्द्रका पुत्र, वाली सूर्यके समान रामको देखकर चुप हो गया ॥ ५४ ॥

॥ यहाँ अठारहवाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

घायल, ज्ञानहीन वालीने रामसे विनयपूर्वक, धर्मार्थसमेत, हितकारी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं निष्प्रभमिवादित्यं मुक्ततोयमिवाम्बुदम्।
उक्तवाक्यं हरिश्रेष्ठमुपशान्तमिवानलम् २
धर्मार्थगुणसंपन्नं हरीश्वरमनुत्तमम्।
अधिक्षिप्तस्तदा रामः पश्चाद्वालिनमब्रवीत् ३
धर्ममर्थं च कामं च समयं चापि लौकिकम्।
अविज्ञाय कथं बाल्यान्मामिहाद्य विगर्हसे ४
अपृष्ट्वा बुद्धिसंपन्नान्वृद्धानाचार्यसंमतान्।
सौम्य वानरचापल्यात्त्वं मां वक्तुमिहेच्छसि ५
इक्ष्वाकूणामियं भूमिः सशैलवनकानना।
मृगपक्षिमनुष्याणां निग्रहानुग्रहेष्वपि ६
तां पालयति धर्मात्मा भरतः सत्यवानृजुः।
धर्मकामार्थतत्त्वज्ञो निग्रहानुग्रहे रतः ७
नयश्च विनयश्चोभौ यस्मिन्सत्यं च सुस्थितम्।
विक्रमश्च यथा दृष्टः स राजा देशकालवित् ८

कठोर वाक्य पूर्वोक्त प्रकारसे कहा ॥ १ ॥ कान्तिहीन हुए सूर्य और मे[घ] हीन मेघके समान, वाक्य जिसने कहा है ऐसे वानरोंमें श्रेष्ठ, शान्त अग्निके समान, धर्म--अर्थ गुणोंसे युक्त, श्रेष्ठ, हरीश्वर वालीसे आ[क्षेप] (उलाहना दिये गये) राम पीछेसे बोले ॥ ३ ॥ तुम धर्म, अर्थ, [काम] और लोकाचारको न जानकर अज्ञानसे क्यों मेरी निन्दा करते हो ? ॥ ४ ॥ हे सौम्य ! बुद्धि युक्त वृद्ध आचार्यसम्मत वानरोंको न पूंछकर वान[र] चपलतासे मुझसे क्या पूंछते हो ? ॥ ५ ॥ यह शैल, जल, वन समेत [पृथ्वी] इक्ष्वाकुओंकी है। मृग, पक्षी और मनुष्यों पर दण्ड और दया कर[ना] भी इक्ष्वाकुओंका ही कृत्य है ॥ ६ ॥

उस पृथ्वीको धर्मात्मा, सत्यवक्ता, नम्र, धर्म, अर्थ, कामके त[त्त्व] जाननेवाले, दण्ड और अनुग्रहमें रत भरत पालन करते हैं ॥ ७ ॥ नय और विनय दोनों और सत्य तथा विक्रम जैसे चाहिये वैसे ही हैं वही देश और कालके जाननेवाले राजा भरत हैं ॥ ८ ॥ उन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्य धर्मकृतादेशा वयमन्ये च पार्थिवाः ।
२ चरामो वसुधां कृत्स्नां धर्मसन्तानमिच्छवः ९
यस्मिन्नृपतिशार्दूले भरते धर्मवत्सले ।
३ पालयत्यखिलां पृथ्वीं कश्चरेद्धर्मविप्रियम् १०
ते वयं मार्गविभ्रष्टं स्वधर्मे परमे स्थिताः ।
४ भरताज्ञां पुरस्कृत्य चिन्तयामो यथाविधि ११
त्वं तु संक्लिष्टधर्मश्च कर्मणा च विगर्हितः ।
५ कामतन्त्रप्रधानश्च न स्थितो राजवर्त्मनि १२
ज्येष्ठो भ्राता पिता वापि यश्च विद्यां प्रयच्छति ।
६ त्रयस्ते पितरो ज्ञेया धर्मे च पथि वर्तिनः १३
यवीयानात्मनः पुत्रः शिष्यश्चापि गुणोदितः ।
७ पुत्रवत्ते त्रयश्चिन्त्या धर्मश्चैवात्र कारणम् १४
सूक्ष्मः परमविज्ञेयः सतां धर्मः प्लवङ्गम ।
८ हृदिस्थः सर्वभूतानामात्मा वेद शुभाशुभम् १५

र्म पालन की गई है आज्ञा जिनको ऐसे तथा धर्मवृद्धिके इच्छा करने वाले हम तथा अन्य राजा समस्त भूमिपर घूमते हैं ॥ ९ ॥ राजसिंह, र्मप्रेमी उन भरतके समस्त पृथ्वीका पालन करते हुए धर्मकी हानि ौन कर सकता है ? ॥ १० ॥ वे हम लोग बडे अपने धर्ममें स्थित होकर रतकी आज्ञाको सामने रखकर धर्मसे भ्रष्ट हुए मनुष्योंको यथाविधि दण्ड ते हैं ॥ ११ ॥ तुम तो धर्मका लोप करनेवाले, अकृत्यकारी, काम त्तिको मुख्य करके राजमार्गमें स्थित नहीं हो ॥ १२ ॥ बडा भाई, जनक ौर जो विद्याको देता है धर्म मार्गपर चलनेवाले इन तीनोंको पितर ही ानना चाहिये ॥ १६ ॥

अपना छोटा भाई, अपना पुत्र और गुणयुक्त अपना शिष्य इन तीनोंको त्रके समान समझना चाहिये-- इस विषयमें धर्म ही व्यवस्थापक है १४ ॥ हे वानर ! अतीन्द्रिय धर्म सत्पुरुषोंको भी बडी कठिनतासे जंचता । सब जीवोंके हृदयमें स्थित आत्मा (परमात्मा) शुभ और अशुभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चपलश्चपलैः सार्धं वानरैरकृतात्मभिः ।
जात्यन्ध इव जात्यन्धैर्मन्त्रयन्प्रेक्षसे नु किम् १६
अहं तु व्यक्ततामस्य वचनस्य ब्रवीमि ते ।
न हि मां केवलं रोषात्त्वं विगर्हितुमर्हसि १७
तदेतत्कारणं पश्य यदर्थं त्वं मया हतः ।
भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनम् १८
अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
रुमायां वर्तसे कामात्स्नुषायां पापकर्मकृत् १९
तद्व्यतीतस्य ते धर्मात्कामवृत्तस्य वानर ।
भ्रातृभार्याभिमर्शेऽस्मिन्दण्डोयं प्रतिपादितः २०
न हि लोकविरुद्धस्य लोकवृत्तादपेयुषः ।
दण्डादन्यत्रपश्यामि निग्रहं हरियूथप २१
न च ते मर्षये पापं क्षत्रियोऽहं कुलोद्गतः ।
औरसीं भगिनीं वापि भार्यां वाप्यनुजस्य यः २२

कर्तव्यको जानता है ॥ १५ ॥ चञ्चल तुम अशिक्षित चञ्चल वानरों
जन्मान्धोंके साथ जन्मान्धके समान मन्त्रणा करते हुए कुछ नहीं
॥ १६ ॥ मैं पूर्वोक्त वचन (" यवीयान् " इत्यादिक) को विस्पष्ट
कहता हूं, केवल रोषसे तुम्हें मेरी निन्दा करनी उचित नहीं है ॥
सो जिस लिये मैंने तुमको मारा है इसका कारण देखो कि तुम
धर्मको छोडकर भाईकी स्त्रीसें व्यवहार करते हो ॥ १८ ॥

जीते हुए महात्मा इन सुग्रीवकी स्त्री रुमा नाम वाली स्नुषा (पु
में पापकर्म करनेवाले तुम रमण करते हो ॥ १९ ॥ हे वानर ! धर्म
हुए कामी तुम पर भाईकी स्त्रीके ग्रहण करनेके अपराधसें मैंने यह
निपातन किया है ॥ २० ॥ हे हरियूथप ! धर्मविरुद्ध चलनेवाले
चारसे भ्रष्ट हुएके लिये मैं इस दण्डसे भिन्न अन्य निग्रह (योग्यदण्ड
समझता ॥ २१ ॥ मैं कुलीन क्षत्रिय हूं, अतएव तुम्हारे पापको नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रचरेत नरः कामात्तस्य दण्डो वधः स्मृतः।
भरतस्तु महीपालो वयं त्वादेशवर्तिनः २३
त्वं च धर्मादतिक्रान्तः कथं शक्यमुपेक्षितुम्।
गुरुधर्मव्यतिक्रान्तं प्राज्ञो धर्मेन पालयन्।
भरतः कामयुक्तानां निग्रहे पर्यवस्थितः २४
वयं तु भरतादेशावधिं कृत्वा हरीश्वर।
त्वद्विधान्भिन्नमर्यादान्निग्रहीतुं व्यवस्थिताः २५
सुग्रीवेण च मे सख्यं लक्ष्मणेन यथा तथा।
दारराज्यनिमित्तं च निःश्रेयसकरः स मे २६
प्रतिज्ञा च मया दत्ता तदा वानरसंनिधौ।
प्रतिज्ञा च कथं शक्या मद्विधेनानवेक्षितुम् २७
तदेभिः कारणैः सर्वैर्महद्भिर्धर्मसंश्रितैः।
शासनं तव यद्युक्तं तद्भवाननुमन्यताम् २८
सर्वथा धर्म इत्येव द्रष्टव्यस्तव निग्रहः।
वयस्यस्योपकर्तव्यं धर्ममेवानुपश्यता २९

कता ॥ २२ ॥ जो पुत्री या भगिनी या छोटे भाईकी स्त्रीमें कामसे आच-
ण करता है उसके लिये मृत्यु ही दण्ड बताया गया है॥ २३ ॥ राजा तो
रत हैं हम तो (उनकी) आज्ञामें रहनेवाले हैं और तुम धर्ममर्यादाका
ल्लंघन करनेवाले हो, फिर तुम्हारी उपेक्षा कैसे कर सकते हैं ? ॥ २४ ॥
ुरु, बुद्धिमान् भरत धर्मोल्लंघनको न्यायसे विचार कर कामी पुरुषोंके दण्ड
नेमें स्थित हैं ॥ २५ ॥
हे वानर राज ! हम भरताज्ञाको विधि मानके तुम्हारे समान मर्यादाके
ोडने वालोंको दण्ड देनेको उद्यत रहते हैं ॥ २६ ॥ जैसा कि लक्ष्मणसे
मित्रभाव है वैसा ही स्त्री तथा राज्यके निमित्त सुग्रीवसे है और वह सुग्रीव
री भलाईमें लगा हुआ है ॥ २७ ॥ और उस समय (मित्र भावके
मय) वानरोंके सामने मैंने प्रतिज्ञा की थी, मेरे सदृश मनुष्यसे प्रतिज्ञा
कैसे भुलाई जा सकती है ॥ २८ ॥ सो धर्मानुकूल इन सब बडे कारणोंसे
ुम्हारा जो शासन किया है वह योग्य है-- यह आप मानिये ॥ २९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्यं त्वयापि तत्कार्यं धर्ममेवानुवर्तता ३०
श्रूयते मनुना गीतौ श्लोकौ चारित्रवत्सलौ।
गृहीतौ धर्मकुशलैस्तथा तच्चरितं मया ३१
राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवाः।
निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा ३२
शासनाद्वापि मोक्षाद्वा स्तेनः पापात्प्रमुच्यते।
राजा त्वशासन्पापस्य तदवाप्नोति किल्बिषम् ३३
आर्येण मम मान्धात्रा व्यसनं घोरमीप्सितम्।
श्रमणेन कृते पापे यथा पापं कृतं त्वया ३४
अन्यैरपि कृतं पापं प्रमत्तैर्वसुधाधिपैः।
प्रायश्चित्तं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यते रजः ३५
तदलं परितापेन धर्मतः परिकल्पितः।
वधो वानरशार्दूल न वयं स्ववशे स्थिताः ३६

तुमको दण्ड देना हर हालतमें धर्म है– यही समझना चाहिये॥ ३०॥

धर्मको देखते हुए मित्रका उपकार करना चाहिये। धर्मको ही देखते तुमको भी वह (प्रायश्चित्त होनेके कारण) मानना चाहिये॥ ३१॥ प्रसिद्ध है कि मनुने जो आचारपरक दो श्लोक कहे हैं धर्मकुशल मनु उनको धारण किया है, हे वानर! मैंने वैसा ही आचरण किया॥ [वे श्लोक ये हैं] पाप करनेके पश्चात् राजासे दण्ड पाकर पुरुष पापर होते हुए धर्मात्मा सत्पुरुषोंके समान स्वर्गको प्राप्त होते हैं॥ ३२॥ देनेसे दयाकर छोडनेसे चोर अथवा अन्य पापी पापसे छूट जाता यदि राजा उस पापीका शासन न करे तो स्वयं उस पापको प्राप्त हो॥ ३३॥ जैसा तुमने पाप किया है वैसा ही एक श्रमण (किसी संन्यास के पाप करने पर मेरे पूज्य मान्धाताने उसको घोर दण्ड दिया था॥

राजाओंके प्रमत्त होनेसे अन्य लोगोंने भी पाप किया, जिनको लोगोंने दण्ड देकर शुद्ध किया अथवा वह प्रायश्चित द्वारा शुद्ध हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शृणु चाप्यपरं भूयः कारणं हरिपुङ्गव।
तच्छ्रुत्वा हि महद्वीर न मन्युं कर्तुमर्हसि ३७
न मे तत्र मनस्तापो न मन्युर्हरिपुङ्गव।
वागुराभिश्च पाशैश्च कूटैश्च विविधैर्नराः ३८
प्रतिच्छन्नाश्च दृश्याश्च गृह्णन्ति सुबहून्मृगान्।
प्रधावितान्वा वित्रस्तान्विस्रब्धानतिविष्ठितान् ३९
प्रमत्तानप्रमत्तान्वा नरा मांसाशिनो भृशम्।
विध्यन्ति विमुखांश्चापि न च दोषोऽत्र विद्यते ४०
यान्ति राजर्षयश्चात्र मृगयां धर्मकोविदाः।
तस्मात्त्वं निहतो युद्धे मया बाणेन वानर।
अयुध्यन्प्रतियुध्यन्वा यस्माच्छाखामृगो ह्यसि ४१
दुर्लभस्य च धर्मस्य जीवितस्य शुभस्य च।
राजानो वानरश्रेष्ठ प्रदातारो न संशयः ४२
तान्न हिंस्यान्न चाक्रोशेन्नाक्षिपेन्नाप्रियं वदेत्।

गो हे वानरश्रेष्ठ! तुम सन्ताप न करो तुम्हारा वध धर्मपूर्वक किया गया है; हम अपने वशमें स्थित नहीं अर्थात् शास्त्रके वशमें हैं॥ ३६॥ हे वानरश्रेष्ठ! अब दूसरे कारणको सुनो; हे वीर! हेतुयुक्त जिसे सुनकर तुम्हें क्रोध न करना चाहिये। हे वानरराज! छिपकर मारनेके विषयमें मेरे मनको कुछ सन्ताप नहीं है, न क्रोध है, क्योंकि रस्सी और फांसी तथा अनेक कपटके व्यवहारोंसे छिपे हुए या दिखलाई देते हुए मनुष्य अनेक मृगोंको पकडते हैं। अत्यन्त मांसकी इच्छावाले मनुष्य दौडते, डरे, विश्वासको प्राप्त हुए, स्थित हुए, प्रमत्त, अप्रमत्त और विमुख मृगोंको मारते हैं- इसमें दोष नहीं है॥ ३७-४०॥
धर्मके जाननेवाले राजर्षि वनमें शिकारके लिये घूमते हैं; हे वानर! क्योंकि तुम वानर हो; अतः मैंने युद्ध करते या न करते हुए तुमको बाणसे युद्धमें मारा है॥ ४१॥ हे वानरश्रेष्ठ! दुर्लभ धर्म और शुभ जीवनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवा मानुषरूपेण चरन्त्येते महीतले ४३
त्वं तु धर्ममविज्ञाय केवलं रोषमास्थितः।
विदूषयसि मां धर्मे पितृपैतामहे स्थितम् ४४
एवमुक्तस्तु रामेण वाली प्रव्यथितो भृशम्।
न दोषं राघवे दध्यौ धर्मेऽधिगतनिश्चयः ४५
प्रत्युवाच ततो रामं प्राञ्जलिर्वानरेश्वरः।
यत्त्वमात्थ नरश्रेष्ठ तत्तथैव न संशयः ४६
प्रतिवक्तुं प्रकृष्टे हि नापकृष्टस्तु शक्नुयात् ४७
यदयुक्तं मया पूर्वं प्रमादाद्वाक्यमप्रियम्।
तत्रापि खलु मां दोषं कर्तुं नार्हसि राघव ४८
त्वं हि दृष्टार्थतत्त्वज्ञः प्रजानां च हिते रतः।
कार्यकारणसिद्धौ च प्रसन्ना बुद्धिरव्यया ४९
मामप्यवगतं धर्माद्व्यतिक्रान्तपुरस्कृतम्।
धर्मसंहितया वाचा धर्मज्ञ परिपालय ५०

देनेवाले राजा हैं– इसमें संदेह नहीं ॥ ४२ ॥ राजाओंकी न हिंसा क[...] निन्दा करे, न उनपर आक्षेप करे और न उनसे अप्रिय बोले; ये [...] मनुष्यके रूपमें पृथ्वीपर घूमते हैं ॥ ४३ ॥ केवल क्रोधको प्राप्त हु[...] धर्मको न जानकर अपने पुरखाओंके धर्ममें स्थित मुझको दूषित [...] हो ॥ ४४ ॥

रामसे इस प्रकार बोधित वाली अत्यन्त दुःखित हो धर्ममें निश्च[...] राममें दोषको न रख सका (उनको दोषी न माना) ॥ ४५ ॥ फिर हा[...] हुए वानरेश्वर वाली रामसे बोला, हे वानरश्रेष्ठ ! जो तुमने कहा व[...] है– इसमें सन्देह नहीं ॥ ४६ ॥ हे राघव ! सो मैंने भूलसे अयोग्य [...] पहिले कहा था उसमें मुझे दोष न दीजियेगा ॥ ४७-४८ ॥ आप दृष्ट[...] तत्त्वज्ञ और प्रजाओंके हितमें रत हो, कार्यकारण (दण्ड और पा[...] सिद्धिमें आपकी स्वच्छ बुद्धि बढी हुई है ॥ ४९ ॥ हे धर्मज्ञ ! आप [...] न करनेवाले असमर्यादाको सामने रखनेवाले अर्थात् अकृत्यकारी [...] धर्म युक्तवाणीसे पालन करो ॥ ५० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाष्पसंरुद्धकण्ठस्तु वाली सार्तरवः शनैः।
उवाच रामं संप्रेक्ष्य पङ्कलग्न इव द्विपः ५१
न चात्मानमहं शोचे न तारां नापि बान्धवान्।
यथा पुत्रं गुणज्येष्ठमङ्गदं कनकाङ्गदम् ५२
स ममादर्शनाद्दीनो बाल्यात्प्रभृति लालितः।
तटाक इव पीताम्बुरुपशोषं गमिष्यति ५३
बालश्चाकृतबुद्धिश्च एकपुत्रश्च मे प्रियः।
तारेयो राम भवता रक्षणीयो महाबलः ५४
सुग्रीवे चाङ्गदे चैव विधत्स्व मतिमुत्तमाम्।
त्वं हि गोप्ता च शास्ता च कार्याकार्यविधौ स्थितः ५५
या ते नरपते वृत्तिर्भरते लक्ष्मणे च या।
सुग्रीवे चाङ्गदे राजंस्तां चिन्तयितुमर्हसि ५६
मद्दोषकृतदोषां तां यथा तारां तपस्विनीम्।
सुग्रीवो नावमन्येत तथावस्थातुमर्हसि ५७

पङ्कमें फंसे हुए हाथीके समान आंसुओंसे रुक गया है कण्ठ जिसका वाली रामको देखकर कातर हो बोला ॥ ५१ ॥ मैं अपने आत्मा, तारा बान्धवोंका वैसा शोच नहीं करता जैसा कि गुणोंसे श्रेष्ठ सोनेके बाजू पुत्र अङ्गदका शोच करता हूं ॥ ५२ ॥ बालपनसे लेकर लालित किया अङ्गद मेरे अदर्शनसे हीन होकर पी लिया है जल जिसका ऐसे तालाबके न सूख जायगा ॥ ५३ ॥ हे महाबल राम ! आप बालक अतएव बेस-, तारासे उत्पन्न हुए मेरे प्यारे अकेले पुत्रकी रक्षा करना ॥ ५४ ॥ व और अङ्गदमें समान बुद्धिको धारण करो। कार्याकार्यके विधानमें आप ही दण्ड देनेवाले और रक्षा करनेवाले हो ॥ ५५ ॥
राजन् ! हे मनुजेश्वर ! जो तुम्हारी भरतमें या लक्ष्मणमें बुद्धि है को सुग्रीव या अङ्गदमें तुम धारण करो ॥ ५६ ॥ मेरे दोषसे किया है राध जिसने ऐसी तपस्विनी ताराका सुग्रीव अपमान न करे वैसी ही स्था करना ॥ ५७ ॥ तुम्हारे अनुग्रहसे मैं राज्यका पालन कर सकता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वया ह्यनुगृहीतेन शक्यं राज्यमुपासितुम्।
त्वद्वशे वर्तमानेन तव चित्तानुवर्तिना ५८
शक्यं दिवं चार्जयितुं वसुधां चापि शासितुम्।
त्वत्तोऽहं वधमाकाङ्क्षन्वार्यमाणोऽपि तारया ५९
सुग्रीवेण सह भ्रात्रा द्वन्द्वयुद्धमुपागतः।
इत्युक्त्वा वानरो रामं विरराम हरीश्वरः ६०
स तमाश्वासयद्रामो वालिनं व्यक्तदर्शनम्।
साधुसंमतया वाचा धर्मतत्त्वार्थयुक्तया ६१
न वयं भवता चिन्त्या नाप्यात्मा हरिसत्तम।
वयं भवद्विशेषेण धर्मतः कृतनिश्चयाः ६२
दण्ड्ये यः पातयेद्दण्डं दण्ड्यो यश्चापि दण्ड्यते।
कार्यकारणसिद्धार्थावुभौ तौ नावसीदतः ६३
तद्भवान्दण्डसंयोगादस्माद्विगतकल्मषः।
गतः स्वां प्रकृतिं धर्म्यां दण्डदिष्टेन वर्त्मना ६४

था; तुम्हारे वशमें वर्तमान और तुम्हारे चित्तका अनुवर्ती स्वर्ग पा... है ॥ ५८ ॥ और भूमिका पालन कर सकता है, तारासे निषेध कि... भी मैं तुमसे वधकी इच्छा करके भाई सुग्रीवसे द्वन्द्वयुद्ध करने... था, वानरेश्वर वाली नम्र होकर पूर्वोक्त प्रकारसे कहकर ... गया ॥ ५९–६० ॥

प्रकट है ज्ञान जिसको ऐसे वालीको रामने धर्मतत्व तथा... समझानेसे भरी हुई वाणीसे आश्वासन दिया ॥ ६१ ॥ हे वानर! तुम खेद न करो, हे वानरश्रेष्ठ! तुम न हमारी चिन्ता करो और न... हम तुमसे अधिक धर्ममें निश्चय किये हुए हैं ॥ ६२ ॥ जो दण्डके यो... प्राणीमें दण्ड निपातन करता है और जो दण्डके योग्य दण्ड पाता... और कारणकी सिद्धिवाले वे दोनों दुःखी नहीं होते ॥ ६३ ॥ सो... दण्डके संयोगसे पापरहित होकर धर्मदृष्ट मार्गसे धर्मयुक्त अपनी... (शुद्ध स्वरूप) को प्राप्त हो गये ॥ ६४ ॥ हे वानरश्रेष्ठ! शोक,...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्यज शोकं च मोहं च भयं च हृदये स्थितम् ।
त्वया विधानं हर्यग्र्य न शक्यमतिवर्तितुम् ६५
यथा त्वय्यङ्गदो नित्यं वर्तते वानरेश्वर ।
तथा वर्तेत सुग्रीवे मयि चापि न संशयः ६६
तस्य वाक्यं मधुरं महात्मनः समाहितं धर्मपथानुऽवर्तितम् ।
शस्य रामस्य रणावमर्दिनो वचः सुयुक्तं निजगाद वानरः ६७
राभितप्तेन विचेतसा मया प्रभाषितस्त्वं यदजानता विभो ।
इं महेन्द्रोपमभीमविक्रम प्रसादितस्त्वं क्षम मे हरीश्वर ६८
आर्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे अष्टादशः सर्गः॥१८॥ [८०६]

एकोनविंशः सर्गः ।

स वानरमहाराजः शयानः शरपीडितः ।
प्रत्युक्तो हेतुमद्वाक्यैर्नोत्तरं प्रतिपद्यत १
अश्मभिः परिभिन्नाङ्गः पादपैराहतो भृशम् ।
रामबाणेन चाक्रान्तो जीवितान्ते मुमोह सः २

दयमें स्थित भयको त्यागो; तुम प्रारब्धकर्मको लौट थोडे ही सकते ॥ ६५ ॥ हे वानरेश्वर ! जैसे कि अङ्गद तुम्हारे साथ सदा वर्तता रहा है वैसे ही और सुग्रीवके साथ वर्तेगा— इसमें सन्देह नहीं ॥ ६६ ॥ धर्म मार्गपर लनेवाले रणमें मर्दन करनेवाले महात्मा रामके समाधान रूप मधुर क्यको सुनकर वानर (वाली) योग्य वचन बोला ॥ ६७ ॥ हे प्रभो ! णसे सन्तापित ! बेहोश और न जानते हुए मैंने तुम्हें दूषित किया था हे द्रसमान पराक्रमी हे नरेश्वर ! सो प्रसन्न किये हुए तुम मुझे क्षमा रो ॥ ६८ ॥

यहाँ १८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ

बाणसे घायल, लेटे हुए वानरराज वालीने हेतुयुक्त वाक्योंसे उत्तर ने पर फिर उत्तर न दिया ॥ १ ॥ पत्थरोंसे टूटा है अङ्ग जिसका और क्षोंसे ताडन किया तथा रामके बाणसे आक्रान्त हुआ वाली जीवनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं भार्या बाणमोक्षेण रामदत्तेन संयुगे ।
हतं प्लवगशार्दूलं तारा शुश्राव वालिनम् ३
सा सपुत्राप्रियं श्रुत्वा वधं भर्तुः सुदारुणम् ।
निष्पपात भृशं तस्मादुद्विग्ना गिरिकन्दरात् ४
ये त्वङ्गदपरीवारा वानरा हि महाबलाः ।
ते सकार्मुकमालोक्य रामं त्रस्ताः प्रदुद्रुवुः ५
सा ददर्श ततस्त्रस्तान्हरीनापततो द्रुतम् ।
यूथादिव परिभ्रष्टान्मृगान्निहतयूथपान् ६
तानुवाच समासाद्य दुःखितान्दुःखिता सती ।
रामवित्रासितान्सर्वाननुबद्धानिवेषुभिः ७
वानरा राजसिंहस्य यस्य यूयं पुरःसराः ।
तं विहाय सुवित्रस्ताः कस्माद्द्रवत दुर्गताः ८
राज्यहेतोः स चेद्भ्राता भ्रात्रा क्रूरेण पातितः ।
रामेण प्रसृतैर्दूरान्मार्गणैर्दूरपातिभिः ९

अन्त समय बेहोश हो गया ॥ २ ॥ उस वानरश्रेष्ठ वालीको उसकी ताराने रामसे छोडे बाण द्वारा युद्धमें मरा सुना ॥ ३ ॥ पुत्र सहित तारा अतिदारुण पतिके वधको सुनकर अत्यन्त घबडाती हुई कक्षाओंवाली गुफासे निकली ॥ ४ ॥ जो कि अङ्गदप्रमुख भयानक क्रमवाले वानर थे वे धनुष सहित रामको देखकर भयभीत होकर गये ॥ ५ ॥ तब ताराने मारा गया है मुख्याधिष्ठाता जिनका ऐसे भ्रष्ट हुए मृगोंके समान अत्यन्त दौडते हुए, भयभीत वानरोंको देख दुःखित हुई तारा रामसे डरे, दुःखित हुए तथा रस्सियोंसे बंधे समान उनके पास जाकर बोली ॥ ७ ॥ हे वानरो ! जिस राजसिंहके सर्वदा आगे रहते थे उसे छोडकर भयभीत तथा शरणरहित हुए तुम भागते हो ॥ ८ ॥ यदि क्रूर भाईने इस भाईको राज्यके कारण कि चलाये, भयानक, दूरगिरनेवाले बाणोंसे मरवा डाला तो तुमको क्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपिपत्न्या वचः श्रुत्वा कपयः कामरूपिणः।
प्राप्तकालमविश्लिष्टमूचुर्वचनमङ्गनाम् १०
जीवपुत्रे निवर्तस्व पुत्रं रक्षस्व चाङ्गदम्।
अन्तको रामरूपेण हत्वा नयति वालिनम् ११
क्षिप्तान्वृक्षान्समाविध्य विपुलाश्च तथा शिलाः।
वाली वज्रसमैर्बाणैर्वज्रेणेव निपातितः १२
अभिभूतमिदं सर्वं विद्रुतं वानरं बलम्।
अस्मिन्प्लवगशार्दूले हते शक्रसमप्रभे १३
रक्ष्यतां नगरी शूरैरङ्गदश्चाभिषिच्यताम्।
पदस्थं वालिनः पुत्रं भजिष्यन्ति प्लवंगमाः १४
अथवा रुचितं स्थानमिह ते रुचिराननेे।
आविशन्ति च दुर्गाणि क्षिप्रमद्यैव वानराः १५
अभार्याः सहभार्याश्च संत्यत्र वनचारिणः।

॥ ९ ॥ वालीकी स्त्रीका वचन सुनकर इच्छा सदृशरूप धारण करनेवाले वानर समयके योग्य युक्तिसमेत यह वचन तारासे बोले ॥ १० ॥ हे जीव-पुत्रे ! तुम लौटो और अङ्गद पुत्रकी रक्षा करो, यमराज रामके रूपसे वाली-को मारकर (लोकान्तर को) ले जा रहा है ॥ ११ ॥ (वालिसे) फेंके हुए वृक्षोंको बेंध कर और अनेक शिलाओंको तोडकर रामने वालीको वज्र समान बाणोंसे मार डाला ॥ १२ ॥

इन्द्रसमान तेजवाले इस वानरश्रेष्ठके मारे जाने पर किष्किन्धासे निकली यह सब सेना तितिरवितिर हो गई है ॥ १३ ॥ नगरद्वारकी रक्षा करो और अङ्गद का अभिषेक करो, वानरगण वालीके पद पर स्थित वालिपुत्रकी सेवा करेंगे ॥ १४ ॥ हे सुमुखि ! अथवा तुमको यहां किष्किन्धामें रहना योग्य नहीं क्योंकि वानर (जो कि हमारे शत्रु हैं) शीघ्र ही किष्किन्धाके दुर्गों पर आक्रमण करेंगे ॥ १५ ॥ भार्या रहित और साधारण स्त्रीवाले (जो कि वालिसे निकाले हुए) वानर हैं अपनी स्त्रीसे वियुक्त हुए तथा साधा-रण स्त्रियोंसे अन्योंकी अभिलाषा करनेवाले उनसे हमको बडा भय है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लुब्धेभ्यो विप्रलब्धेभ्यस्तेभ्यो नः सुमहद्भयम् १६
अल्पान्तरगतानां तु श्रुत्वा वचनमङ्गना।
आत्मनः प्रतिरूपं सा बभाषे चारुहासिनी १७
पुत्रेण मम किं कार्यं राज्येनापि किमात्मना।
कपिसिंहे महाभागे तस्मिन्भर्तरि नश्यति १८
पादमूलं गमिष्यामि तस्यैवाहं महात्मनः।
योऽसौ रामप्रयुक्तेन शरेण विनिपातितः १९
एवमुक्त्वा प्रदुद्राव रुदती शोकमूर्छिता।
शिरश्चोरश्च बाहुभ्यां दुःखेन समभिघ्नती २०
सा व्रजन्ती ददर्शाथ पतिं निपातितं भुवि।
हन्तारं दानवेन्द्राणां समरेष्वनिवर्तिनाम् २१
क्षेप्तारं पर्वतेन्द्राणां वज्राणामिव वासवम्।
महावातसमाविष्टं महामेघौघनिःस्वनम् २२

(अथवा) यहांपर जो स्त्रीरहित वा स्त्री सहित वानरगण हैं उनको त्या और स्वभार्यारहित आये शत्रु वानरोंसे बडा भय होगा ॥ १६ ॥

सुन्दर हास्यवाली तारा समीपमें प्राप्त हुए अथवा कुछ अव प्राप्त हुए उनके वचनको सुनकर अपनी बुद्धिके अनुकूल वाक्य ॥ १७ ॥ वानरसिंह महाभाग उन पतिके नाश होनेपर मुझे पुत्रसे वा से वा अपने आपेसे क्या प्रयोजन है ॥ १८ ॥ मैं उन्हीं महात्माके जाकर पडूंगी जो रामसे चलाये गये बाणसे निपातित हुए हैं ॥ शोकसे पीडित हुई तारा ऐसा कह कर रोती हुई और हाथोंसे शिर हृदयको पीटती हुई (वालीके समीपको) दौडी ॥ २० ॥ आती ताराने भूमिपर गिरे हुए, संग्राममें जो न लौटें ऐसे दानवेन्द्रोंको मार वाले, वज्रोंको बार बार जैसे इन्द्र चलावे इस प्रकार पर्वतोंके शि उखाडकर फेंकनेवाले, महावातके समान वेगवाले, महामेघके झुंडके शब्दवाले, इन्द्रके समान पराक्रम वाले, वर्षकर ठहरे हुए मेघके स्थित, गर्जनेवालोंके बीचमें भयानक गर्जनेवाले, मांसके लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्रतुल्यपराक्रान्तं वृष्ट्वेवोपरतं घनम् ।
नर्दन्तं नर्दतां भीमं शूरं शूरेण पातितम् ॥
शार्दूलेनामिषस्यार्थे मृगराजमिवाहतम् २३
अर्चितं सर्वलोकस्य सपताकं सवेदिकम् ।
नागहेतोः सुपर्णेन चैत्यमुन्माथितं यथा २४
अवष्टभ्यावतिष्ठन्तं ददर्श धनुरूर्जितम् ।
रामं रामानुजं चैव भर्तुश्चैव तथानुजम् २५
तानतीत्य समासाद्य भर्तारं निहतं रणे ।
समीक्ष्य व्यथिता भूमौ संभ्रान्ता निपपात ह २६
सुप्तेव पुनरुत्थाय आर्यपुत्रेति वादिनी ।
रुरोद सा पतिं दृष्ट्वा संवीतं मृत्युदामभिः २७
तामवेक्ष्य तु सुग्रीवः क्रोशन्तीं कुररीमिव ।
विषादमगमत्कष्टं दृष्ट्वा चाङ्गदमागतम् २८

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥१९॥ [८३४]

गिराये गये सिंहके समान शूर (राम) से गिराये हुए, नागके कारण गरुड द्वारा, सर्वसंसारको पूजनीय पताका और वेदी समेत, मथे गये चैत्यके समान शूर पतिको देखा ॥ २१, २२,२३,२४, ॥

उस कल्याणीने श्रेष्ठ दृढ धनुषको उठाये खडे राम, लक्ष्मण और देवर (सुग्रीव) को देखा ॥ २५ ॥ पीडित और व्याकुल तारा उन्हें छोड और रणमें मारे गये पतिके पास पहुंच और उसे देख भूमिपर गिर पडी ॥ २६ ॥ गिरकर फिर उठकर ' हे आर्यपुत्र ! २ ' इस प्रकार चिल्लाती हुई तारा कालकी फांसीसे बंधे हुए पतिको देखकर रोने लगी ॥ २७ ॥ कुररी (चील) के समान चिल्लाती हुई ताराको और आये हुए अङ्गदको देखकर सुग्रीव अत्यन्त खेदको प्राप्त हो गया ॥ २८ ॥

यहाँ १९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विंशः सर्गः ॥ २० ॥

रामचापविसृष्टेन शरेणान्तकरेण तम्।
दृष्ट्वा विनिहतं भूमौ तारा ताराधिपानना १
सा समासाद्य भर्तारं पर्यष्वजत भामिनी।
इषुणाभिहतं दृष्ट्वा वालिनं कुञ्जरोपमम् २
वानरं पर्वतेन्द्राभं शोकसंतप्तमानसा।
तारा तरुमिवोन्मूलं पर्यदेवयतातुरा ३
रणे दारुणविक्रान्त प्रवीर प्लवतां वर।
किमिदानीं पुरोभागामद्य त्वं नाभिभाषसे ४
उत्तिष्ठ हरिशार्दूल भजस्व शयनोत्तमम्।
नैवंविधाः शेरते हि भूमौ नृपतिसत्तमाः ५
अतीव खलु ते कान्ता वसुधा वसुधाधिप।
गतासुरपि तां गात्रैर्मां विहाय निषेवसे ६
व्यक्तमद्य त्वया वीर धर्मतः संप्रवर्तिता।

चन्द्रमाके समान मुखवाली तारा रामके धनुषसे छूटे जीवनके अन्त वाले बाणसे भूमि पर निपातन किये पति वालीको देखकर उसके में पहुंच कर आलिङ्गन करने लगी ॥ १ ॥ शोकसे दुःखित मनवाली, आतुर हुई तारा इन्द्रके समान कान्तिवाले हाथी समान वानरोंके वालीको उखडे हुए वृक्षके समान बाणसे गिरा हुआ देखकर विलाप लगी ॥ २–३ ॥ हे रणमें घोर पराक्रम वाले! हे वीर! हे वानरश्रेष्ठ आप दोषदर्शनरहित, दीन मुझसे क्यों नहीं बोलते ॥ ४ ॥ हे हरिश्र तुम उठो, श्रेष्ठ शयनको भजो, तुम्हारे समान श्रेष्ठराजा भूमि पर सोते ॥ ५ ॥ हे राजन्! निश्चय ही तुमको भूमि अत्यन्त प्यारी है रहित हुए भी तुम मुझे छोडकर जिसे सेवते हो ॥ ६ ॥

हे वीर! प्रकट होता है कि तुमने यहां पर बनाई हुई किष्कि सदृश अन्य नगरी स्वर्गके मार्गमें बनाई है ॥ ७ ॥ हमारे साथ तुमने समय पर चित्तापकर्षक गन्धवाले वनोंमें विहार किया था उन वि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किष्किन्धेव पुरी रम्या स्वर्गमार्गे विनिर्मिता ७
यान्यस्माभिस्त्वया सार्धं वनेषु मधुगन्धिषु।
विहृतानि त्वया काले तेषामुपरमः कृतः ८
निरानन्दा निराशाहं निमग्ना शोकसागरे।
त्वयि पञ्चत्वमापन्ने महायूथपयूथपे ९
हृदयं सुस्थितं मह्यं दृष्ट्वा निपतितं भुवि।
यन्न शोकाभिसंतप्तं स्फुटतेऽद्य सहस्रधा १०
सुग्रीवस्य त्वया भार्या हृता स च विवासितः।
यत्तत्तस्य त्वया व्युष्टिः प्राप्तेयं प्लवगाधिप ११
निःश्रेयसपरा मोहात्त्वया चाहं विगर्हिता।
यैषाब्रुवं हितं वाक्यं वानरेन्द्रं हितैषिणी १२
रूपयौवनदृप्तानां दक्षिणानां च मानद।
नूनमप्सरसामार्य चित्तानि प्रमथिष्यसि १३
कालो निःसंशयो नूनं जीवितान्तकरस्तव।

तुमने विराम कर दिया ॥ ८ ॥ बडे सरदारोंके भी तुम सरदारके मृत्युको प्राप्त होने पर निरानन्द और निराश हुई मैं शोकसागरमें डूब गई हूं ॥ ९ ॥ मेरा हृदय बडा कडा है जो मरे हुए पतिको देखकर शोकसे सन्तप्त होकर भी आज हजारों टुकडे नहीं होता ॥ १० ॥ हे वानरेश्वर! आपने सुग्रीवकी स्त्री हरली थी और उसको निकाल दिया था उसीका यह फल आपने पाया है ॥ ११ ॥

हे वानरेन्द्र! कल्याणकी कामनावाली मेरी आपने मोहसे निन्दा की थी जिस हितैषिणी मैंने हितका वाक्य कहा था ॥ १२ ॥ हे सत्कारके देनेवाले! हे आर्य! रूप और यौवनसे अहङ्कारिणी हुई चतुर अप्सराओंके चित्तको आप वशमें करोगे ॥ १३ ॥ निस्सन्देह ही काल आपके जीवनका अन्त करनेवाला था जिससे कि विवश हुए आप जबरदस्ती सुग्रीवके वशमें प्राप्त होगये ॥ १४ ॥ दूसरेसे युद्ध करते हुए वालीको मारकर निन्दित कर्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलाद्येनावपन्नोसि सुग्रीवस्यावशो वशी १४
अस्थाने वालिनं हत्वा युध्यमानं परेण च ।
न संतप्यति काकुत्स्थः कृत्वा कर्म सुगर्हितम् १५
वैधव्यं शोकसंतापं कृपणाकृपणा सती ।
अदुःखोपाचिता पूर्वं वर्तयिष्याम्यनाथवत् १६
लालितश्चाङ्गदो वीरः सुकुमारः सुखोचितः ।
वत्स्यते कामवस्थां मे पितृव्ये क्रोधमूर्छिते १७
कुरुष्व पितरं पुत्र सुदृष्टं धर्मवत्सलम् ।
दुर्लभं दर्शनं तस्य तव वत्स भविष्यति १८
समाश्वासय पुत्रं त्वं संदेशं संदिशस्व मे ।
मूर्ध्नि चैनं समाघ्राय प्रवासं प्रस्थितो ह्यसि १९
रामेण हि महत्कर्म कृतं त्वामभिनिघ्नता ।
आनृण्यं तु गतं तस्य सुग्रीवस्य प्रतिश्रवे २०
सकामो भव सुग्रीव रुमां त्वं प्रतिपत्स्यसे ।

करके राम पश्चात्ताप नहीं करते यह अयोग्य है ॥ १५ ॥ मैं पहिले दुः
अपरिचित और अपरवश थी अब अनाथके समय परवश होकर वैधव्य
शोककृत सन्ताप को धारण करूंगी ॥ १६ ॥

मुझसे लालित किया, सुखके योग्य, सुकुमार, वीर अङ्गद
(सुग्रीव) के क्रोध करनेपर किस दशाको प्राप्त होगा ? ॥ १७ ॥ हे
धर्मप्रेमी पिता को तुम भले प्रकार देख लो हे वत्स ! इनका दर्शन
दुर्लभ हो जायगा ॥ १८ ॥ (हे पते !) इस पुत्रको मस्तकमें
आप समझावें और सन्देश दें क्योंकि परलोकको आप जा रहे हैं ॥
आपको मारते हुए रामने बडा भारी कार्य कर डाला, सुग्रीवकी प्रति
ऋणरहित हो गये ॥ २० ॥ हे सुग्रीव ! तुम कृतकृत्य होओ, तुम रु
पाओगे; भयरहित होकर राज्यको भोगो, तुम्हारा वैरी भाई मारा
॥ २१ ॥ हे वानरेश्वर ! इस प्रकार विलाप करती हुई मुझसे तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुङ्क्ष्व राज्यमनुद्विग्नः शस्तो भ्राता रिपुस्तव २१
किं मामेवं प्रलपतीं प्रियां त्वं नाभिभाषसे ।
इमाः पश्य वरा बह्वयो भार्यास्ते वानरेश्वर २२
तस्या विलपितं श्रुत्वा वानर्यः सर्वतश्च ताः ।
परिगृह्याङ्गदं दीना दुःखार्ताः प्रतिचुक्रुशुः २३
किमङ्गदं साङ्गदवीरबाहो विहाय यातोसि चिरं प्रवासम् ।
न युक्तमेवं गुणसंनिकृष्टं विहाय पुत्रं प्रियचारुवेषम् २४
यद्यप्रियं किंचिदसंप्रधार्य कृतं मया स्यात्तव दीर्घबाहो ।
क्षमस्व मे तद्धरिवंशनाथ व्रजामि मूर्ध्ना तव वीर पादौ २५
तथा तु तारा करुणं रुदन्ती भर्तुः समीपे सह वानरीभिः ।
व्यवस्यत प्रायमनिन्द्यवर्णा उपोपवेष्टुं भुवि यत्र वाली २६

इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे विंशः सर्गः ॥२०॥ [८६०]

क्यों नहीं बोलते हो, ये तुम्हारी श्रेष्ठ बहुत सी स्त्री हैं, इन्हें देखो ॥ २२ ॥ अङ्गद वीरको लेकर उस ताराका विलाप सुनकर दुःखसे पीडित हुई सब वानरी चारों ओर से चिल्लाने लगीं ॥ २३ ॥

हे बाजू और बलयुक्त बाहुवाले ! हे पुत्रसे प्यार करनेवाले ! अङ्गद; को छोडकर क्यों परलोकको जाते हो ? पुत्रको छोडकर जाना तुम्हारे गुणोंके योग्य नहीं ॥ २४ ॥

हे दीर्घबाहो ! हे हरिवंशनाथ ! हे वीर ! यदि मैंने विना जाने कुछ अप्रिय आपका किया भी हो तो उसे क्षमा कीजिये, आपके चरणोंमें मैं मस्तक झुकाती हूं ॥ २५ ॥ पतिके समीपमें वानरियोंके साथ पूर्वोक्त प्रकारसे करुणापूर्वक रुदन करती हुई श्रेष्ठ वर्णवाली तारा पृथ्वी पर जहां कि वाली पडा था वहां मरनेको बैठ गई ॥ २६ ॥

॥ यहाँ २० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एकविंशः सर्गः।

ततो निपतितां तारां च्युतां तारामिवाम्बरात्।
शनैराश्वासयामास हनूमान्हरियूथपः १
गुणदोषकृतं जन्तुः स्वकर्म फलहेतुकम्।
अव्यग्रस्तदवाप्नोति सर्वं प्रेत्य शुभाशुभम् २
शोच्या शोचसि कं शोच्यं दीनं दीनाऽनुकम्पसे।
कश्च कस्यानुशोच्योऽस्ति देहेऽस्मिन्बुद्बुदोपमे ३
अङ्गदस्तु कुमारोयं द्रष्टव्यो जीवपुत्रया।
आयत्यां च विधेयानि समर्थान्यस्य चिन्तय ४
जानास्यनियतामेवं भूतानामागतिं गतिम्।
तस्माच्छुभं हि कर्तव्यं पण्डिते नेह लौकिकम् ५
यस्मिन्हरिसहस्राणि शतानि नियुतानि च।
वर्तयन्ति कृताशानि सोऽयं दिष्टान्तमागतः ६
यदयं न्यायदृष्टार्थः सामदानक्षमापरः।

आकाशसे गिरे हुए तारेके समान गिरी हुई ताराको वानरोंके यू॰ हनुमान् शनैः २ दिलासा देने लगे ॥ १ ॥ जीव ज्ञान तथा अज्ञानसे हुए अपने कर्मफलहेतु समस्त सुख दुःखको लोकान्तरमें जाकर एकाग्र पाता है ॥ २ ॥ स्वयं शोच करने योग्य तुम किनका शोच करती हो स्वयं दीन तुम किस दीन पर दया करती हो, जलके बुलबुलेके समान देहमें किसको किसका शोच करना चाहिये अर्थात किसीका नहीं ॥ ३ ॥ जी॰ पुत्रवाली तुम अङ्गद कुमारका परिपालन करो और आगेको इसके॰ की चिन्ता करो ॥ ४ ॥ हे पण्डिते ! प्राणियोंकी अस्थिर गतिको जानती ही हो इससे शुभ अर्थात् और्ध्वदैहिक संस्कार करना चाहिये, लोकके कार्य (रोदनादिक) न करने चाहियें ॥ ५ ॥

जिसके राज्यमें हजारों लाखों अरबों वानर विभाग करके जीते थे यह दैवकल्पित कालकी समाप्तिको पहुंच गया ॥ ६ ॥ न्यायसे देख॰ तत्वार्थ जिसने ऐसा साम (समझाना) दान (देना) क्षमा (

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतो धर्मजितां भूमिं नैनं शोचितुमर्हसि ७
सर्वे च हरिशार्दूलाः पुत्रश्चायं तवाङ्गदः।
हर्यृक्षपतिराज्यं च त्वत्सनाथमनिन्दिते ८
ताविमौ शोकसंतप्तौ शनैः प्रेरय भामिनि।
त्वया परिगृहीतोऽयमङ्गदः शास्तु मेदिनीम् ९
संततिश्च यथा दृष्टा कृत्यं यच्चापि सांप्रतम्।
राज्ञस्तत्क्रियतां सर्वमेष कालस्य निश्चयः १०
संस्कार्यो हरिराजस्तु अङ्गदश्चाभिषिच्यताम्।
सिंहासनगतं पुत्रं पश्यन्ती शान्तिमेष्यसि ११
सा तस्य वचनं श्रुत्वा भर्तृव्यसनपीडिता।
अब्रवीदुत्तरं तारा हनूमन्तमवस्थितम् १२
अङ्गदप्रतिरूपाणां पुत्राणामेकतः शतम्।
हतस्याप्यस्य वीरस्य गात्रसंश्लेषणं वरम् १३

-रना) इन में तत्पर यह वाली धर्मसे जीती हुई भूमिको प्राप्त हुआ है उसे तुम्हें शोच न करना चाहिये ॥ ७ ॥ हे निन्दारहित ! सब वानर, और यह तुम्हारा पुत्र अङ्गद और यह वानर तथा ऋक्षोंका राज्य तुमसे सनाथ है ॥ ८ ॥ हे भामिनि ! शोक और सन्तापको दूर करो, तुमसे पालन किया हुआ यह अङ्गद भूमिका पालन करे ॥ ९ ॥ जिस प्रयोजन-के लिये सन्तानको पाया है और इस समय जो कृत्य योग्य है वह सब राजाका करो, यही इस समय निश्चय है ॥ १० ॥

वानरराज वालीका संस्कार करो, अङ्गदका अभिषेक करो, सिंहासन पर बैठे हुए पुत्रको देखती हुई तुम शान्तिको पाओगी ॥ ११ ॥ पतिके दुःखसे पीडित हुई तारा हनुमान्के वचनको सुनकर सामने स्थित हनुमान् से बोली ॥ १२ ॥ अङ्गदके समान (सज्जन) सौ पुत्र एक ओर तथा मरे हुए इस वीरका आलिङ्गन करना दूसरी ओर हो तो इन दोनोंसेंसे इस-वीरका आलिङ्गन ही श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥ मैं न वानरराजके संस्कार करनेमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

न चाहं हरिराजस्य प्रभवास्यङ्गदस्य वा ।
पितृव्यस्तस्य सुग्रीवः सर्वकार्येष्वनन्तरः
न ह्येषा बुद्धिरास्थेया हनूमन्नङ्गदं प्रति ।
पिता हि बन्धुः पुत्रस्य न माता हरिसत्तम
न हि मम हरिराजसंश्रयात्क्षमतरमस्ति परत्र चेह वा ।
अभिमुखहतवीरसेवितं शयनमिदं मम सेवितुं क्षमम् ।

इत्यार्षे श्रीमद्रामा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे एकविंशः सर्गः ॥२१॥

द्वाविंशः सर्गः ।

वीक्षमाणस्तु मन्दासुः सर्वतो मन्दमुच्छ्वसन् ।
आदावेव तु सुग्रीवं ददर्शानुजमग्रतः
तं प्राप्तविजयं वाली सुग्रीवं प्लवगेश्वरम् ।
आभाष्य व्यक्तया वाचा सस्नेहमिदमब्रवीत्
सुग्रीव दोषेण न मां गन्तुमर्हसि किल्बिषात् ।
कृष्यमाणं भविष्येण बुद्धिमोहेन मां बलात्

समर्थ हूं और न अंगदका अभिषेक करनेमें समर्थ हूं, सब कार्योंमें उसके चचा सुग्रीव हैं ॥ १४ ॥ हे वानरश्रेष्ठ ! हे हनुमन् ! अङ्गदके ऐसी बुद्धि न करो क्योंकि पुत्रका बन्धु पिता ही है माता नहीं है । मुझे इस लोक तथा परलोकमें वालीके सहारेसे योग्य अन्य कुछ है, शत्रुके सामने मारे हुए वीरसे सेवित यह शयन मेरे सेवनके भी है ॥ १६ ॥

॥ यहां २१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

थोडे प्राणवाले, चारों ओर देखते, मन्द श्वासलेते वालीने अपने पुत्रके आगे सुग्रीवको देखा ॥ १ ॥ वानरेश्वर वाली विजयको हुए सुग्रीवको प्रकट वाणीसे सम्बोधन कर स्नेह समेत बोला ॥ सुग्रीव ! पापके कारण मुझे सदोष मत समझना, किन्तु भविष्य कारण उत्पन्न हुए बुद्धिमोहसे मुझे बलपूर्वक खींचा हुआ जानना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युगपाद्विहितं तात न मन्ये सुखमावयोः।
सौहार्दं भ्रातृयुक्तं हि तदिदं जातमन्यथा ४
प्रतिपद्य त्वमद्यैव राज्यमेषां वनौकसाम्।
मामप्यद्यैव गच्छन्तं विद्धि वैवस्वतक्षयम् ५
जीवितं च हि राज्यं च श्रियं च विपुलां तथा।
प्रजहाम्येष वै तूर्णमहं चागर्हितं यशः ६
अस्यां त्वहमवस्थायां वीर वक्ष्यामि यद्वचः।
यद्यप्यसुकरं राजन्कर्तुमेव त्वमर्हसि ७
सुखार्हं सुखसंवृद्धं बालमेनमबालिशम्।
बाष्पपूर्णमुखं पश्य भूमौ पतितमङ्गदम् ८
मम प्राणैः प्रियतरं पुत्रं पुत्रमिवौरसम्।
मया हीनमहीनार्थं सर्वतः परिपालय ९
त्वमप्यस्य पिता दाता परित्राता च सर्वशः।
भयेष्वभयदश्चैव यथाहं प्लवगेश्वर १०

तात! मैं यह समझता हूं कि हम दोनों भाइयोंका भ्रातृत्वयुक्त राज्य-सुख दैवने एक साथ नहीं विधान किया था, हे तात! सो यह दैवकृत एक साथका अविधान अन्य प्रकार नहीं हुआ ॥ ४ ॥ तुम अभी ही इन वानरोंके राज्यको पाओ और मुझे अभी ही यमगृहको जाता हुआ जानो ॥ ५ ॥

यह मैं शीघ्र ही जीवन, राज्य, विपुल लक्ष्मी और अनिन्दनीय बडे यशको छोडता हूं ॥ ६ ॥ हे वीर! मैं इस अवस्थामें जिस वचनको कहता हूं हे राजन्! वह यद्यपि सरल नहीं है तथापि तुम उसको करनेके योग्य हो ॥ ७ ॥ सुखके योग्य, सुखसे पालन हुए, बालक, बालककी सी बुद्धिरहित आंसुओंसे भरे हुए मुंहवाले, भूमिपर गिरे हुए, मेरे प्राणोंसे प्यारे अंगद पुत्रको अपने पुत्रके सदृश देखना, हे वानरेश्वर! मुझसे हीन, अहीन अर्थवाले इसका तुम ही पालन करो ॥ ८-९ ॥ तुमही इसको (वस्त्राभरणों) देनेवाले और सर्व प्रकारसे रक्षा करनेवाले तथा मेरे समान भयोंमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एष तारात्मजः श्रीमांस्त्वया तुल्यपराक्रमः।
रक्षसां च वधे तेषामग्रतस्ते भविष्यति ॥ ११ ॥
अनुरूपाणि कर्माणि विक्रम्य बलवान्रणे।
करिष्यत्येष तारेयस्तेजस्वी तरुणोऽङ्गदः ॥ १२ ॥
सुषेणदुहिता चेयमर्थसूक्ष्मविनिश्चये।
औत्पातिके च विविधे सर्वतः परिनिष्ठिता ॥ १३ ॥
यदेषा साध्विति ब्रूयात्कार्यं तन्मुक्तसंशयम्।
न हि तारामतं किंचिदन्यथा परिवर्तते ॥ १४ ॥
राघवस्य च ते कार्यं कर्तव्यमविशङ्कया।
स्यादधर्मो ह्यकरणे त्वां च हिंस्यादमानितः ॥ १५ ॥
इमां च मालामाधत्स्व दिव्यां सुग्रीव काञ्चनीम्।
उदारा श्रीः स्थिता ह्यस्यां संप्रजह्यान्मृते मयि ॥ १६ ॥
इत्येवमुक्तः सुग्रीवो वालिना भ्रातृसौहृदात्।
हर्षं त्यक्त्वा पुनर्दीनो ग्रहग्रस्त इवोडुराट् ॥ १७ ॥

अभयके देनेवाले हो ॥ १० ॥ तुम्हारे सदृश पराक्रमवाला श्रीमान् यह पुत्र उन राक्षसोंके वधमें तुम्हारे आगे रहेगा ॥ ११ ॥

बलवान्, तेजोयुक्त, तरुण यह ताराका पुत्र अङ्गद रणमें (प) साथ योग्य कर्म करेगा ॥ १२ ॥ और यह सुषेणकी कन्या (सूक्ष्मार्थके निश्चयमें तथा विविध उत्पातविषयक ज्ञानमें अच्छे समर्थ है ॥ १३ ॥ जिसको यह "अच्छा है" ऐसा कह दे तो वह दिग्ध हो जाता है, ताराका मत अन्यथा कुछ भी नहीं होता ॥ १४ ॥ रामके कार्यको शङ्कारहित होकर करना, न करनेसे अधर्म होगा अपमान किये हुए राम तुम्हारी हिंसा भी कर डालेंगे ॥ १५ ॥ हे इस दिव्य सुवर्णकी मालाको तुम धारण करो, मेरे मर जानेपर इस उदार श्री स्थित है वह इसे छोड देगी ॥ १६ ॥ वालीसे भाईपनेका के कारण इस प्रकार कहा गया सुग्रीव हर्षको त्याग कर राहुसे ग्र चन्द्रमाके समान फिर दीन हो गया ॥ १७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तद्वालिवचनाच्छान्तः कुर्वंन्युक्तमतन्द्रितः।
जग्राह सोऽभ्यनुज्ञातो मालां तां चैव काञ्चनीम् १८
तां मालां काञ्चनीं दत्त्वा दृष्ट्वा चैवात्मजं स्थितम्।
संसिद्धः प्रेत्यभावाय स्नेहादङ्गदमब्रवीत् १९
देशकालौ भजस्वाद्य क्षममाणः प्रियाप्रिये।
सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव २०
यथा हि त्वं महाबाहो लालितः सततं मया।
न तथा वर्तमानं त्वां सुग्रीवो बहु मन्यते २१
मास्या मित्रैर्गतं गच्छेर्मा शत्रुभिरारिंदम।
भर्तुरर्थपरो दान्तः सुग्रीववशगो भव २२
न चातिप्रणयः कार्यः कर्तव्योऽप्रणयश्च ते।
उभयं हि महादोषं तस्मादन्तरदृग्भव २३
इत्युक्त्वाथ विवृत्ताक्षः शरसंपीडितो भृशम्।

तदनन्तर छोड दिया है वैर जिसने ऐसे सुग्रीवने सावधान हो योग्य कार्य करते हुए आज्ञा पाकर वालिके वचनसे उस सुवर्णकी मालाको ग्रहण कर लिया ॥ १८ ॥ मरनेका होगया है निश्चय जिसका ऐसा वालि सुवर्णकी मालाको (सुग्रीव को) देकर स्थित हुए पुत्रको देखकर स्नेहसे अङ्गदसे बोला ॥ १९ ॥ अब प्रिय तथा अप्रियको सहन करते हुए तुम देश, कालको भजो; समय समय पर सुख, दुःखको सहते हुए सुग्रीवके वशमें ही रहना ॥ २० ॥ हे महाबाहो ! जैसा कि तुमको निरन्तर लालित किया था इस प्रकार रहते हुए तुमको सुग्रीव अच्छा नहीं समझेगा ॥ २१ ॥ हे अरिन्दम ! तुम सुग्रीवके शत्रुके मित्रों तथा शत्रुओंके साथ न चलना और स्वामीके प्रयोजनमें तत्पर और कुशल हुए तुम सुग्रीवके वशमें रहना ॥ २२ ॥ न अत्यन्त स्नेह तुम करना और न अत्यन्त स्नेहाभाव करना, दोनोंमें ही बड़ा दोष है; अतः मध्यमभावका अवलम्बन करना ॥ २३ ॥

तदनन्तर नेत्र घुमाता, बाणसे अत्यन्त पीडित और प्रकाशित, भयानक

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विवृत्तैर्दशनैर्भीमैर्बभूवोत्क्रान्तजीवितः २४
ततो विचुक्रुशुस्तत्र वानरा हतयूथपाः।
परिदेवयमानास्ते सर्वे प्लवगसत्तमाः २५
किष्किन्धा ह्यद्य शून्या च स्वर्गते वानरेश्वरे।
उद्यानानि च शून्यानि पर्वताः काननानि च २६
हते प्लवगशार्दूले निष्प्रभा वानराः कृताः २७
येन दत्तं महद्युद्धं गन्धर्वस्य महात्मनः।
गोलभस्य महाबाहोर्दश वर्षाणि पञ्च च २८
नैव रात्रौ न दिवसे तद्युद्धमुपशाम्यति।
ततः षोडशमे वर्षे गोलभो विनिपातितः २९
तं हत्वा दुर्विनीतं तु वाली दंष्ट्राकरालवान्।
सर्वाभयंकरोऽस्माकं कथमेष निपातितः ३०
हते तु वीरे प्लवगाधिपे तदा वनेचरास्तत्र न शर्म लेभि

दांतोंसे दिखाई देता हुआ वाली प्राणरहित होगया ॥ २४ ॥ इसके वहां विलाप करते, कूदनेमें चतुर, वानरसेनापति सब वानर चिल्ला ॥ २५ ॥ वानरोंके स्वामी वालीके स्वर्गको जानेसे किष्किन्धा आज होगई और बाग, पर्वत और वन भी सूने होगये ॥ २६ ॥ वानरश्रेष्ठके म सब वानर कान्तिहीन होगये ॥ २७ ॥

जिसने महाबाहु, महात्मा, गन्धर्व गोलभको पन्द्रह वर्ष तक महायु अवसर) दिया था ॥ २८ ॥ वह युद्ध न रात्रिमें शान्त होता था न दिन पश्चात् सोलहवें वर्षमें गोलभको पछाडा था ॥ २९ ॥ हमको सब ओरसे करनेवाला तथा कराल दाढोंवाला वाली दुःशिक्षित उस गन्धर्व को कर किस प्रकार मारा गया? ॥ ३० ॥ उस समय वानरोंके स्वामी वालीके मर जाने पर वनचारी वानरोंने इस तरह सुख न पाय गवांपति (गवालिया) के मरजानेसे गौएं सिंहयुक्त महावनमें सुख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेचराः सिंहयुते महावने यथा हि गावो निहते गवां पतौ ३१
तस्तु तारा व्यसनार्णवप्लुता मृतस्य भर्तुर्वदनं समीक्ष्य सा।
गाम भूमिं परिरभ्य वालिनं मयाद्रुमं छिन्नमिवाश्रिता लता ३२
त्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥२२॥ [९०८]

त्रयोविंशः सर्गः।

ततः समुपजिघ्रन्ती कपिराजस्य तन्मुखम्।
पतिं लोकश्रुता तारा मृतं वचनमब्रवीत् १
शेषे त्वं विषमे दुःखमकृत्वा वचनं मम।
उपलोपचिते वीर सुदुःखे वसुधातले २
मत्तः प्रियतरा नूनं वानरेन्द्र मही तव।
शेषे हि तां परिष्वज्य मां च न प्रतिभाषसे ३
सुग्रीवस्य वशं प्राप्तो विधिरेष भवत्यहो।
सुग्रीव एव विक्रान्तो वीर साहसिकप्रिय ४
ऋक्षवानरमुख्यास्त्वां बलिनं पर्युपासते।

कें ॥ ३१ ॥ तदनन्तर शोकरूपी सागरमें डूबी हुई तारा मरे हुए पतिके खको देखकर वालीका आलिङ्गन कर भूमिपर गिर पडी जैसे कटे हुए डे वृक्षके साथ उसके सहारे वाली बेल गिर पडे ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ २२ वाँ सर्ग समाप्त ॥

इसके अनन्तर वालिके उस मुखका चुम्बन करती तारा इस लोकसे र हुए मृत वालिसे यह वाक्य बोली ॥ १ ॥ हे वीर ! आप मेरे वचनको न नकर पत्थरोंसे भरे हुए, विषम, अति दुःखदायी भूमितल पर सोते हो २ ॥ हे वानरेन्द्र ! निश्चय ही तुमको पृथ्वी मुझसे अत्यन्त प्यारी है, योंकि उससें आलिङ्गन करके सोते हो और मुझसे नहीं बोलते हो ३ ॥ हे साहसिकोंके प्रिय ! हे वीर ! तुम सुग्रीवके वशमें प्राप्त होगये, ग्रीव ही पराक्रमी है यह जो व्यापार है वह आश्चर्यकारी है ॥ ४ ॥ ऋक्ष र वानरोंमें जो बलवान् मुख्य हैं वे तुम्हारी उपासना करते हैं इनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तेषां विलपितं कृच्छ्रमङ्गदस्य च शोचतः॥
मम चेमा गिरः श्रुत्वा किं त्वं न प्रतिबुध्यसे ५
इदं तद्वीरशयनं तत्र शेषे हतो युधि।
शायिता निहता यत्र त्वयैव रिपवः पुरा ६
विशुद्धसत्त्वाभिजन प्रिययुद्ध मम प्रिय।
मामनाथां विहायैकां गतस्त्वमसि मानद ७
शूराय न प्रदातव्या कन्या खलु विपश्चिता।
शूरभार्यां हतां पश्य सद्यो मां विधवां कृताम् ८
अवभग्नश्च मे मानो भग्ना मे शाश्वती गतिः।
अगाधे च निमग्नाऽस्मि विपुले शोकसागरे ९
अश्मसारमयं नूनमिदं मे हृदयं दृढम्।
भर्तारं निहतं दृष्ट्वा यन्नाद्य शतधा कृतम् १०
सुहृच्चैव च भर्ता च प्रकृत्या च मम प्रियः।
प्रहारे च पराक्रान्तः शूरः पञ्चत्वमागतः ११

विलाप, शोकग्रस्त अङ्गदका दुःख और मेरी इस वाणीको सुनकर क्यों नहीं सावधान होते हो ?॥ ५॥

युद्धमें हत हुए तुम जहां सोते हो यह वही वीरशयन है कि तुमने ही पहिले मारे हुए वैरी सुलाये थे॥ ६॥ हे शुद्ध बल और वाले ! हे युद्धप्रेमिन् ! हे मेरे प्यारे ! हे मानद ! मुझ अनाथको छोड कर तुम (परलोक को) चले गये ॥ ७॥ विद्वान्‌को चाहिए शूरको कभी अपनी कन्या न दे, शूरकी पत्नी, हत हुई तथा विधवा की गई मुझको देखो ॥ ८॥ मेरा अभिमान या सत्कार ... मेरा सुख या पतिशुश्रूषा भी चली गई और बडे अथाह शोकसागरमें ... हूं॥ ९॥ निश्चय ही पत्थरका बना हुआ दृढ मेरा हृदय है जो ... पति को देखकर आज सौ टुकडे नहीं हो गया॥ १०॥

हितैषी, स्वभावसे ही मेरा प्यारा, संग्राममें शत्रुओंसे दबाया ... शूर, मेरा पति मरणधर्मको प्राप्त हो गया है॥ ११॥ पतिसे हीन ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिहीना तु या नारी कामं भवतु पुत्रिणी ।
धनधान्यसमृद्धाऽपि विधवेत्युच्यते बुधैः ॥ १२

स्वगात्रप्रभवे वीर शेषे रुधिरमण्डले ।
कृमिरागपरिस्तोमे स्वकीये शयने यथा ॥ १३

रेणुशोणितसंवीतं गात्रं तव समन्ततः ।
परिरब्धुं न शक्नोमि भुजाभ्यां प्लवगर्षभ ॥ १४

कृतकृत्योऽद्य सुग्रीवो वैरेऽस्मिन्नातिदारुणे ।
यस्य राम विमुक्तेन हृतमेकेषुणा भयम् ॥ १५

शरेण हृदि लग्नेन गात्रसंस्पर्शने तव ।
वार्यामि त्वां निरीक्षन्ती त्वयि पञ्चत्वमागते ॥ १६

उद्बबर्ह शरं नीलस्तस्य गात्रगतं तदा ।
गिरिगह्वरसंलीनं दीप्तमाशीविषं यथा ॥ १७

तस्य निष्कृष्यमाणस्य बाणस्यापि बभौ द्युतिः ।
अस्तमस्तकसंरुद्धरश्मेर्दिनकरादिव ॥ १८

ह पुत्रवती और धनधान्यसे पूर्ण क्यों न हो तौ भी मनुष्यसे विधवा ही हो जाती है ॥१२॥ हे वीर! अपने शरीरसे उत्पन्न हुए रुधिरमें आप इस कार सोते हो जैसे वीरबहूटीके रङ्गके समान रंगी हुई चद्दरवाले प अपने बिस्तर पर सोते थे ॥ १३ ॥ हे वानरश्रेष्ठ! मैं धूलि और कसे युक्त हुए तुम्हारे शरीर को भुजाओंसे सब ओरसे आलिङ्गन नहीं र सकती ॥ १४ ॥ अति घोर इस वैरमें सुग्रीव आज कृतकृत्य होगया सके भयको रामसे छोडे हुए एक बाणने दूर कर दिया ॥ १५ ॥ आपके मर जाने पर आपको देखती हुई मैं आपके हृदयमें लगे हुए णसे निवारण की जाती हूं ॥ १६ ॥ उस समय नीलने पर्वतकी कन्दरामें से हुए जहरीले सर्पकी तरह वालीके शरीरमें लगे हुए बाणको निकाला १७ ॥ निकाले जाते हुए उस बाणकी कान्तिने इस प्रकार शोभा दी से अस्ताचलशिखरसे रुकी हुई सूर्यसे निकली किरण शोभा दे ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पेतुः क्षतजधारास्तु व्रणेभ्यस्तस्य सर्वशः।
ताम्रगैरिकसंपृक्ता धारा इव धराधरात् १९
अवकीर्णं विमार्जन्ती भर्तारं रणरेणुना।
अस्रैर्नयनजैः शूरं सिषेचास्त्रसमाहतम् २०
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गं दृष्ट्वा विनिहतं पतिम्।
उवाच,तारा पिङ्गाक्षं पुत्रमङ्गदमङ्गना २१
अवस्थां पश्चिमां पश्य पितुः पुत्र सुदारुणाम्।
संप्रसक्तस्य वैरस्य गतोऽन्तः पापकर्मणा २२
बालसूर्योज्ज्वलतनुं प्रयातुं यमसादनम्।
अभिवादय राजानं पितरं पुत्र मानदम् २३
एवमुक्तः समुत्थाय जग्राह चरणौ पितुः।
भुजाभ्यां पीनवृत्ताभ्यामङ्गदोऽहमिति ब्रुवन् २४
अभिवादयमानं त्वामङ्गदं त्वं यथा पुरा।
दीर्घायुर्भव पुत्रेति किमर्थं नाभिभाषसे २५

उसके घावोंसे सब ओर रक्तकी धारा गिरने लगी लाल गेरूसे
हुई धारा जैसे पहाडसे निकले ॥ १९ ॥ संग्रामकी धूलसे युक्त हुए
को पूंछती हुई ताराने बाणसे घायल हुए शूरको नेत्रोंसे निकले
सींचा ॥ २० ॥ लोहूसे भीग गया है सब शरीर जिसका ऐसे
पतिको देख कर तारा स्त्री पीले नेत्रवाले अंगद पुत्रसे बोली ॥ २१॥

हे पुत्र ! पिताकी दारुण अन्तिम अवस्थाको देखो पापरूप कर्म
हुए वैरका अन्त होगये ॥ २२ ॥ हे पुत्र ! बालसूर्यके उदयके सदृश
वाले, यमलोकको जाते हुए, मानके देनेवाले, राजा पिताको प्रणा
॥ २३ ॥ ऐसे कहे गये अङ्गदने उठकर "मैं अंगद हूं" ऐसा कह
पुष्ट और गोल भुजाओंसे पिताके चरणोंमें प्रणाम किया ॥ २४॥
बोली) अपनेको प्रणाम करते हुए अंगदसे तुम पहिलेके समान "
युर्भव पुत्र !" यह क्यों नहीं करते हो ? ॥ २५ ॥ पुत्र ही है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहं पुत्रसहाया त्वामुपासे गतचेतनम् ।
सिंहेन पातितं सद्यो गौः सवत्सेव गोवृषम् २६
इष्ट्वा सङ्ग्रामयज्ञेन रामप्रहरणाम्भसा ।
तस्मिन्नवभृथे स्नातः कथं पत्न्या मया विना २७
या दत्ता देवराजेन तव तुष्टेन संयुगे ।
शातकौम्भीं प्रियां मालां तां ते पश्यामि नेह किम् २८
राज्यश्रीर्न जहाति त्वां गतासुमपि मानद ।
सूर्यस्यावर्तमानस्य शैलराजमिव प्रभा २९
न मे वचः पथ्यमिदं त्वया कृतं न चास्मि शक्ता हि निवारणे तव ।
हता सपुत्रास्मि हतेन संयुगे सह त्वया श्रीर्विजहाति मामपि ३०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे त्रयोविंशः सर्गः ॥२३॥ [९३८]

चतुर्विंशः सर्गः ।

तामाशुवेगेन दुरासदेन त्वभिप्लुतां शोकमहार्णवेन ।
पश्यंस्तदा वाल्यनुजस्तरस्वी भ्रातुर्वधेनाप्रतिमेन तेपे १

जिसका ऐसी मैं चेतनारहित तुम्हारी उपासना करती हूं जैसे शीघ्र ही सिंहसे मरे हुए बैलकी बछडा समेत गौ उपासना करे ॥ २६ ॥ संग्रामरूपी यज्ञको यजन करके रामके शस्त्ररूपी जलमें मुझ पत्नीके बिना आपने यज्ञान्त स्नान कैसे कर लिया? ॥ २७ ॥ युद्धमें प्रसन्न हुए इन्द्रने जो सोनेकी माला तुमको दी थी आपकी उस मालाको यहां मैं नहीं देखती ॥ २८ ॥ हे मानद! प्राणरहित हुए भी तुमको राज्यलक्ष्मी नहीं छोडती है जैसे अस्त होते हुए सूर्यकी कान्ति सुमेरु पहाडको नहीं छोडती ॥ २९ ॥ मेरे हितकारी वचनको आपने नहीं किया और न मैं आपको लौटानेमें समर्थ हुई; युद्धमें मारे हुए तुम्हारे साथ पुत्रयुक्त मैं भी मारी गई; यहां लक्ष्मी मुझे छोड रही है ॥ ३० ॥

यहाँ २३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

१ तब आंसुओंके वेगसे और कठिन शोकसागरसे व्याप्त उस ताराको देखते हुए वालीके छोटे भाई बलवान् सुग्रीव भाईके अप्रतिम वधसे सन्ताप करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

स बाष्पपूर्णेन मुखेन पश्यन्क्षणेन निर्विण्णमना मनस्
जगाम रामस्य शनैः समीपं भृत्यैर्वृतः संपरिदूयमानः
स तं समासाद्य गृहीतचापमुदात्तमाशीविषतुल्यबाण
यशस्विनं लक्षणलक्षिताङ्गमवस्थितं राघवमित्युवाच
यथा प्रतिज्ञातमिदं नरेन्द्र कृतं त्वया दृष्टफलं च कर्म
ममाद्य भोगेषु नरेन्द्रसूनो मनो निवृत्तं हतजीवितेन
अस्यां महिष्यां तु भृशं रुदत्यां पुरेऽतिविक्रोशति दुः
हते नृपे संशयितेऽङ्गदे च न राम राज्ये रमते मनो मे
क्रोधादमर्षादतिविप्रधर्षाद्भ्रातुर्वधो मेऽनुमतः पुरस्तात्
हते त्विदानीं हरियूथपेऽस्मिन्सुतीक्ष्णमिक्ष्वाकुवर प्रत
श्रेयोऽद्य मन्ये मम शैलमुख्ये तस्मिन्हि वासश्चिरमृष्य
यथा तथा वर्तयतः स्ववृत्त्या नेमं निहत्य त्रिदिवस्य

लगे ॥ १ ॥ मनस्वी, दुःखित मनवाले, भृत्योंसे युक्त, पश्चात्ताप क[...] सुग्रीव आंसुओंसे भरे हुए मुखसे प्रकट होती ताराको क्षणमात्र [...] रामके समीपको धीरेसे चले ॥ २ ॥ सुग्रीव धनुष् लिये, श्रेष्ठसर्प[...] बाणवाले, यशस्वी, श्रेष्ठचिन्होंसे चिन्हित शरीरवाले, स्थित हुए [...] देखकर रामसे यह बोले ॥ ३ ॥ हे राजन्! तुमने प्रतिज्ञाका [...] करके देखा है राज्यरूपी फल जिसका ऐसा कार्य किया। हे राजपु[...] समय मेरा मन जीवनके साथ भोगोंसे निवृत्त हो गया है ॥ ४ ॥ [...] इस रानीके अतिशय रोनेसे और दुःखपीडित नगरके चिल्लानेसे [...] मरने और अङ्गदके जीवनका भी संदेह होनेसे मेरा मन राज्यमें [...] रमता ॥ ५ ॥

हे इक्ष्वाकुश्रेष्ठ ! क्रोधसे (कठोर वाक्यके) न सहनेसे, अतिअ[...] भाईका वध मुझको सम्मत था, वानरराज वालिके मर जानेसे इस [...] तीव्र सन्ताप करता हूं ॥ ६ ॥ किसी प्रकार अपनी वृत्तिसे वर्तते हु[...] पर्वतोंमें मुख्य ऋश्यमूकपर बहुत दिनतक बसना ही कल्याणकारी [...] इस वालीको मारकर स्वर्गका लाभ होना भी अच्छा नहीं, इस [...]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न त्वा जिघांसामि चरेति यन्मामयं महात्मा मतिमानुवाच ।
तस्यैव तद्राम वचोऽनुरूपमिदं वचः कर्म च मेऽनुरूपम् ८
भ्राता कथं नाम मया गुणस्य भ्रातुर्वधं राम विरोचयेत ।
राज्यस्य दुःखस्य च वीर सारं विचिन्तयन्कामपुरस्कृतोऽपि ९
वधो हि मे मतो नासीत्स्वमाहात्म्यव्यतिक्रमात् ।
ममासीद्बुद्धिदौरात्म्यात्प्राणहारी व्यतिक्रमः १०
द्रुमशाखावभग्नोऽहं मुहूर्तं परिनिष्टनन् ।
सान्त्वयित्वा त्वनेनोक्तो न पुनः कर्तुमर्हसि ११
भ्रातृत्वमार्यभावश्च धर्मश्चानेन रक्षितः ।
मया क्रोधश्च कामश्च कपित्वं च प्रदर्शितम् १२
अचिन्तनीयं परिवर्जनीयमनीप्सनीयं स्वनवेक्षणीयम् ।
प्राप्तोऽस्मि पाप्मानमिदं वयस्य भ्रातुर्वधात्त्वाष्ट्रवधादिवेन्द्रः १३
पाप्मानमिन्द्रस्य मही जलं च वृक्षाश्च कामं जगृहुः स्त्रियश्च ।

यह मानता हूं ॥ ७ ॥ हे राम ! इस बुद्धिमान् महात्मा वालीने "तुमको मारनेकी इच्छा नहीं करता, इच्छा अनुकूल चले आओ" यह मुझसे कहा था वह वचन उसीके योग्य था और यह कर्म मेरे ही योग्य है ॥ ८ ॥ हे वीर ! हे राम ! भाई राज्य और दुःखके उत्कर्षको न विचारता हुआ और कामपुरस्कृत हुआ अनेक गुणवाले भाईके वधको कैसे पसन्द करे ॥ ९ ॥ अपने यशकी हानि होनेके कारण मेरा वध उसको सम्मत नहीं था, मेरी तो बुद्धिकी दुष्टतासे भाईके प्राण हरनेवाली अमर्यादा हो गई ॥ १० ॥ मैं वृक्षोंकी शाखाओंसे पीडित हुए अतएव मुहूर्तमात्र आर्त शब्द करते हुए मुझसे इसने कहा था "फिर युद्ध न करना" ॥ ११ ॥ भाईपना, आर्यपना और धर्म इसने रक्षित किया। मैंने क्रोध, काम और वानरपना दिखाया था ॥ १२ ॥ हे नरेन्द्र ! मैं भाईके वधसे जो न विचारा जा सके साधुओंमें त्यागने योग्य और जिसकी कभी न इच्छा की जाय ऐसे निन्दनीय पापको प्राप्त हुआ हूं जैसे त्वाष्ट्र (विश्वरूप) के वधसे इन्द्र पापको प्राप्त हुए थे ॥ १३ ॥ इन्द्रके पापको भूमि, जल, वृक्ष और स्त्रियोंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को नाम पाप्मानमिमं सहेत शाखामृगस्य प्रतिपत्तुमिच्छेत्
नाहमिमि संमानमिमं प्रजानां न यौवराज्यं कुत एव राज्यम्
अधर्मयुक्तं कुलनाशयुक्तमेवंविधं राघव कर्म कृत्वा
पापस्य कर्ताऽस्मि विगर्हितस्य क्षुद्रस्य लोकापकृतस्य लो
शोको महान्मामभिवर्ततेऽयं वृष्टेर्यथा निम्नमिवाम्बुवेगः
सोदर्यघातागापरत्रवालः संतापहस्ताक्षिशिरोविषाणः।
एनोमयो मामभिहस्ति हन्ती दृप्तो नदीकूलमिव प्रवृद्धः
अंहो बतेदं नृवराविषह्यं निवर्तते मे हृदि साधु वृत्तम्।
अग्नौ विवर्णं परितप्यमानं किट्टं यथा राघव जातरूपम्
महाबलानां हरियूथपानामिदं कुलं राघव मन्निमित्तम्।
अस्याङ्गदस्यापि च शोकतापादर्धास्थितप्राणमितीव मन्ये
सुतः सुलभ्यः सुजनः सुवश्यः कुतस्तु पुत्रः सदृशोऽङ्गदेन

यथेष्ट ग्रहण किया था। मुझ वानरके पापको कौन ग्रहण कर सकता है
हे राम! अधर्मयुक्त, कुलके नाश फलवाले ऐसे कामको करके मैं इ
सम्मानके योग्य नहीं और न यौवराज्यके, फिर राज्यके योग्य कहां
दुष्ट, विशेष करके सत्पुरुषोंसे निन्दित, सब लोगोंसे छोडे हुए
करनेवाला मैं हूं। वृष्टिसे उत्पन्न हुआ जलका वेग जैसे नीचे स्थलं
होवे उसीके समान महान् शोक मुझे प्राप्त होता है ॥ १६॥
मारना ही है पूंछ जिसकी, दुःख ही हैं सूंड आखें शिर और दांत
ऐसा पापरूपी हाथी मुझे मारता है, जैसे अहङ्कारी बडा हाथी नदी
को गिरा देता है ॥ १७॥ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! हे राम! मेरे हृदय
यह श्रेष्ठ चरित्र अपने साथ वर्तमान पापको न सहकर निकलता
बुरे रङ्गका सोना अग्निपर तपालेनेपर किट्ट (मैल) को न सहकर
कर देता है ॥ १८॥ हे राघव! मेरे कारण अंगदके शोकतापसे
वानरेश्वरोंका यह झुण्ड आधे प्राणवालेके समान है यह मैं मानता हूं
सभ्यतायुक्त, वशमें रहनेवाला, पुत्र संसारमें सुखसे मिल
अङ्गदके समान पुत्र कहां सुखसे मिल सकता है अर्थात् दुर्लभ है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चापि विद्येत स वीर देशो यस्मिन्भवेत्सोदरसंनिकर्षः २०
याङ्गदो वीरवरो न जीवेज्जीवेत माता परिपालनार्थम्।
ना तु पुत्रं परितापदीना, सा नैव जीवेदिति निश्चितं मे २१
ऽहं प्रवेक्ष्यास्यतिदीप्तमग्निं भ्रात्रा च पुत्रेण च सख्यमिच्छन्।
मे विचेष्यन्ति हरिप्रवीराः सीतां निदेशे परिवर्तमानाः २२
त्स्नं तु ते सेत्स्यति कार्यमेतन्मय्यप्यतीते मनुजेन्द्रपुत्र।
लस्य हन्तारमजीवनार्हं रामानुजानीहि कृतागसं माम् २३
त्येवमार्तस्य रघुप्रवीरः श्रुत्वा वचो वालिजघन्यजस्य।
जातबाष्पः परवीरहन्ता रामो मुहूर्तं विमना बभूव २४
स्मिन्क्षणेऽभीक्ष्णमवेक्षमाणः क्षितिक्षमावान्भुवनस्य गोप्ता।
मो रुदन्तीं व्यसने निमग्नां समुत्सुकः सोऽथ ददर्श ताराम् २५
ां चारुनेत्रां कपिसिंहनाथां पतिं समाश्लिष्य तदा शयानाम्।
त्थापयामासुरदीनसत्त्वां मन्त्रिप्रधानाः कपिराजपत्नीम् २६

ह देश कहींपर नहीं है जहांपर भाईका सत्सङ्ग हो जावे ॥ २० ॥ हे वीर राई! यदि अङ्गद जीवे तो उसकी माता पालनके अर्थ जीवे, दुःखसे न हुई तारा विना पुत्रके नहीं जीवेगी यह मुझे निश्चय है ॥ २१ ॥ मैं ाई और पुत्रसे मित्रताकी इच्छा करता हुआ अतिप्रज्वलित अग्निमें जल ाऊंगा। आपकी आज्ञामें प्राप्त हुए ये वानर सीताको ढूंढेंगे ॥ २२ ॥ हे जपुत्र! मेरे मर जानेपर भी यह तुम्हारा कार्य तो समस्त सिद्ध हो ायगा। हे राम! कुलघाती, अपराधी मुझको न जीनेके योग्य समझो ॥२३॥ दुःखित हुए उन सुग्रीवके पूर्वोक्त वचनको सुनकर उत्पन्न हुए हैं आंसू नके ऐसे तथा शत्रुओंका नाश करनेवाले रघुवंशी राम मुहूर्त भरके लिये दास हो गये ॥ २४ ॥ उसी समय (तारासे) बार बार देखे गये, थ्वीके समान क्षमावाले, लोकके रक्षक, समझानेमें उत्कंठित रामने रोती ौर दुःखमें डूबी हुई ताराको देखा ॥ २५ ॥ तब मन्त्रियोंने चारुनेत्रा, ानररूपी सिंहोंके स्वामी पतिका आलिंगन करके लेटी हुई, अदीनसत्त्ववाली ालीकी स्त्री (तारा) को उठाया ॥ २६ ॥ तडफती, अन्य स्त्रियोंका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सा विस्फुरन्ती परिरभ्यमाणा भर्तुः समीपादपनीयमाना।
ददर्श रामं शरचापपाणिं स्वतेजसा सूर्यमिव ज्वलन्तम्
सुसंवृतं पार्थिवलक्षणैश्च तं चारुनेत्रं मृगशावनेत्रा।
अदृष्टपूर्वं पुरुषप्रधानमयं स काकुत्स्थ इति प्रजज्ञे
तस्येन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महानुभावस्य समीपमार्या।
आर्तातितूर्णं व्यसनं प्रपन्ना जगाम तारा परिविह्वलन्ती
तं सा समासाद्य विशुद्धसत्त्वं शोकेन संभ्रान्तशरीरभावा।
मनस्विनी वाक्यमुवाच तारा रामं रणोत्कर्षणलब्धलक्ष्यम्
त्वमप्रमेयश्च दुरासदश्च जितेन्द्रियश्चोत्तमधर्मकश्च।
अक्षीणकीर्तिश्च विचक्षणश्च क्षितिक्षमावान्क्षतजोपमाक्षः
त्वमात्तबाणासनबाणपाणिर्महाबलः संहननोपपन्नः।
मनुष्यदेहाभ्युदयं विहाय दिव्येन देहाभ्युदयेन युक्तः
येनैव बाणेन हतः प्रियो मे तेनैव बाणेन हि मां जहि हि।

आलिङ्गन करती और पतिके समीपसे अलग की गई ताराने धनुष हाथमें लिये हुए, अपने तेजसे सूर्यके समान प्रकाशित रामको देखा।

राजचिन्होंसे युक्त, सुन्दर नेत्रवाले, पूर्व कभी न देखे गये, पुरुष प्रधान उन रामको हिरणके बच्चेके सदृश नेत्रवाली ताराने "यही राम है" यह जाना ॥ २८ ॥ इन्द्रके समान, दुरासद, महानुभाव रामके पास दुःख में पीडित, दुःखग्रस्त, मूर्च्छित होती, श्रेष्ठ तारा शीघ्रतासे पहुंची। शुद्ध सत्ववाली, शोकसे विस्मृत हो गया है शरीरका भाव जिसका ऐसी मनस्विनी तारा रणमें सबसे उत्कर्ष लक्ष्य बींधनेवाले रामके पास पहुंचकर उनसे बोली ॥ ३० ॥ तुम किसीसे नहीं जाने जा सकते, दुरासद, जितेन्द्रिय, उत्तम धर्मात्मा, न नष्ट होनेवाली कीर्तिवाले, भूमिकी सी क्षमावाले और लाल नेत्रवाले हो ॥ ३१ ॥ तुम धनुष हाथमें लिये, महाबली, गठीले बदनवाले हो और मनुष्यदेहको छोडकर दिव्य देहके सौभाग्यसे युक्त हो ॥ ३२ ॥

जिस एक बाणसे मेरा प्रिय पति तुमने मारा है उसी बाणसे मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...ना गमिष्यामि समीपमस्य न मां विना वीर रमेत वाली ३३
...गेऽपि पद्मामलपत्रनेत्र समेत्य संप्रेक्ष्य च मामपश्यन्।
...ष उच्चावचताम्रचूडा विचित्रवेषाप्सरसोऽभजिष्यत् ३४
...गेऽपि शोकं च विवर्णतां च मया विना प्राप्स्यति वीर वाली।
...ये नगेन्द्रस्य तटावकाशे विदेहकन्यारहितो यथा त्वम् ३५
... वेत्थ तावद्वनिताविहीनः प्राप्नोति दुःखं पुरुषः कुमारः।
...त्वं प्रजानञ्जहि मां न वाली दुःखं ममादर्शनजं भजेत ३६
...च्चापि मन्येत भवान्महात्मा स्त्रीघातदोषस्तु भवेन्न मह्यम्।
...त्मेयमस्येति हि मां जहि त्वं न स्त्रीवधः स्यान्मनुजेन्द्रपुत्र ३७
...स्त्रप्रयोगाद्विविधाच्च वेदादनन्यरूपाः पुरुषस्य दाराः।
...रप्रधानाद्धि न दानमन्यत्प्रदृश्यते ज्ञानवतां हि लोके ३८
... चापि मां तस्य मम प्रियस्य प्रदास्यसे धर्ममवेक्ष्य वीर।

...रो; मरी हुई मैं इसके समीप पहुंच जाऊंगी, हे राम! मेरे विना वाली ...नन्द नहीं पावेगा ॥ ३३ ॥ कमलके उज्ज्वल पत्रके समान नेत्र-...ला मेरा पति स्वर्गमें अप्सराओंसे मिलकर, उन्हें देखकर और मुझे न ...कर अनेक लालफूलोंसे गुँथी हैं चोटियां जिनकी ऐसे अद्भुत वेषोंवाली ...प्सराओंको नहीं भोगेगा ॥ ३४ ॥ हे वीर! वाली मेरे बिना स्वर्गमें भी ...क और विषादको पावेगा जैसे कि सीतासे रहित तुम रमणीय ऋश्य-...कके तटपर पाते हो ॥ ३५ ॥ जैसे स्त्रीहीन, युवा पुरुष दुःख पाता है यह ... जानते ही हो, इस बातको जानते हुए तुम मुझे मारो; जिससे वाली ...रे अदर्शनसे उत्पन्न हुए दुःखको न पावे ॥ ३६ ॥

... हे राजपुत्र! महात्मा आप 'मुझे स्त्री मारनेका दोष लगेगा' यह मानते ... सो ठीक नहीं, मैं वालीकी आत्मा हूं यह समझकर मुझे मारो, आपको ...वधका दोष नहीं होगा, ॥ ३७ ॥ क्योंकि वेदसे और धर्मशास्त्रके अनेक ...गोंसे 'स्त्री पुरुषकी अनन्य आत्मा है' यह प्रसिद्ध है। संसारमें ज्ञानवा-...को स्त्रीदानसे श्रेष्ठ अन्यदान नहीं दीखता ॥ ३८ ॥ हे वीर! आप भी ...र्मको विचार कर उस मेरे प्रियको मुझे प्रदान करो, पतिके घातसे उत्पन्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अनेन दानेन न लप्स्यसे त्वमधर्मयोगं मम वीरघातात्
आर्तामनाथामपनीयमानामेवंगतां नार्हसि मामहन्तुम्
अहं हि मातङ्गविलासगामिना प्लवंगमानामृषभेण धीमता।
विना वराहोत्तमहेममालिना चिरं न शक्ष्यामि नरेन्द्र जीवितुम्
इत्येवमुक्तस्तु विभुर्महात्मा तारां समाश्वास्य हितं बभाषे।
मा वीरभार्ये विमतिं कुरुष्व लोको हि सर्वो विहितो विधात्रा
तं चैव सर्वं सुखदुःखयोगं लोकोऽब्रवीत्तेन कृतं विधात्रा।
त्रयोऽपि लोका विहितं विधानं नातिक्रमन्ते वशगा हि तस्य
प्रीतिं परां प्राप्स्यसि तां तथैव पुत्रश्च ते प्राप्स्यति यौवराज्यम्
धात्रा विधानं विहितं तथैव न शूरपत्न्यः परिदेवयन्ति
आश्वासिता तेन महात्मना तु प्रभावयुक्तेन परन्तपेन।
सा वीरपत्नी ध्वनता मुखेन सुवेषरूपा विरराम तारा

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मिकीय आदिकाव्ये किष्किन्धाकाण्डे
चतुर्विंशः सर्गः ॥ २४ ॥

हुए अधर्मसे तुम इस दानके कारण बच जाओगे ॥ ३९ ॥ पीडित, अ... और वालीके आलिङ्गनसे अलग की गई मुझको आप मारनेके योग्य है... नरेन्द्र ! हाथीके सदृश विलासयुक्त गमन करनेवाले, बहुमूल्य उत्तम सो... मालावाले, बुद्धिमान्, वानरश्रेष्ठ (वाली) के विना मैं बहुत सम... नहीं जी सकती ॥ ४०-४१ ॥

इस प्रकार कहे जानेपर प्रभु महात्मा राम ताराको समझाकर हित... कहने लगे हे वीरपत्नी ! तुम विमति मत करो, सारे संसारको ... रचा है ॥४२॥ उस ब्रह्माने ही सारे दुःखसुखके योगको बनाया है ऐसा... कहते हैं । उस ब्रह्माके वशमें प्राप्त हुए तीनों लोक उसके रचित विध... उल्लङ्घन नहीं कर सकते ॥ ४३ ॥ तुम पाहिलेकी जैसी उत्कृष्ट प्री... पाओगी और तुम्हारा पुत्र युवराज पदको पावेगा। विधाताने ऐसे... रची थी, शूरोंकी स्त्रियां विलाप नहीं किया करती ॥ ४४ ॥ प्रभा... परमतपस्वी रामसे समझाई हुई, वीरपत्नी, अच्छी चेष्टावाली तारा... हो गई ॥ ४५ ॥ ॥ यहां २४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पञ्चविंशः सर्गः ।

स सुग्रीवं च तारां च साङ्गदां सहलक्ष्मणः ।
समानशोकः काकुत्स्थः सान्त्वयन्निदमब्रवीत् १
न शोकपरितापेन श्रेयसा युज्यते मृतः ।
यदत्रानन्तरं कार्यं तत्समाधातुमर्हथ २
लोकवृत्तमनुष्ठेयं कृतं वो बाष्पमोक्षणम् ।
न कालादुत्तरं किंचित्परं कर्म उपासितुम् ३
नियतिः कारणं लोके नियतिः कर्मसाधनम् ।
नियतिः सर्वभूतानां नियोगेष्विह कारणम् ४
न कर्ता कस्यचित्कश्चिन्नियोगे नापि चेश्वरः ।
स्वभावे वर्तते लोकस्तस्य कालः परायणम् ५
न कालः कालमत्येति न कालः परिहीयते ।
स्वभावं च समासाद्य न किंचिदतिवर्तते ६
न कालस्यास्ति बन्धुत्वं न हेतुर्न पराक्रमः ।

सुग्रीव और अङ्गद समेत ताराको समझाते हुए इनके समान शोक अनुभूत करनेवाले राम लक्ष्मण सहित यह बोले ॥ १ ॥ शोक और संताप करनेसे मृतक कल्याण नहीं पाता; इसी कारण इस वालीके विषयमें जो मरणानन्तरका कार्य है उसे करो ॥ २ ॥ लोकाचारसे सिद्ध सबोंसे करने योग्य रुदन तुमने किया। कालके विना कोई काम नहीं किया जा सकता ॥ ३ ॥ नियति (प्रारब्ध) ही संसारमें कारण है, नियति ही कर्म साधन है और नियति ही सब प्राणियोंके प्रेरणमें कारण है ॥ ४ ॥ न कोई किसीका कर्ता है, न कोई किसीके नियोगके करनेमें समर्थ है, लोक अपने स्वभावमें वर्तता है और काल ही उसकी परम गति है ॥ ५ ॥ काल कालका उलङ्घन नहीं कर सकता और न कालका नाश होता है, स्वभावको प्राप्त होकर कोई विपरीत नहीं कर सकता है ॥ ६ ॥

कालका कोई बन्धु नहीं है, न उसका कोई हेतु है, न उसपर किसीका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न मित्रज्ञातिसंबन्धः कारणं नात्मनो वशः ७
किं तु कालपरीणामो द्रष्टव्यः साधु पश्यता।
धर्मश्चार्थश्च कामश्च कालक्रमसमाहिताः ८
इतः स्वां प्रकृतिं वाली गतः प्राप्तः क्रियाफलम्।
सामदानार्थसंयोगैः पवित्रं प्लवगेश्वरः ९
स्वधर्मस्य च संयोगाज्जितस्तेन महात्मना।
स्वर्गः परिगृहीतश्च प्राणानपरिरक्षता १०
एषा वै नियतिः श्रेष्ठा यां गतो हरियूथपः।
तदलं परितापेन प्राप्तकालमुपास्यताम् ११
वचनान्ते तु रामस्य लक्ष्मणः परवीरहा।
अवदत्प्रश्रितं वाक्यं सुग्रीवं गतचेतसम् १२
कुरु त्वमस्य सुग्रीवं प्रेतकार्यमनन्तरम्।
ताराङ्गदाभ्यां सहितो वालिनो दहनं प्रति १३
समाज्ञापय काष्ठानि शुष्काणि च बहूनि च।

पराक्रम है, न उससे किसी मित्र जातिका संबन्ध है और उसके करनेका कोई कारण भी नहीं ॥ ७ ॥ किन्तु कल्याणदर्शी पुरुषको परिणामको देखना चाहिये। धर्म अर्थ काम यह समस्त कालके स्थित है ॥ ८ ॥ अपनी प्रकृति (शुद्धभाव) को प्राप्त हुआ वाली इस लोकसे धर्म, अर्थ और कामके संयोगसे पवित्र स्वर्गको हुआ है ॥ ९ ॥ अपने धर्मके संयोगसे रणमें प्राणोंकी रक्षा न वालीने जीता हुआ स्वर्ग इस समय प्राप्त किया है ॥ १० ॥ वानरोंका गतिको प्राप्त हुआ है वह गति श्रेष्ठ है– इस कारण सन्तापको और इस कालके योग्य कार्य कीजिये ॥ ११ ॥

रामके वाक्यके अन्तमें शत्रुओंका नाश करनेवाले लक्ष्मण सुग्रीवसे नम्र वचन बोले ॥ १२ ॥ हे सुग्रीव ! तुम अब इसकी जानेपर प्रेतकार्यको करो। वालीके दाह कर्मके लिये तारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्दनानि च दिव्यानि वालिसंस्कारकारणात् १४
समाश्वासय दीनं त्वमङ्गदं दीनचेतसम्।
मा भूर्बालिशबुद्धिस्त्वं त्वदधीनमिदं पुरम् १५
अङ्गदस्त्वानयेन्माल्यं वस्त्राणि विविधानि च।
घृतं तैलमथो गन्धान्यच्चात्र समनन्तरम् १६
त्वं तार शिबिकां शीघ्रमादायागच्छ संभ्रमात्।
त्वरा गुणवती युक्ता ह्यस्मिन्काले विशेषतः १७
सज्जीभवन्तु प्लवगाः शिबिकावाहनोचिताः।
समर्था बलिनश्चैव निर्हरिष्यन्ति वालिनम् १८
एवमुक्त्वा तु सुग्रीवं सुमित्रानन्दवर्धनः।
तस्थौ भ्रातृसमीपस्थो लक्ष्मणः परवीरहा १९
लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा तारः संभ्रान्तमानसः।
प्रविवेश गुहां शीघ्रं शिबिकासक्तमानसः २०
आदाय शिबिकां तारः स तु पर्यापतत्पुनः।

के साथ तुम सूखी बहुतसी लकडियों और चन्दनादिक दिव्य पदार्थोंको वालिसंस्कारके हेतु मंगाओ ॥ १३-१४ ॥ तुम दीन चित्तवाले इस अङ्गदको समझाओ, बाल बुद्धिवाले मत हो, यह नगर तुम्हारे आधीन है ॥ १५ ॥ फूल, अनेक प्रकारके वस्त्र, घी, तैल, चन्दन और जो कुछ मरणकालकी सामग्री है उसे अङ्गद लावे ॥ १६ ॥

हे तार! तुम पालकीको शीघ्रतासे लेकर जल्दीसे आजाओ, शीघ्रता गुणवती होती है, विशेष कर इस समयमें ॥ १७ ॥ पालकीके ले जाने योग्य, समर्थ, बलवान् वानर जो कि वालीको ले चलेंगे तय्यार होवें ॥ १८ ॥ सुमित्राके आनन्दको बढानेवाले, शत्रुओंको मारनेवाले, भाईके समीपमें स्थित लक्ष्मण सुग्रीवसे ऐसा कहकर चुप हो गये ॥ १९ ॥ लक्ष्मणके वचनको सुनकर घबराया हुआ तार पालकीके लानेमें मन लगाकर शीघ्र ही किष्किन्धाको चला गया ॥ २० ॥

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वानरैरुह्यमानां तां शूरैरुद्वहनोचितैः २१
दिव्यां भद्रासनयुतां शिबिकां स्यन्दनोपमाम्।
पक्षिकर्मभिराचित्रां द्रुमकर्मविभूषिताम् २२
आचितां चित्रपत्तीभिः सुनिविष्टां समन्ततः।
विमानमिव सिद्धानां जालवातायनायुताम् २३
सुनियुक्तां विशालां च सुकृतां शिल्पिभिः कृताम्।
दारुपर्वतकोपेतां चारुकर्मपरिष्कृताम् २४
वराभरणहारैश्च चित्रमाल्योपशोभिताम्।
गुहागहनसंछन्नां रक्तचन्दनभूषिताम् २५
पुष्पाढ्यैः समभिच्छन्नां पद्ममालाभिरेव च।
तरुणादित्यवर्णाभिर्भ्राजमानाभिरावृताम् २६
ईदृशीं शिबिकां दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत्।
क्षिप्रं विनीयतां वाली प्रेतकार्यं विधीयताम् २७
ततो वालिनमुद्यम्य सुग्रीवः शिबिकां तदा।
आरोपयत विक्रोशन्नङ्गदेन सहैव तु २८

तार पालकी को लेकर उनके पास फिर आ गए। चलनेयोग्य, शूर वानरोंसे लाई गई, दिव्य राजासनयुक्त, सदृश, बनावटी पक्षियोंसे युक्त, वृक्षोंकी बनावट सहित, चित्रोंसे रचित, सब ओरसे शोभनशयन वाली, सिद्धोंके विमानके सदृश और झरोखोंसे युक्त, सुन्दर मनोज्ञ, विश्वकर्माने यत्नसे बनाई, क्रीडापर्वतोंसे संयुक्त, वारनिशसे साफ की हुई, श्रेष्ठ आभरण हारोंसे युक्त चित्र विचित्रित फूलोंसे शोभित, बनावटी गुफा और वनसे ढकी हुई, लाल चन्दनसे युक्त, फूलोंके झुंड और सूर्यके समान प्रकाशमान कमलोंकी मालाओंसे ढकी इस प्रकारकी को देखकर राम लक्ष्मणसे बोले– शीघ्र ही वालीको लाओ और करो॥ २१–२७॥

तदनन्तर वालीको उठाकर अङ्गदके साथ रोते हुए सुग्रीवने धर दिया॥ २८॥ तब अनेक प्रकारके गहने, फूल और वस्त्रोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरोप्य शिबिकां चैव वालिनं गतजीवितम्।
अलंकारैश्च विविधैर्माल्यैर्वस्त्रैश्च भूषितम् २९
आज्ञापयत्तदा राजा सुग्रीवः प्लवगेश्वरः।
और्ध्वदेहिकमार्यस्य क्रियतामनुकूलतः ३०
विश्राणयन्तो रत्नानि विविधानि बहूनि च।
अग्रतः प्लवगा यान्तु शिबिका तदनन्तरम् ३१
राज्ञामृद्धिविशेषा हि दृश्यन्ते भुवि यादृशाः।
तादृशैरिह कुर्वन्तु वानरा भर्तृसत्क्रियाम् ३२
तादृशं वालिनः क्षिप्रं प्राकुर्वन्नौर्ध्वदेहिकम्।
अङ्गदं परिरभ्याशु तारप्रभृतयस्तथा ३३
क्रोशन्तः प्रययुः सर्वे वानरा हतबान्धवाः।
ततः प्रणिहिताः सर्वा वानर्योऽस्य वशानुगाः ३४
चुक्रुशुर्वीरवीरेति भूयः क्रोशन्ति ताः प्रियम्।
ताराप्रभृतयः सर्वा वानर्यो हतबान्धवाः ३५
अनुजग्मुश्च भर्तारं क्रोशन्त्यः करुणस्वनाः।
तासां रुदितशब्देन वानरीणां वनान्तरे ३६

मरे हुए वालीको पालकीमें रखकर वानरेश्वर सुग्रीवने आज्ञा दी कि बड़े भाईका यथायोग्य मरनेके अनन्तरका कार्य करो ॥ २९–३० ॥ और अनेक प्रकारके बहुत रत्नोंको दान देते हुए वानर पालकीके साथ आगे चलें ॥ ३१ ॥ राजाओंकी समृद्धिके योग्य जैसी औध्र्वदैहिक क्रियाका प्रकार देखनेमें आता है वानर वैसी ही स्वामकी श्रेष्ठ क्रिया करें ॥ ३२ ॥ वैसी ही वालीकी और्ध्वदैहिक क्रिया शीघ्र की गई, हतबन्धु, तारादि सब वानर अङ्गदको लेकर चिल्लाते हुए गये ॥ ३३ ॥

तदनन्तर हितैषिणी वानरियां जो कि वालीके वशमें थीं 'हा वीर! हा वीर!' यह कहकर रुदन करने लगीं। मरे पतिवाली, दुःखित स्वरवाली तारा आदि सब वानरियां रोती हुई पतिके पीछे गईं॥ ३४-३५॥ वनके बीच उन वानरियोंके रोनेके शब्दसे मानो चारों ओरसे सब वन और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वनानि गिरयश्चैव विक्रोशन्तीव सर्वतः।
पुलिने गिरिनद्यास्तु विविक्ते जलसंवृते ३७
चितां चक्रुः सुबहवो वानरा वनचारिणः।
अवरोप्य ततः स्कन्धाच्छिबिकां वानरोत्तमाः ३८
तस्थुरेकान्तमाश्रित्य सर्वे शोकपरायणाः।
ततस्तारा पतिं दृष्ट्वा शिबिकातलशायिनम् ३९
आरोप्याङ्के शिरस्तस्य विललाप सुदुःखिता।
हा वानरमहाराज हा नाथ मम वत्सल ४०
हा महार्ह महाबाहो हा मम प्रिय पश्य माम्।
जनं न पश्यसीमं त्वं कस्माच्छोकाभिपीडितम् ४१
प्रहृष्टमिह ते वक्त्रं गतासोरपि मानद।
अस्तार्कसमवर्णं च दृश्यते जीवतो यथा ४२
एष त्वां रामरूपेण कालः कर्षति वानर।
येन स्म विधवाः सर्वाः कृता एकेषुणा रणे ४३
इमास्तास्तव राजेन्द्र वानर्यो़ल्लवगास्तव।

पर्वत भी रोने लगे। जलयुक्त, पवित्र पहाडकी नदीके किनारे पीडित बहुतसे वानरोंने चिता बनाई ॥ ३६-३७ ॥ इसके पश्चात् शो सब वाहक कन्धेसे पालकीको उतार कर एकान्तमें आकर बै तब दुःखित हुई तारा पालकीमें सोते हुए पतिको देखकर उसके शिरको रखकर विलाप करने लगी। हा वानर महाराज! हा नाथ! हा मेरे प्यारे! ॥ ३८-४० ॥ हा महार्ह! महाबाहो! हा मेरे प्रिय! मुझे तुम देखो, शोकपीडित इस जन तुम क्यों नहीं देखते? ॥ ४१ ॥ हे मानद! तुम प्राणहीनका भी होते हुए सूर्यके सदृश वर्णवाला मुख जीवितके समान आनन्दि मालूम पडता है ॥ ४२ ॥ हे वानर! यह काल आपको रामरूपसे है जिसने हम सबको एक बाणसे वनमें विधवा कर दिया ॥ ४३ राजेन्द्र! ये तुम्हारी प्यारी वानरी थीं वे ही दूर मार्गमें पैदल आई हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पादैर्विकृष्टमध्वानमागताः किं न बुध्यसे ४४
तवेष्टा ननु चैवेमा भार्याश्चन्द्रनिभाननाः ।
इदानीं नेक्षसे कस्मात्सुग्रीवं प्लवगेश्वर ४५
एते हि सचिवा राजंस्तारप्रभृतयस्तव ।
पुरवासिजनश्चाऽयं परिवार्य विषीदति ४६
विसर्जयैनान्सचिवान्यथापुरमरिंदम ।
ततः क्रीडामहे सर्वा वनेषु मदनोत्कटाः ४७
एवं विलपतीं तारां पतिशोकपरीवृताम् ।
उत्थापयन्ति स्म तदा वानर्यः शोककर्शिताः ४८
सुग्रीवेण ततः सार्धं सोऽङ्गदः पितरं रुदन् ।
चितामारोपयामास शोकेनाभिप्लुतेन्द्रियः ४९
ततोऽग्निं विधिवद्दत्त्वा सोपसव्यं चकार ह ।
पितरं दीर्घमध्वानं प्रस्थितं व्याकुलेन्द्रियः ५०
संस्कृत्य वालिनं तं तु विधिवत्प्लवगर्षभाः ।

आप नहीं जानते ॥ ४४ ॥ चन्द्रसमान मुखवाली ये तुम्हारी निश्चय ही प्यारी थीं, हे राजन्! वानरेश्वर सुग्रीवको आप इस समय क्यों नहीं देखते ॥ ४५ ॥ तार आदि ये तुम्हारे मन्त्री हैं, हे पापरहित! ये सब आपके नगरवासी मनुष्य आपको घेरे हुए बैठे हैं, हे वैरियोंका नाश करनेवाले! इन वानरोंको यथोचित अलग कर दो तब अत्यन्त मदनवालीं हम वनमें क्रीडा करेंगी ॥ ४६–४७ ॥

पतिके शोकमें डूबी, विलाप करती ताराको तब शोक पीडित वानरियोंने उठाया ॥ ४८ ॥ तदनन्तर रोते हुए, शोकसे पीडित इन्द्रियों वाले अङ्गदने सुग्रीवकी सहायतासे पिताको चितापर रख दिया ॥४९॥ तदनन्तर व्याकुल इन्द्रियोंवाला अङ्गद परलोकयात्राको जाते हुए पिताको विधिपूर्वक अग्नि देकर अपसव्य हो गया अर्थात् उसने यज्ञोपवीतको दाक्षिण कन्धे पर रख लिया ॥ ५० ॥ वे वानर विधिपूर्वक वालीका अग्निसंस्कार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आजग्मुरुदकं कर्तुं नदीं शुभजलां शिवाम् ५१
ततस्ते सहितास्तत्र अङ्गदं स्थाप्य चाग्रतः ।
सुग्रीवतारासहिताः सिषिचुर्वानरा जलम् ५२
सुग्रीवेणेव दीनेन दीनो भूत्वा महाबलः ।
समानशोकः काकुत्स्थः प्रेतकार्याण्यकारयत् ५३
ततोऽथ तं वालिनमग्र्यपौरुषं प्रकाशमिक्ष्वाकुवरेषुणा हतम्
प्रदीप्य दीप्ताग्निसमौजसं तदा सलक्ष्मणं राममुपेयिवान्हरिः

इत्यार्षे श्रीमद्रामा॰वाल्मी॰आदि॰किष्किन्धाकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥२५॥ [१

षष्ठविंशः सर्गः ।

ततः शोकाभिसंतप्तं सुग्रीवं क्लिन्नवाससम् ।
शाखामृगमहामात्राः परिवार्योपतस्थिरे १
अभिगम्य महाबाहुं राममक्लिष्टकारिणम् ।
स्थिताः प्राञ्जलयः सर्वे पितामहमिवर्षयः २
ततः काञ्चनशैलाभस्तरुणार्कनिभाननः ।

कर शीतल जलवाली कल्याणकारिणी नदी पर स्नानादि करनेको ॥ ५१ ॥ तदनन्तर वहां अङ्गदको आगे करके सुग्रीव और तारा एकत्रित हुए वानरोंने वालीको जल दिया ॥ ५२ ॥ समान शोक महाबली रामने दीन सुग्रीवके साथ दीन होकर प्रेत कार्य कराया ॥ तब श्रेष्ठ पुरुषार्थवाले, इक्ष्वाकुओंमें श्रेष्ठ रामके बाणसे मारे गयें, प्रः अग्निसमान तेजधारी, प्रसिद्ध वालीको जलाकर सुग्रीव लक्ष्मण रामके पास आये ॥ ५४ ॥

यहाँ २५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ

इसके अनन्तर समस्त बडे बडे वानर शोकपीडित, भीगे व सुग्रीवको घेर कर खडे होगये ॥ १ ॥ सरलतासे कार्य करनेवाले, म रामके पास जाकर वे सब हाथ जोडकर खडे हो गये जैसे ब्रह्माके ऋषिगण ॥ २ ॥ तब सुमेरुके सदृश कान्तिवाला, मध्यान्हके सूर्यके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं हनूमान्मारुतात्मजः ३
भवत्प्रसादात्काकुत्स्थ पितृपैतामहं महत्।
वानराणां सुदंष्ट्राणां संपन्नबलशालिनाम् ४
महात्मनां सुदुष्प्रापं प्राप्तं राज्यमिदं प्रभो।
भवता समनुज्ञातः प्रविश्य नगरं शुभम् ५
संविधास्यति कार्याणि सर्वाणि ससुहृद्गणः।
स्नातोऽयं विविधैर्गन्धैरौषधैश्च यथाविधि ६
अर्चयिष्यति माल्यैश्च रत्नैश्च त्वां विशेषतः।
इमां गिरिगुहां रम्यामभिगन्तुं त्वमर्हसि ७
कुरुष्व स्वामिसंबन्धं वानरान्संप्रहर्षय।
एवमुक्तो हनुमता राघवः परवीरहा ८
प्रत्युवाच हनूमन्तं बुद्धिमान्वाक्यकोविदः।
चतुर्दश समाः सौम्य ग्रामं वा यदि वा पुरम् ९
न प्रवेक्ष्यामि हनुमन्पितुर्निर्देशपारगः।
सुसमृद्धां गुहां दिव्यां सुग्रीवो वानरर्षभः १०

मुखवाला, पवनपुत्र हनुमान् हाथ जोडकर बोला ॥ ३ ॥ हे प्रभो! आपके प्रसादसे सुग्रीव वानरोंको दुष्प्राप्य पिता दादाके इस राज्यको प्राप्त हुआ है ॥ ४ ॥ आपसे आज्ञा दिये हुए मित्रजनों समेत सुग्रीव शुभ नगरमें प्रवेश करके सब कार्योंका विधान करेंगे ॥ ५ ॥ अनेक अभिषेकके द्रव्य तथा गन्धोंसे यथाविधि स्नान किये हुए सुग्रीव रत्न और फूलोंसे आपकी विशेष पूजा करेंगे, आप यहांसे इस रमणीय पर्वतकी गुफा (किष्किन्धा) को चलिये ॥ ६-७ ॥

वानरोंको हर्षित करते हुए (वानरोंके साथ सुग्रीवका) स्वामि सम्बन्ध कीजिये इस प्रकार कहे जानेपर शत्रु वीरोंका नाश करनेवाले, वाक्यके जाननेवाले बुद्धिमान् रामने हनुमान्को उत्तर दिया। हे सौम्य! हे हनुमन्! मैं पिताकी आज्ञाको पालन करता हुआ चौदह वर्ष तक ग्राम या नगरमें प्रवेश नहीं करूंगा ॥ ८-९ ॥ समृद्धशालिनी रम्य गुफा (किष्किन्धा) में प्रविष्ट हुए, वीर, वानरेश्वर सुग्रीवको विधिपूर्वक शीघ्रही अभिषेक करो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रविष्टो विधिवद्वीरः क्षिप्रं राज्येऽभिषिच्यताम्।
एवमुक्त्वा हनूमन्तं रामः सुग्रीवमब्रवीत् ११
वृत्तज्ञो वृत्तसंपन्नमुदारबलविक्रमम्।
इममप्यङ्गदं वीरं यौवराज्येऽभिषेचय १२
ज्येष्ठस्य हि सुतो ज्येष्ठः सदृशो विक्रमेण च।
अङ्गदोऽयमदीनात्मा यौवराज्यस्य भाजनम् १३
पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सलिलागमः।
प्रवृत्ताः सौम्य चत्वारो मासा वार्षिकसंज्ञिताः १४
नायमुद्योगसमयः प्रविश त्वं पुरीं शुभाम्।
अस्मिन्वत्स्याम्यहं सौम्य पर्वते सहलक्ष्मणः १५
इयं गिरिगुहा रम्या विशाला युक्तमारुता।
प्रभूतसलिला सौम्य प्रभूतकमलोत्पला १६
कार्तिके समनुप्राप्ते त्वं रावणवधे यत।
एष नः समयः सौम्य प्रविश त्वं स्वमालयम् १७

मती राम हनुमान्से ऐसा कहकर सदाचरणयुक्त, उदारबल और विक्र[illegible] सुग्रीवसे बोले, हे वीर! इस अङ्गदको युवराजपदपर अभिषेक [illegible] ॥ १०–१२ ॥ बडे भाईका बडा पुत्र, विक्रममें तुम्हारे समान, अदीन[illegible] वाला यह अङ्गद यौवराज्यके योग्य है ॥ १३ ॥ हे सौम्य! चार [illegible] वर्षांतके शुरू हुए हैं, उनमें जलको लानेवाला यह वर्षांतका पहिला [illegible] श्रावण है ॥ १४ ॥

हे सौम्य! यह उद्योगका समय नहीं है, तुम शुभपुरीमें जाओ; [illegible] लक्ष्मण सहित इस पर्वतपर वसूंगा ॥ १५ ॥ हे सौम्य! रम्य, बडी, [illegible] वायुवाली, बहुत जलवाली, बहुत कमल और उत्पलवाली यह प[illegible] गुफा है ॥ १६ ॥ कार्तिक मासके निकट आनेपर तुम रावणके वधमें [illegible] करना। हे सौम्य! यह हमारा संकेत है। इस समय तुम अपने स्था[illegible] जाओ ॥१७॥ तुम अपने राज्यमें अभिषिक्त होकर मित्रोंको आनन्दित [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अभिषिञ्चस्व राज्ये च सुहृदः संप्रहर्षय।
इति रामाभ्यनुज्ञातः सुग्रीवो वानरर्षभः ॥ १८
प्रविवेश पुरीं रम्यां किष्किन्धां वालिपालिताम्।
तं वानरसहस्राणि प्रविष्टं वानरेश्वरम्
अभिवार्य प्रविष्टानि सर्वतः प्लवगेश्वरम्। १९
ततः प्रकृतयः सर्वा दृष्ट्वा हरिगणेश्वरम्
प्रणम्य मूर्ध्ना पतिता वसुधायां समाहिताः। २०
सुग्रीवः प्रकृतीः सर्वाः संभाष्योत्थाप्य वीर्यवान्
भ्रातुरन्तः पुरं सौम्यं प्रविवेश महाबलः। २१
प्रविष्टं भीमविक्रान्तं सुग्रीवं वानरर्षभम्
अभ्यषिञ्चन्त सुहृदः सहस्राक्षमिवामराः। २२
तस्य पाण्डुरमाजह्रुश्छत्रं हेमपरिष्कृतम् २३
शुक्ले च वालव्यजने हेमदण्डे यशस्करे।
यथा रत्नानि सर्वाणि सर्वबीजौषधानि च २४

इस प्रकार रामसे आज्ञा दिया हुआ वानरेश्वर सुग्रीव वालिसे पालन की हुई रमणीय किष्किन्धा पुरीको गया। प्रविष्ट हुए उस वानरेश्वर सुग्रीवको अभिवादन करके प्रविष्ट हुए हजारों वानरोंने सब ओरसे उन्हें घेर लिया ॥ १८-१९ ॥

तदनन्तर वानरेश्वर सुग्रीवको देखकर सब प्रजाजन एकाग्रचित्त हो मस्तकसे प्रणाम करके भूमिपर बैठ गये ॥२०॥ महाबली, पराक्रमी सुग्रीव सब प्रजाओंको उठाकर उनसे सम्भाषण करके भाईके अन्तःपुरमें प्रविष्ट हुआ ॥ २१ ॥ घुसकर महलसे निकले हुए वानरेश्वर सुग्रीवका मित्र लोग अभिषेक करने लगे जैसे देवोंने इन्द्रका किया था ॥ २२ ॥ तदनन्तर वे वानर सुवर्णभूषित श्वेतछत्र, यशके देनेवाले तथा सुवर्णकी डंडीवाले श्वेत चामरों, उसी प्रकार सब रत्न, बीजौषधियोंके सहित दुग्धयुक्त वृक्षोंके फूल और पत्ते, श्वेतवस्त्र, श्वेत कर्पूरादि लेपन सामग्री, जल और स्थलमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सक्षीराणां च वृक्षाणां प्ररोहान्कुसुमानि च।
शुक्लानि चैव वस्त्राणि श्वेतं चैवाऽनुलेपनम् २५
सुगन्धीनि च माल्यानि स्थलजान्यम्बुजानि च।
चन्दनानि च दिव्यानि गन्धांश्च विविधान्बहून् २६
अक्षतं जातरूपं च प्रियङ्गुमधुसर्पिषी।
दधि चर्म च वैयाघ्रं परार्ध्यौ चाप्युपानहौ २७
समालम्भनमादाय गोरोचनं मनःशिलाम्।
आजग्मुस्तत्र मुदिता वराः कन्याश्च षोडश २८
ततस्ते वानरश्रेष्ठमभिषेक्तुं यथाविधि।
रत्नैर्वस्त्रैश्च भक्ष्यैश्च तोषयित्वा द्विजर्षभान् २९
ततः कुशपरिस्तीर्णं समिद्धं जातवेदसम्।
मन्त्रपूतेन हविषा हुत्वा मन्त्रविदो जनाः ३०
ततो हेमप्रतिष्ठाने वरास्तरणसंवृते।
प्रासादशिखरे रम्ये चित्रमाल्योपशोभिते ३१

उत्पन्न सुगन्धयुक्त माल्य आदि, दिव्य चन्दन, अनेक प्रकारके बहुत आदि गन्धद्रव्य, चावल, चांदी, कङ्गनी, शहद, घी, दही, व्याघ्रच श्रेष्ठ उपानह (जूता) आदिको उसके लिये लाये ॥ २३-२७ ॥

विलेपन (उबटना) तथा मनःशिल सहित गोरोचनाको लेकर न्दित हुई श्रेष्ठ सोलह कन्या वहां आयीं ॥ २८ ॥ इसके पश्चात् गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, मैन्द, द्विविद, हनुमान्, जाम्बवान् नल आदि सब वानरश्रेष्ठोंने समयानुसार विधिपूर्वक श्रेष्ठ द्विजोंको वस्त्रों और भक्ष्यपदार्थोंसे प्रसन्न करके तदनुमन्त्रज्ञ मनुष्यों (वान हितों) ने मन्त्रद्वारा पवित्रीकृत हविसे कुशोंसे परिवृत, प्रज्वलित हवन करके पश्चात् सुवर्णके पाये वाले, अच्छे बिछौनेसे ढके हुए, प्रासादशिखर पर स्थित, चित्र तथा मालादिक मङ्गलद्रव्योंसे शोभि आसन (गद्दी) पर मन्त्रोच्चारणपूर्वक पूर्वाभिमुख बैठाकर चहुँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्राङ्मुखं विधिवन्मन्त्रैः स्थापयित्वा वरासने ।
नदीनदेभ्यः संहृत्य तीर्थेभ्यश्च समन्ततः ३२
आहृत्य च समुद्रेभ्यः सर्वेभ्यो वानरर्षभाः ।
अपः कनककुम्भेषु निधाय विमलं जलम् ३३
शुभैर्ऋषभशृङ्गैश्च कलशैश्चैव काञ्चनैः ।
शास्त्रदृष्टेन विधिना महर्षिविहितेन च ३४
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः ।
मैन्दश्च द्विविदश्चैव हनूमाञ्जाम्बवांस्तथा ३५
अभ्यषिञ्चन्त सुग्रीवं प्रसन्नेन सुगन्धिना ।
सलिलेन सहस्राक्षं वसवो वासवं यथा ३६
अभिषिक्ते तु सुग्रीवे सर्वे वानरपुङ्गवाः ।
प्रचुकुशुर्महात्मानो हृष्टाः शतसहस्रशः ३७
रामस्य तु वचः कुर्वन्सुग्रीवो वानरेश्वरः ।
अङ्गदं संपरिष्वज्य यौवराज्येऽभ्यषेचयत् ३८
अङ्गदे चाभिषिक्ते तु सानुक्रोशाः प्लवंगमाः ।
साधु साध्विति सुग्रीवं महात्मानो ह्यपूजयन् ३९

नदी, नद, तीर्थ और समस्त समुद्रोंसे शुद्ध शुभजल लाकर तथा सुवर्णके घडोंमें भरकर उन्हें आपसमें मिलाकर तदनु स्वर्णकलशों तथा वृषभशृंगों (पात्राविशेषों) से उन स्वर्णकुम्भोंमेंसे (जल) निकालकर कल्पसूत्र विहित विधिके अनुसार सुगन्धियुक्त निर्मल उस जलसे वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवको अभिषिक्त किया जैसे देवोंने इन्द्रको अभिषिक्त किया था ।॥ २९-३६ ॥

उस समय सुग्रीवका अभिषेक हो जानेपर सहस्रों वानर आनन्दित हो रौला मचाने लगे ॥ ३७ ॥ रामका वचन पालन करते हुए वानरश्रेष्ठ सुग्रीवने अङ्गदको आलिङ्गन कर उसको यौवराज्य पदपर अभिषिक्त किया ॥ ३८ ॥ अङ्गदका अभिषेक हो जानेपर दयायुक्त हुए महात्मा वानर " साधु साधु " ऐसा कहकर सुग्रीवकी पूजा करने लगे ॥ ३९ ॥ उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रामं चैव महात्मानं लक्ष्मणं च पुनः पुनः ।
प्रीताश्च तुष्टुवुः सर्वे तादृशे तत्र वर्तिनि ४०
हृष्टपुष्टजनाकीर्णा पताकाध्वजशोभिता ।
बभूव नगरी रम्या किष्किन्धागिरिगह्वरे ४१
निवेद्य रामाय तदा महात्मने महाभिषेकं कपिवाहिनीपतिः।
रुमां च भार्यामुपलभ्य वीर्यवानवाप राज्यं त्रिदशाधिपो यथा

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥२६॥ [

सप्तविंशः सर्गः ।

अभिषिक्ते तु सुग्रीवे प्रविष्टे वानरे गुहाम् ।
आजगाम सह भ्रात्रा रामः प्रस्रवणं गिरिम् १
शार्दूलमृगसंघुष्टं सिंहैर्भीमरवैर्वृतम् ।
नानागुल्मलतागूढं बहुपादपसंकुलम् २
ऋक्षवानरगोपुच्छैर्मार्जारैश्च निषेवितम् ।
मेघराशिनिभं शैलं नित्यं शुचिकरं शिवम् ३

सुग्रीव और अङ्गदके अभिषेकोत्सवके समय प्रसन्न हुए सब वानर राम और लक्ष्मणकी वार वार स्तुति करने लगे ॥ ४० ॥ पर्वतकी किष्किन्धा नगरी प्रसन्न और बलवान् जनोंसे संयुक्त, पताका और ओंसे शोभित तथा रमणीय हो गई ॥ ४१ ॥ तब वानरोंकी सेनाके बलवान् सुग्रीवने स्त्री रुमाको पाकर और महात्मा रामसे अभि निवेदन करके इन्द्रके समान राज्यको प्राप्त किया ॥ ४२ ॥

॥ यहां २६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

राज्यमें अभिषिक्त वानर सुग्रीवके किष्किन्धामें चले जानेपर अपने समेत राम व्याघ्र और मृगोंसे नादित, भयानक शब्दोंके करनेवाले संयुक्त, अनेक गठीले वृक्ष और लताओंसे व्याप्त अनेक वृक्षोंसे संकीर्ण वानर, लंगूर और बिलावोंसे सेवित, मेघोंके समूहके सदृश कान्ति शिलामय, सदा पवित्र जलाशयवाले, प्रस्रवण नामक पहाडपर आये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तस्य शैलस्य शिखरे महतीमायतां गुहाम् ।
प्रत्यगृह्णत वासार्थं रामः सौमित्रिणा सह ॥ ४ ॥
कृत्वा च समयं रामः सुग्रीवेण सहानघः ।
कालयुक्तं महद्वाक्यमुवाच रघुनन्दनः ॥ ५ ॥
विनीतं भ्रातरं भ्राता लक्ष्मणं लक्ष्मिवर्धनम् ।
इयं गिरिगुहा रम्या विशाला युक्तमारुता ॥ ६ ॥
अस्यां वत्स्याम सौमित्रे वर्षरात्रमरिंदम ।
गिरिश्रृङ्गमिदं रम्यमुत्तमं पार्थिवात्मज ॥ ७ ॥
श्वेताभिः कृष्णताम्राभिः शिलाभिरुपशोभितम् ।
नानाधातुसमाकीर्णं नदीदर्दुरसंयुतम् ॥ ८ ॥
विविधैर्वृक्षषण्डैश्च चारु चित्रलतायुतम् ।
नानाविहगसंघुष्टं मयूरवरनादितम् ॥ ९ ॥
मालतीकुन्दगुल्मैश्च सिन्दुवारैः शिरीषकैः ।
कदम्बार्जुनसर्जैश्च पुष्पितैरुपशोभितम् ॥ १० ॥

रामने लक्ष्मणके साथ उस पहाडकी चोटीपर बडी लम्बी चौडी गुफाको वास करनेके लिये ग्रहण किया ॥ ४ ॥ सौम्य, पापरहित, भाई राम सुग्रीवके साथ प्रतिज्ञा करके लक्ष्मीके बढानेवाले, नम्र भाई लक्ष्मणसे समयके योग्य बडा वचन बोले ॥ ५ ॥

हे वैरियोंका नाश करनेवाले ! हे लक्ष्मण ! यह बडी विशाल, अनुकूल वायुवाली, रम्य पर्वतकी गुफा है इसमें वर्षांतके दिन हम तुम वास करें ॥ ६ ॥ हे राजपुत्र ! रम्य, ऊंचा, सफेद; काली और लाल शिलाओंसे शोभित, अनेक धातुओंसे व्याप्त, गुफा और झरनोंसे शोभित, अनेक प्रकारके वृक्षोंके झुण्डोंसे सुन्दर, विचित्र लताओंसे संयुक्त, अनेक पक्षियोंसे भरा हुआ, मोरोंके शब्दोंसे शब्दायमान, मालती व कुन्दके गुच्छों, सिन्धुवार, कुरण्टक और फूले हुए कदम्ब, अर्जुन तथा सर्जके वृक्षोंसे शोभित यह पहाडका शिखर है ॥ ७-१० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इयं च नलिनी रम्या फुल्लपङ्कजमण्डिता ।
नातिदूरे गुहाया नौ भविष्यति नृपात्मज ११
प्रागुदक्प्रवणे देशे गुहा साधु भविष्यति ।
पश्चाच्चैवोन्नता सौम्य निवातेयं भविष्यति १२
गुहाद्वारे च सौमित्रे शिला समतला शिवा ।
कृष्णा चैवायता चैव भिन्नाञ्जनचयोपमा १३
गिरिशृङ्गमिदं तात पश्य चोत्तरतः शुभम् ।
भिन्नाञ्जनचयाकारमम्भोधरमिवोदितम् १४
दक्षिणस्यामपि दिशि स्थितं श्वेतमिवाम्बरम् ।
कैलासशिखरप्रख्यं नानाधातुविराजितम् १५
प्राचीनवाहिनीं चैव नदीं भृशमकर्दमाम् ।
गुहायाः परतः पश्य त्रिकूटे जाह्नवीमिव १६
चन्दनैस्तिलकैः सालैस्तमालैरतिमुक्तकैः ।
पद्मकैः सरलैश्चैव अशोकैश्चैव शोभिताम् १७

हे राजपुत्र ! फूले हुए कमलोंसे युक्त तथा रमणीय यह नलिनी (त... हम दोनोंको गुफासे अतिदूर न पडेगी ॥ ११ ॥ हे सौम्य ! प... उत्तरके कोणके देशमें यह गुफा अच्छी होगी और पीछेसे उं... सामनेकी वायुको रोकनेवाली होगी ॥ १२ ॥ हे लक्ष्मण ! इस गु... पर एकसार, सुन्दर, चिकनी, बडी लम्बी, टूटे हुए अञ्जनके ढेरे... शिला विद्यमान है ॥ १३ ॥ हे तात ! उत्तर दिशामें टूटे हुए... ढेरके सदृश तथा मेघके समान उठे हुए श्रेष्ठ इस पहाडके शिखरक... ॥ १४ ॥ दक्षिण दिशामें स्थित, कैलासके शिखरके समान, अनेक... भूषित दूसरे श्वेत शिखरको भी देखो ॥ १५ ॥

गुफासे पूर्व दिशामें पूर्वको वहने वाली, कीचडरहित, चम्पक, ताल, तमाल, अतिमुक्तक, पद्मक, सरल और अशोक वृक्षोंसे शोभि... नदीको त्रिकूट पर जान्हवीके समान देखो ॥ १६–१७ ॥ किनारे...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वानीरैस्तिमिदैश्चैव बकुलैः केतकैरपि ।
हिन्तालैस्तिनिशैर्नीपैर्वेतसैः कृतमालकैः १८
तीरजैः शोभिता भाति नानारूपैस्ततस्ततः ।
वसनाभरणोपेता प्रमदेवाऽभ्यलंकृता १९
शतशः पक्षिसङ्घैश्च नानानादविनादिता ।
एकैकमनुरक्तैश्च चक्रवाकैरलंकृता २०
पुलिनैरतिरम्यैश्च हंससारससेविता ।
प्रहसन्त्येव भात्येषा नानारत्नसमन्विता २१
क्वचिन्नीलोत्पलैश्छन्ना भाति रक्तोत्पलैः क्वचित् ।
क्वचिदाभाति शुक्लैश्च दिव्यैः कुमुदकुड्मलैः २२
पारिप्लवशतैर्जुष्टा बर्हिक्रौञ्चविनादिता ।
रमणीया नदी सौम्या मुनिसङ्घनिषेविता २३
पश्य चन्दनवृक्षाणां पङ्क्तीः सुरुचिरा इव ।
ककुभानां च दृश्यन्ते मनसैवोदिताः समम् २४

हां उत्पन्न हुए अनेक प्रकारके वानीर तिनिश, बकुल, केतक, धव, न्ताल, तिरिट, नीप, वेत्र, कृतमालके वृक्षोंसे शोभित यह नदी वस्त्र भूषणोंसे युक्त, सजी हुई स्त्रीके समान शोभा देती है ॥ १८–१९ ॥ सैकडों पक्षियोंके झुंडों द्वारा अनेक तरहके शब्दोंसे शब्दायमान, परस्पर युक्त चकवा चकवियोंसे सुशोभित, हंस और सारसोंसे सेवित, अति- य किनारोंसे यह नदी सब प्रकारसे भूषित, हंसती हुई स्त्रीके समान भा देती है ॥ २०–२१ ॥ कहीं नीले कमलोंसे और कहीं लाल कमलोंसे ी हुई शोभा देती है और कहीं श्वेत दिव्य कुमुदकलियोंसे शोभा ही है ॥ २२ ॥ हे सौम्य ! सैकडों पारिप्लव नामक पक्षियोंसे सेवित, र और क्रौञ्चोंसे नादित और मुनियोंके समूहसे सेवित यह रमणीय ी है ॥ २३ ॥ माला रूपसे गुंथी हुई चन्दन वृक्षोंकी पंक्तिको देखो और ुन वृक्षकी पंक्तियां मनके सङ्कल्पसे ही एकदम उगी हुई सी दिखाई ती हैं ॥ २४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अहो सुरमणीयोऽयं देशः शत्रुनिषूदन ।
दृढं रंस्याव सौमित्रे साध्वत्र निवसावहे
इतश्च नातिदूरे सा किष्किन्धा चित्रकानना ।
सुग्रीवस्य पुरी रम्या भविष्यति नृपात्मज
गीतवादित्रनिर्घोषः श्रूयते जयतां वर ।
नदतां वानराणां च मृदङ्गाडम्बरैः सह
लब्ध्वा भार्यां कपिवरः प्राप्य राज्यं सुहृद्वृतः ।
ध्रुवं नन्दति सुग्रीवः संप्राप्य महतीं श्रियम्
इत्युक्त्वा न्यवसत्तत्र राघवः सहलक्ष्मणः ।
बहुदृश्यदरीकुञ्जे तस्मिन्प्रस्रवणे गिरौ
सुसुखे हि बहुद्रव्ये तस्मिन्हि धरणीधरे ।
वसतस्तस्य रामस्य रतिरल्पापि नाभवत्
हृतां हि भार्यां स्मरतः प्राणेभ्योऽपि गरीयसीम् ।
उदयाभ्युदितं दृष्ट्वा शशाङ्कं स विशेषतः
आविवेश न तं निद्रा निशासु शयनं गतम् ।

हे वैरियोंका नाश करनेवाले लक्ष्मण ! अहो यह देश बहुत ही [...] है, यहां अच्छे प्रकार हम तुम रमेंगे और निश्चयपूर्वक वास करेंगे। [...] राजपुत्र ! यहांसे थोडी ही दूर पर चित्रित वनोंवाली, रमणीय [...] नगरी किष्किन्धा है ॥ २६ ॥ हे जयतांवर ! मृदंग और आडम्बरों[...] शब्द करते हुए वानरोंके गीत और बाजोंका शब्द सुनाई पडता है [...] मित्रोंसे युक्त वानरश्रेष्ठ सुग्रीव स्त्रीको पाकर और राज्य [...] लक्ष्मीको पाकर निश्चय ही आनन्दित होता है ॥ २८ ॥ ऐसा कहकर [...] समेत राम देखने योग्य बहुत गुफा और कुञ्जोंवाले उस प्रस्रवण [...] वास करने लगे ॥ २९ ॥ प्राणोंसे प्यारी हरी हुई पत्नीका स्मरण [...] रामको सुन्दर सुखदायक, बहुत फूल फलोंवाले, उस पहाड [...] हुए कुछ भी प्रसन्नता न प्राप्त हुई ॥ ३०-३१ ॥ रात्रिमें सोते [...] रामको विशेष कर उदय पर्वतसे निकले हुए चन्द्रमाको देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तत्समुत्थेन शोकेन बाष्पोपहतचेतनम् ३२
तं शोचमानं काकुत्स्थं नित्यं शोकपरायणम्।
तुल्यदुःखोब्रवीद्भ्राता लक्ष्मणोऽनुनयं वचः ३३
अलं वीर व्यथां गत्वा न त्वं शोचितुमर्हसि।
शोचतो ह्यवसीदन्ति सर्वार्था विदितं हि ते ३४
भवान्क्रियापरो लोके भवान्देवपरायणः।
आस्तिको धर्मशीलश्च व्यवसायी च राघव ३५
न ह्यव्यवसितः शत्रुं राक्षसं तं विशेषतः।
समर्थस्त्वं रणे हन्तुं विक्रमे जिह्मकारिणम् ३६
समुन्मूलय शोकं त्वं व्यवसायं स्थिरीकुरु।
ततः सपरिवारं तं राक्षसं हन्तुमर्हसि ३७
पृथिवीमपि काकुत्स्थ ससागरवनाचलाम्।
परिवर्तयितुं शक्तः किं पुनस्तं हि रावणम् ३८

जाती थी ॥ ३२ ॥ सीतासे उत्पन्न हुए शोकसे सोच करते, आंसुओंसे हत हुई चेतनावाले और नित्य ही शोकमें तत्पर उन रामसे तुल्य दुःखवाले भाई लक्ष्मण प्रार्थना करते हुए यह वचन बोले ॥ ३३ ॥ हे वीर! व्यथा न कीजिये और न आप सोच करनेके योग्य हैं। सोच करते हुए पुरुषके सब अर्थ नष्ट होते हैं, यह आपको ज्ञात ही है ॥ ३४ ॥ हे राघव! आप लोकमें कर्मतत्पर और दैवपरायण, आस्तिक, धर्मशील और उद्योगी हो ॥ ३५ ॥ धैर्यरहित होते हुए आप शत्रुओंको और विशेष कर कुटिल कार्य करनेवाले उस राक्षसको पराक्रमोंसे संग्राममें नहीं मार सकोगे ॥ ३६ ॥ आप शोकको दूर करो और उद्योगको स्थिर करो तदनन्तर परिवार समेत उस राक्षसको निर्मूल करो ॥ ३७ ॥

हे ककुत्स्थवंशी! आप समुद्र, वन और पर्वत समेत पृथिवीको भी अस्तव्यस्त कर सकते हैं फिर रावणका मारना तो एक साध ण बात है ॥ ३८ ॥ यह वर्षा काल आ गया है, इसलिये शरत्कालकी प्रतीक्षा करो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शरत्कालं प्रतीक्षस्व प्रावृट्कालोऽयमागतः।
ततः सराष्ट्रं सगणं रावणं तं वधिष्यसि ३९
अहं तु खलु ते वीर्यं प्रसुप्तं प्रतिबोधये।
दीप्तैराहुतिभिः काले भस्मच्छन्नमिवानलम् ४०
लक्ष्मणस्य हि तद्वाक्यं प्रतिपूज्य हितं शुभम्।
राघवः सुहृदं स्निग्धमिदं वचनमब्रवीत् ४१
वाच्यं यदनुरक्तेन स्निग्धेन च हितेन च।
सत्यविक्रमयुक्तेन तदुक्तं लक्ष्मण त्वया ४२
एष शोकः परित्यक्तः सर्वकार्यावसादकः।
विक्रमेष्वप्रतिहतं तेजः प्रोत्साहयाम्यहम् ४३
शरत्कालं प्रतीक्षिष्ये स्थितोऽस्मि वचने तव।
सुग्रीवस्य नदीनां च प्रसादमनुपालयन् ४४
उपकारेण वीरस्तु प्रतिकारेण युज्यते।
अकृतज्ञो प्रतिकृतो हन्ति सत्त्ववतां मनः ४५

तब आप सप्रजा और सकुटुम्ब रावणको मारोगे ॥ ३९ ॥ मैं तो तु... सोते पराक्रमको दीप्ताहुतिसे भस्मच्छन्न अग्निकी समान समयपर चेत... ॥ ४० ॥ लक्ष्मणके हितकारी उस वाक्यकी प्रशंसा कर राम लक्ष्मणसे ... सूचक यह वचन बोले ॥ ४१ ॥ हे लक्ष्मण ! प्रेमयुक्त, तत्कालोचित ... तत्पर, हितकारी, सत्य पराक्रमयुक्त मित्र द्वारा जो कहा जाना चा... वही तुमने कहा ॥ ४२ ॥ सब कामोंमें दुःखप्रद यह शोक छोड़ ... और विक्रममें न रुकनेवाले तेजको मैं चैतन्य करता हूं ॥ ४३ ॥ मैं तु... वचनमें स्थित हूं, सुग्रीव और नदियोंके प्रसादको पालन करता हुआ श... काल तक प्रतीक्षा करूंगा ॥ ४४ ॥

अब ऐसा कहे जाने पर हाथ जोड़े हुए लक्ष्मण होनेवाले ... विचार कर और रामके वाक्यकी प्रशंसा कर देखनेमें प्रिय लगे ऐसे ... अपने मतको दिखाते हुए रामसे बोले ॥ ४५ ॥ हे राजन् ! ठीक कहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

देव युक्तं प्रणिधाय लक्ष्मणः कृताञ्जलिस्तत्प्रतिपूज्य भाषितम्।
वाच रामं स्वभिरामदर्शनं प्रदर्शयन्दर्शनमात्मनः शुभम् ४६
थोक्तमेतत्तव सर्वमीप्सितं नरेन्द्र कर्ता न चिरात्तु वानरः।
रत्प्रतीक्षः क्षमतामिमं भवाञ्जलप्रपातं रिपुनिग्रहे धृतः ४७
नियम्य कोपं परिपाल्यतां शरत्क्षमस्व मासांश्चतुरो मया सह।
साचलेऽस्मिन्मृगराजसेविते संवर्तयञ्छत्रुवधे समर्थः ४८

आर्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० सप्तविंशः सर्गः ॥२७॥ [११२७]

अष्टाविंशः सर्गः।

स तदा वालिनं हत्वा सुग्रीवमभिषिच्य च।
वसन्माल्यवतः पृष्ठे रामो लक्ष्मणमब्रवीत् १
अयं स कालः संप्राप्तः समयोऽद्य जलागमः।
संपश्य त्वं नभो मेघैः संवृतं गिरिसंनिभैः २
नवमासधृतं गर्भं भास्करस्य गभस्तिभिः।
पीत्वा रसं समुद्राणां द्यौः प्रसूते रसायनम् ३

म्हारे इस सब इच्छित कार्यको सुग्रीव शीघ्र ही करेगा शरत्कालकी बाट जोहनेवाले तथा वैरीको दण्ड देनेमें धैर्ययुक्त आप इस वर्षाऋतुको सहन कीजिये ॥ ४६–४७ ॥ कोपको रोककर शरतका ध्यान कीजिये और इन चार मासोंको सहिये। शत्रुवधमें उद्यमको बढाते हुए आप मेरे साथ सिंहोंसे सेवित इस पर्वत पर वसो ॥ ४८ ॥

॥ यहां २७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

वालीको मारकर और सुग्रीवका अभिषेक कर माल्यवान् पर्वतके ऊपर रहते हुए राम लक्ष्मणसे बोले ॥ १ ॥ अब यह वर्षाका समय आगया, पहाडके समान मेघोंसे घिरे हुए आकाशको देखो ॥ २ ॥ आकाश सूर्यकी किरणोंसे समुद्रोंके जलको पीकर नौमास (कार्तिकसे आषाढ तक) धारण किये हुए छहों रसोंके कारण जलको उत्पन्न करता है ॥ ३ ॥ मेघ--

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शक्यमम्बरमारुह्य मेघसोपानपङ्क्तिभिः।
कुटजार्जुनमालाभिरलंकर्तुं दिवाकरः ४
संध्यारागोत्थितैस्ताम्रैरन्तेष्वपि च पाण्डुभिः।
स्निग्धैरभ्रपटच्छेदैर्बद्धव्रणमिवाम्बरम् ५
मंदमारुतनिःश्वासं संध्याचंदनरञ्जितम्।
आपाण्डुजलदं भाति कामातुरमिवाम्बरम् ६
एषा घर्मपरिक्लिष्टा नववारिपरिप्लुता।
सीतेव शोकसंतप्ता मही बाष्पं विमुञ्चति ७
मेघोदरविनिर्मुक्ताः कर्पूरदलशीतलाः।
शक्यमञ्जलिभिः पातुं वाताः केतकगंधिनः ८
एष फुल्लार्जुनः शैलः केतकैरभिवासितः।
सुग्रीव इव शांतारिर्धाराभिरभिषिच्यते ९
मेघकृष्णाजिनधरा धारा यज्ञोपवीतिनः।
मारुतापूरितगुहाः प्राधीता इव पर्वताः १०

रूपी सीढियोंकी पंक्तिसे आकाशपर चढकर गिरिमल्लिका और क
मालाओंसे इस समय सूर्य अलङ्कृत किया जा सकता है ॥ ४ ॥ उ
हैं संध्याके राग जिनमें ऐसे तथा लाल, प्रान्तोंमें सफेद भीगे हुए मे
वस्त्रोंके टुकडोंसे बंधे हुए व्रणके समान सा आकाश दिखाई पडता है।
मन्द पवनरूपी श्वासवाला, सध्यारूपी चन्दनसे रंगा हुआ,
रूपी श्वेततायुक्त यह आकाश कामातुरके समान शोभा देता है।
धूपसे तपी हुई, नवीन जलसे सिंची हुई यह भूमि भाफको शोक
सीताके समान छोड रही है ॥ ७ ॥ मेघके मध्यसे निकले, कमलके
सुखकारी और शीतल तथा केतकीके गन्धके समान गन्धवाले पवन
लियोंसे पिये जा सकते हैं ॥ ८ ॥ केतकोंसे सुगन्धित हुआ और फू
अर्जुनोंवाला यह पर्वत शान्त होगया है वैरी जिसका ऐसे सुग्रीवके
धाराओंसे' सींचा जारहा है ॥ ९ ॥ मेघरूपी काल मृगचर्मको धार
धारारूपी यज्ञोपवीत वाले पवनसे पूर्ण गुफावाले पर्वत पढतेसे हैं ॥

. RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कशाभिरिव हैमीभिर्विद्युद्भिरभिताडितम् ।
अन्तस्तनितनिर्घोषं सवेदनमिवाम्बरम् ॥ ११
नीलमेघाश्रिता विद्युत्स्फुरन्ती प्रतिभाति मे ।
स्फुरन्ती रावणस्याङ्के वैदेहीव तपस्विनी ॥ १२
इमास्ता मन्मथवतां हिताः प्रतिहता दिशः ।
अनुलिप्ता इव घनैर्नष्टग्रहनिशाकराः ॥ १३
क्वचिद्बाष्पाभिसंरुद्धान्वर्षागमसमुत्सुकान् ।
कुटजान्पश्य सौमित्रे पुष्पितान्गिरिसानुषु ।
मम शोकाभिभूतस्य कामसंदीपनान्स्थितान् ॥ १४
रजः प्रशान्तं सहिमोद्य वायुर्निदाघदोषप्रसराः प्रशान्ताः ।
स्थिता हि यात्रा वसुधाधिपानां प्रवासिनो यान्ति नराः स्वदेशान् ॥ १५
संप्रस्थिता मानसवासलुब्धाः प्रियान्विताः संप्रति चक्रवाकाः ।
अभीक्ष्णवर्षोदकविक्षतेषु यानानि मार्गेषु न संपतन्ति ॥ १६

सोनेकी कशाओं (हण्टरों) के सदृश बिजलियोंसे ताडन किया गया सा गर्जना ही है चिल्लाना जिसका ऐसा आकाश भीतर पीडित सा दिखाई पडता है ॥ ११ ॥ काले मेघके सहारे चमकती हुई बिजली मुझको ऐसी मालूम पडती है जैसे रावणकी गोदमें फडकती हुई तपस्विनी सीता ॥ १२ ॥ मेघोंसे लिपी हुई सी स्थित, अदृष्ट ग्रह और चन्द्रवाली इसीसे पूर्व पश्चिम आदि भेदरहित ये दिशा स्त्रीयुक्त पुरुषोंको हितकारी हैं (और विरहियों-को दुःखकारी हैं) ॥ १३ ॥ हे लक्ष्मण ! नवीन जलके सींचनेसे उठे हुए वर्षाकालकी गर्मीवाले वर्षाकालके आनेसे उत्सुक हुए, शोकपीडित मेरे कामको बढानेवाले, पर्वतके शिखरों पर स्थित कुटजके वृक्षोंको देखो ॥ १४ ॥ अब धूलि शान्त होगयी, वायु शीतल होगया, ग्रीष्मकालके दोष शान्त होगये । राजाओंकी यात्रा रुक गयी और परदेशी मनुष्य स्वदेशको जाने लगे ॥ १५ ॥

मानसरोवरवासके लोभी, प्रियासे संयुक्त चक्रवाक पक्षी इस समय प्रस्थान कर गये और अत्यन्त वर्षाके जलसे बिगडे हुए मार्गोंमें रथ, गाडी आदि नहीं चलते हैं ॥ १६ ॥ कहीं मेघोंके होने और कहीं न होनेसे कहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति।
क्वचित्क्वचित्पर्वतसंनिरुद्धं रूपं यथा शान्तमहार्णवस्य १७
व्यामिश्रितं सर्जकदम्बपुष्पैर्नवं जलं पर्वतधातुताम्रम्।
मयूरकेकाभिरनुप्रयातं शैलापगाः शीघ्रतरं वहन्ति १८
रसाकुलं षट्पदसंनिकाशं प्रभुज्यते जम्बुफलं प्रकामम्।
अनेकवर्णं पवनावधूतं भूमौ पतत्याम्रफलं विपक्कम् १९
विद्युत्पताकाः सबलाकमालाः शैलेन्द्रकूटाकृतिसंनिकाशाः।
गर्जन्ति मेघाः समुदीर्णनादा मत्ता गजेन्द्रा इव संयुगस्थाः २०
वर्षोदकाप्यायितशाद्वलानि प्रवृत्तनृत्तोत्सवबर्हिणानि।
वनानि निर्वृष्टबलाहकानि पश्यापराह्णेष्वधिकं विभान्ति २१
समुद्वहन्तः सलिलातिभारं बलाकिनो वारिधरा नदन्तः।
महत्सु शृङ्गेषु महीधराणां विश्रम्य विश्रम्य पुनः प्रयान्ति २२

आकाश प्रकाशित और कहीं अप्रकाशित दृष्टिगोचर होता है जैसे समुद्रका रूप पर्वतोंसे संरुद्ध होनेके कारण कहीं प्रकाशित और अप्रकाशित रहता है ॥ १७ ॥ सर्ज (शाल) तथा कदम्बके फूलोंसे हुए, पर्वतकी धातुतुल्य ताम्रवर्णवाले जलको पर्वतकी नदियें अतिशीघ्र रहीं हैं और जिनपर मोर अपनी मीठी ध्वनिसे शब्द कर रहे हैं ॥ १८ ॥

रससे भरे हुए भ्रमरसदृश काले जामुनोंको लोग भले प्रकार खा रहे और अनेक रंगके पके हुए आमूफल (आम) पवनसे कंपाये हुए भूमि गिर रहे हैं ॥ १९ ॥ और बिजलीको पताका बनाये हुए बगुलोंकी सहित पर्वतके शिखरसमान आकृतिवाले मेघ बडे उच्चस्वरसे गर्ज रहे जैसे समरमें स्थित मदान्ध हाथी गर्जते हैं ॥ २० ॥ देखो, वर्षाके बढ गई है घास जिनमें, वर्ष गये हैं मेघ जिनमें और नृत्योत्सवमें लगे हैं मोर जिनमें ऐसे वन मध्यान्होत्तरकालमें अधिक शोभा दे रहे हैं ॥ २१ ॥ उन मेघोंके आगे बगुलियोंकी पंक्तियें उड रहीं हैं और वह मेघ गर्जते जलके अतिभारको उठाये हुये पर्वतोंके बडे बडे शिखरों पर विश्राम करके फिर चल पडते हैं ॥ २२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मेघाभिकामा परिसंपतन्ती संमोदिता भाति बलाकपङ्क्तिः।
वातावधूता वरपौण्डरीकी लम्बेव माला रुचिराम्बरस्य २३
बालेन्द्रगोपान्तरचित्रितेन विभाति भूमिर्नवशाद्वलेन।
गात्रानुपृक्तेन शुकप्रभेण नारीव लाक्षोक्षितकम्बलेन २४
निद्रा शनैः केशवमभ्युपैति द्रुतं नदी सागरमभ्युपैति।
हृष्टा बलाका घनमभ्युपैति कान्ता सकामा प्रियमभ्युपैति २५
जाता वनान्ताः शिखिसुप्रनृत्ता जाताः कदम्बाः सकदम्बशाखाः।
जाता वृषा गोषु समानकामा जाता मही सस्यवनाभिरामा २६
वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगमाः २७
प्रहर्षिताः केतकिपुष्पगंधमाघ्राय मत्ता वननिर्झरेषु।

मेघकी इच्छा करनेवाली, मेघके समीपको जाती, आनन्दयुक्त यह बगुलियोंकी पंक्ति श्रेष्ठ आकाशको इस प्रकार शोभा देती है जैसे पवनसे उड़ाई हुई श्रेष्ठ कमलोंकी लम्बी माला शोभा देवे ॥ २३ ॥ छोटी छोटी वीरबहूटियोंसे बीच बीचमें युक्त नई हरियालीसे भूमि उस स्त्रीकी भांति शोभायमान होती है जिसने तोतेके रंगसदृश, बीच बीचमें लाल बिन्दुओं वाला अङ्गोंके साथ लगा हुआ वस्त्र पहना हुआ हो ॥ २४ ॥ विष्णुको शनैः शनैः निद्रा आती है; नदी सागरको शीघ्र जाती है, प्रसन्न हुई बकपांक्ति मेघके पास जाती है और कामिनी स्त्री प्रिय (पति) के पास जाती है ॥ २५ ॥ वनोंमें जगह जगह मोर नाच रहे हैं, कदम्बोंकी शाखाएं फूलोंसे लद रहीं हैं, गौओं और सांडोंमें समानरूपसे कामना बढ रही है, और पृथिवी सब हरे वनोंसे सुहावनी हो गई है ॥ २६ ॥ इस ऋतुमें नदियां वह रही हैं, मेघ बर्ष रहे हैं, मत्त हाथी चिंघाडते हैं, वन सुशोभित हो रहे हैं, विरही पुरुष चिन्तातुर होते, मयूर नाचते और वानर आश्वासन प्राप्त किये हुए हैं ॥ २७ ॥ प्रसन्न हुए केतकके फूलोंकी गन्धको सूंघकर अत्यन्त हर्षित हुए, वनके झरनोंमें जो जलके गिरनेका शब्द होता है, उससे व्याकुल हुए,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रपातशब्दाकुलिता गजेन्द्राः सार्धं मयूरैः समदा नदन्ति २८
धारानिपातैरभिहन्यमानाः कदम्बशाखासु विलम्बमानाः।
क्षणार्जितं पुष्परसावगाढं शनैर्मदं षट्चरणास्त्यजन्ति २९
अङ्गारचूर्णोत्करसंनिकाशैः फलैः सुपर्याप्तरसैः समृद्धैः।
जम्बूद्रुमाणां प्रविभान्ति शाखा निपीयमाना इव षट्पदौघैः ३०
तडित्पताकाभिरलंकृतानामुदीर्णगम्भीरमहारवाणाम्।
विभान्ति रूपाणि बलाहकानां रणोत्सुकानामिव वानराणाम् ३१
मार्गानुगः शैलवनानुसारी संप्रस्थितो मेघरवं निशम्य।
युद्धाभिकामः प्रतिनादशङ्की मत्तो गजेन्द्रः प्रतिसंनिवृत्तः ३२
क्वचित्प्रगीता इव षट्पदौघैः क्वचित्प्रनृत्ता इव नीलकण्ठैः।
क्वचित्प्रमत्ता इव वारणेन्द्रैर्विभान्त्यनेकाश्रयिणो वनान्ताः ३३
कदम्बसर्जार्जुनकन्दलाढ्या वनान्तभूमिर्मधुवारिपूर्णा।

मदोन्मत्त हाथी मोरोंके साथ शब्द करते हैं ॥ २८ ॥ भ्रमरगण कद शाखाओंपर लटके हुए जलकी धाराओंके गिरनेसे ताडन किये गये को प्राप्त पुष्परसोंसे बढे हुए मदको धीरे धीरे त्याग रहे हैं ॥ २९ ॥

शान्त अङ्गारके समूहके सदृश वर्णवाले, पूर्ण रसवाले और पके फलोंसे जामुनके वृक्षोंकी शाखा भौरोंके समूहोंसे व्याप्त सी दिखलाई हैं ॥ ३० ॥ विजलीरूप पताकाओंसे शोभित, बडे उच्च तथा गम्भीर वाले मेघोंके रूप युद्धोन्मुख हाथियोंके रूपके समान प्रतीत हो रहे हैं (इस दृश्य को देख) पर्वत तथा वनमें विचरनेवाला, युद्धाभि मार्गमें चलता हुआ मत्त हाथी मेघकी गर्जनको सुनकर अन्य गजेन्द्र शङ्कावाला होकर पीछेको लौट पडा है ॥ ३२ ॥ वनप्रदेशोंमें कहीं भौ का गान, कहीं मयूरोंका नाच और कहीं हाथियोंकी मस्तियां हो रही इस तरह सम्पूर्ण प्रदेश शोभित हो रहा है ॥ ३३ ॥

कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और भूतालके फूलोंसे युक्त वनप्रदेशकी नवीन जलसे पूर्ण, मयूरोंके मत्त शब्द तथा नाचसे मद्यपानकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मयूरमत्ताभिरुतप्रनृत्तैरापानभूमिप्रतिमा विभाति ३४
मुक्तासमाभं सलिलं पतद्वै सुनिर्मलं पत्रपुटेषु लग्नम्।
हृष्टा विवर्णच्छदना विहंगाः सुरेन्द्रदत्तं तृषिताः पिबन्ति ३५
षट्पादतन्त्रीमधुराभिधानं प्लवंगमोदीरितकण्ठतालम्।
आविष्कृतं मेघमृदङ्गनादैर्वनेषु संगीतमिव प्रवृत्तम् ३६
क्वचित्प्रनृत्तैः क्वचिदुन्नदद्भिः क्वचिच्च वृक्षाग्रनिषण्णकायैः।
व्यालम्बवर्हाभरणैर्मयूरैर्वनेषु संगीतमिवप्रवृत्तम् ३७
स्वनैर्घनानां प्लवगाः प्रबुद्धा विहाय निद्रां चिरसंनिरुद्धाम्।
अनेकरूपाकृतिवर्णनादा नवाम्बुधाराभिहता नदन्ति ३८
नद्यः समुद्वाहितचक्रवाकास्तटानि शीर्णान्यपवाहयित्वा।
दृप्ता नवप्रावृतपूर्णभोगाद्रुतं स्वभर्तारमुपोपयान्ति ३९

सदृश प्रतीत हो रही हैं ॥ ३४ ॥ विविध प्रकारके पंखोंवाले, प्यासे पक्षि-विशेष (चातक) प्रसन्न हो मोतीके समान वर्णवाले, स्वच्छ और पत्तोंके पुटोंमें लगे हुए वर्षाके जलको पान करते हैं ॥ ३५ ॥ भ्रमररूपी वीणाकी गुंजाररूपी मधुरध्वनि, मण्डूकोंके शब्दरूपी कण्ठताल (तालयुक्त गान) और मेघरूपी मृदंगोंके गर्जनरूप बाजेसे मानो वनमें सङ्गीत शास्त्रका आविष्कार हो रहा है ॥ ३६ ॥ कहीं नाचते, कहीं शब्द करते, कहीं वृक्षों-के अग्रभागों पर बैठे हुए तथा फैले हुए पङ्ख ही हैं आभरण जिनके ऐसे मयूरोंसे वनमें गाना सा प्रतीत हो रहा है ॥ ३७ ॥

मेघोंकी गर्जनासे बहुत कालसे व्यापारके रोकनेवाली निद्राको त्याग कर जगे हुए, अनेक प्रकारकी आकृति तथा वर्ण और नादवाले और नवीन जलकी धारासे ताडित मण्डूक (मेंढक) जहां तहां शब्द कर रहे हैं ॥ ३८ ॥ जलकी बाढने उडा दिये हैं चक्रवाक जिनके, और नवीन भरे हुए हैं भोग जिनके ऐसी बडी उद्धत नदियां टूटे हुए किनारोंको बहाकर शीघ्र ही अपने पति (समुद्र) के पास जाती हैं ॥ ३९ ॥ नीले बादलोंके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नीलेषु नीला नववारिपूर्णा मेघेषु मेघाः प्रतिभान्ति सक्ताः।
दवाग्निदग्धेषु दवाग्निदग्धाः शैलेषु शैला इव बद्धमूलाः ४०
प्रमत्तसंनादितबर्हिणानि सशक्रगोपाकुलशाद्वलानि।
चरन्ति नीपार्जुनवासितानि गजाः सुरम्याणि वनान्तराणि ४१
नवाम्बुधाराहतकेसराणि ध्रुवं परिष्वज्य सरोरुहाणि।
कदम्बपुष्पाणि सकेसराणि नवानि हृष्टा भ्रमराः पिबन्ति ४२
मत्ता गजेन्द्रा मुदिता गवेन्द्रा वनेषु विक्रान्ततरा मृगेन्द्राः।
रम्या धरेन्द्रा निभृता नरेन्द्राः प्रक्रीडितो वारिधरैः सुरेन्द्रः ४३
मेघाः समुद्भूतसमुद्रनादा महाजलौघैर्गगनावलम्बाः।
नदीस्तटाकानि सरांसि वापीर्महीं च कृत्स्नामपवाहयन्ति ४४
वर्षप्रवेगा विपुलाः पतन्ति प्रवान्ति वाताः समुदीर्णवेगाः।

ऊपर चढे हुए नवीन जलसे पूर्ण मेघ इस प्रकार शोभा देते हैं जैसे दावाग्निसे जले हुए पर्वतों पर जड पकडे हुए, दावाग्निसे जले हुए पर्वत शोभायमान होते हैं ॥ ४० ॥

आनन्दित तथा शब्दायमान हैं मोर जिन्होंमें, इंद्रगोपों (वीरबहूटियों) से व्याप्त घास जिनकी और कदम्ब तथा अर्जुनके पुष्पोंसे सुगन्धित रमणीय वनोंमें हाथी विचरते हैं ॥४१॥ आनन्दित हुए भौंरे नवीन जलधारासे ताडित केसरवाले कमलोंको त्याग कर केसरवाले नवीन कदम्बके फूलों पर गिरते हैं ॥ ४२ ॥ वनोंमें हाथी मस्त, गवेन्द्र (बिजार) आनन्दित, सिंह अतिविक्रान्त, पर्वत रमणीय और राजा लोग निश्चल अर्थात् दण्डयात्रादि व्यापाररहित हो रहे हैं तथा सुरेन्द्र बादलोंसे क्रीडा कर रहा है ॥ ४३ ॥ समुद्रके शब्दको उत्पन्न करनेवाले और आकाशके आश्रयवाले मेघ नदी, तालाब, झील, बावडी और समस्त पृथ्वीको बडे भारी जलके समूहोंसे पूर्ण कर रहे हैं ॥ ४४ ॥

अतिवेगसे निरन्तर वर्षा हो रही है, बढे हुए शब्दवाली वायु चल रही है, नष्टतीर वाली और जलकी अधिकतासे विरुद्ध मार्गको प्राप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रनष्टकूलाः प्रवहन्ति शीघ्रं नद्यो जलं विप्रतिपन्नमार्गाः ४५
नरैर्नरेन्द्रा इव पर्वतेन्द्राः सुरेन्द्रनीतैः पवनोपनीतैः।
घनाम्बुकुम्भैरभिषिच्यमाना रूपं श्रियं स्वामिव दर्शयन्ति ४६
घनोपगूढं गगनं न तारा न भास्करो दर्शनमभ्युपैति।
नवैर्जलौघैर्धरणी वितृप्ता तमोविलिप्ता न दिशः प्रकाशाः ४७
महान्ति कूटानि महीधराणां धाराविधौतान्यधिकं विभान्ति।
महाप्रमाणैर्विपुलैः प्रपातैर्मुक्ताकलापैरिव लम्बमानैः ४८
शैलोपलप्रस्खलमानवेगाः शैलोत्तमानां विपुलाः प्रपाताः।
गुहासु संनादितबर्हिणासु हारा विकीर्यन्त इवावभान्ति ४९
शीघ्रं प्रवेगा विपुलाः प्रपाता निर्धौतशृङ्गोपतला गिरीणाम्।
मुक्ताकलाप प्रतिमाः पतन्तो महागुहोत्सङ्गतलैर्ध्रियन्ते ५०

नदियां शीघ्रतासे बह रही हैं ॥ ४५ ॥ मनुष्योंसे लाये हुए जलसे अभिषिक्त राजाओंकी भांति अर्थात् जैसे मनुष्योंके लाये हुए जलसे राजा स्नान कर निर्मल होता है इसी प्रकार मेघोंके जलकुम्भोंसे अभिषिक्त हुए पर्वत अपने निर्मलरूप (अनेक धातुरूप) को, अपनी श्री को दिखला रहे हैं ॥ ४६ ॥ तारोंवाला आकाश मेघोंसे घिर गया है, जिससे सूर्य दिखलाई नहीं देता है। नवीन जलके समूहोंसे पृथ्वी तृप्त हो गई है और अन्धकारसे घिरी हुई दिशा प्रकाशित (विदित) नहीं होतीं ॥४७॥

जलकी धाराओंसे धौत, ऊंचे पर्वतशिखर बडे लम्बे चौडे झरनोंसे पडी हुई मोतियोंकी लडीके समान अधिक शोभा देते हैं ॥ ४८ ॥ पत्थरोंसे गिर रहा है वेग जिनका ऐसे श्रेष्ठ पर्वतोंके बडे झरने मयूरोंके शब्दोंसे शब्दायमान गुफाओंमें विखरते हुए हारोंके समान शोभा देते हैं ॥ ४९ ॥ शीघ्रवेगवाले, धो दिये हैं शिखरतल जिन्होंने ऐसे तथा मोतियोंकी लडियों के सदृश गिरते हुए पर्वतोंके बडे झरने गहनगुफाओंके मध्यतलों द्वारा धारण किये जाते हैं ॥ ५० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सुरतामर्दविच्छिन्नाः स्वर्गस्त्रीहारमौक्तिकाः।
पतन्ति चातुला दिक्षु तोयधाराः समंततः ५१
विलीयमानैर्विहगैर्निमीलद्भिश्च पङ्कजैः।
विकसन्त्या च मालत्या गतोऽस्तं ज्ञायते रविः ५२
वृत्ता यात्रा नरेन्द्राणां सेना पथ्येव वर्तते।
वैराणि चैव मार्गाश्च सलिलेन समीकृताः ५३
मासि प्रौष्ठपदे ब्रह्म ब्राह्मणानां विवक्षताम्।
अयमध्यायसमयः सामगानामुपस्थितः ५४
निवृत्तकर्मायतनो नूनं संचितसंचयः।
आषाढीमभ्युपगतो भरतः कोशलाधिपः ५५
नूनमापूर्यमाणायाः सरय्वा वर्धते रयः।
मां समीक्ष्य समायान्तमयोध्याया इव स्वनः ५६
इमाः स्फीतगुणा वर्षाः सुग्रीवः सुखमश्नुते।
विजितारिः सदारश्च राज्ये महति च स्थितः ५७

रतिसमयके मर्दनसे टूटे हुए स्वर्गस्त्रियोंके हारोंके मोतियोंके समान दिशाओंमें जलधारा आकुल हो गिर रही हैं ॥ ५१ ॥ निवासस्थानको जाते हुए पक्षियों, बन्द होते हुए कमलों तथा खिलती हुई मालतीसे छिप गया है, यह जाना जाता है ॥ ५२ ॥ राजाओंकी यात्रा बन्द हो सेना लौट आई और वैर तथा मार्ग जलने एकसे कर दिये हैं ॥ ५३ ॥ भाद्रपद मासमें वेद पढनेकी इच्छावाले, सामपाठी ब्राह्मणोंका यह अध्यायका समय आया है ॥ ५४ ॥

निवृत्त हो गये हैं गृहव्यापार जिसके, संचित की है धनराशि ऐसे कोसलाधिप भरतने आषाढकी पूर्णिमाको प्राप्त किया है ॥ अच्छे प्रकार भरी हुई सरयूका वेग बढ रहा होगा जैसे अयोध्याका शब्द मुझे आया देख कर बढेगा ॥ ५६ ॥ बडेभारी राज्यमें जीत लिये हैं शत्रु जिसने ऐसा सुग्रीव स्त्रीसहित इस उत्तम गु वर्षामें सुख भोग रहा है ॥ ५७ ॥ और हे लक्ष्मण ! मैं तो महान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अहं तु हृतदारश्च राज्याच्च महतश्च्युतः ।
नदीकूलमिव क्लिन्नमवसीदामि लक्ष्मण ५८
शोकश्च मम विस्तीर्णो वर्षाश्च भृशदुर्गमाः ।
रावणश्च महाञ्छत्रुरपारः प्रतिभाति मे ५९
अयात्रां चैव दृष्ट्वेमां मार्गांश्च भृशदुर्गमान् ।
प्रणते चैव सुग्रीवे न मया किंचिदीरितम् ६०
अपि चापिपरिक्लिष्टं चिराद्दारैः समागतम् ।
आत्मकार्यगरीयस्त्वाद्वक्तुं नेच्छामि वानरम् ६१
स्वयमेव हि विश्रम्य ज्ञात्वा कालमुपागतम् ।
उपकारं च सुग्रीवो वेत्स्यते नात्र संशयः ६२
तस्मात्कालप्रतीक्षोऽहं स्थितोऽस्मि शुभलक्षण ।
सुग्रीवस्य नदीनां च प्रसादमभिकाङ्क्षयन् ६३
उपकारेण वीरो हि प्रतीकारेण युज्यते ।
अकृतज्ञोऽप्रतिकृतो हन्ति सत्त्ववतां मनः ६४

भ्रष्ट तथा स्त्रीरहित होकर कटते हुए नदीके किनारोंकी समान बडा दुःखी हूं ॥ ५८ ॥ मेरा शोक बढ रहा है, वर्षा बडी दुरत्यय हो रही है और रावण बडा भारी शत्रु है अतः ये तीनों मुझे दुस्तर प्रतीत होते हैं ॥५९॥ सुग्रीवके नमस्कार करने पर उस समय इस यात्रा के अभाव तथा अत्यन्त दुरत्यय मार्गों को देखकर मैंने (सुग्रीवसे) कुछ नहीं कहा ॥ ६० ॥

बडे दुःखी और बहुत कालके पश्चात् स्त्रीसे मिले हुए सुग्रीवसे मैं अपने कार्यके बहुत बडे होनेके कारण कुछ नहीं कहना चाहता ॥ ६१ ॥ क्योंकि विश्राम करके, समय आया जानकर सुग्रीव स्वयं ही उपकारको जानेगा, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ६२ ॥ हे शुभलक्षण ! इसलिये शरत् कालकी प्रतीक्षा करनेवाला मैं नदियों तथा सुग्रीवकी प्रसन्नताका पालन करता हुआ स्थित हूं ॥ ६३ ॥ वीर पुरुष उपकार पाकर प्रत्युपकारमें लग जाता है, उपकारको भूलनेवाला और बदलेमें उपकार न करता हुआ पुरुष श्रेष्ठ जनोंके मनको दुःख पहुंचाता है ॥ ६४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अथैवमुक्तः प्रणिधाय लक्ष्मणः कृताञ्जलिस्तत्प्रतिपूज्य भाषित
उवाच रामं स्वभिरामदर्शनं प्रदर्शयन्दर्शनमात्मनः शुभम् ६
यदुक्तमेतत्तव सर्वमीप्सितं नरेन्द्र कर्ता न चिराद्धरीश्वरः।
शरत्प्रतीक्षः क्षमतामिदं भवाञ्जलप्रपातं रिपुनिग्रहे धृतः ६
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे अष्टाविंशः सर्गः ॥२८॥

एकोनत्रिंशः सर्गः ॥ २९ ॥

समीक्ष्य विमलं व्योम गतविद्युद्बलाहकम्।
सारसाकुलसंघुष्टं रम्यज्योत्स्नानुलेपनम् १
समृद्धार्थं च सुग्रीवं मन्दधर्मार्थसंग्रहम्।
अत्यर्थं चासतां मार्गमेकान्तगतमानसम् २
निवृत्तकार्यं सिद्धार्थं प्रमदाभिरतं सदा।
प्राप्तवन्तमभिप्रेतान्सर्वानेव मनोरथान् ३
स्वां च पत्नीमभिप्रेतां तारां चापि समीप्सिताम्।
विहरन्तमहोरात्रं कृतार्थं विगतज्वरम् ४

अब ऐसा कहे जानेपर हाथ जोडे हुए लक्ष्मण होनेवाले कार्यको ... कर और रामके वाक्यकी प्रशंसा कर देखनेमें प्रिय लगे ऐसे शुभ ... मतको दिखाते हुए रामसे बोले ॥ ६५ ॥ हे राजन्! ठीक कहे हुए ... इस सब इच्छित कार्यको सुग्रीव शीघ्र ही करेगा, शरत्कालकी बाट ... वाले तथा वैरीको दण्ड देनेमें धैर्ययुक्त आप इस वर्षा ऋतुको ... कीजिये ॥ ६६ ॥

॥ यहां २८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

बिजली और मेघोंसे रहित, सारसोंके शब्दोंसे पूर्ण, रम्य ... पुते हुए, उज्ज्वल आकाशको देखकर और समृद्धार्थ, अल्प धर्मार्थ... वाले, अत्यन्त करके दुष्टोंके मार्गमें एकान्तचित्त होकर वर्तमान, पूर्ण ... है कार्य जिसका, राज्यको पाये, ॥ १-२ ॥ सदा स्त्रियोंमें आसक्त, ... सब मनोरथोंको पाये हुए, इच्छितकी हुई अपनी स्त्री तथा ... इच्छित की हुई ताराको पाये हुए, दिनरात विहार करते ॥ ३ ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रीडन्तमिव देवेशं गन्धर्वाप्सरसां गणैः।
मन्त्रिषु न्यस्तकार्यं च मन्त्रिणामनवेक्षकम् ५
उच्छिन्नराज्यसंदेहं कामवृत्तमिव स्थितम्।
निश्चितार्थोऽर्थतत्त्वज्ञः कालधर्मविशेषवित् ६
प्रसाद्य वाक्यैर्विविधैर्हेतुमद्भिर्मनोरमैः।
वाक्यविद्वाक्यतत्त्वज्ञं हरीशं मारुतात्मजः ७
हितं तथ्यं च पथ्यं च सामधर्मार्थनीतिमत्।
प्रणयप्रीतिसंयुक्तं विश्वासकृतनिश्चयम् ८
हरीश्वरमुपागम्य हनूमान्वाक्यमब्रवीत् ९
राज्यं प्राप्तं यशश्चैव कौली श्रीरभिवर्धिता।
मित्राणां संग्रहः शेषस्तद्भवान्कर्तुमर्हति १०
यो हि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते।
तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चापि वर्धते ११

धनयुक्त, संतापरहित, नन्दनवनमें अप्सराओंके साथ इन्द्र जैसे क्रीडा
वैसे क्रीडा करते हुए, मंत्रियोंको कार्य सौंपे ॥ ५ ॥ मंत्रियोंके कार्यकी
भाल न करनेवाले, दूर कर दिया है राज्यका दंड देना जिसने, काम--
री, वाक्यके तत्त्वको जाननेवाले, स्थित वानरेश्वर सुग्रीवको देखकर और
को मधुर, हेतुयुक्त मनोरम वाक्योंसे प्रसन्न करके निश्चित कर्तव्यवाला,
जन और तत्त्वका जाननेवाला, काल और धर्मके उचित व्यवहारका
ता, वाक्यज्ञ, पवनपुत्र हनुमान् वानरेश्वरके समीप पहुंच कर अपनेको
देनेवाले, सत्य, नीतिमार्गके अनुकूल, साम; धर्म; अर्थ और नीति-
, नम्रता और प्रीतियुक्त, विश्वास में कृतनिश्चय वाक्य को बोला
६-९ ॥

राज्य और यश आपने पा लिया, कुलक्रमागत लक्ष्मीको बढाया,
का कार्य अभी शेष है उसे आप करनेको योग्य हैं ॥ १० ॥ जो कालज्ञ
मित्रोंसें निरन्तर भले प्रकार वर्तता है, उसका राज्य, कीर्ति और तेज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यस्य कोशश्च दण्डश्च मित्राण्यात्मा च भूमिप।
समान्येतानि सर्वाणि स राज्यं महदश्नुते ॥ १२
तद्भवान्वृत्तसंपन्नः स्थितः पथि निरत्यये
मित्रार्थमभिनीतार्थं यथावत्कर्तुमर्हति ॥ १३
संत्यज्य सर्वकर्माणि मित्रार्थे यो न वर्तते ।
संभ्रमाद्विकृतोत्साहः सोऽनर्थेनावरुध्यते ॥ १४
यो हि कालव्यतीतेषु मित्रकार्येषु वर्तते ।
स कृत्वा महतोऽप्यर्थान्न मित्रार्थेन युज्यते ॥ १५
तदिदं मित्रकार्यं नः कालातीतमरिन्दम ।
क्रियतां राघवस्यैतद्वैदेह्याः परिमार्गणम् ॥ १६
न च कालमतीतं ते निवेदयति कालवित् ।
त्वरमाणोऽपि स प्राज्ञस्तव राजन्वशानुगः ॥ १७
कुलस्य हेतुः स्फीतस्य दीर्घबन्धुश्च राघवः ।
अप्रमेयप्रभावश्च स्वयं चाप्रतिमो गुणैः ॥ १८

बढता है ॥ ११ ॥ हे राजन् ! जिस राजाका कोश, दण्ड, मित्र आत्मा ये सब समुदित हैं वह बडे राज्यको भोगता है ॥ १२ ॥ अविनाशी मार्गमें स्थित, सदाचारयुक्त आप प्राप्त करा दिया है जिसने ऐसे मित्रकार्यको यथावत् करनेके योग्य हैं ॥ १३ ॥ जो मनुष्य सब कार्योंको त्यागकर मित्रके प्रयोजनमें आदरसे प्रवृत्त उसका अनर्थ कुछ नहीं कर सकते ॥ १४ ॥ जो मित्र के अतिक्रान्त वाले कार्यों में प्रवृत्त होता है वह बडे प्रयोजन भी करके मित्र के से युक्त नहीं होता ॥ १५ ॥

हे वैरियों का नाश करनेवाले ! वीर ! हम सबको यह मित्र करना चाहिये । राम का यह (कार्य) सीता का तलाश का ॥ १६ ॥ हे राजन् ! समय के जाननेवाले, आपके वशीभूत, राम जल्दी करते हुए भी व्यतीतकाल को तुमसे नहीं कहेंगे समृद्ध कुलके हेतु, अपरिमित प्रभाववाले राम (आपके) बडे और आप भी गुणों से उपमारहित हो ॥ १८ ॥ हे वानरेश्वर!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तस्य त्वं कुरु वै कार्यं पूर्वं तेन कृतं तव ।
हरीश्वर कपिश्रेष्ठानाज्ञापयितुमर्हसि १९
न हि तावद्भवेत्कालो व्यतीतश्चोदनादृते ।
चोदितस्य हि कार्यस्य भवेत्कालव्यतिक्रमः २०
अकर्तुरपि कार्यस्य भवान्कर्ता हरीश्वर ।
किं पुनः प्रतिकर्तुस्ते राज्येन च धनेन च २१
शक्तिमानतिविक्रान्तो वानरर्क्षगणेश्वर ।
कर्तुं दशरथेः प्रीतिमाज्ञायां किं नु सज्जसे २२
कामं खलु शरैः शक्तः सुरासुरमहोरगान् ।
वशे दाशरथिः कर्तुं त्वत्प्रतिज्ञामवेक्षते २३
प्राणत्यागाविशङ्केन कृतं तेन महत्प्रियम् ।
तस्य मार्गाम वैदेहीं पृथिव्यामपि चाम्बरे २४
देवदानवगन्धर्वा असुराः समरुद्गणाः ।
न च यक्षा भयं तस्य कुर्युः किमिव राक्षसाः २५

कार्य को आप करो, क्योंकि उन्होंने पहिले तुम्हारा किया है, आप वानरे-श्वरों को आज्ञा दीजिये ॥ १९ ॥ प्रेरणा के विना व्यतीत हुआ भी काल व्यतीत नहीं कहा जाता और प्रेरणा किये हुए कार्य को कालातिक्रम दोष लगता है ॥ २० ॥ हे वानरराज ! आप अनुपकारी का भी उपकार करने-वाले हैं फिर राज्य और धनसे उपकार करनेवाले का क्यों नहीं ॥ २१ ॥ हे वानर और ऋक्षों के स्वामी ! आप शक्तिमान् और विक्रान्त होते हुए श्री राम की प्रीति करने को आज्ञा करनेमें उद्योग क्यों नहीं करते ? ॥ २२ ॥ राम बाणों से देव, दैत्य और सर्पों को यथेष्ट वश में करने को समर्थ हैं; परन्तु आप की प्रतिज्ञा की इच्छा कर रहे हैं ॥ २३ ॥ प्राणत्याग में शङ्कारहित हुए रामने तुम्हारा प्रिय किया था, उनकी सीता को पृथ्वी और आकाशमें हम सब ढूंढें ॥ २४ ॥ न देवता, न गन्धर्व, न असुर, न पवन और न यक्ष उन रामको भय देते हैं फिर राक्षस कैसे दे सकते हैं ॥ २५ ॥

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तदेवं शक्तियुक्तस्य पूर्वं प्रतिकृतस्तथा।
रामस्यार्हसि पिङ्गेश कर्तुं सर्वात्मना प्रियम् २६
नाधस्तादवनौ नाप्सु गतिर्नोपरि चाम्बरे।
कस्यचित्सज्जतेऽस्माकं कपीश्वर तवाज्ञया २७
तदाज्ञापय कः किं ते कुतो वापि व्यवस्यतु।
हरयो ह्यप्रधृष्यास्ते सन्ति कोट्यग्रतोऽनघ २८
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा काले साधु निरूपितम्।
सुग्रीवः सत्त्वसंपन्नश्चकार मतिमुत्तमाम् २९
संदिदेशातिमतिमान्नीलं नित्यकृतोद्यमम्।
दिक्षु सर्वासु सर्वेषां सैन्यानामुपसंग्रहे ३०
यथा सेना समग्रा मे यूथपालाश्च सर्वशः।
समागच्छन्त्यसङ्गेन सेनाग्र्येण तथा कुरु ३१
ये त्वन्तपालाः प्लवगाः शीघ्रगा व्यवसायिनः।

हे वानर! इस कारणसे ऐसी शक्तियुक्त और तुम्हारा पहिले ही प्रिय... वाले राम का आप सर्वात्मासे प्रिय करने के योग्य हो॥ २६॥

हे कपीश्वर! आपकी आज्ञा हो जानेपर हम लोगों में किसी ... गति नीचे पृथ्वी में, न जल में और न ऊपर आकाश में मन्द प... ॥ २७॥ जो तिरस्कृत न किये जा सकें ऐसे तथा दोषरहित वानर ... पास करोड से भी अधिक हैं, इससे आज्ञा दीजिये कि उनमें से ... लिये कौन क्या करे और कौन से कार्य में उद्योग करे?॥ २८॥ सम... कहे हुए और श्रेष्ठ हनुमान् के वाक्य को सुनकर सत्त्वयुक्त सुग्रीव ने ... बुद्धि की॥ २९॥ उन सुग्रीव ने मान्य किये गये और नित्य उद्यमी ... को सब दिशाओं से सब सैनिकों को इकट्ठा करने की आज्ञा दी॥ ... जिससे मेरी सब सेना, सब यूथपति तथा सेनाग्रनायक शीघ्र ही ... करो॥ ३१॥

जो सेना का चारों ओर से पालन करनेवाले, शीघ्रगामी उद्योगी ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

समानयन्तु ते शीघ्रं त्वरिताः शासनान्मम ।
स्वयं चानन्तरं कार्यं भवानेवानुपश्यतु ३२
त्रिपञ्चरात्राद्रूर्ध्वं यः प्राप्नुयादिह वानरः ।
तस्य प्राणान्तिको दण्डो नात्र कार्या विचारणा ३३
...राँश्च वृद्धानुपयातु साङ्गदो भवान्ममाज्ञामधिकृत्य निश्चितम् ।
...ति व्यवस्थां हरिपुङ्गवेश्वरो विधाय वेश्म प्रविवेश वीर्यवान् ३४

...त्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदि०किष्किन्धाकाण्डे एकोनत्रिंशः सर्गः॥२९॥[१२२७]

त्रिंश सर्गः ।

गृहं प्रविष्टे सुग्रीवे विमुक्ते गगने घनैः ।
वर्षरात्रे स्थितो रामः कामशोकाभिपीडितः १
पाण्डुरं गगनं दृष्ट्वा विमलं चन्द्रमण्डलम् ।
शारदीं रजनीं चैव दृष्ट्वा ज्योत्स्नानुलेपनाम् २
कामवृत्तं च सुग्रीवं नष्टां च जनकात्मजाम् ।
दृष्ट्वा कालमतीतं च मुमोह परमातुरः ३

...वे मेरी आज्ञा से शीघ्रता करते हुए सैनिक (योधाओं) को लावें और ...के अनन्तर आप सब सेना का निरीक्षण करें ॥ ३२ ॥ हे वानर! जो ...दह रात्रि बीत जाने पर भी यहां नहीं आवेगा उस को प्राणान्तक दण्ड ...या जायगा, इस में कुछ विचार नहीं ॥ ३३ ॥ आप अङ्गद के साथ ...श्चित मेरी आज्ञा को सामने धरकर वृद्ध वानरों के पास जाइये । वानरे...र, बलवान् सुग्रीव ऐसी मर्यादा बांधकर अपने महल में घुस ...या ॥ ३४ ॥

॥ यहाँ २९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

...सुग्रीव के नगरी में चले जाने पर मेघों से आकाश के छूट जानेपर, ...र्षा काल में बसे, काम और शोक से पीडित राम श्वेत आकाश और ...मल चन्द्रमण्डलको देखकर तथा उजियालेसे पुती हुई शरदृतुकी रात्रिको ...कर कामी सुग्रीव, नष्ट सीता और व्यतीत हुए समय को समझकर ...तुर होकर मोहको प्राप्त हो गये, ॥ १-३ ॥ वह बुद्धिमान् राम मुहूर्त-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

स तु संज्ञामुपागम्य मुहूर्तान्मतिमान्नृपः ।
मनस्थामपि वैदेहीं चिन्तयामास राघवः ४
दृष्ट्वा च विमलं व्योम गतविद्युद्बलाहकम् ।
सारसारवसंघुष्टं विललापार्तया गिरा ५
आसीनः पर्वतस्याग्रे हेमधातुविभूषिते ।
शारदं गगनं दृष्ट्वा जगाम मनसा प्रियाम् ६
सारसारावसंनादैः सारसारावनादिनी ।
याश्रमे रमते बाला साऽद्य मे रमते कथम् ७
पुष्पितांश्चासनान्दृष्ट्वा काञ्चनानिव निर्मलान् ।
कथं सा रमते बाला पश्यन्ती मामपश्यती ८
या पुरा कलहंसानां कलेन कलभाषिणी ।
बुध्यते चारुसर्वाङ्गी साऽद्य मे रमते कथम् ९
निःस्वनं चक्रवाकानां निशम्य सहचारिणाम् ।
पुण्डरीकविशालाक्षी कथमेषा भविष्यति १०

मात्र में ही चैतन्यता को पाकर मन में स्थित सीता का चिन्तन लगे ॥ ४ ॥ राम बिजली और मेघसे रहित, सारसों के पूर्ण आका देखकर दुःखित वाणी से विलाप करने लगे ॥ ५ ॥

सुवर्ण और धातुओंसे विभूषित पर्वतके अग्र भागपर बैठे हुए राम के आकाशको देखकर मनसे प्रियाके पास पहुंचे ॥ ६ ॥ सारसके समान करनेवाली जो बाला मेरी प्रिया सारसके शब्दोंसे उठी हुई ध्वनिसे रमती थी, वह आज कैसे रमती होगी ? ॥ ७ ॥ मुझे न देखती और उधर दृष्टि डालती वह बाला सुवर्णके समान निर्मल, पुष्पित असनवृ देखकर आज कैसे रमती होगी ॥ ८ ॥ मधुर शब्दवाली और श्रे वाली जो प्रिया पहिले कलहंसों के शब्दों से जागती थी वह आज जागती होगी ॥ ९ ॥ कमल के समान विशालनेत्रवाली सीता साथ वाले चकवों का शब्द सुनकर किस दशा को प्राप्त होती होगी ?॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सरांसि सरितो वापीः काननानि वनानि च।
तां विना मृगशावाक्षीं चरन्नाद्य सुखं लभे ॥ ११
अपि तां मद्वियोगाच्च सौकुमार्याच्च भामिनीम्।
सुदूरं पीडयेत्कामः शरद्गुणनिरन्तरः ॥ १२
एवमादि नरश्रेष्ठो विललाप नृपात्मजः।
विहंग इव सारङ्गः सलिलं त्रिदशेश्वरात् ॥ १३
ततश्चञ्चूर्यरम्येषु फलार्थी गिरिसानुषु।
ददर्श पर्युपावृत्तो लक्ष्मीवांल्लक्ष्मणोऽग्रजम् ॥ १४
स चिंतया दुःसहया परीतं विसंज्ञमेकं विजने मनस्वी।
भ्रातुर्विषादात्त्वरितोऽतिदीनः समीक्ष्य सौमित्रिरुवाच दीनम् ॥ १५
किमार्य कामस्य वशंगतेन किमात्मपौरुष्यपराभवेन।
अयं ह्रिया संह्रियते समाधिः किमत्र योगेन निवर्तते न ॥ १६
क्रियाभियोगं मनसः प्रसादं समाधियोगानुगतं च कालम्।

हरिण के बच्चे के समान नेत्रवाली उस प्रिया के विना तालाब, नदी, बावडी, बडे वन और छोटे वनों में विचरता हुआ मैं आज सुख नहीं पाता ॥ ११ ॥ शरद्गुण से पूर्ण काम सुकुमारता और मेरे वियोग से उस सीता को क्या मरणपर्यन्त पीडा न करेगा ? ॥ १२ ॥

इत्यादि नरश्रेष्ठ राजपुत्र राम ने विलाप किया जैसे इन्द्र से जल चाहता हुआ चातक पक्षी करता है॥ १३ ॥ उसी समय फल लाने को गये हुए रमणीय पर्वत की चोटियों पर घूम कर लौटे हुए लक्ष्मीवान् लक्ष्मण ने बडे भाई राम को इस अवस्था में देखा ॥ १४ ॥ भाई के विषाद के कारण सन्ताप से दुःखी हुए, मनस्वी लक्ष्मण दुःसह चिन्ता से व्याप्त, चेतना-रहित हुए, अकेले रामको निर्जन स्थान में देखकर बोले॥ १५ ॥ हे आर्य ! (मन से) काम के वश में प्राप्त होने से और अपने पुरुषार्थ के तिरस्कार से क्या फल ? यह चित्तसमाधान हरएक काल में सम्पादन किया जाता है इस समय में उत्साह के निवर्तन करने से क्या लाभ ? ॥ १६ ॥ हे अदीनसत्त्व ! कार्य का उद्योग, मन की प्रसन्नता, धैर्य और उपाय से अनु-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

सहायसामर्थ्यमदीनसत्त्वः स्वकर्महेतुं च कुरुष्व तात १७
न जानकी मानववंशनाथ त्वया सनाथा सुलभा परेण ।
न चाग्निचूडां ज्वलितामुपेत्य न दह्यते वीर वरार्ह कश्चित् १८
सलक्षणं लक्ष्मणमप्रधृष्यं स्वभावजं वाक्यमुवाच रामः ।
हितं च पथ्यं च नयप्रसक्तं ससाम धर्मार्थसमाहितं च १९
निःसंशयं कार्यमवेक्षितव्यं क्रियाविशेषोऽप्यनुवर्तितव्यः ।
न तु प्रवृद्धस्य दुरासदस्य कुमार वीर्यस्य फलं च चिन्त्यम् २०
अथ पद्मपलाशाक्षीं मैथिलीमनुचिन्तयन् ।
उवाच लक्ष्मणं रामो मुखेन परिशुष्यता २१
तर्पयित्वा सहस्राक्षः सलिलेन वसुंधराम् ।
निर्वर्तयित्वा सस्यानि कृतकर्मा व्यवस्थितः २२
दीर्घगम्भीरनिर्घोषाः शैलद्रुमपुरोगमाः ।
विसृज्य सलिलं मेघाः परिश्रान्ता नृपात्मज २३

बद्ध समय, सुग्रीवादि सहायों की सामर्थ्य और देवोपासनादि जो हे
इनको कारण बनाओ ॥ १७ ॥

हे मनुजेश्वर ! तुम से सनाथ हुई जानकी को लेना शत्रु को सु
नहीं है। हे वीरवरार्ह ! कोई जलती हुई अग्निज्वाला को लेकर न ज
यह नहीं हो सकता ॥ १८ ॥ युक्तियों से न विचलित होनेवाले, स्व
वासिद्ध, अपने को सुखकारी, पथ्य, राजनीतियुक्त, समझाने से संयुक्त,
धर्म तथा प्रयोजन सहित वाक्य को कहते श्रेष्ठ लक्षण युक्त लक्ष्मण से
बोले ॥ १९ ॥ सीतान्वेषण का कार्य निःसंदेह करना चाहिये और उत्साह
का भी अनुवर्तन करना चाहिये। हे कुमार ! प्रवृत्त दुरासद कार्य के
को कुछ चिन्ता न करनी चाहिये ॥ २० ॥ तदनन्तर कमल के पत्ते
समान नेत्रवाली सीता का चिन्तन करते हुए राम सूखते हुए मुख
लक्ष्मण से बोले ॥ २१ ॥ इन्द्र जल से भूमि को तृप्त कर धान्य को
कर कृतकृत्य हुआ स्थित है ॥ २२ ॥ हे राजपुत्र ! मनोहर और गम्
शब्दवाले, पर्वतों के वृक्षों के आगे चलनेवाले मेघ जल को छोड़कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नीलोत्पलदलश्यामाः श्यामीकृत्वा दिशो दश ।
विमदा इव मातंगाः शान्तवेगाः पयोधराः २४
जलगर्भा महामेघाः कुटजार्जुनगन्धिनः ।
चरित्वा विरताः सौम्य वृष्टिवाताः समुद्यताः २५
घनानां वानराणां च मयूराणां च लक्ष्मण ।
नादः प्रस्रवणानां च प्रशान्तः सहसानघ २६
अभिवृष्टा महामेघैर्निर्मलाश्चित्रसानवः ।
अनुलिप्ता इवाभान्ति गिरयश्चित्रदीप्तिभिः २७
शाखासु सप्तच्छदपादपानां प्रभासु तारार्कनिशाकराणाम् ।
लीलासु चैवोत्तमवारणानां श्रियं विभज्याद्य शरत्प्रवृत्ता २८
संप्रत्यनेकाश्रयचित्रशोभा लक्ष्मीः शरत्कालगुणोपपन्ना ।
सूर्याग्रहस्तप्रतिबोधितेषु पद्माकरेष्वभ्यधिकं विभाति २९
सप्तच्छदानां कुसुमोपगन्धी षट्पादवृन्दैरनुगीयमानः ।
मत्तद्विपानां पवनानुसारी दर्पं वनेष्वभ्यधिकं विभाति ३०

गये हैं ॥ २३ ॥ नीले कमल के पत्तों के समान श्याम मेघ दशों दिशाओं को काली करके मदहीन हाथियों के समान शान्तवेग हो गये हैं ॥ २४ ॥ हे सौम्य ! जलरूपी गर्भवाले, अति वेगवाले, कुटज और अर्जुनकी गन्धयुक्त, चलते हुए वर्षा के पवन बन्द हो गये हैं ॥ २५ ॥ हे पापरहित ! हे लक्ष्मण ! मेघ, हाथी, मोर और झरनों का शब्द एकदम शान्त हो गया ॥ २६ ॥ महामेघ जिनपर वर्ष चुके हैं ऐसे तथा निर्मल, चित्र शिखरोंवाले पर्वत अनेक तरह की कान्तिओं से पुते हुए से शोभा देते हैं ॥ २७ ॥ सप्तच्छद वृक्ष की शाखाओं में तारे, सूर्य और चन्द्रमा की कान्तिमें और श्रेष्ठ हाथियों के खेलों में अपनी शोभाको बांट कर अब शरद्तु प्रवृत्त हुई है ॥ २८ ॥ अनेक फूलों के आश्रय से चित्रित कान्तिवाली, शरत्काल के गुणों से प्राप्त की गई लक्ष्मी (शोभा) सूर्य की किरणों से खिलाये हुए कमलों में अधिक प्रकाश करती है ॥ २९ ॥

सप्तच्छद वृक्षों के फूलों की गन्धवाला, भौंरों के झुंडों से गाया गया और अनुकूल चलनेवाला पवन वनों में मत्त हाथियोंको मद अधिक करता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अभ्यागतैश्चारुविशालपक्षैः स्मरप्रियैः पद्मरजोविकीर्णैः।
महानदीनां पुलिनोपयातैः क्रीडन्ति हंसाः सह चक्रवाकैः
मदप्रगल्भेषु च वारणेषु गवां समूहेषु च दर्पितेषु।
प्रसन्नतोयासु च निम्नगासु विभाति लक्ष्मीर्बहुधा विभक्ता
नभः समीक्ष्याम्बुधरैर्विमुक्तं विमुक्तबर्हाभरणा वनेषु।
प्रियास्वसक्ता विनिवृत्तशोभा गतोत्सवा ध्यानपरा मयूराः
मनोज्ञगन्धैः प्रियकैरनल्पैः पुष्पाग्रभारा वनताग्रशाखैः।
सुवर्णगौरैर्नयनाभिरामैरुद्योतितानीव वनान्तराणि
प्रियान्वितानां नलिनीप्रियाणां वनप्रियाणां कुसुमोद्गतानाम्।
मदोत्कटानां मदलालसानां गजोत्तमानां गतयोऽद्य मन्दाः
व्यक्तं नभः शस्त्रविधौतवर्णं कृशप्रवाहानि नदीजलानि।
कह्लारशीताः पवनाः प्रवान्ति तमोविमुक्ताश्च दिशः प्रकाशाः

है ॥ ३० ॥ सामने से आये हुए, सुन्दर और विशाल पंखोंवाले, क... जिनको प्यारे हैं ऐसे, कमल की रज से युक्त, बडी नादियों के किना... आकर इकट्ठे हुए चकवों के साथ हंस क्रीडा करते हैं ॥ ३१ ॥ मद... धारण किये हुए हाथियों में, अहङ्कारी बैलों के झुंडों में और स्वच्छ ज... वाली नदियों में विभक्त हुई लक्ष्मी अनेक प्रकार शोभा देती है ॥ ३... मेघरहित आकाश को देखकर प्रियाओं में अनासक्त, शोभाहीन, ध्या... परायण और छोड दिये हैं बर्ह (मोरपंख) रूपी आभरण जिन्होंने ... मोर वनों में आनन्दरहित हो गये हैं ॥ ३३ ॥ मनोहर गन्धवाले, फूलों... भार से नमी हुई शाखाओंवाले, सुवर्ण के सदृश गोरे, नेत्रों को ... अनेक प्रियक नामक वृक्षों से वनप्रदेश प्रकाशित से हो रहे हैं ॥ ३४ ॥

हथिनियों से युक्त, तालाबों से प्यार करनेवाले, वन में रत, फूलों... सूंघकर मदमत्त हुए, मद जिनके कपोलों से टपक रहा है तथा मदला... गजेन्द्रों की गति अब मन्द हो गई ॥ ३५ ॥ आकाश मेघ रहित और ... हुए शस्त्र के समान रङ्गवाला और नदियों के जल थोडे बहाववाले ... गये हैं। कल्हार (एक प्रकार के कमल) के समान शीतल पवन ... हैं और अन्धकार से छूटी हुई दिशायें प्रकाश करती हैं ॥ ३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सूर्यातपक्रामणनष्टपङ्का भूमिश्चिरोद्घाटितसान्द्ररेणुः ।
अन्योऽन्यवैरेण समायुतानामुद्योगकालोऽद्य नराधिपानाम् ३७
शरद्गुणाप्यायितरूपशोभाः प्रहर्षिताः पांसुसमुत्थिताङ्गाः ।
मदोत्कटाः संप्रति युद्धलुब्धा वृषा गवां मध्यगता नदन्ति ३८
समन्मथा तीव्रतरानुरागा कुलान्विता मन्दगतिः करेणूः ।
मदान्वितं संपरिवार्य यान्तं वनेषु भर्तारमनुप्रयाति ३९
त्यक्त्वा वराण्यात्मविभूषितानि वर्हाणि तीरोपगता नदीनाम् ।
निर्भर्त्स्यमाना इव सारसौघैः प्रयान्ति दीना विमना मयूराः ४०
वित्रास्य कारण्डव चक्रवाकान्महारवैर्भिन्नकटा गजेन्द्राः ।
सरःसु बुद्धाम्बुजभूषणेषु विक्षोभ्य विक्षोभ्य जलं पिबन्ति ४१
व्यपेतपङ्कासु सवालुकासु प्रसन्नतोयासु सगोकुलासु ।
ससारसारावविनादितासु नदीषु हंसा निपतन्ति हृष्टाः ४२

धूप के पडने से नष्ट हो गई है कीचड जिसकी तथा बहुत काल में उत्पन्न हुई है स्थूल रज जिसमें ऐसी भूमि है । परस्पर के विरोध से पूर्ण राजाओं का यह उद्योग का काल है ॥ ३७ ॥

शरदृतु के गुणों से बढ गई है शरीर की शोभा जिनकी ऐसे धूल में लिपटे अङ्गवाले, आनन्दित हुए युद्ध के लोभी मदमत्त बैल गौओं के मध्य में प्राप्त हो शब्द करते हैं ॥३८॥ अति कामातुर हुई अनुराग से अपने बच्चे को साथ लेकर मन्द चाल से चलती हुई हथिनी वन को जाते हुए मतवाले अपने पति के पीछे जारही हैं ॥ ३९ ॥ अपने विभूषित पंखों को गिरा कर नदियों के किनारे बैठे हुए मोर मानों सारसों से निरादर पाये हुए उदास हो उडे जारहे हैं ॥ ४० ॥ मद से जिनके कपोल क्लिन्न हो रहे हैं ऐसे गजेन्द्र जलमुर्गा और चकवों को बडे शब्दों से भय देकर खिले हुए कमलरूपी भूषणवाले तालाबों में जल को वार वार क्षोभित करके पीते हैं ॥ ४१ ॥ कीचड से रहित, बालू से पूर्ण, स्वच्छ जलवाली, गोसमूह से युक्त और शब्दों से शब्दायमान नादियों में प्रसन्न हुए हंस सारसों-सहित गिरते हैं ॥ ४२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नदीघनप्रस्रवणोदकानामतिप्रवृद्धानिलबर्हिणानाम्।
प्लवंगमानां च गतोत्सवानां ध्रुवं रवाः संप्रति संप्रनष्टाः ४३
अनेकवर्णाः सुचिरनष्टकाया नवोदितेष्वम्बुधरेषु नष्टाः।
क्षुधार्दिता घोरविषा बिलेभ्यश्चिरोषिता विप्रसरन्ति सर्पाः ४४
चञ्चच्चन्द्रकरस्पर्शहर्षोन्मीलिततारका।
अहो रागवती संध्या जहातु स्वयमम्बरम् ४५
रात्रिः शशाङ्कोदितसौम्यवक्त्रा तारागणोन्मीलितचारुनेत्रा।
ज्योत्स्नांशुकप्रावरणा विभाति नारीव शुक्लांशुकसंवृताङ्गी ४६
विपक्वशालिप्रसवानि भुक्त्वा प्रहर्षिता सारसचारुपङ्क्तिः।
नभः समाक्रामति शीघ्रवेगा वातावधूता ग्रथितेव माला ४७
सुप्तैकहंसं कुमुदैरुपेतं महाह्रदस्थं सलिलं विभाति।
घनैर्विमुक्तं निशि पूर्णचन्द्रं तारागणाकीर्णमिवान्तरिक्षम् ४८

नदी, मेघ और झरनों के, अति बढी हुई वायु तथा मोरों के और आ-न्दरहित वानरों के शब्द इस समय नष्ट हो गये हैं ॥ ४३ ॥ अनेक वर्णों अत्यन्त दुबले शरीरवाले, वर्षांत के आने से चलने फिरने में असमर्थ, से पीडित, बहुत समय तक विश्राम पाये हुए घोर विषधारी सर्प (बिलों से निकलने लगे हैं ॥ ४४ ॥ अहो ! निकलते हुए चन्द्रमा की णोंके स्पर्श से निर्मल तारोंवाली, आरुण्ययुक्त सन्ध्या स्वयं आकाश छोड रही है ॥ ४५ ॥ उदय हुए चन्द्र से सौम्य मुखवाली, तारागण खुले नेत्रोंवाली और चांदनीरूप दुपट्टा ओढे हुई रात्रि श्वेत वस्त्र से हुए अङ्गवाली स्त्री के समान शोभा देती है ॥ ४६ ॥

शीघ्रवेगवाली सारसों की श्रेष्ठ पंक्ति पके हुए धानों के दानों को खा लेकर प्रसन्न होती हुई वायु से उडाई हुई गुंथी माला के समान आ को जा रही है ॥ ४७ ॥ फूलों से भरा हुआ बडे तालाब का जल कि एक हंस सो रहा है इस प्रकार शोभा देता है जैसे मेघों से रा ताराओं से व्याप्त जिसमें कि पूर्णचन्द्र विद्यमान है ऐसा आकाश शोभा देता है ॥ ४८ ॥ आजकल भरे हुए हंसों से व्याकुल हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रकीर्णहंसाकुलमेखलानां प्रबुद्धपद्मोत्पलमालिनीनाम्।
वाप्युत्तमानामधिकाऽद्य लक्ष्मीर्वराङ्गनानामिव भूषितानाम् ४९
वेणुस्वरव्यञ्जिततूर्यमिश्रः प्रत्यूषकालेऽनिलसंप्रवृत्तः।
संमूर्च्छितो गह्वरगोवृषाणामन्योन्यमापूरयतीव शब्दः ५०
नवैर्नदीनां कुसुमप्रहासैर्व्याधूयमानैर्मृदुमारुतेन।
धौतामलक्षौमपटप्रकाशैः कूलानि काशैरुपशोभितानि ५१
वनप्रचण्डा मधुपानशौण्डाः प्रियान्विताः षट्चरणाः प्रहृष्टाः।
वनेषु मत्ताः पवनानुयात्रां कुर्वन्ति पद्मासनरेणुगौराः ५२
जलं प्रसन्नं कुसुमप्रहासं क्रौञ्चस्वनं शालिवनं विपक्वम्।
मृदुश्च वायुर्विमलश्च चन्द्रः शंसन्ति वर्षव्यपनीतकालम् ५३
मीनोपसंदर्शितमेखलानां नदीवधूनां गतयोऽद्य मन्दाः।
कान्तोपभुक्तालसगामिनीनां प्रभातकालेष्विव कामिनीनाम् ५४

जिनके और खिले हुए कमल तथा कुमुदों की मालावाली श्रेष्ठ बावडियों की शोभा भूषित वेश्याओं के सदृश प्रकाशित दीखती है ॥ ४९ ॥ थोथे बांसों के शब्द से उत्पन्न जो तूर्य (गीतवाद्य) उससे युक्त और प्रातः कालके पवन से बढाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त हुआ दधिमथने के पात्र और गौं तथा बैलों का शब्द एक दूसरे को बढाता हुआ सा हो रहा है ॥ ५० ॥ फूलों से प्रकाशमान, पवनसे कुछ २ कपाये और धुले हुए निर्मल रेशमी वस्त्रके समान प्रकाशवाले, नूतन काशोंसे नदियोंके किनारे शोभित हो रहे हैं ॥ ५१ ॥ वनमें निरङ्कुश गतिवाले, मधुपान करनेमें धूर्त, प्रियाओंसे युक्त, प्रसन्न तथा मत्त हुए तथा कमल और असनों की रेणु से गौर होते हुए भौंरे वनों में पवन के पीछे चल रहे हैं ॥ ५२ ॥ स्वच्छ जल, खिला कमल, क्रौञ्च (ढेंक) का शब्द, पका हुआ धानों का वन, मन्द २ वायु, निर्मल चन्द्र, ये सब वर्षा ऋतु की बिदाई की सूचना करते हैं ॥ ५३ ॥ मछली ही हैं दिखाती हुई मेखला जिनकी ऐसी नदीरूप वधुओं की गति अब मन्द हो गयी है जैसे प्रियतमों के साथ रमण से मन्द चालवाली कामिनियों की गति प्रातःकाल के समय हो जाती है ॥ ५४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सचक्रवाकानि सशैवलानि काशैर्दुकुलैरिव संवृतानि ।
सपत्ररेखाणि सरोचनानि वधूमुखानीव नदीमुखानि ५५
प्रफुल्लबाणासनचित्रितेषु प्रहृष्टषट्पादनिकूजितेषु ।
गृहीतचापोद्यतदण्डचण्डः प्रचण्डचापोऽद्य वनेषु कामः ५६
लोकं सुवृष्ट्या परितोषयित्वा नदीस्तटाकानि च पूरयित्वा ।
निष्पन्नसस्यां वसुधां च कृत्वा त्यक्त्वा नभस्तोयधराः प्रनष्टाः
दर्शयन्ति शरन्नद्यः पुलिनानि शनैः शनैः ।
नवसंगमसव्रीडा जघनानीव योषितः ५८
प्रसन्नसलिलाः सौम्य कुररीभिर्विनादिताः ।
चक्रवाकगणाकीर्णा विभान्ति सलिलाशयाः ५९
अन्योन्यबद्धवैराणां जिगीषूणां नृपात्मज ।
उद्योगसमयः सौम्य पार्थिवानामुपस्थितः ६०
इयं सा प्रथमा यात्रा पार्थिवानां नृपात्मज ।

चकई, चकवा तथा सेवार के होने और कांशरूप वस्त्र के धारण क मानो नदियों के मुख पत्र, रेखा वा रोचना लगाये हुए स्त्रियों के मुख हो गये हैं ॥ ५५ ॥ फूले हुए बाण और सर्ज के वृक्षों से चित्रित, और हुए भौंरों से शब्दायमान वनों में धनुष को ग्रहण किये तथा प्रचण्ड र को उठाये हुए कामदेव अब खूब विचर रहा है ॥ ५६ ॥ संसार को से प्रसन्न करके तथा नदी और तालावों को जल से पूर्ण करके और को खेती से पूर्ण करके मेघ आकाश को त्याग कर चले गये हैं ॥ शरद् ऋतु में नदी शनैः शनैः किनारों को दिखाती हैं जैसे संगम से लज्जित हुई स्त्रियां जंघा को शनैः शनैः दिखलाती हैं ॥ हे सौम्य ! स्वच्छ जलवाले, क्रौञ्ची पक्षिणियोंसे शब्दायमान और चकवों के झुंड से पूर्ण तालाब शोभा देते हैं ॥ ५९ ॥

हे राजपुत्र ! हे सौम्य ! दिग्विजय की इच्छावाले और परस्पर हुए बांधे हुए राजाओं का यह उद्योग का समय आ उपस्थित हुआ है ॥ हे राजपुत्र ! राजाओंकी यह पहिली यात्रा उपस्थित हुई है, मैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

न च पश्यामि सुग्रीवमुद्योगं च तथाविधम् ६१
असनाः सप्तपर्णाश्च कोविदाराश्च पुष्पिताः ।
दृश्यन्ते बन्धुजीवाश्च श्यामाश्च गिरिसानुषु ६२
हंससारसचक्राह्वैः कुररैश्च समन्ततः ।
पुलिनान्यवकीर्णानि नदीनां पश्य लक्ष्मण ६३
चत्वारो वार्षिका मासा गता वर्षशतोपमाः ।
मम शोकाभितप्तस्य तथा सीतामपश्यतः ६४
चक्रवाकीव भर्तारं पृष्ठतोऽनुगता वनम् ।
विषमं दण्डकारण्यमुद्यानमिव चाङ्गना ६५
प्रियाविहीने दुःखार्ते हृतराज्ये विवासिते ।
कृपां न कुरुते राजा सुग्रीवो मयि लक्ष्मण ६६
अनाथो हृतराज्योऽयं रावणेन च धर्षितः ।
दीनो दूरगृहः कामी मां चैव शरणं गतः ६७
इत्येतैः कारणैः सौम्य सुग्रीवस्य दुरात्मनः ।
अहं वानरराजस्य परिभूतः परंतप ६८

और वैसे (पूर्वोक्त) उद्योग को नहीं देखता हूं ॥ ६१ ॥ पर्वतों के शिखरों पर फूले हुए असन, सप्तपर्ण, कचनार, बकुल श्याम रङ्ग के दिखाई देते हैं ॥ ६२ ॥ हे लक्ष्मण ! चारों ओर से हंस, सारस, चकवा और कुरर पक्षियों से घिरे हुए नदियों के किनारों को देखो ॥ ६३ ॥ हे सौम्य ! शोक से तिरस्कृत और सीता को न देखते हुए मुझे वर्षा के चार मास सौ वर्षों के सदृश व्यतीत हुए हैं ॥ ६४ ॥ पति के पीछे जानेवाली चकवी जैसे बगीचे को जाती है उसी प्रकार सीता मेरे पीछे विषम दण्डकारण्य को आई थी ॥ ६५ ॥

हे लक्ष्मण ! प्रिया से हीन, दुःख से पीडित, राज्यहीन, घर से निकले हुए मुझ पर राजा सुग्रीव दया नहीं करता ॥ ६६ ॥ हे परन्तप ! " यह अनाथ, राज्यहीन, रावण से तिरस्कृत, दीन और कामी है तथा इसका गृह दूर है और मेरे शरण आया है " हे सौम्य ! इत्यादि कारणों से दुरात्मा वानरराज सुग्रीव ने मेरा तिरस्कार किया है ॥६७-६८॥ कृतकृत्य हुआ दुर्मति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स कालं परिसंख्याय सीतायाः परिमार्गणे।
कृतार्थः समयं कृत्वा दुर्मतिर्नावबुध्यते ६९
स किष्किन्धां प्रविश्य त्वं ब्रूहि वानरपुंगवम्।
मूर्खं ग्राम्यसुखे सक्तं सुग्रीवं वचनान्मम ७०
अर्थिनामुपपन्नानां पूर्वं चाप्युपकारिणाम्।
आशां संश्रुत्य यो हन्ति स लोके पुरुषाधमः ७१
शुभं वा यदि वा पापं यो हि वाक्यमुदीरितम्।
सत्येन परिगृह्णाति स वीरः पुरुषोत्तमः ७२
कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये।
तान्मृतानपि क्रव्यादाः कृतघ्नान्नोपभुञ्जते ७३
नूनं काञ्चनपृष्ठस्य विकृष्टस्य मया रणे।
द्रष्टुमिच्छसि चापस्य रूपं विद्युद्गणोपमम् ७४
घोरं ज्यातलनिर्घोषं क्रुद्धस्य मम संयुगे।
निर्घोषमिव वज्रस्य पुनः संश्रोतुमिच्छसि ७५

वह सुग्रीव सीता के ढूंढने में समय को निश्चित करके समय को ... करके भी नहीं चेतता है ॥ ६९ ॥ तुम किष्किन्धा में जाकर ग्राम्य (स्त्रीरमण) में आसक्त, मूर्ख, वानरेश्वर सुग्रीव को मेरे वचन से (... ओर से) कहो ॥ ७० ॥ समीप में आये हुए, पहिले उपकार कर दें... याचकों को आशा को प्रतिज्ञा करके जो (पूर्ण) नहीं करता वह लो... नीच पुरुष कहाता है ॥ ७१ ॥ जो कहे हुए शुभ या अशुभ वाक्य को ... से ग्रहण करता है, सत्य कर देता है, वह वीर और पुरुषोत्तम क... है ॥ ७२ ॥

जो कृतकृत्य होकर अकृतकृत्य मित्रों का उपकार नहीं करते उन ... को मर जाने पर मांसाहारी भी नहीं खाते ॥ ७३ ॥ निश्चय ही (सु... सोने की पीठवाले, रण में मुझ से खींचें गये धनुष के बिजली के ... रूपको देखना चाहता है ॥ ७४ ॥ निश्चय (वह) संग्राममें क्रोधित हु... प्रत्यञ्चाके घोर शब्दको वज्रके शब्दके समान फिर सुनना चाहता है ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कामसेवंगतेप्यस्य परिज्ञाते पराक्रमे।
त्वत्सहायस्य मे वीर न चिन्ता स्यान्नृपात्मज ७६
यदर्थमयमारम्भः कृतः परपुरंजय।
समयं नाभिजानाति कृतार्थः प्लवगेश्वरः ७७
वर्षाः समयकालं तु प्रतिज्ञाय हरीश्वरः।
व्यतीतांश्चतुरो मासान्विहरन्नावबुध्यते ७८
सामात्यपरिषत्क्रीडन्पानमेवोपसेवते।
शोकदीनेषु नास्मासु सुग्रीवः कुरुते दयाम् ७९
उच्यतां गच्छ सुग्रीवस्त्वया वीर महाबल।
मम रोषस्य यद्रूपं ब्रूयाश्चैनमिदं वचः ८०
न स संकुचितः पन्था येन वाली हतो गतः।
समये तिष्ठ सुग्रीव मा वालिपथमन्वगाः ८१

वीर! हे राजपुत्र! तुम्हारे सहायवाले मेरे पराक्रम को यथेच्छ सालादिके ...ोडने से जानने पर भी उसको चिन्ता नहीं होती (कि ये वालीके ...मान मुझे भी मार डालेंगे) ॥ ७६ ॥

हे शत्रुओं के नगरों को जीतनेवाले! यह मित्रभावादि जिस प्रयोजन ...लिये किया था, कृतार्थ हुआ सुग्रीव उसके समय को नहीं जानता ॥ ७७ ॥ वानरेश्वर सुग्रीव वर्षाकाल की प्रतिज्ञा करके विहार करता हुआ ...र मासों के वीतने को नहीं जानता ॥ ७८ ॥ मन्त्रियों और बन्धुओं के ...थ क्रीडा करता हुआ सुग्रीव मद्यपानादि का ही सेवन करता है और ...कसे दीन हुए हम पर दया नहीं करता ॥७९ ॥ हे महाबली! हे वत्स! ...म जाओ, मेरे क्रोधका जो रूप है, वह उससे कहना और यह वचन कहो ॥ ८० ॥ जिस मार्गसे मरा हुआ वालि गया था, वह मार्ग नष्ट नहीं हो-...या है। हे सुग्रीव! मर्यादामें ठहरो, वालीके मार्ग पर मत चलो ॥८१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक एव रणे वाली शरेण निहतो मया।
त्वां तु सत्यादतिक्रान्तं हनिष्यामि सबान्धवम् ८२
यदेवं विहिते कार्ये यद्धितं पुरुषर्षभ।
तत्तद्‌ब्रूहि नरश्रेष्ठ त्वरा कालव्यतिक्रमः ८३
कुरुष्व सत्यं मम वानरेश्वर प्रतिश्रुतं धर्ममवेक्ष्य शाश्वतम्।
मा वालिनं प्रेतगतो यमक्षये त्वमद्य पश्येर्मम चोदितः शरैः ८४
स पूर्वजं तीव्रविवृद्धकोपं लालप्यमानं प्रसमीक्ष्य दीनम्।
चकार तीव्रां मतिमुग्रतेजा हरीश्वरे मानववंशवर्धनः ८५

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० त्रिंशः सर्गः ॥३०॥

एकत्रिंशः सर्गः।

स कामिनं दीनमदीनसत्त्वं शोकाभिपन्नं समुदीर्णकामम्।
नरेन्द्रसूनुर्नरदेवपुत्रं रामानुजः पूर्वजमित्युवाच १
न वानरः स्थास्यति साधुवृत्ते न मन्यते कर्मफलानुषङ्गान्।
न भोक्ष्यते वानरराजलक्ष्मीं तथा हि नातिक्रमतेऽस्य बुद्धिः

संग्राममें बाणसे मैंने अकेले ही वालिको मारा था किन्तु सत्यसे दू तुमको कुटुम्बसमेत मारूंगा ॥ ८२ ॥

हे पुरुषश्रेष्ठ ! हे नरश्रेष्ठ ! ऐसा कार्य होने पर जो हित है उसे कालका व्यतिक्रम न हो इससे शीघ्रता करो ॥ ८३ ॥ हे वानरेश्वर! सनातन धर्मको समझकर मेरे विषयमें प्रतिज्ञाको सत्य करो, आज बाणोंसे प्रेरित हो यमलोकमें पहुंच कर वालीको मत देखो ॥ ८४ ॥ तेजस्वी मनुष्येश्वर उन लक्ष्मणने तीव्र और बढे हुए क्रोधवाले, करते दीन रामको देखकर सुग्रीवको दण्ड देने की बुद्धि की ॥ ८५ ॥

॥ यहाँ ३० वाँ सर्ग समाप्त ॥

राजपुत्र रामके छोटे भाई लक्ष्मण कामी, दीन, अदीनसत्त्ववाले, से व्याप्त, बढे हुए क्रोधवाले, राजपुत्र बडे भाई रामसे यह बोले। वह वानर साधु लोगोंके आचार पर नहीं टिकेगा, मित्रताके मूल रा रूप फलको भी मनमें न समझेगा और वानर राज्यलक्ष्मीका भी नहीं करेगा और उसकी बुद्धि प्रतिज्ञाके पालन करनेमें नहीं बढेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अतिक्षयाद्ग्राम्यसुखेषु सक्तस्तव प्रसादात्प्रतिकारबुद्धिः।
हतोऽग्रजं पश्यतु वीरवालिनं न राज्यमेवं विगुणस्य देयम् ३
न धारये कोपमुदीर्णवेगं निहन्मि सुग्रीवमसत्यमद्य ।
हरिप्रवीरैः सहवालिपुत्रो नरेन्द्रपुत्र्या विचयं करोतु ४
तमात्तबाणासनमुत्पतन्तं निवेदितार्थं रणचण्डकोपम् ।
उवाच रामः परवीरहन्ता स्ववीक्षितं सानुनयं च वाक्यम् ५

न हि वै त्वाद्विधो लोके पापमेवं समाचरेत्।
कोपमार्येण यो हन्ति स वीरः पुरुषोत्तमः ६
नेदमत्र त्वया ग्राह्यं साधुवृत्तेन लक्ष्मण ।
तां प्रीतिमनुवर्तस्व पूर्ववृत्तं च संगतम् ७
सामोपहितया वाचा रूक्षाणि परिवर्जयन् ।
वक्तुमर्हसि सुग्रीवं व्यतीतं कालपर्यये ८

हे वीर ! बुद्धिविपर्यय होनेसे स्त्री आदियोंमें आसक्त आपके प्रत्युपकार करनेमें बुद्धिरहित मेरेसे निहत हुआ वह सुग्रीव वालीको देखेगा। ऐसे विगुणको राज्य न देना चाहिये ॥ ३ ॥ बढे हुए वेगवाले क्रोधको मैं नहीं धारण कर सकता, आज असत्यवादी सुग्रीवको मारूंगा और श्रेष्ठ वानरोंके साथ अङ्गद सीताको ढूंढेगा ॥ ४ ॥

शत्रुवीरोंका नाश करनेवाले राम धनुष् लिये, उछलते हुए रणमें अति क्रोधी और कह दिया है प्रयोजन जिन्होंने ऐसे लक्ष्मणसे अच्छे प्रकार निरूपित शान्तियुक्त वाक्य बोले ॥ ५ ॥ तुम्हारे समान पुरुष ऐसे पापको नहीं कर सकता। जो सम्यक् ज्ञानसे पापको नष्ट करता है, वह वीर और पुरुषोत्तम है ॥ ६ ॥ हे लक्ष्मण ! श्रेष्ठ चरित्रवाले तुम्हें इस पाप कर्मको ग्रहण नहीं करना चाहिये। पूर्वकृत उस प्रीति और सख्यरूप (मित्रता) का पालन करो ॥ ७ ॥ तुम समयके उल्लङ्घन करनेवाले सुग्रीवको कठोर वाक्य त्याग कर साम युक्त (समझाने) वाणी समय बीत जानेके विषयमें कहनेके योग्य हो ॥ ८ ॥ रामद्वारा यथावद् शिक्षित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सोऽग्रजेनानुशिष्टार्थो यथावत्पुरुषर्षभः।
प्रविवेश पुरीं वीरो लक्ष्मणः परवीरहा ९
ततः शुभमतिः प्राज्ञो भ्रातुः प्रियहिते रतः।
लक्ष्मणः प्रतिसंरब्धो जगाम भवनं कपेः १०
शक्रबाणासनप्रख्यं धनुः कालान्तकोपमम्।
प्रगृह्य गिरिशृङ्गाभं मन्दरः सानुमानिव ११
यथोक्तकारी वचनमुत्तरं चैव सोत्तरम्।
बृहस्पतिसमो बुद्धया मत्वा रामानुजस्तदा १२
कामक्रोधसमुत्थेन भ्रातुः क्रोधाग्निना वृतः।
प्रभञ्जन इवाप्रीतः प्रययौ लक्ष्मणस्ततः १३
सालतालाश्वकर्णांश्च तरसा पातयन्बलात्।
पर्यस्यन्गिरिकूटानि द्रुमानन्यांश्च वेगितः १४
शिलाश्च शकलीकुर्वन्पद्भ्यां गज इवाशुगः।
दूरमेकपदं त्यक्त्वा ययौ कार्यवशाद्द्रुतम् १५

पुरुषश्रेष्ठ, वीर, शत्रुवीरों के नाशक लक्ष्मण किष्किन्धा में प्रविष्ट गये ॥ ९ ॥

तदनन्तर सुमति, बुद्धिमान्, भाईके प्रियमें रत, क्रोधी लक्ष्मण सु[ग्रीवके] भवनको चले ॥ १० ॥ कालान्तकके सदृश, बुद्धिसे बृहस्पतिके [तुल्य, पर्वत]शिखर वाले पर्वतके तुल्य अचल, भाईके काम क्रोधसे उत्पन्न क्रोध[से] युक्त, रामके वचनको पूर्ण करनेवाले, रामानुज लक्ष्मण प्रसन्न हो [इन्द्रके] धनुषके सदृश, पर्वतशिखरके तुल्य धनुषको लेकर तथा उत्तर और [प्रत्यु]त्तरको समझ कर वायुके समान चले ॥११-१३॥ बहुतसे साल, ताल [और] अश्वकर्ण नामक वृक्षोंको वेगसे गिराते हुए, अन्यवृक्ष तथा पर्वतशि[खरों] को हिलाते हुए पैरोंसे शिलाओंको तोडते हुए लक्ष्मण शीघ्र [चलनेवाले] हाथी के समान एक पैर से दूसरे को दूर रख कार्यवशसे शीघ्र चले ॥ १४–१५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तामपश्यद्बलाकीर्णां हरिराजमहापुरीम्।
दुर्गामिक्ष्वाकुशार्दूलः किष्किन्धां गिरिसंकटे १६
रोषात्प्रस्फुरमाणोष्ठः सुग्रीवं प्रति लक्ष्मणः।
ददर्श वानरान्भीमान्किष्किन्धायां वहिश्चरान् १७
तं दृष्ट्वा वानराः सर्वे लक्ष्मणं पुरुषर्षभम्।
शैलशृङ्गाणि शतशः प्रवृद्धांश्च महीरुहान् १८
जगृहुः कुञ्जरप्रख्या वानराः पर्वतान्तरे १९
तान्गृहीतप्रहरणान्सर्वान्दृष्ट्वा तु लक्ष्मणः।
बभूव द्विगुणं क्रुद्धो बह्विन्धन इवानलः २०
तं ते भयपरीताङ्गाः क्षुब्धं दृष्ट्वा प्लवंगमाः।
कालमृत्युयुगान्ताभं शतशो विद्रुता दिशः २१
ततः सुग्रीवभवनं प्रविश्य हरिपुंगवाः।
क्रोधमागमनं चैव लक्ष्मणस्य न्यवेदयन् २२
तारया सहितः कामी सक्तः कपिवृषस्तदा।
न तेषां कपिसिंहानां शुश्राव वचनं तदा २३

इक्ष्वाकुशार्दूल लक्ष्मणने सेनासे भरी हुई, दुःखसे प्राप्त होनेवाली ग्रीवकी बडी नगरी किष्किन्धाको बडे घने पर्वतके बीचमें देखा ॥ १६॥ ग्रीवके प्रति क्रोधसे जिनके ओठ फडक रहे हैं ऐसे लक्ष्मणने किष्किन्धा-बाहर घूमनेवाले भयानक वानरोंको देखा ॥ १७॥ उस पर्वतके मध्य-हाथीके सदृश, बाहर घूमनेवाले सब वानर पुरुषश्रेष्ठ लक्ष्मणको देख सैकडों पर्वतशिखर तथा बडे वृक्षोंको ग्रहण करने लगे ॥ १८-१९॥ रण वृक्षादि लिये उन वानरोंको देखकर अधिक इंधन वाले अग्निके दूने क्रुद्ध हो गये ॥ २० ॥ भयभीत हुए वे सैकडों वानर युगान्तके और मृत्युके सदृश कान्तिवाले, क्रुद्ध लक्ष्मणको देख कर चहुं दिशा-में भागने लगे ॥ २१ ॥

तदनन्तर वानरोंने सुग्रीवके भवनमें घुसकर लक्ष्मणका क्रोध और आना दन कर दिया॥ २२ ॥ तारासहित, कामी, एकांतमें आसक्त, वानरोंमें सुग्रीवने उस समय वानरवीरोंका वचन न सुना ॥ २३ ॥ तब मंत्रियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः सचिवसंदिष्टा हरयो रोमहर्षणाः।
गिरिकुञ्जरमेघाभा नगरान्निर्ययुस्तदा २४
नखदंष्ट्रायुधाः सर्वे वीरा विकृतदर्शनाः।
सर्वे शार्दूलदंष्ट्राश्च सर्वे विवृतदर्शनाः २५
दशनागबलाः केचित्केचिद्दशगुणोत्तराः।
केचिन्नागसहस्रस्य बभूवुस्तुल्यवर्चसः २६
ततस्तैः कपिभिर्व्याप्तां द्रुमहस्तैर्महाबलैः।
अपश्यल्लक्ष्मणः क्रुद्धः किष्किन्धां तां दुरासदाम् २७
ततस्ते हरयः सर्वे प्राकारपरिघान्तरात्।
निष्क्रम्योदग्रसत्त्वास्तु तस्थुराविष्कृतं तदा २८
सुग्रीवस्य प्रमादं च पूर्वजस्यार्थमात्मवान्।
दृष्ट्वा क्रोधवशं वीरः पुनरेव जगाम सः २९

से आज्ञस, रोमाञ्चोंको हर्षित करनेवाले, पर्वत तथा हाथियोंके वानर नगरीसे निकले ॥ २४ ॥ वे सब नख और दाढ रूप हथिया तिरछी निगाह वाले, सिंहोंके समान अहङ्कारी और सब टेढ मुखवाले, दश हाथियोंके सदृश बलवाले, कोई सौ हाथीके सदृश बलवाले, और हजार हाथियोंके समान तुल्य विक्रम वाले थे ॥ २५-२६ ॥

कोई बहुत बलवाले, कोई वायुबलके सदृश और वहां पर वानर अतुल बलवाले थे ॥ २६ ॥ महात्मा सुग्रीवकी उस वानरसेना वन (जिसमें किष्किन्धा नगरी थी) पूर्ण आकाशके समान ढका सा था ॥ २७ ॥ तब दुर्धर्ष अङ्गद राजाज्ञासे सब द्वारोंको दौ चन्द्रमा नक्षत्रोंको दौडता है ॥ २८ ॥ क्रोधित हुए लक्ष्मणने वृक्ष लिये हुए महाबली वानरोंसे भरी हुई, दुरासद उस समस्त किष्कि देखा ॥ २७ ॥ तब अत्यन्त पराक्रमवाले वे वानर परकोटाके परिघों से निकल कर प्रकाशित हो खडे हो गये ॥ २८ ॥

आत्मसंयमी वीर वह लक्ष्मण सुग्रीवका प्रमाद और रामको जानकर पुनः कोपाविष्ट हो गया ॥ २९ ॥ लम्बी तथा गरम हैं बडी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स दीर्घोष्णमहोच्छ्वासः कोपसंरक्तलोचनः।
बभूव नरशार्दूलः सधूम इव पावकः ३०
बाणशल्यस्फुरज्जिह्वः सायकासनभोगवान्।
स्वतेजोविषसंभूतः पञ्चास्य इव पन्नगः ३१
तं दीप्तमेव कालाग्निं नागेन्द्रमिव कोपितम्।
समासाद्याङ्गदस्त्रासाद्विषादमगमत्परम् ३२
सोऽङ्गदं रोषताम्राक्षः संदिदेश महायशाः।
सुग्रीवः कथ्यतां वत्स ममागमनमित्युत ३३
एष रामानुजः प्राप्तस्त्वत्सकाशमरिंदम।
भ्रातुर्व्यसनसंतप्तो द्वारि तिष्ठति लक्ष्मणः ३४
तस्य वाक्यं यदि रुचिः क्रियतां साधु वानरः।
इत्युक्त्वा शीघ्रमागच्छ वत्स वाक्यमरिंदम ३५
लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा शोकाविष्टोऽङ्गदोऽब्रवीत्।
पितुः समीपमागम्य सौमित्रिरयमागतः ३६

जिनकी ऐसे तथा कोपसे लाल नेत्रवाले नरश्रेष्ठ लक्ष्मण धूमसमेत अग्निके सदृश होगये ॥ ३० ॥

बाणका अग्रभाग रूपी लहलहाती जीभवाले, धनुष्रूपी फणवाले, अपने तेजरूपी विषवाले लक्ष्मण पांच मुखवाले सर्पके समान दीखने लगे ॥ ३१ ॥ कालाग्निके सदृश प्रकाशित, नागेन्द्र (सर्प) के सदृश क्रोधित लक्ष्मणके पास पहुंच कर अङ्गद भयसे खेदको प्राप्त होगया ॥ ३२ ॥

क्रोधसे लाल हो रहे हैं नेत्र जिसके ऐसे महायशस्वी लक्ष्मणने अङ्गदको आज्ञा दी कि हे वत्स ! सुग्रीवसे मेरे आनेको कहो ॥ ३३ ॥ " ये तुम्हारे समीपमें आये, वैरियोंका दमन करनेवाले, भाईके दुःखसे सन्तप्त, रामके छोटे भाई लक्ष्मण द्वार पर स्थित हैं ॥ ३४ ॥ हे अरिन्दम सुग्रीव ! उनके वाक्यमें यदि तुम्हारी रुचि है तो जो उचित हो सो कीजिये " हे वत्स ! ऐसा कहकर तुम शीघ्र ही आओ ॥ ३५ ॥ लक्ष्मणका वाक्य सुन कर शोकपूर्ण अङ्गद चचाके समीपमें आकर " यह लक्ष्मण आये हैं " यह बोला ॥ ३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अथाङ्गदस्तस्य सुतन्निवाचा संभ्रान्तभावः परदीनवक्त्रः।
निर्गत्य पूर्वं नृपतेस्तरस्वी ततो रुमायाश्चरणौ ववन्दे ३७
संगृह्य पादौ पितुरुग्रतेजा जग्राह मातुः पुनरेव पादौ।
पादौ रुमायाश्च निपीडयित्वा निवेदयामास ततस्तदर्थम् ३८
स निद्राक्लान्तसंवीतो वानरो न विबुद्धवान्।
बभूव मदमत्तश्च मदनेन च मोहितः ३९
ततः किलाकिलां चक्रुर्लक्ष्मणं प्रेक्ष्य वानराः।
प्रसादयन्तस्तं क्रुद्धं भयमोहितचेतसः ४०
ते महौघनिभं दृष्ट्वा वज्राशनिसमस्वनम्।
सिंहनादं समं चक्रुर्लक्ष्मणस्य समीपतः ४१
तेन शब्देन महता प्रत्यबुध्यत वानरः।
मदविह्वलताम्राक्षो व्याकुलः स्रग्विभूषणः ४२
अथाङ्गदवचः श्रुत्वा तेनैव च समागतौ।

इसके पश्चात् भ्रमयुक्त भाववाले, शुष्कमुखवाले, बलवान्, अतितेज कुमार अङ्गदने लक्ष्मणका वचन सुन कर शीघ्र ही झुककर राजा सुग्री चरणोंकी वन्दना की, पिताके चरण छूकर फिर अपनी माताके चर छुआ, फिर रुमा (जो सुग्रीवकी स्त्री थी) के चरणोंको छूकर पीछे मतलबको निवेदन किया ॥ ३७-३८ ॥ निद्रा और मदसे युक्त वानर सुग्रीव न चेता और मदिरा से मदमत्त तथा काम से मो हो गया ॥ ३९ ॥

तदनन्तर भयभीत हैं चित्त जिनके ऐसे वानर क्रुद्ध हुए लक्ष्मणको दे कर उसको प्रसन्न करते हुए किलकिल शब्द करने लगे ॥ ४० ॥ वे महाप्रवाहके समान आते हुए लक्ष्मणको देखकर एकदम लक्ष्मणके समी वज्र और बिजलीके समान सिंहनादको करने लगे ॥ ४१ ॥ नशे विकलतासे जिसके लाल नेत्र हो रहे हैं और उलझ रहीं हैं माला भूषण जिसके ऐसा सुग्रीव उस बडे शब्दसे जागा ॥ ४२ ॥ फिर अङ्ग वचनको सुनकर अङ्गदसे ही बुलाये हुए आये, श्रेष्ठमंत्र वाले, सुग्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मन्त्रिणौ वानरेन्द्रस्य संमतोदारदर्शनौ ४३
यक्षश्चैव प्रभावश्च मन्त्रिणावर्थधर्मयोः ।
वक्तुमुच्चावचं प्राप्तं लक्ष्मणं तौ शशंसतुः ४४
प्रसादयित्वा सुग्रीवं वचनैः सार्थनिश्चितैः ।
आसीनं पर्युपासीनौ यथा शक्रं मरुत्पतिम् ४५
सत्यसंधौ महभागौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
मनुष्यभावं संप्राप्तौ राज्यार्हौ राज्यदायिनौ ४६
तयोरेको धनुष्पाणिर्द्वारि तिष्ठति लक्ष्मणः ।
यस्य भीताः प्रवेपन्तो नादान्मुञ्चन्ति वानराः ४७
स एष राघवभ्राता लक्ष्मणो वाक्यसारथिः ।
व्यवसायरथः प्राप्तस्तस्य रामस्य शासनात् ४८
अयं च तनयो राजंस्ताराया दयितोऽङ्गदः ।
लक्ष्मणेन सकाशं ते प्रेषितस्त्वरयानघ ४९
सोऽयं रोषपरीताक्षो द्वारि तिष्ठति वीर्यवान् ।
वानरान्वानरपते चक्षुषा निर्दहन्निव ५०

भव, महलके भीतर जाने वाले यक्ष और प्रभाव नाम मंत्रियोंने अर्थ और धर्मके विषयमें ऊंच नीच बतानेको आये हुए लक्ष्मणका आना कह सुनाया ॥ ४३--४४ ॥ वे दोनों समझानेके वचनोंसे देवों के स्वामी इन्द्रके समान बैठे हुए सुग्रीवको प्रसन्न कर समीपमें बैठ कर बोले ॥ ४५ ॥ सत्यप्रतिज्ञावाले, महाभाग, मित्रताको प्राप्त हुए, राज्यके योग्य, राज्य-देनेवाले राम लक्ष्मण जो दो भाई हैं ॥ ४६ ॥ उनमेंसे एक लक्ष्मण धनुष हाथमें लिये द्वार पर खडे हैं, जिनके भयसे डरे हुए तथा कांपते वानर शब्द करते हैं ॥ ४७ ॥ सो यह रामके भाई, रामके वाक्यसे प्रेरित, उद्योगी लक्ष्मण उनकी आज्ञासे आये हैं ॥ ४८ ॥ हे पापरहित ! हे राजन् ! यह ताराका प्यारा पुत्र अङ्गद लक्ष्मणने आपके समीपमें शीघ्रतासे भेजा है ॥ ४९ ॥ हे वानरेश्वर ! क्रोधयुक्त नेत्रोंवाले वह बलवान् लक्ष्मण वानरोंको नेत्रोंसे जलाते हुए से द्वार पर स्थित हैं ॥ ५० ॥ हे महाराज !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्य मूर्ध्ना प्रणामं त्वं सपुत्रः सहबान्धवः ।
गच्छ शीघ्रं महाराज रोषो ह्यस्योपशाम्यताम् ५१
यथा हि रामो धर्मात्मा तत्कुरुष्व समाहितः ।
राजंस्तिष्ठ स्वसमये भव सत्यप्रतिश्रवः ५२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे एकत्रिंशः सर्गः ॥३१॥

द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

अङ्गदस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवः सचिवैः सह ।
लक्ष्मणं कुपितं श्रुत्वा मुमोचासनमात्मवान् १
स च तानब्रवीद्वाक्यं निश्चित्य गुरुलाघवम् ।
मन्त्रज्ञान्मन्त्रकुशलो मन्त्रेषु परिनिष्ठितः २
न मे दुर्व्याहृतं किंचिन्नापि मे दुरनुष्ठितम् ।
लक्ष्मणो राघवभ्राता क्रुद्धः किमिति चिन्तये ३
असुहृद्भिर्ममामित्रैर्नित्यमन्तरदर्शिभिः ।
मम दोषानुसंभूताञ्छ्राविते राघवानुजः ४

अब शीघ्र चलो और पुत्र तथा बान्धवोंके साथ आप उनको म... प्रणाम करके उनके क्रोधको दूर करो ॥ ५१ ॥ धर्मात्मा रामने जो कहा... एकान्तचित्त होकर उसको करो । हे राजन् ! अपनी मर्यादामें स्थित... और सत्यप्रतिज्ञा वाले होवो ॥ ५२ ॥

॥ यहाँ ३१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

मन्त्रियोंके साथ अङ्गदका वचन सुनकर और कुपित लक्ष्म... (आया) सुनकर आत्मज्ञान वाले सुग्रीवने आसन छोड दिया... भयसे झट खडा हो गया ॥ १ ॥ मन्त्रकुशल सुग्रीव बडाई छुटाई... कर मन्त्र (सलाह) के विषयमें अतिज्ञानी, मन्त्रके जाननेवाले मं... बोला ॥ २ ॥ मैंने कुछ अनुचित वाक्य नहीं कहा और न उनका... किया है फिर रामके भाई लक्ष्मण कुपित क्यों हैं ? मुझे यह चि... ॥ ३ ॥ दुष्ट हृदयवाले नित्य छिद्र ढूंढनेवाले शत्रुओंने मेरे असम्भव... लक्ष्मणको सुनाये हैं (ऐसा प्रतीत होता है) ॥ ४ ॥ ऐसे विषय...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अत्र तावद्यथाबुद्धिः सर्वैरेव यथाविधि।
भावस्य निश्चयस्तावद्विज्ञेयो निपुणं शनैः ५
न खल्वस्ति मम त्रासो लक्ष्मणान्नापि राघवात्।
मित्रं त्वस्थानकुपितं जनयत्येव संभ्रमम् ६
सर्वथा सुकरं मित्रं दुष्करं प्रतिपालनम्।
अनित्यत्वात्तु चित्तानां प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते ७
अतोऽनिमित्तं त्रस्तोऽहं रामेण तु महात्मना।
यन्ममोपकृतं शक्यं प्रतिकर्तुं न तन्मया ८
सुग्रीवेणैवमुक्ते तु हनूमान्हरिपुङ्गवः।
उवाच स्वेन तर्केण मध्ये वानरमन्त्रिणाम् ९
सर्वथा नैतदाश्चर्यं यत्त्वं हरिगणेश्वर।
न विस्मरस्यविस्रब्धमुपकारं कृतं शुभम् १०
राघवेण तु वीरेण भयमुत्सृज्य दूरतः।
त्वत्प्रियार्थं हतो वाली शक्रतुल्यपराक्रमः ११

मनुष्योंको प्रथम बुद्धिके अनुसार यथाक्रम चेष्टाका निश्चय निपुणतासे शनैः २ करना उचित है ॥ ५ ॥ यह निश्चय है कि मुझे राम तथा लक्ष्मणसे भय नहीं है किन्तु अकस्मात् या विना अपराध कुपित हुआ मित्र भय उत्पन्न करता ही है ॥ ६ ॥ मित्रता करना तो सब प्रकार सहज है; किन्तु उसका पालन करना कठिन है, क्योंकि चित्तोंके अनित्य होनेसे थोडीसी ही विषमता होने पर प्रीति टूट जाती है ॥ ७ ॥ महात्मा रामने जो मेरा उपकार किया है मैं उसका बदला देनेको असमर्थ हूं, इस हेतु मैं भयभीत हो रहा हूं ॥ ८ ॥ सुग्रीवके इस प्रकार कहनेपर वानरश्रेष्ठ हनुमान् वानर-मन्त्रियोंके बीचमें अपने तर्कसे बोला ॥ ९ ॥

हे वानरयूथप ! यह आश्चर्य नहीं है कि जो आप सर्वथा हितैषी तथा उपकारीको नहीं भूलते हो ॥ १० ॥ वीर रामने भय त्याग कर आपके प्रियकी कामनासे इन्द्रतुल्यपराक्रमी वालिको मारा था ॥ ११ ॥ इसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्वथा प्रणयात्क्रुद्धो राघवो नात्र संशयः।
भ्रातरं संप्रहितवाँल्लक्ष्मणं लक्ष्मिवर्धनम् १२
त्वं प्रमत्तो न जानीषे कालं कालविदां वर।
फुल्लसप्तच्छदश्यामा प्रवृत्ता तु शरच्छुभा १३
निर्मलग्रहनक्षत्रा द्यौः प्रनष्टबलाहका।
प्रसन्नाश्च दिशः सर्वाः सरितश्च सरांसि च १४
प्राप्तमुद्योगकालं तु नावैषि हरिपुङ्गव।
त्वं प्रमत्त इति व्यक्तं लक्ष्मणोऽयमिहागतः १५
आर्तस्य हृतदारस्य परुषं पुरुषान्तरात्।
वचनं मर्षणीयं ते राघवस्य महात्मनः १६
कृतापराधस्य हि ते नान्यत्पश्याम्यहं क्षमम्।
अन्तरेणाञ्जलिं बद्ध्वा लक्ष्मणस्य प्रसादनात् १७
नियुक्तैर्मन्त्रिभिर्वाच्यो ह्यवश्यं पार्थिवो हितम्।
इत एव भयं त्यक्त्वा ब्रवीम्यवधृतं वचः १८
अभिक्रुद्धः समर्थो हि चापमुद्यम्य राघवः।

बिलकुल सन्देह नहीं कि (सीताके) प्रेमसे क्रुद्ध हुए रामने शो... बढाने वाले भाई लक्ष्मणको भेजा है ॥ १२ ॥ हे कालज्ञोंमें श्रेष्ठ ! ... हुए आप क्या समयको नहीं जानते कि फूले हुए सप्तच्छद वृक्षोंसे ... वर्णवाली शरदृतु आगई है ? ॥ १३ ॥ आकाश निर्मलग्रह और नक्षत्र... है, सब दिशा, नदी और तालाब स्वच्छ हैं ॥ १४ ॥

हे वानरश्रेष्ठ ! प्रमत्त तुम प्राप्त हुए उद्योगके समयको नहीं ... निश्चय यही समझ कर यह लक्ष्मण यहां आये हैं ॥ १५ ॥ पीड़ि... भार्याहीन, महात्मा रामका कठोर वचन दूसरे पुरुषसे भी आपको ... चाहिये ॥ १६ ॥ हाथ जोडकर लक्ष्मणके प्रसन्न कर लेनेके अतिरिक्त ... राधी आपका अन्य साधन मैं नहीं समझता ॥ १७ ॥ नियुक्त मन्त्रि... अवश्य हितकारी वाक्य राजासे कहना चाहिये, अतएव मैं भयको ... कर निश्चित कहता हूं ॥ १८ ॥ क्रुद्ध हुए राम धनुष उठाकर देव,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सदेवासुरगन्धर्वं वशे स्थापयितुं जगत् १९
न स क्षमः कोपयितुं यः प्रसाद्यः पुनर्भवेत्।
पूर्वोपकारं स्मरता कृतज्ञेन विशेषतः २०
तस्य मूर्ध्ना प्रणम्य त्वं स पुत्रः ससुहृज्जनः।
राजंस्तिष्ठ स्वसमये भर्तुर्भार्येव तद्वशे २१
न रामरामानुजशासनं त्वया कपीन्द्र युक्तं मनसाप्यपोहितुम्।
मनो हि ते ज्ञास्यति मानुषं बलं स राघवस्यास्य सुरेन्द्रवर्चसः २२
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे द्वात्रिंशः सर्गः ॥३२॥[१३८६]

त्रयस्त्रिंशः सर्गः।

अथ प्रतिसमादिष्टो लक्ष्मणः परवीरहा।
प्रविवेश गुहां रम्यां किष्किन्धां रामशासनात् १
द्वारस्था हरयस्तत्र महाकाया महाबलाः।
बभूवुर्लक्ष्मणं दृष्ट्वा सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः २
निःश्वसंतं तु तं दृष्ट्वा क्रुद्धं दशरथात्मजम्।

...और गन्धर्वों समेत सब जगत्को वशमें रखनेको समर्थ हैं ॥ १९ ॥ ...पहिले उपकारको स्मरण करते हुए विशेषतः कृतज्ञको जो प्रसादनीय होवे ...उसको क्रोध कराना न चाहिये ॥ २० ॥ ... हे राजन्! पुत्र और मित्रों समेत आप उनको मस्तकसे प्रणाम कर ...अपनी मर्यादामें और उनके वशमें स्थित रहो जैसे पतिके वशमें पत्नी ...रहती है ॥ २१ ॥ हे वानरेन्द्र! राम और लक्ष्मणकी आज्ञा आप ...को मनसे भी दूर करनी उचित नहीं है; क्योंकि लक्ष्मण सहित इन्द्र ...समान तेजस्वी रामके मानुषबलको तुम्हारा मन जानता ही है ॥ २२ ॥

॥ यहाँ ३२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

...इसके अनन्तर रामाज्ञासे वहां प्राप्त, शत्रुओंका नाश करनेवाले ...(अंगदसे) बुलाये हुए लक्ष्मण घोर किष्किन्धामें प्रविष्ट हुए ॥ १ ॥ वहां ...द्वार पर स्थित महाशरीरधारी महाबली सब वानर लक्ष्मणको देखकर हाथ ...जोड़कर खडे होगये ॥ २ ॥ श्वास लेते हुए क्रोधी दशरथके पुत्रको देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बभूवुर्हरयस्त्रस्ता न चैनं पर्यवारयन् ३
स तां रत्नमयीं दिव्यां श्रीमान्पुष्पितकाननाम्।
रम्यां रत्नसमाकीर्णां ददर्श महतीं गुहाम् ४
हर्म्यप्रासादसंबाधां नानारत्नोपशोभिताम्।
सर्वकामफलैर्वृक्षैः पुष्पितैरुपशोभिताम् ५
देवगन्धर्वपुत्रैश्च वानरैः कामरूपिभिः।
दिव्यमाल्याम्बरधरैः शोभितां प्रियदर्शनैः ६
चन्दनागुरुपद्मानां गन्धैः सुरभिगन्धिताम्।
मैरेयाणां मधूनां च संमोदितमहापथाम् ७
विन्ध्यमेरुगिरिप्रख्यैः प्रासादैर्नैकभूमिभिः।
ददर्श गिरिनद्यश्च विमलास्तत्र राघवः ८
अङ्गदस्य गृहं रम्यं मैन्दस्य द्विविदस्य च।
गवयस्य गवाक्षस्य गजस्य शरभस्य च ९
विद्युन्मालेश्च संपातेः सूर्याक्षस्य हनूमतः।
वीरबाहोः सुबाहोश्च नलस्य च महात्मनः १०

सब वानर डर गये और उनको रोका नहीं ॥ ३ ॥

श्रीमान् लक्ष्मणने पुष्पित वनवाली, रत्नोंसे पूर्ण, रत्नमयी, दि[व्य] महल और देवगृहोंसे युक्त, अनेक दूकानोंसे शोभित, पुष्पित सर्व का[मना] वाले फलोंसे युक्त, वृक्षोंसे शोभित, कामरूपी दिव्य वस्त्र और [पु]ष्प धारण करनेवाले, देखनेमें प्रिय, देव गंधर्वोंके पुत्र वानरोंसे शो[भित] श्रेष्ठ गन्धवाले चन्दन; अगरु और पद्म, मैरेय और मधुकी गंधोंसे सु[गंधित] मार्गवाली ॥ ४–७ ॥ तथा विंध्य और मेरु पर्वतके समान अनेक प्र[स्थ] भूमि वाले महलोंसे सुशोभित बडी किष्किन्धाको देखा लक्ष्मणने [वहाँ] पर विमलजल वाली पर्वतकी नदियोंको भी देखा ॥ ८ ॥

लक्ष्मणने राजमार्गसें अंगदका रमणीय घर और मैन्द, द्वि[विद] गवय, गवाक्ष, गज, शरभ, ॥ ९ ॥ विद्युन्मालि, सम्पाति, [सूर्याक्ष] हनुमान्, वीरबाहु, सुबाहु और महात्मा नल, ॥ १० ॥ कुमुद,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कुमुदस्य सुषेणस्य तारजाम्बवतोस्तथा।
दधिवक्त्रस्य नीलस्य सुपाटलसुनेत्रयोः ११
एतेषां कपिमुख्यानां राजमार्गे महात्मनाम्।
ददर्श गृहमुख्यानि महासाराणि लक्ष्मणः १२
पाण्डुराभ्रप्रकाशानि गन्धमाल्ययुतानि च।
प्रभूतधनधान्यानि स्त्रीरत्नैः शोभितानि च १३
पाण्डुरेण तु शैलेन परिक्षिप्तं दुरासदम्।
वानरेन्द्रगृहं रम्यं महेन्द्रसदनोपमम् १४
शुक्लैः प्रासादशिखरैः कैलासशिखरोपमैः।
सर्वकामफलैर्वृक्षैः पुष्पितैरुपशोभितम् १५
महेन्द्रदत्तैः श्रीमद्भिर्नीलजीमूतसंनिभैः।
दिव्यपुष्पफलैर्वृक्षैः शीतच्छायैर्मनोरमैः १६
हरिभिः संवृतद्वारं बलिभिः शस्त्रपाणिभिः।
दिव्यमाल्यावृतं शुभ्रं तप्तकाञ्चनतोरणम् १७
सुग्रीवस्य गृहं रम्यं प्रविवेश महाबलः।
अवार्यमाणः सौमित्रिर्महाभ्रमिव भास्करः १८

...र, जम्बवान्, दधिवक्त्र, नील, सुपाटल और सुनेत्र ॥ ११ ॥ इन महा-...त्मा मुख्य वानरोंके दृढ श्वेत बादलके सदृश प्रकाशित, दिव्य पुष्पादि द्रव्योंसे युक्त, प्रचुर धनधान्ययुक्त, स्त्रीरूप रत्नोंसे शोभित मुख्य गृहोंको देखा ॥ १२-१३ ॥

...नहीं रोके गये महाबली लक्ष्मण चूनेसे पुते परकोटेसे घिरे हुए अतएव दुरासद, इन्द्रभवनके समान, कैलाशशिखरके सदृश श्वेत प्रासादशिखरोंसे युक्त, सब कामनाओंको देनेवाले फलों वाले पुष्पित वृक्ष और इन्द्रसे दिये हुए शोभायमान, नील मेघोंके सदृश दिव्य पुष्प फलों वाले शीतल छायावाले मनोरम वृक्षोंसे सुशोभित, शस्त्र ग्रहण किये बलवान् वानरोंसे संवृत द्वारवाले; दिव्य माल्यादि द्रव्योंसे युक्त उज्ज्वल, तप्तसुवर्णके तोरणवाले, रम्य, वानरेन्द्र सुग्रीवके गृहमें प्रविष्ट हुए जैसे महामेघमें सूर्य प्रवेश करता है ॥ १४-१८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स सप्तकक्ष्या धर्मात्मा यानासनसमावृताः।
ददर्श सुमहद्गुप्तं ददर्शान्तःपुरं महत् १९
हैमराजतपर्यङ्कैर्बहुभिश्च वरासनैः।
महार्हास्तरणोपेतैस्तत्र तत्र समावृतम् २०
प्रविशन्नेव सततं शुश्राव मधुरस्वनम्।
तन्त्रीगीतसमाकीर्णं समतालपदाक्षरम् २१
बह्वीश्च विविधाकारा रूपयौवनगर्विताः।
स्त्रियः सुग्रीवभवने ददर्श स महाबलः २२
दृष्ट्वाभिजनसंपन्नास्तत्र माल्यकृतस्रजः।
वरमाल्यकृतव्यग्रा भूषणोत्तमभूषिताः २३
नातृप्तान्नाति च व्यग्राननुदात्तपरिच्छदान्।
सुग्रीवानुचरांश्चापि लक्षयामास लक्ष्मणः २४
कूजितं नूपुराणां च काञ्चीनां निःस्वनं तथा।
स निशम्य ततः श्रीमान्सौमित्रिर्लज्जितोऽभवत् २५

धर्मात्मा लक्ष्मणने अनेक जनोंसे व्याप्त सात ड्योढियोंमें प्रवे[श] अच्छी तरह रक्षित, बहुतसे श्रेष्ठ आसन तथा बहुमूल्य बिछौनोंसे सोने चांदीके बहुतसे पलङ्गोंसे जहां तहां शोभित, बडे अन्तःपुर (र[निवास]) को देखा॥ १९-२० ॥ उन लक्ष्मणने घुसते हुए ही वीणादि [से] उत्पन्न, तन्त्रीकी ध्वनि और गीतोंसे व्याप्त, समान गीत; पद और [अक्षर]वाले मधुरस्वरको सुना ॥ २१ ॥ महाबली लक्ष्मणने सुग्रीवके [भवनमें] अनेक आकारवाली, रूप और यौवनसे गर्वित, बहुत स्त्रियोंको [देखा] ॥ २२ ॥ लक्ष्मणने जातीय मनुष्योंसे युक्त, चित्रित फूलोंकी माला[ओंसे युक्त] वरमाल्यादिकोंके सम्पादनार्थ, घबडायी हुई, उत्तम भूषणोंसे [भूषित] स्त्रियोंको देखकर तृप्त, सुखी, श्रेष्ठ वस्त्रधारी सुग्रीवके सेवकों[को भी] देखा ॥ २३-२४ ॥

तदनन्तर श्रीमान् सुमित्रापुत्र लक्ष्मण बिछुवोंकी झनकार और [करधनी]की आवाजको सुनकर लज्जित हो गये ॥ २५ ॥ रोषके वेगसे कुपित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रोषवेगप्रकुपितः श्रुत्वा चाभरणस्वनम्।
चकार ज्यास्वनं वीरो दिशः शब्देन पूरयन् २६
चारित्रेण महाबाहुरपकृष्टः स लक्ष्मणः।
तस्थावेकान्तमाश्रित्य रामकोपसमन्वितः २७
तेन चापस्वनेनाथ सुग्रीवः प्लवगाधिपः।
विज्ञायागमनं त्रस्तः स चचाल वरासनात् २८
अङ्गदेन यथा मह्यं पुरस्तात्प्रतिवेदितम्।
सुव्यक्तमेष संप्राप्तः सौमित्रिर्भ्रातृवत्सलः २९
अङ्गदेन समाख्यातो ज्यास्वनेन च वानरः।
बुबुध लक्ष्मणं प्राप्तं मुखं चास्योपशुष्यत ३०
ततः तारां हरिश्रेष्ठः सुग्रीवः प्रियदर्शनाम्।
उवाच हितमव्यग्रस्त्राससंभ्रान्तमानसः ३१
किं नु तत्कारणं सुभ्रु प्रकृत्या मृदुमानसः।
सरोष इव संप्राप्तो येनायं राघवानुजः ३२
किं पश्यसि कुमारस्य रोषस्थानमनिन्दिते।

लक्ष्मणने आभूषणोंके शब्दको सुनकर शब्दसे दिशाओंको पूर्ण करते हुए धनुषकी प्रत्यञ्चाका शब्द किया ॥ २६ ॥ सदाचारसे अपकृष्टमना तथा राम विषयक कोपसे युक्त वह लक्ष्मण एकान्तका सहारा लेकर रुक गया ॥ २७ ॥ अब वानरेश्वर सुग्रीव उस धनुषके शब्दसे (लक्ष्मणका) आगमन समझ कर भयभीत हो श्रेष्ठ आसनसे चलायमान हो गया ॥ २८ ॥ (और सोचने लगा) जैसा कि अङ्गदने पहिले मुझसे कहा था सो निश्चय ही भाईके प्यारे लक्ष्मण आये हैं ॥ २९ ॥ सुग्रीव अङ्गदसे कहे हुए लक्ष्मणको प्रत्यञ्चाके शब्दसे आया समझ गया और उसका मुख सूख गया ॥ ३० ॥ तदनन्तर सावधान वानरश्रेष्ठ सुग्रीव भयसे आकुलचित्त हो प्रियदर्शन तारासे हित वाक्य बोला ॥ ३१ ॥ हे सुन्दर भृकुटिवाली ! वह कौनसा कारण है जिससे कि स्वभावसे कोमल मनवाले यह लक्ष्मण क्रोधयुक्त आये हैं ॥ ३२ ॥ हे श्रेष्ठे ! क्या तू लक्ष्मणके क्रोधके हेतुको जानती है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न खल्वकारणे कोपमाहरेन्नरपुंगवः ३३
यद्यस्य कृतमस्माभिर्बुध्यसे किंचिदप्रियम्।
तद्बुद्ध्या संप्रधार्याशु क्षिप्रमेवाभिधीयताम् ३४
अथवा स्वयमेवैनं द्रष्टुमर्हसि भामिनि।
वचनैः सान्त्वयुक्तैश्च प्रसादयितुमर्हसि ३५
त्वद्दर्शने विशुद्धात्मा न स्म कोपं करिष्यति।
न हि स्त्रीषु महात्मानः क्वचित्कुर्वन्ति दारुणम् ३६
त्वया सान्त्वैरुपक्रान्तं प्रसन्नेन्द्रियमानसम्।
ततः कमलपत्राक्षं द्रक्ष्याम्यहमरिंदमम् ३७
सा प्रस्खलन्ती मदविह्वलाक्षी प्रलम्बकाञ्चीगुणहेमसूत्रा।
सलक्षणा लक्ष्मणसंनिधानं जगाम तारा नमिताङ्गयष्टिः ३८
स तां समीक्ष्यैव हरीशपत्नीं तस्थावुदासीनतया महात्मा।
अवाङ्मुखोऽभून्मनुजेन्द्रपुत्रः स्त्रीसंनिकर्षाद्विनिवृत्तकोपः ३९

यह निश्चित है कि नरश्रेष्ठ वह विना कारण क्रोध नहीं करेगा ॥ ३३ ॥ यदि तुम हमसे किये गये उसके अप्रिय कर्मको जानती हो तो शीघ्र बुद्धिसे विचार कर कहो ॥ ३४ ॥

अथवा इनको देखने तथा बातचीत करनेको तुम ही योग्य हो सान्त्वनायुक्त वाक्योंसे प्रसन्न करनेके योग्य हो ॥ ३५ ॥ (इसलिये तुम्हारे दर्शनसे विशुद्ध आत्मावाले वह कोप नहीं करेंगे, क्योंकि महात्मा स्त्रियोंमें कभी दारुण व्यवहार नहीं करते हैं ॥ ३६ ॥ तुम्हारे समझानेसे प्रसन्न इन्द्रिय और मनवाले, यहां आये हुए, वैरियोंका नाश करनेवाले, कमल सदृश नेत्रवाले लक्ष्मणको तब मैं देखूंगा ॥ ३७ ॥ तब गिरती पडती, मदसे विह्वलित नेत्रवाली, लटक रहीं हैं तगडोकी कडियां तथा सुवर्णके सूत्र जिसके ऐसी तथा श्रेष्ठ चिन्होंसे युक्त, झुके हुए अंगवाली तारा लक्ष्मणके समीपमें आयी ॥ ३८ ॥

महात्मा लक्ष्मण वानर वालिकी स्त्री को देखकर उदासीनतासे खड़े रह गये। स्त्री के समीप होनेसे दूर हो गया है क्रोध जिनका ऐसे राजपुत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

[...] पानयोगाच्च निवृत्तलज्जा दृष्टिप्रसादाच्च नरेन्द्रसूनोः ।
[...]वाच तारा प्रणयप्रगल्भं वाक्यं महार्थं परिसान्त्वरूपम् ४०
[...]किं कोपमूलं मनुजेन्द्रपुत्र कस्ते न संतिष्ठति वाङ्निदेशे ।
[...]: शुष्कवृक्षं वनमापतन्तं दावाग्निमासीदति निर्विशङ्कः ४१
स तस्या वचनं श्रुत्वा सान्त्वपूर्वमशाङ्कितः ।
भूयः प्रणयदृष्टार्थं लक्ष्मणो वाक्यमब्रवीत् ४२
किमयं कामवृत्तस्ते लुप्तधर्मार्थसंग्रहः ।
भर्ता भर्तृहिते युक्ते न चैवमवबुध्यसे ४३
न चिन्तयति राज्यार्थं सोऽस्माञ्छोकपरायणान् ।
सामान्यपरिषत्कारे काममेवोपसेवते ४४
स मासांश्चतुरः कृत्वा प्रमाणं प्लवगेश्वरः ।
व्यतीतांस्तान्मदोदग्रो विहरन्नावबुध्यते ४५
न हि धर्मार्थसिद्ध्यर्थं पानमेव प्रशस्यते ।

[...]क्ष्मणने नीचेको मुख कर लिया ॥ ३९ ॥ नशा पीनेसे दूर हो गयी है लज्जा [...]सकी ऐसी तारा धर्मात्मा लक्ष्मणकी दृष्टिकी प्रसन्नतासे स्नेहयुक्त, बडे [...]र्थवाले, सान्त्वनापूर्वक वाक्य बोली ॥ ४० ॥ हे राजपुत्र ! आपके कोप-[...] क्या कारण है ? आपकी आज्ञामें कौन नहीं ठहरता ? वह कौन है जो [...]के वृक्षोंवाले वनमें लगी अग्निसे भयभीत नहीं होता है ? ॥ ४१ ॥ वह [...]क्ष्मण ताराके सान्त्वनायुक्त, स्नेहरहित, स्नेहदर्शित, प्रयोजनवाले वाक्य-[...] सुनकर फिर बोले ॥ ४२ ॥

[...]हे पतिके हितमें आसक्त ! लोप हो गया है धर्म और अर्थका संग्रह [...]सका ऐसा कामचारी यह तेरा पति है, क्या इसे नहीं जानती ॥ ४३ ॥ [...]गे । यह न राज्यकी और न शोकपरायण हम लोगोंकी चिन्ता करता [...]मंत्री और सभासमेत पान (मद्यादि) को ही सेवन करता है ॥ ४४ ॥ [...] वानरेश्वर चार मासोंकी मर्यादा (अवधि) करके मदमत्त हो विहार [...]ता हुआ व्यतीत हुए मासोंको नहीं जानता ॥ ४५ ॥

[...]धर्म और अर्थ (धन या प्रयोजन) की सिद्धिके वास्ते (मद्य) पान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पानादर्थश्च कामश्च धर्मश्च परिहीयते ४६
धर्मलोपो महांस्तावत्कृते ह्यप्रतिकुर्वतः।
अर्थलोपश्च मित्रस्य नाशे गुणवतो महान् ४७
मित्रं ह्यर्थगुणश्रेष्ठं सत्यधर्मपरायणम्।
तद्द्वयं तु परित्यक्तं न तु धर्मे व्यवस्थितम् ४८
तदेवं प्रस्तुते कार्ये कार्यमस्माभिरुत्तरम्।
तत्कार्यं कार्यतत्त्वज्ञे त्वमुदाहर्तुमर्हसि ४९
सा तस्य धर्मार्थसमाधियुक्तं निशम्य वाक्यं मधुरस्वभावम्।
तारागतार्थे मनुजेन्द्रकार्ये विश्वासयुक्तं तमुवाच भूयः ५०
न कोपकालः क्षितिपालपुत्र न चापि कोपः स्वजने विधेयः।
त्वदर्थकामस्य जनस्य तस्य प्रमादमप्यर्हसि वीर सोढुम् ५१
कोपं कथं नाम गुणप्रकृष्टः कुमार कुर्यादपकृष्टसत्त्वे।
कस्त्वद्विधः कोपवशं हि गच्छेत्सत्त्वावरुद्धस्तपसः प्रसूतिः ५२

सेवन करना प्रशंसनीय नहीं, क्योंकि पानसे धर्म, अर्थ और काम ... होता है ॥ ४६ ॥ उपकारके करनेपर प्रतिकार न करनेवालेका ... धर्मका लोप होता है और गुणवान् मित्रके नाश होनेपर अर्थका नाश ... कामका भी नाश होता है ॥ ४७ ॥ सत्यधर्ममें परायण, अर्थ गुणमें ... मित्रको त्यागते हुए सुग्रीवने अर्थ काम तो छोड ही दिये और धर्ममें स्थित नहीं है, उसे भी छोड दिया ॥ ४८ ॥

हे कार्यतत्त्वज्ञे ! सो इस प्रकार कार्यके उपस्थित होनेपर पश्चात् हमको कार्य करना चाहिये, उसे बताइये ॥ ४९ ॥ वह तारा लक्ष्मणके ... अर्थ तथा समाधियुक्त, स्वभावसे ही मधुर वाक्यको सुनकर प्रयोजन ... रामके कार्यके विषयमें विश्वासयुक्त वाक्य फिर कहने लगी ॥ ५० ॥ ... नृपपुत्र ! क्रोधका समय नहीं है, न अपने मनुष्योंमें क्रोध करना ... हे वीर ! तुम रामके प्रयोजनमें तत्पर सुग्रीवके प्रमादको भी सहनेको ... हो ॥ ५१ ॥ हे कुमार ! गुणोंमें उत्कृष्ट कौन पुरुष हीन बलवालेपर ... करता है ? व्यवसाययुक्त, शान्तिरूपके उत्पत्तिस्थान आप सदृश (पुरुष) कोपके वशमें प्राप्त होता है ? ॥ ५२ ॥ रामके क्रोधको मैं ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जानामि कोपं हरिवीरबन्धोर्जानामि कार्यस्य च कालसङ्गम्।
जानामि कार्यं त्वयि यत्कृतं नस्तच्चापि जानामि यदत्र कार्यम् ५३
तच्चापि जानामि तथाऽविषह्यं बलं नरश्रेष्ठ शरीरजस्य।
जानामि यस्मिंश्च जनेऽवबद्धं कामेन सुग्रीवमसक्तमद्य ५४
न कामतन्त्रे तव बुद्धिरस्ति त्वं वै यथा मन्युवशं प्रपन्नः।
न देशकालौ हि यथार्थधर्माववेक्षते कामरतिर्मनुष्यः ५५
तं कामवृत्तं मम संनिकृष्टं कामाभियोगाच्च विमुक्तलज्जम्।
क्षमस्व तावत्परवीरहन्तस्त्वद्भ्रातरं वानरवंशनाथम् ५६
महर्षयो धर्मतपोभिरामाः कामानुकामाः प्रतिबद्धमोहाः।
अयं प्रकृत्या चपलः कपिस्तु कथं न सज्जेत सुखेषु राजा ५७
इत्येवमुक्त्वा वचनं महार्थं सा वानरी लक्ष्मणमप्रमेयम्।
पुनः सखेदं मदविह्वलाक्षी भर्तुर्हितं वाक्यमिदं बभाषे ५८

हूं, उद्योगरूप कार्यके समयविलम्बको भी जानती हूं, वालिवध रूप हमारा कार्य जो तुमने किया है, उसे भी जानती हूं और जो अब करना चाहिये, उसे भी जानती हूं ॥ ५३ ॥

हे राजन्! जैसा कि असहनीय कामदेवका बल है; उसे भी जानती हूं, आजकल सुग्रीव जिस (स्त्री) में कामसे निरन्तर आसक्त है, उसको भी जानती हूं ॥ ५४ ॥ जिससे कि तुम क्रोधके वशमें प्राप्त हुए हो इससे मालूम पडता है कि कामतन्त्र (रतिक्रीडा आदि) में तुम्हारी बुद्धि नहीं है, जो कामी मनुष्य होता है वह देश, काल, अर्थ धर्म किसीकी अपेक्षा नहीं करता ॥ ५५ ॥ हे शत्रुओंके नाश करनेवाले! तुम मेरे समीपस्थ, कामयोगसे लज्जाहीन, कामी, अपने भाई वानरेन्द्र सुग्रीवको क्षमा करो ॥ ५६ ॥ धर्म और तपकी कामना करनेवाले अभिलाषाके पीछे हैं काम जिनके ऐसे महर्षि (भी) मोहसे बंध गये थे। यह स्वभावसे चपल, वानर तथा राजा है सो सुखोंमें कैसे न आसक्त हो ? ॥ ५७ ॥ वह वानरी इस प्रकार बहुत अर्थवाले वचनको कहकर फिर लीलासहित मदसे व्याकुलित, भर्ताके हितकारी इस वाक्यको अप्रमेय लक्ष्मणसे बोली ॥ ५८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उद्योगस्तु चिराज्ञप्तः सुग्रीवेण नरोत्तम ।
कामस्यापि विधेयेन तवार्थप्रतिसाधने ५९
आगता हि महावीर्या हरयः कामरूपिणः ।
कोटीः शतसहस्राणि नानानगनिवासिनः ६०
तदागच्छ महाबाहो चारित्रं रक्षितं त्वया ।
अच्छलं मित्रभावेन सतां दारावलोकनम् ६१
तारया चाप्यनुज्ञातस्त्वरया वापि चोदितः ।
प्रविवेश महाबाहुरभ्यन्तरमरिंदमः ६२
ततः सुग्रीवमासीनं काञ्चने परमासने ।
महार्हास्तरणोपेते ददर्शादित्यसंनिभम् ६३
दिव्याभरणचित्राङ्गं दिव्यरूपं यशस्विनम् ।
दिव्यमाल्याम्बरधरं महेन्द्रमिव दुर्जयम् ६४
दिव्याभरणमालाभिः प्रमदाभिः समन्ततः ।
संरब्धतररक्ताक्षो बभूवान्तकसंनिभः ६५

हे नरोत्तम ! कामके वशमें हुए भी सुग्रीवने आपके प्रयोजनकी सिद्धिके वास्ते बहुत समय पूर्वसे उद्योगको तो आज्ञा दे दी है ॥ ५९ ॥ अनेक पर्वतोंपर रहनेवाले, महाबली, कामरूपी, लक्षों करोडों वानर आ गये ॥ ६० ॥ हे महाबाहो ! आपने (बाहर खडे होकर) सदाचारकी रक्षा कर ली, सो आइये, मित्रभावसे श्रेष्ठ पुरुषोंको स्त्रीका देखना दूषित नहीं ॥ ६१ ॥ तारा द्वारा आज्ञा दिये और शीघ्रतासे प्रेरित हुए, शत्रुनाशक महाबाहु लक्ष्मण भीतर प्रविष्ट हो गये ॥ ६२ ॥

इसके अनन्तर (लक्ष्मणने) बहुमूल्य बिछौनेसे युक्त काञ्चनके आसनपर बैठे हुए, सूर्यके समान, दिव्य आभरणोंसे चित्रित अङ्ग, दिव्यरूपवाले, यशस्वी, दिव्य पुष्प और वस्त्रधारी, इन्द्रके सदृश दुर्जय, दिव्य आभरण और फूलोंवाली स्त्रियोंसे युक्त सुग्रीवको देखा और (देखकर) कुपित, लालनेत्र कर यमराजके सदृश हो गये ॥ ६३-६५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रुमां तु वीरः परिरभ्य गाढं वरासनस्थो वरहेमवर्णः।
ददर्श सौमित्रिमदीनसत्त्वं विशालनेत्रः स विशालनेत्रम् ६६

इत्यार्षे श्रीमद्वा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥३३॥ [१४५२]

चतुस्त्रिंशः सर्गः।

तमप्रतिहतं क्रुद्धं प्रविष्टं पुरुषर्षभम्।
सुग्रीवो लक्ष्मणं दृष्ट्वा बभूव व्यथितेन्द्रियः १
क्रुद्धं निःश्वसमानं तं प्रदीप्तमिव तेजसा।
भ्रातुर्व्यसनसंतप्तं दृष्ट्वा दशरथात्मजम् २
उत्पपात हरिश्रेष्ठो हित्वा सौवर्णमासनम्।
महान्महेन्द्रस्य यथा स्वलंकृत इव ध्वजः ३
उत्पतन्तमनूत्पेतू रुमाप्रभृतयः स्त्रियः।
सुग्रीवं गगने पूर्णं चन्द्रं तारागणा इव ४
संरक्तनयनः श्रीमान्संचचार कृताञ्जलिः।
बभूवावस्थितस्तत्र कल्पवृक्षो महानिव ५

नेत्रवाले, श्रेष्ठ सुवर्णके सदृश रंगवाले, रुमाको अच्छी तरह आलिङ्गन करके श्रेष्ठ आसनपर स्थित, वीर सुग्रीवने विशाल नेत्रवाले अहीन पुरुषार्थ वाले, लक्ष्मणको देखा ॥ ६६ ॥

॥ यहाँ ३३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

अनवरुद्ध, प्रविष्ट हुए, क्रुद्ध लक्ष्मणको देखकर सुग्रीव व्याकुलेन्द्रिय हो गया ॥ १ ॥ हरिश्रेष्ठ सुग्रीव क्रुद्ध, श्वास लेते, तेजसे जलते हुएसे, भाईके दुःखसे दुःखित दशरथपुत्र (लक्ष्मण) को देखकर सुवर्णमय आसन त्याग कर उठ खडा हो गया जैसे विभूषित की हुई इन्द्रकी बडी ध्वजा उठी होवे ॥ २-३ ॥ उठते हुए सुग्रीवके पीछे रुमा आदिक सब स्त्रियां उठ बैठीं जैसे आकाशमें पूर्णचन्द्रके पीछे सब तारे निकल आते हैं ॥ ४ ॥ लाल नयनवाला, हाथ जोडे श्रीमान् सुग्रीव चलायमान हो गया और वहां बडे कल्पवृक्षके समान स्थित हो गया ॥ ५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रुमाद्वितीयं सुग्रीवं नारीमध्यगतं स्थितम्।
अब्रवील्लक्ष्मणः क्रुद्धः सतारं शशिनं यथा ६
सत्त्वाभिजनसंपन्नः सानुक्रोशो जितेन्द्रियः।
कृतज्ञः सत्यवादी च राजा लोके महीयते ७
यस्तु राजा स्थितोऽधर्मे मित्राणामुपकारिणाम्।
मिथ्या प्रतिज्ञां कुरुते को नृशंसतरस्ततः ८
शतमश्वानृते हन्ति सहस्रं तु गवानृते।
आत्मानं स्वजनं हन्ति पुरुषः पुरुषानृते ९
पूर्वं कृतार्थो मित्राणां न तत्प्रतिकरोति यः।
कृतघ्नः सर्वभूतानां स वध्यः प्लवगेश्वर १०
गीतोऽयं ब्रह्मणा श्लोकः सर्वलोकनमस्कृतः।
दृष्ट्वा कृतघ्नं क्रुद्धेन तन्निबोध प्लवङ्गम ११
गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः १२

क्रुद्ध हुए लक्ष्मण तारागणयुक्त चन्द्रमाके समान स्त्रियोंके म
स्थित रुमासहित सुग्रीवसे बोले ॥ ६ ॥ सत्त्व और कुटुम्बसे युक्त, द
हित, इन्द्रियोंका जीतनेवाला, कृतज्ञ और सत्यवादी राजा लोकमें पू
होता है ॥ ७ ॥ अधर्ममें स्थित जो राजा उपकार करनेवाले मित्रो
मिथ्याप्रतिज्ञा करता है, उससे अधिक क्रूर और कौन है ? ॥ ८ ॥
घोडेके विषयमें झूंठ बोलनेसे सौ घोडोंकी हिंसाका भागी होता है, गौके विषय
झूंठ बोलनेसे एक हजार गौके मारनेका भागी होता है और पुरुषके
झूंठ बोलनेसे अपने और कुटुम्बियोंके मारनेका भागी बनता है ॥ ९ ॥

हे वानरेश्वर ! जो पहिले कृतकृत्य होकर मित्रोंका प्रतिकार नहीं
है वह सब प्राणियोंके प्रति कृतघ्न तथा वधके योग्य है ॥ १० ॥ हे वा
कृतघ्नको देखकर क्रुद्ध हुए स्वायम्भुव मनुने सब लोकको मान्य यह
कहा है, सो जानो ॥ ११ ॥ गौघाती, मदिरा पीनेवाले, चोर और
करनेवालेके विषयमें सत्पुरुषोंने प्रायश्चित कहा है पर कृतघ्नका कोई
श्चित्त नहीं है ॥ १२ ॥

RajGuru Math, Shivaḷa, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अनार्यस्त्वं कृतघ्नश्च मिथ्यावादी च वानर ।
पूर्वं कृतार्थो रामस्य न तत्प्रतिकरोषि यत् १३
ननु नाम कृतार्थेन त्वया रामस्य वानर ।
सीताया मार्गणे यत्नः कर्तव्यः कृतमिच्छता १४
स त्वं ग्राम्येषु भोगेषु सक्तो मिथ्याप्रतिश्रवः ।
न त्वां रामो विजानीते सर्पं मण्डूकराविणम् १५
महाभागेन रामेण पापः करुणवेदिना ।
हरीणां प्रापितो राज्यं त्वं दुरात्मा महात्मना १६
कृतं चेन्नापि जानीषे राघवस्य महात्मनः ।
सद्यस्त्वं निशितैर्बाणैर्हतो द्रक्ष्यसि वालिनम् १७
न स संकुचितः पन्था येन वाली हतो गतः ।
समये तिष्ठ सुग्रीव मा वालिपथमन्वगाः १८
न नूनमिक्ष्वाकुवरस्य कार्मुकाच्छरांश्च तान्पश्यसि वज्रसंनिभान् ।

हे वानर ! तुम अनार्य, कृतघ्न और मिथ्यावादी हो जो पहिले कृतार्थ होकर रामका प्रत्युपकार नहीं करते ॥ १३ ॥ हे वानर ! उपकारका स्मरण करते तथा कृतार्थ हुए तुम्हें सीताके ढूंढनेमें यत्न करना चाहिये ॥ १४ ॥ सो झूठी प्रतिज्ञा वाले तुम इन्द्रियोंके भोगोंमें आसक्त हो । राम मण्डूकके समान शब्द करनेवाले सर्परूपी तुमको नहीं जानते थे ॥ १५ ॥ महाभाग, दयालु, महात्मा रामने पापी और दुरात्मा तुमको वानरोंका राज्य प्राप्त करा दिया ॥ १६ ॥ नहीं है क्लेशदायक कर्म जिनका ऐसे रामके उपकारको तुम नहीं जानोगे तो मैंने बाणोंसे हत हुए तुम शीघ्र ही वालीको देखोगे ॥ १७ ॥

जिस मार्गसे मरा हुआ वाली गया है वह मार्ग सङ्कुचित नहीं हो गया है, हे सुग्रीव ! मर्यादामें स्थित रहो, वालीके मार्गपर मत चलो ॥ १८ ॥ तुम निश्चय ही इक्ष्वाकुओंमें श्रेष्ठ रामके धनुषसे छूटे वज्रसमान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः सुखं नाम निषेवसे सुखी न रामकार्यं मनसाप्यवेक्षसे १५
इत्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदि०किष्किन्धाकाण्डे चतुस्त्रिंशः सर्गः॥३४॥[१५

पञ्चत्रिंशः सर्गः।

तथा ब्रुवाणं सौमित्रिं प्रदीप्तमिव तेजसा।
अब्रवील्लक्ष्मणं तारा ताराधिपनिभानना १
नैवं लक्ष्मण वक्तव्यो नायं परुषमर्हति।
हरीणामीश्वरः श्रोतुं तव वक्त्राद्विशेषतः २
नैवाकृतज्ञः सुग्रीवो न शठो नापि दारुणः।
नैवानृतकथो वीर न जिह्मश्च कपीश्वरः ३
उपकारं कृतं वीरो नाप्ययं विस्मृतः कपिः।
रामेण वीर सुग्रीवो यदन्यैर्दुष्करं रणे ४
रामप्रसादात्कीर्तिं च कपिराज्यं च शाश्वतम्।
प्राप्तवानिह सुग्रीवो रुमां मां च परंतप ५
सुदुःखशायितः पूर्वं प्राप्येदं सुखमुत्तमम्।
प्राप्तकालं न जानीते विश्वामित्रो यथा मुनिः ६

बाणोंको नहीं देखते हो, इसीसे सुखी होकर सुखको सेवते हो और रा कार्यको मनसे भी नहीं देखते ॥ १५ ॥

॥ यहां ३४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

इस प्रकार कहते हुए तेजसे जल ते हुए लक्ष्मणसे चन्द्रसमान वाली तारा बोली ॥ १ ॥ हे लक्ष्मण! तुम्हें ऐसा न कहना वानरेश्वर यह विशेष करके आपके मुखसे निकले हुए कठोर वाक्य योग्य नहीं है ॥ २ ॥ हे वीर! वानरेश्वर सुग्रीव न तो कृतघ्न हैं न दारुण, न झूठी प्रतिज्ञावाले और न कुटिल हैं॥ ३ ॥ हे वीर! रणमें दुष्कर ऐसा जो उपकार रामने किया था उसे वीर वानर नहीं भूले हैं॥ ४ ॥ हे परन्तप! सुग्रीवने यहां रामके प्रसादसे ही सदाका वानरराज्य, रुमा और मुझको पाया है ॥ ५ ॥ पहिले दुःखमें (सुग्रीव) इस उत्तम सुखको पाकर विश्वामित्र मुनिके समान समयको नहीं जानता है ॥ ६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

घृताच्यां किल संसक्तो दश वर्षाणि लक्ष्मण।
अहो मन्यत धर्मात्मा विश्वामित्रो महामुनिः ७
स हि प्राप्तं न जानीते कालं कालविदां वरः।
विश्वामित्रो महातेजाः किं पुनर्यः पृथग्जनः ८
देहधर्मंगतस्यास्य परिश्रान्तस्य लक्ष्मण।
अवितृप्तस्य कामेषु रामः क्षन्तुमिहार्हति ९
न च रोषवशं तात गन्तुमर्हसि लक्ष्मण।
निश्चयार्थमविज्ञाय सहसा प्राकृतो यथा १०
सत्त्वयुक्ता हि पुरुषास्त्वद्विधाः पुरुषर्षभ।
अविमृश्य न रोषस्य सहसा यान्ति वश्यताम् ११
प्रसादये त्वां धर्मज्ञ सुग्रीवार्थं समाहिता।
महान्रोषसमुत्पन्नः संरम्भस्त्यज्यतामयम् १२
रुमां मां चाङ्गदं राज्यं धनधान्यपशूनि च।
रामप्रियार्थं सुग्रीवस्त्यजेदिति मतिर्मम १३

हे लक्ष्मण! धर्मात्मा महामुनि विश्वामित्रने मेनका नाम्नी अप्सरामें आसक्त होकर दश वर्षको एक दिन समझा था ॥ ७ ॥ कालज्ञानियोंमें श्रेष्ठ उन महातेजस्वी विश्वामित्रने प्राप्त हुए समयको नहीं जाना था फिर अन्य जनोंका तो क्या कहना है ॥ ८ ॥ हे लक्ष्मण! शरीरस्वभावको प्राप्त, थके हुए, कामोंसे नहीं तृप्त हुए सुग्रीवकी कामवृत्तिको क्षमा कीजिये ॥ ९ ॥ हे तात लक्ष्मण! तुम निश्चयार्थ अर्थात् सुग्रीवके अभिप्रायको विना जाने सांसारिक मनुष्यके समान एक दम रोषके वशमें मत प्राप्त होवो। हे पुरुषश्रेष्ठ! आपके सदृश सत्त्वयुक्त पुरुष विना विचारे सहसा रोषके वशमें नहीं प्राप्त होते ॥ ११ ॥ हे धर्मज्ञ! सावधान हुई मैं सुग्रीवके वास्ते तुम्हें प्रसन्न करती हूं, रोषसे उत्पन्न हुए इस बडे अहङ्कारको त्यागो ॥ १२ ॥

रामके प्रियके वास्ते सुग्रीव रुमाको, मुझको, वानरराज्यको, अश्वादि, धन्यादि और रत्नादियोंको छोड देंगे, यह मेरी मति है ॥ १३ ॥ सुग्रीव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

समानेष्यति सुग्रीवः सीतया सह राघवम्।
शशाङ्कमिव रोहिण्या हत्वा तं राक्षसाधमम् १४
शतकोटिसहस्राणि लङ्कायां किल रक्षसाम्।
अयुतानि च षट्त्रिंशत्सहस्राणि शतानि च १५
अहत्वा तांश्च दुर्धर्षान्राक्षसान्कामरूपिणः।
अशक्यं रावणं हन्तुं येन सा मैथिली हृता १६
ते न शक्या रणे हन्तुमसहायेन लक्ष्मण।
रावणः क्रूरकर्मा च सुग्रीवेण विशेषतः १७
एवमाख्यातवान्वाली स ह्यभिज्ञो हरीश्वरः।
आगमस्तु न मे व्यक्तः श्रवात्तस्य ब्रवीम्यहम् १८
त्वत्सहायनिमित्तं हि प्रेषिता हरिपुंगवाः।
आनेतुं वानरान्युद्धे सुबहून्हरिपुंगवान् १९
तांश्च प्रतीक्षमाणोऽयं विक्रान्तान्सुमहाबलान्।
राघवस्यार्थसिद्ध्यर्थं न निर्याति हरीश्वरः २०
कृता सुसंस्था सौमित्रे सुग्रीवेण पुरा यथा।

रावणको रणमें मार कर रोहिणीके साथ चन्द्रमाके समान सीताके सहित रामको लावेंगे ॥ १४ ॥ लङ्कामें राक्षस सौ करोडके हजारगुणे और हजार तथा छत्तीस हजार और छत्तीस सौ हैं ॥ १५ ॥ दुर्धर्ष, का... उन राक्षसोंके विना मारे रावण नहीं मारा जा सकता है, जिसने कि ... हरी है ॥ १६ ॥ हे लक्ष्मण ! असहाय सुग्रीवसे वे राक्षस रणमें ... मारे जा सकते और विशेष कर क्रूरकर्म रावण ॥ १७ ॥ इस प्रकार ... कहा था, वह वानरेश्वर अभिज्ञ था, (रावणकी) बलप्राप्ति मुझे ... नहीं है उसी सुने हुएको मैं कहती हूं ॥ १८ ॥

युद्धमें आपकी सहायताके निमित्त बहुत यूथपति वानरोंको ... लिये श्रेष्ठ वानर भेजे हैं ॥ १९ ॥ विक्रान्त और महाबली उन्हींकी प्रतीक्षा करते हुए यह वानरेश्वर रामके प्रयोजनकी सिद्धिके वास्ते अभी बाहर निकला है ॥ २० ॥ हे लक्ष्मण ! सुग्रीवने पाहिलेसे जो व्यवस्था की है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अद्य तैर्वानरैः सर्वैरागन्तव्यं महाबलैः २१
ऋक्षकोटिसहस्राणि गोलाङ्गूलशतानि च।
अद्य त्वामुपयास्यन्ति जहि कोपमरिंदम।
कोट्योऽनेकास्तु काकुत्स्थ कपीनां दीप्ततेजसाम् २२
तव हि मुखमिदं निरीक्ष्य कोपात्क्षतजसमे नयने निरीक्षमाणाः।
हरिवरवनिता न यान्ति शांतिं प्रथमभयस्य हि शङ्किताःस्म सर्वाः २३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० पञ्चत्रिंश सर्गः ॥३५॥ [१४९७]

षट्त्रिंशः सर्गः।

इत्युक्तस्तारया वाक्यं प्रश्रितं धर्मसंहितम्।
मृदुस्वभावः सौमित्रिः प्रतिजग्राह तद्वचः १
तस्मिन्प्रतिगृहीते तु वाक्ये हरिगणेश्वरः।
लक्ष्मणात्सुमहत्त्रासं वस्त्रं क्लिन्नमिवात्यजत् २
ततः कण्ठगतं माल्यं चित्रं बहुगुणं महत्।
चिच्छेद विमदश्चासीत्सुग्रीवो वानरेश्वरः ३

उन सब महाबली वानरोंको आज यहां आ जाना चाहिये ॥ २१ ॥ हे अरिन्दम ! हे ककुत्स्थवंशी ! करोडों हजारों रीछ, सैकडों लङ्गूर और प्रकाशित तेजवाले अनेक करोड वानर आज आपके साथ चलेंगे, क्रोधको छोडिये ॥ २२ ॥ क्रोधसे रक्तके सदृश नेत्रोंको देखती हुई वानरेश्वरकी स्त्रियां आपके इस मुखको देखकर शान्ति नहीं पातीं। समस्त (स्त्रियां) प्रथमभय (वालीका हनन) की शंङ्कित हैं ॥ २३ ॥

॥ यहाँ ३५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

तारा द्वारा ऐसा धर्मयुक्त नम्र वचन कहे गये, मृदुस्वभाव वाले लक्ष्मणने उसके वचनको ग्रहण कर लिया ॥ १ ॥ उस वाक्यके ग्रहण करलेनेपर वानरेश्वर सुग्रीवनें लक्ष्मणसे उत्पन्न हुए बडे भयको भीगे वस्त्रके समान त्याग दिया ॥ २ ॥ तदनन्तर वानरेश्वर सुग्रीवने कण्ठमें धारण की हुई, विचित्र, बहुतसे भोगोंको देनेवाली दिव्य मालाको तोड डाला और वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स लक्ष्मणं भीमबलं सर्ववानरसत्तमः ।
अब्रवीत्प्रश्रितं वाक्यं सुग्रीवः संप्रहर्षयन् ४
प्रनष्टा श्रीश्च कीर्तिश्च कपिराज्यं च शाश्वतम् ।
रामप्रसादात्सौमित्रे पुनश्चाप्तमिदं मया ५
कः शक्तस्तस्य देवस्य ख्यातस्य स्वेन कर्मणा ।
तादृशं प्रतिकुर्वीत अंशेनापि नृपात्मज ६
सीतां प्राप्स्यति धर्मात्मा वधिष्यति च रावणम् ।
सहायमात्रेण मया राघवः स्वेन तेजसा ७
सहायकृत्यं किं तस्य येन सप्त महाद्रुमाः ।
गिरिश्च वसुधा चैव बाणेनैकेन दारिताः ८
धनुर्विस्फारयाणस्य यस्य शब्देन लक्ष्मण ।
सशैला कम्पिता भूमिः सहायैः किं नु तस्य वै ९
अनुयात्रां नरेन्द्रस्य करिष्येऽहं नरर्षभ ।
गच्छतो रावणं हन्तुं वैरिणं सपुरःसरम् १०
यदि किंचिदतिक्रान्तं विश्वासात्प्रणयेन वा

मदरहित हो गया ॥ ३ ॥ सब वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीव भीमबली लक्ष्मण
प्रसन्न करता हुआ नम्र वाक्य बोला ॥ ४ ॥

हे लक्ष्मण ! नष्ट हुई लक्ष्मी और कीर्ति तथा सदाका यह कपि
मैंने रामके प्रसादसे फिर पाया है ॥ ५ ॥ हे अरिन्दम ! हे वीर!
कर्मोंसे विख्यात और देव उन रामके उस विक्रमका बदला देनेको
समर्थ है ? ॥ ६ ॥ धर्मात्मा राम सहायमात्र मेरे साथ अपने
रावणको मारेंगे और सीताको पावेंगे ॥ ७ ॥ उनका सहाय क्या करेंगे
जिन्होंने सात बडे वृक्ष, पर्वत और पृथ्वी एक बाणसे ही विदीर्ण
थी ॥ ८ ॥ हे लक्ष्मण ! धनुषको चढाते हुए उनके शब्दसे पर्वत
भूमि कांप गई थी; उनको सहायकोंसे क्या सहायता मिलेगी ? ॥ ९ ॥

हे पुरुषश्रेष्ठ ! कुटुम्ब समेत वैरी रावणको मारनेके लिये जाते हुए
पीछे मैं चलूंगा ॥ १० ॥ मुझ सेवकसे जो कुछ अतिक्रमण हुआ हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रेष्यस्य क्षमितव्यं मे न कश्चिन्नापराध्यति ११
इति तस्य ब्रुवाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
अभवल्लक्ष्मणः प्रीतः प्रेम्णा चेदमुवाच ह १२
सर्वथा हि मम भ्राता सनाथो वानरेश्वर।
त्वया नाथेन सुग्रीव प्रश्रितेन विशेषतः १३
यस्ते प्रभावः सुग्रीव यच्च ते शौचमीदृशम्।
अर्हस्त्वं कपिराज्यस्य श्रियं भोक्तुमनुत्तमाम् १४
सहायेन तु सुग्रीव त्वया रामः प्रतापवान्।
वधिष्यति रणे शत्रूनचिरान्नात्र संशयः १५
धर्मज्ञस्य कृतज्ञस्य सङ्ग्रामेष्वनिवर्तिनः।
उपपन्नं च युक्तं च सुग्रीव तव भाषितम् १६
दोषज्ञः प्रतिसामर्थ्ये कोऽन्यो भाषितुमर्हति।
वर्जयित्वा मम ज्येष्ठं त्वां च वानरसत्तम १७
सदृशश्चासि रामेण विक्रमेण बलेन च।
सहायो दैवतैर्दत्तश्चिराय हरिपुंगव १८

...वाससे या प्रेमसे क्षमा करना चाहिये, अपराध किसीसे न हो, यह ...व नहीं ॥ ११ ॥ महात्मा सुग्रीवके ऐसा कहनेपर लक्ष्मण प्रसन्न हो ...और प्रेमसे यह बोले ॥ १२ ॥ हे वानरेश्वर! मेरे भाई विशेषतः ..., नाथ तुमसे सर्वथा सनाथ हैं ॥ १३ ॥ हे सुग्रीव! जो तुम्हारा प्रभाव ... जो पवित्रता तथा कोमलता है, उससे तुम वानरराज्यकी अतुलनीय ...श्री भोगनेके योग्य हो ॥ १४ ॥

... हे सुग्रीव! प्रतापी राम तुम्हारे साहाय्यसे रणमें शत्रुओंको शीघ्र ही ...गे इसमें संदेह नहीं ॥ १५ ॥ हे सुग्रीव! धर्मज्ञ, कृतज्ञ और संग्राममें ...टनेवाले तुम्हारा कथन योग्य और युक्तियुक्त है ॥ १६ ॥ के वानरश्रेष्ठ ... बड़े भाई राम और तुमको छोड़कर अन्य कौन विद्वान् सामर्थ्य होनेपर ... कह सकता है ॥ १७ ॥

...हे वानरराज! तुम विक्रम और बलसे रामके सदृश हो, देवताओंने ...समयतक को (हमें) सहायक दिये हो ॥ १८ ॥ हे वीर! किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किं तु शीघ्रमितो वीर निष्क्रम त्वं मया सह।
सान्त्वयस्व वयस्यं च भार्याहरणदुःखितम् १९
यच्च शोकाभिभूतस्य दृष्ट्वा रामस्य भाषितम्।
मया त्वं परुषाण्युक्तस्तत्क्षमस्व सखे मम २०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० षट्त्रिंशः सर्गः ॥३६॥[१५

सप्तत्रिंशः सर्गः

एवमुक्तस्तु सुग्रीवो लक्ष्मणेन महात्मना।
हनूमन्तं स्थितं पार्श्वे वचनं चेदमब्रवीत् १
महेन्द्रहिमवद्विन्ध्यकैलासशिखरेषु च।
मन्दरे पाण्डुशिखरे पञ्चशैलेषु ये स्थिताः २
तरुणादित्यवर्णेषु भ्राजमानेषु नित्यशः।
पर्वतेषु समुद्रान्ते पश्चिमस्यां तु ये दिशि ३
आदित्यभवने चैव गिरौ संध्याभ्रसंनिभे।
पद्माचलवनं भीमाः संश्रिता हरिपुंगवाः ४
अञ्जनाम्बुदसंकाशाः कुञ्जरेन्द्रमहौजसः।
अञ्जने पर्वते चैव ये वसन्ति प्लवंगमाः ५

मेरे साथ तुम यहांसे शीघ्र चलो और स्त्रीके हरणसे कर्षित अपने मि[त्रको]
समझाओ ॥ १८ ॥ जो कि मैंने शोकयुक्त रामके वाक्यको सुन क[र]
कठोर वाक्य कहे थे, उन्हें क्षमा कीजिये ॥ २० ॥

॥ यहाँ ३६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

महात्मा लक्ष्मण द्वारा इस प्रकार बोधित सुग्रीव समीपमें स्थित
हनुमान्‌से यह बोले ॥ १ ॥ महेन्द्र, हिमवान्, विन्ध्य और कैलाश
शिखरोंपर तथा श्वेतशिखर वाले मन्दर पर्वतपर जो वानर स्थित हैं
और मध्यान्हके सूर्यके समान वर्णवाले, सब ओरसे प्रकाशित (अन्य)
पर्वतोंपर तथा समुद्रके किनारे और पश्चिम दिशामें जो स्थित हैं
और सन्ध्याके आकाशके सदृश उदयगिरि पर तथा भयानक पद्माचल
जो स्थित हैं ॥ ४ ॥ और अञ्जन (काला सुरमा) तथा मेघके
हाथियोंके सदृश बलवाले जो वानर अञ्जन पर्वतपर वसते हैं ॥ ५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

महाशैलगुहावासा वानराः कनकप्रभाः।
मेरुपार्श्वगताश्चैव ये च धूम्रगिरिं श्रिताः ६
तरुणादित्यवर्णाश्च पर्वते ये महारुणे।
पिबन्तो मधु मैरेयं भीमवेगाः प्लवंगमाः ७
वनेषु च सुरम्येषु सुगन्धिषु महत्सु च।
तापसाश्रमरम्येषु वनान्तेषु समन्ततः ८
तांस्तांस्त्वमानय क्षिप्रं पृथिव्यां सर्ववानरान्।
सामदानादिभिः कल्यैर्वानरैर्वेगवत्तरैः ९
प्रेषिताः प्रथमं ये च मयाज्ञाता महाजवाः।
त्वरणार्थं तु भूयस्त्वं संप्रेषय हरीश्वरान् १०
ये प्रसक्ताश्च कामेषु दीर्घसूत्राश्च वानराः।
इहानयस्व तान्छीघ्रं सर्वानेव कपीश्वरान् ११
अहोभिर्दशभिर्ये च नागच्छन्ति ममाज्ञया।
हन्तव्यास्ते दुरात्मानो राजशासनदूषकाः १२

मनःशिलामय गुफारूपी वस्त्रवाले, सुवर्णके सदृश कान्तिवाले, मेरुके मीपवर्त्ती प्रदेशमें स्थित और धूम्रगिरिके आश्रित जो वानर हैं ॥ ६ ॥ ण सूर्यके समान वर्णवाले, भयानक वेगवाले, मधु और मद्यको पीते ए महारुण पर्वतपर जो वानर हैं ॥ ७ ॥ रमणीय, सुगन्धवाले बडे नोंमें तथा तपस्वियोंके रम्य वनप्रदेशोंमें जो वानर हैं, उन सब वानरोंको मदानादिकोंसे शीघ्र लाओ और (दूत) वानरोंको शीघ्र सब पृथ्वीपर जो ॥ ८-९ ॥

पहिले मैंने जो महावेगवाले दूत भेजे हैं, उनकी शीघ्रताके वास्ते फिर न्य वानरोंको भेजो ॥ १० ॥ जो वानर रतिमें आसक्त तथा दीर्घसूत्री काल वितानेवाले) हैं, उन सबको शीघ्र ही मेरी आज्ञासे यहां लाओ ११ ॥ मेरी आज्ञासे जो दश दिनमें यहां नहीं आजांयगे, राजाज्ञाको षित करनेवाले वे दुरात्मा मारे जाने चाहियें ॥ १२ ॥ सैकडों, हजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शतान्यथ सहस्राणि कोट्यश्च मम शासनात्।
प्रयान्तु कपिसिंहानां निर्देशे मम ये स्थिताः १३
मेघपर्वतसंकाशाश्छादयन्त इवाम्बरम्।
घोररूपाः कपिश्रेष्ठा यान्तु मच्छासनादितः १४
ते गतिज्ञा गतिं गत्वा पृथिव्यां सर्ववानराः।
आनयन्तु हरीन्सर्वांस्त्वरिताः शासनान्मम १५
तस्य वानरराजस्य श्रुत्वा वायुसुतो वचः।
दिक्षु सर्वासु विक्रान्तान्प्रेषयामास वानरान् १६
ते पदं विष्णुविक्रान्तं पतत्रिज्योतिरध्वगाः।
प्रयाताः प्रहिता राज्ञा हरयस्तु क्षणेन वै १७
ते समुद्रेषु गिरिषु वनेषु च सरःसु च।
वानरा वानरान्सर्वान्रामहेतोरचोदयन् १८
मृत्युकालोपमस्याज्ञां राजराजस्य वानराः।
सुग्रीवस्याययुः श्रुत्वा सुग्रीवभयशङ्किताः १९
ततस्तेऽञ्जनसंकाशा गिरेस्तस्मान्महाबलाः।

करोड श्रेष्ठ वानर मेरी आज्ञासे मेरे शासनमें स्थित सब दिशाओंमें ॥ १३ ॥ मेघ और पर्वतके सदृश, घोररूपवाले, श्रेष्ठवानर आ ढांकते हुएसे मेरी आज्ञासे यहांसे जावें ॥ १४ ॥ मेरी आज्ञासे स्थानोंके जाननेवाले सब वानर शीघ्रतासे पृथिवीपर उन उन जाकर शीघ्रतासे सब वानरोंको लावें ॥ १५ ॥

वानरराज सुग्रीवके वचनको सुनकर हनुमान्‌ने सब दिशाओंमें बड़े वानरोंको भेज दिया ॥ १६ ॥ पक्षी और नक्षत्रोंके मार्गमें चलने राजा द्वारा भेजे वे वानर तत्क्षण आकाशको चल दिये ॥ १७ वानरोंने समुद्र, पर्वत, वन, तालाबोंपर जाकर सब वानरोंको प्रेरित किया ॥ १८ ॥ मृत्यु तथा कालके सदृश, राजाओंके राजा आज्ञाको सुनकर सुग्रीवके भयको जाननेवाले सब वानर आये ॥ १९

तदनन्तर अञ्जनके समान बडे वेगवाले तीन करोड वानर उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तिस्रः कोट्यः प्लवंगानां निर्ययुर्यत्र राघवः ॥ २० ॥
अस्तं गच्छति यत्रार्कस्तस्मिन्गिरिवरे रताः ।
संतप्तहेमवर्णाभास्तस्मात्कोट्यो दश च्युताः ॥ २१ ॥
कैलासशिखरेभ्यश्च सिंहकेसरवर्चसाम् ।
ततः कोटिसहस्राणि वानराणां समागमन् ॥ २२ ॥
फलमूलेन जीवन्तो हिमवन्तमुपाश्रिताः ।
तेषां कोटिसहस्राणां सहस्रं समवर्तत ॥ २३ ॥
अङ्गारकसमानानां भीमानां भीमकर्मणाम् ।
विन्ध्याद्वानरकोटीनां सहस्राण्यपतन्द्रुतम् ॥ २४ ॥
क्षीरोदवेलानिलयास्तमालवनवासिनः ।
नारिकेलाशनाश्चैव तेषां संख्या न विद्यते ॥ २५ ॥
वनेभ्यो गह्वरेभ्यश्च सरिद्भ्यश्च महाबलाः ।
आगच्छद्वानरीसेना पिबन्तीव दिवाकरम् ॥ २६ ॥
ये तु त्वरयितुं याता वानराः सर्ववानरान् ।

गिरिसे, जहां राम थे, वहांको चले ॥ २० ॥ जहां सूर्य अस्त होता है, उस श्रेष्ठ पर्वतपर स्थित अर्थात् अस्ताचल पर्वतके निवासी, तप्ते हुए सुवर्णके समान कान्तिवाले दश करोड वानर चले ॥ २१ ॥ कैलासके शिखरोंपरसे सिंहके केसर (अयाल) के समान कान्तिवाले हजार करोड (दश अरब) वानर आये ॥ २२ ॥ जो फल और मूलोंसे जीनेवाले हिमवान्के आश्रयवाले वानर थे; उनके हजार करोडके हजारगुणे वानर आये ॥ २३ ॥ अङ्गारके सदृश वर्णवाले, भीष्म कर्म करनेवाले, भयङ्कर हजार करोड वानर विन्ध्याचलसे आये ॥ २४ ॥

क्षीरोदके किनारेपर रहनेवाले, तमालवनके वासी नारिकेल (ताजा गोला) के खानेवाले असंख्य वानर आये ॥ २५ ॥ महाबलवाली वानरी सेना वनोंसे, गह्वरोंसे और नदियोंसे (निकल कर) सूर्यको ढांपती हुई सी आई ॥ २६ ॥ जो वानर सब वानरोंको शीघ्रता करानेको भेजे थे, वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ते वीरा हिमवच्छैले ददृशुस्तं महाद्रुमम् २७
तस्मिन्गिरिवरे पुण्ये यज्ञो माहेश्वरः पुरा ।
सर्वदेवमनस्तोषो बभूव सुमनोरमः २८
अन्ननिस्यन्दजातानि मूलानि च फलानि च ।
अमृतस्वादुकल्पानि ददृशुस्तत्र वानराः २९
तदन्नसंभवं दिव्यं फलमूलं मनोहरम् ।
यः कश्चित्सकृदश्नाति मासं भवति तर्पितः ३०
तानि मूलानि दिव्यानि फलानि च फलाशनाः ।
औषधानि च दिव्यानि जगृहुर्हरिपुंगवाः ३१
तस्माच्च यज्ञायतनात्पुष्पाणि सुरभीणि च ।
आनिन्युर्वानरा गत्वा सुग्रीवप्रियकारणात् ३२
ते तु सर्वे हरिवराः पृथिव्यां सर्ववानरान् ।
संचोदयित्वा त्वरितं यूथानां जग्मुरग्रतः ३३
ते तु तेन मुहूर्तेन कपयः शीघ्रचारिणः ।
किष्किन्धां त्वरया प्राप्ताः सुग्रीवो यत्र वानरः ३४

वीर वानर बडे बडे वृक्षोंसे पूर्ण हिमालय पर्वतको देखने लगे ॥२७॥ ... कालमें उस रम्य पर्वतपर सब देवताओंके मनको प्रसन्न करनेवाला ... दिव्य माहेश्वर यज्ञ हुआ था ॥ २८ ॥ वहांपर वानरोंने अन्नके ... उत्पन्न हुए अमृतके सदृश स्वादवाले, मूल और फलोंको देखा ॥ २९ ॥

उस अन्नसे उत्पन्न हुए दिव्य मनोहर फल मूलको जो कोई एक ... खा लेता है, वह महीने भरतक तृप्त रहता है ॥ ३० ॥ फलोंके खाने... वानरयूथपतियोंने उन दिव्य मूल फल और दिव्य औषधियोंको ... ग्रहण किया ॥ ३१ ॥ वे वानर वहां जाकर सुग्रीवके प्रसन्न करनेके ... यज्ञस्थानसे सुगन्धित पुष्पोंको लाये ॥ ३२ ॥ वे सब वानर पृथिवी... सब वानरोंको प्रेरित कर शीघ्रतासे समस्त समुदायोंसे पहिले ... गये ॥ ३३ ॥

वे शीघ्रगामी यूथपति उसी मुहूर्तमें शीघ्र किष्किंधामें आये, जहां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ते गृहीत्वौषधीः सर्वाः फलमूलं च वानराः।
तं प्रतिग्राहयामासुर्वचनं चेदमब्रुवन् ३५

सर्वे परिसृताः शैलाः सरितश्च वनानि च।
पृथिव्यां वानराः सर्वे शासनादुपयान्ति ते ३६

एवं श्रुत्वा ततो हृष्टः सुग्रीवः प्लवगाधिपः।
प्रतिजग्राह च प्रीतस्तेषां सर्वमुपायनम् ३७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० सप्तत्रिंशः सर्गः ॥३७॥ [१५५४]

अष्टात्रिंशः सर्गः।

प्रतिगृह्य च तत्सर्वमुपायनमुपाहृतम्।
वानरान्सान्त्वयित्वा च सर्वानेव व्यसर्जयत् १

विसर्जयित्वा स हरीन्सहस्रान्कृतकर्मणः।
मेने कृतार्थमात्मानं राघवं च महाबलम् २

स लक्ष्मणो भीमबलं सर्ववानरसत्तमम्।
अब्रवीत्प्रश्रितं वाक्यं सुग्रीवं संप्रहर्षयन् ३

ग्रीव वानर थे ॥ ३४ ॥ उन वानरोंने सब ओषधियों और फल मूलोंको लाकर सुग्रीवको ग्रहण कराया और यह वचन बोले ॥ ३५ ॥ हम पृथ्वीपर सब पर्वत, समुद्र और वनोंमें घूमे और सब वानर आपकी आज्ञासे आते हैं ॥ ३६ ॥ तदनन्तर ऐसा सुनकर आनन्दित हुए, वानरेश्वर सुग्रीवने प्रसन्न हो उनकी सब भेटको ग्रहण किया ॥ ३७ ॥

॥ यहाँ ३८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुग्रीवने लायी हुई उस सब भेटको स्वीकार कर और वानरोंको समझाकर सबोंको विदा किया ॥१॥ वह सुग्रीव किया है कार्य जिन्होंने ऐसे शूर वानरोंको विदाकर अपनेको और महाबली रामको कृतार्थ मानने लगा ॥ २ ॥ लक्ष्मण भीमबली सब वानरोंमें श्रेष्ठ सुग्रीवको प्रसन्न करते हुए नम्र वाक्य बोले कि हे सौम्य ! आपकी यदि रुचि हो तो अब किष्किन्धासे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किष्किन्धाया विनिष्क्राम यदि ते सौम्य रोचते।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा लक्ष्मणस्य सुभाषितम् ४
सुग्रीवः परमप्रीतो वाक्यमेतदुवाच ह।
एवं भवतु गच्छाम स्थेयं त्वच्छासने मया ५
तमेवमुक्त्वा सुग्रीवो लक्ष्मणं शुभलक्षणम्।
विसर्जयामास तदा ताराद्याश्चैव योषितः ६
एहीत्युच्चैर्हरिवरान्सुग्रीवः समुदाहरत् ७
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा हरयः शीघ्रमाययुः।
बद्धाञ्जलिपुटाः सर्वे ये स्युः स्त्रीदर्शनक्षमाः ८
तानुवाच ततः प्राप्तान्राजार्कसदृशप्रभः।
उपस्थापयत क्षिप्रं शिबिकां मम वानराः ९
श्रुत्वा तु वचनं तस्य हरयः शीघ्रविक्रमाः।
समुपस्थापयामासुः शिबिकां प्रियदर्शनाम् १०
तामुपस्थापितां दृष्ट्वा शिबिकां वानराधिपः।
लक्ष्मणारुह्यतां शीघ्रमिति सौमित्रिमब्रवीत् ११

चलो ॥ ३ ॥ लक्ष्मणके अच्छे प्रकार कहे हुए वचनको सुनकर प्रसन्न हुए सुग्रीव यह वचन बोले ॥ ४ ॥ ऐसा ही होगा, हम तुम चलते हैं, क्योंकि मुझे आपकी आज्ञामें स्थित रहना चाहिये ॥ ५ ॥

शुभलक्षणवाले लक्ष्मणसे ऐसा कहकर सुग्रीवने उस समय तारा अन्य स्त्रियोंको वहांसे हटा दिया ॥ ६ ॥ सुग्रीवने 'आओ' इस ऊंचे स्वरसे वानरोंको आवाज दी ॥ ७ ॥ सुग्रीवके इस वचनको हाथ जोडे हुए सब वानर आये जो कि स्त्रियोंको देख सकते थे अन्तःपुरमें जासकते थे ॥ ८ ॥ सूर्य सदृश कान्तिवाले राजा सुग्रीव हुए उनसे बोले कि हे वानरो! मेरी पालकीको शीघ्र लाओ ॥ ९ ॥

उसके वचनको सुनकर शीघ्रपराक्रमवाले वानर देखनेमें प्रिय पा शीघ्र लाये ॥ १० ॥ वानरेश्वर सुग्रीवने लाई हुई पालकीको देखकर कहा कि हे लक्ष्मण! शीघ्र चढिये ॥ ११ ॥ ऐसा कहकर लक्ष्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इत्युक्त्वा काञ्चनं यानं सुग्रीवः सूर्यसंनिभम् ।
बहुभिर्हरिभिर्युक्तमारुरोह सलक्ष्मणः १२
पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन मूर्धनि ।
शुक्लैश्च व्यालव्यजनैर्धूयमानैः समन्ततः १३
शङ्खभेरीनिनादैश्च बन्दिभिश्चाभिनन्दितः ।
निर्ययौ प्राप्य सुग्रीवो राज्यश्रियमनुत्तमाम् १४
स वानरशतैस्तीक्ष्णैर्बहुभिः शस्त्रपाणिभिः ।
परिकीर्णो ययौ तत्र यत्र रामो व्यवस्थितः १५
स तं देशमनुप्राप्य श्रेष्ठं रामनिषेवितम् ।
अवातरन्महातेजाः शिबिकायाः सलक्ष्मणः १६
आसाद्य च ततो रामं कृताञ्जलिपुटोऽभवत् ।
कृताञ्जलौ स्थिते तस्मिन्वानराश्चाभवंस्तथा १७
तटाकमिव तं दृष्ट्वा रामः कुड्मलपङ्कजम् ।
वानराणां महत्सैन्यं सुग्रीवे प्रीतिमानभूत् १८

सुग्रीव सूर्यसमान कान्तिवाली, बडे वानरोंसे युक्त सुवर्णकी सवारीपर चढे ॥ १२ ॥ मस्तकके ऊपर लगाये गये श्वेत छत्र और इधर उधर डुलाए जा रहे श्वेतचामरों तथा शङ्ख, भेरियोंके शब्दों द्वारा वानरोंसे प्रसन्न किये गये सुग्रीव अतुलनीय राज्यशोभाको पाकर निकले ॥ १३-१४ ॥

शस्त्र हाथमें लिये, तीक्ष्ण, बहुतसे, वानरोंके सैकडोंसे युक्त वह सुग्रीव वहां पहुंचे जहां कि राम स्थित थे ॥ १५ ॥ महातेजस्वी सुग्रीव रामसे सेवित उस श्रेष्ठ प्रदेशमें पहुंच कर पालकीसे लक्ष्मण समेत उतर पडे ॥ १६ ॥ तदनन्तर रामको प्राप्त होकर हाथ जोडकर खडे हो गये, सुग्रीवको हाथ जोडे खडा देखकर सब वानर भी उसी प्रकार हाथ जोडकर खडे हो गये ॥ १७ ॥ राम उन वानरोंकी बडी सेनाको अधखिले कमलोंवाले तालाबके समान देखकर सुग्रीवमें प्रीतियुक्त हो गये ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पादयोः पतितं मूर्ध्ना तमुत्थाप्य हरीश्वरम्।
प्रेम्णा च बहुमानाच्च राघवः परिषस्वजे १९
परिष्वज्य च धर्मात्मा निषीदेति ततोऽब्रवीत्।
निषण्णं तं ततो दृष्ट्वा क्षितौ रामोऽब्रवीत्ततः २०
धर्ममर्थं च कामं च काले यस्तु निषेवते।
विभज्य सततं वीर स राजा हरिसत्तम २१
हित्वा धर्मं तथार्थं च कामं यस्तु निषेवते।
स वृक्षाग्रे यथा सुप्तः पतितः प्रतिबुध्यते २२
अमित्राणां वधे युक्तो मित्राणां संग्रहे रतः।
त्रिवर्गफलभोक्ता च राजा धर्मेण युज्यते २३
उद्योगसमयस्त्वेष प्राप्तः शत्रुनिषूदन।
संचिन्त्यतां हि पिङ्गेश हरिभिः सहमन्त्रिभिः २४
एवमुक्तस्तु सुग्रीवो रामं वचनमब्रवीत्।
प्रनष्टा श्रीश्च कीर्तिश्च कपिराज्यं च शाश्वतम्॥
त्वत्प्रसादान्महाबाहो पुनः प्राप्तमिदं मया २५

मस्तकसे पैरोंपर गिरे हुए सुग्रीवको उठाकर रामने प्रेम और बड़े आ[दरसे] आलिङ्गन किया॥ १९॥ तब धर्मात्मा राम आलिङ्गन करके " बैठ जा[ओ]" यह वचन बोले इसके पश्चात् भूमिपर बैठे हुए उसको देखकर राम वचन बोले॥ २०॥

हे हरिश्रेष्ठ! हे वीर! जो धर्म, अर्थ और कामको विभाग करके समयपर सेवन करता है, वह राजा है॥ २१॥ और जो धर्म तथा अ[र्थको] त्याग कर कामका ही सेवन करता है, वह गिरकर चेतता है जैसे वृ[क्षकी] शाखापर सोता हुआ (मनुष्य)॥ २२॥ शत्रुओंके वधमें सक्त, मि[त्रोंके] संग्रहमें रत, त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) के फलको भोगनेवाला [राजा] धर्मसे युक्त होता है॥ २३॥ हे शत्रुनाशक! यह उद्योगका समय [प्राप्त] हुआ है, हे वानरेश्वर! वानर तथा मंत्रियोंके साथ इसे विचारो॥ २[४]॥

इस प्रकार बोधित सुग्रीव रामसे वाक्य बोले हे महाबाहो! हे [धर्म]वालोंमें श्रेष्ठ! हे देव! मैंने नष्ट हुई लक्ष्मी और कीर्ति तथा [नित्य] वानरराज्य आपकी और आपके भाईकी प्रसन्नतासे पुनः पाया है॥ २[५]॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तव देव प्रसादाच्च भ्रातुश्च जयतां वर।
कृतं न प्रतिकुर्याद्यः पुरुषाणां हि दूषकः २६
एते वानरमुख्याश्च शतशः शत्रुसूदन।
प्राप्ताश्चादाय बलिनः पृथिव्यां सर्ववानरान् २७
ऋक्षाश्च वानराः शूरा गोलाङ्गूलाश्च राघव।
कान्तारवनदुर्गाणामभिज्ञा घोरदर्शनाः २८
देवगन्धर्वपुत्राश्च वानराः कामरूपिणः।
स्वैः स्वैः परिवृताः सैन्यैर्वर्तन्ते पथि राघव २९
शतैः शतसहस्रैश्च वर्तन्ते कोटिभिस्तथा।
अयुतैश्चावृता वीर शङ्कुभिश्च परंतप ३०
अर्बुदैरर्बुदशतैर्मध्यैश्चान्त्यैश्च वानराः।
समुद्राश्च परार्धाश्च हरयो हरियूथपाः ३१
आगमिष्यन्ति ते राजन्महेन्द्रसमविक्रमाः।
मेघपर्वतसंकाशा मेरुविन्ध्यकृतालयाः ३२

किये हुए उपकारका प्रत्युपकार नहीं करता, वह मनुष्योंके मध्यमें षित होता है ॥ २६ ॥ हे शत्रुनाशक! ये सैकड़ों बलवान् वानरमुख्य थिवी भरके सब वानरोंको बुलाकर आये हैं ॥ २७ ॥ हे राघव राम! छ रीछ, शूरवीर लंगूर और घोर दृष्टिवाले तथा विकट वनोंके दुर्गोंके ाननेवाले, भयङ्कर रूपवाले देव गन्धर्वोंके पुत्र कामरूपी वानर अपनी पनी सेनासे युक्त मार्गमें आ रहे हैं ॥ २८-२९ ॥

हे परन्तप! हे राजन्! इन्द्रके सदृश पराक्रमवाले, सुमेरु तथा मन्दरा-लके समान, विन्ध्य तथा मेरुके निवासी, वीर, वानरसेनापति कोई सौ ानरोंसे, कोई एक लाखसे और कोई एक करोड़से, कोई दश हजारसे, ोई शङ्कुसे (शङ्खसे), कोई अर्बसे, कोई खर्बसे, कोई मध्यमकी संख्यासे, ोई अन्त नामक संख्यासे, कोई समुद्र नामक संख्यासे और कोई वानर ार्ध नामक संख्यासे युक्त हो आपके वास्ते आवेंगे ॥ ३०-३२ ॥ वे आपके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ते त्वामभिगमिष्यन्ति राक्षसं योद्धुमाहवे।
निहत्य रावणं युद्धे ह्यानयिष्यन्ति मैथिलीम् ३३
ततः समुद्योगमवेक्ष्य वीर्यवान्हरिप्रवीरस्य निदेशवर्तिनः।
बभूव हर्षाद्वसुधाधिपात्मजः प्रबुद्धनीलोत्पलतुल्यदर्शनः ३४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे अष्टत्रिंशः सर्गः ॥३८॥ [१५

एकोनचत्वारिंशः सर्गः ॥ ३९ ॥

इति ब्रुवाणं सुग्रीवं रामो धर्मभृतां वरः।
बाहुभ्यां संपरिष्वज्य प्रत्युवाच कृताञ्जलिम् १
यदिन्द्रो वर्षते वर्षं न तच्चित्रं भविष्यति।
आदित्योसौ सहस्रांशुः कुर्याद्वितिमिरं नभः २
चन्द्रमा रजनीं कुर्यात्प्रभया सौम्य निर्मलाम्।
त्वद्विधो वापि मित्राणां प्रीतिं कुर्यात्परंतप ३
एवं त्वयि न तच्चित्रं भवेद्यत्सौम्य शोभनम्।
जानाम्यहं त्वां सुग्रीव सततं प्रियवादिनम् ४

साथ चलेंगे जो कि बान्धवों समेत राक्षस रावणको युद्धमें मा... सीताको लावेंगे ॥ ३३ ॥ इसके पश्चात् बुद्धिमान् राजपुत्र आज्ञामें रहने... सुग्रीवके उद्योगको देखकर आनन्दसे खिले हुए नीले कमलके ... दृष्टिवाले हो गये ॥ ३४ ॥

॥ यहां ३८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

धार्मिकोंमें श्रेष्ठ राम इस प्रकारसे कहते हुए, हाथ जोडे हुए सु... बाहुओंसे आलिङ्गन करके उत्तर देने लगे ॥ १ ॥ हे परन्तप ! हे ... इन्द्र जो वर्षाको वर्षाता है और सहस्र किरणोंवाला सूर्य जो आका... अन्धकारहीन करता है तथा चन्द्रमा जो किरणोंसे पृथ्वीको निर्मल ... है और तुम सदृश जो मित्रोंका उपकार करते हैं यह कोई विचित्र ... नहीं अर्थात् जैसे इन्द्रादिकोंका वर्षादि करना स्वाभाविक है उसी ... आप सदृशोंका उपकारका बदला देना स्वाभाविक है ॥ २-३ ॥

हे सौम्य ! पूर्वोक्त प्रकारसे आपमें जो श्रेष्ठता है, वह आश्चर्यमय ... हे सुग्रीव ! मैं तुमको निरन्तर प्रिय बोलनेवाले जानता हूं ॥ ४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

त्वत्सनाथः सखे सङ्ख्ये जेताऽस्मि सकलानरीन् ।
त्वमेव मे सुहृन्मित्रं साहाय्यं कर्तुमर्हसि ५
जहारात्मविनाशाय मैथिलीं राक्षसाधमः ।
वञ्चयित्वा तु पौलोमीमनुह्लादो यथा शचीम् ६
न चिरात्तं वधिष्यामि रावणं निशितैः शरैः ।
पौलोम्याः पितरं दृप्तं शतक्रतुरिवारिहा ७
एतस्मिन्नन्तरे चैव रजः समभिवर्तत ।
उष्णतीव्रां सहस्रांशोश्छादयद्गगने प्रभाम् ८
दिशः पर्याकुलाश्चासंस्तमसा तेन दूषिताः ।
चचाल च मही सर्वा सशैलवनकानना ९
ततो नरेन्द्रसंकाशैस्तीक्ष्णदंष्ट्रैर्महाबलैः ।
कृत्स्ना संछादिता भूमिरसंख्येयैः प्लवंगमैः १०
निमेषान्तरमात्रेण ततस्तैर्हरियूथपैः ।
कोटीशतपरीवारैर्वानरैर्हरियूथपैः ११

तुमसे सनाथ हुआ मैं संग्राममें सब शत्रुओंको मारूंगा, तुम ही मेरे श्रेष्ठ हृदयवाले मित्र सहाय करनेको समर्थ हो ॥ ५ ॥ राक्षसोंमें नीच रावणने अपने नाशके लिये सीताको ठगकर हरा है जैसे पुलोमाकी कन्या इन्द्राणीको (पुलोमाकी सम्मतिसे) अनुह्लादने हरा था ॥ ६ ॥ मैं शीघ्रही उस रावणको पैने बाणोंसे मारूंगा जैसे अहंकारी इन्द्राणीके पिताको इन्द्रने रणमें मारा था ॥ ७ ॥

इसी अवसरमें चारों ओरसे धूलि उडने लगी और उसके सूर्यकी उष्ण तथा तीव्र प्रभाको आच्छादित कर दिया ॥ ८ ॥ बढी हुई उस धूलिसे दिशाएं व्याप्त हो गईं और जल, पर्वत, वनों समेत सब पृथ्वी चलायमान हो गई ॥ ९ ॥ इसके अनन्तर पर्वतके समान, तीक्ष्ण दाढोंवाले, महाबली, असंख्य वानरोंने सब भूमिको आच्छादित कर दिया ॥ १० ॥

पश्चात् क्षणमात्रके अवकाशमें अर्बों संख्यावाले कामरूपी उन वानर-सेनापतियोंसे तथा नदीके रहनेवाले, पर्वतोंके रहनेवाले और समुद्रोंके रहनेवाले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नादेयैः पार्वतेयैश्च सामुद्रैश्च महाबलैः ।
हरिभिर्मेघनिर्ह्रादैरन्यैश्च वनवासिभिः १२
तरुणादित्यवर्णैश्च शशिगौरैश्च वानरैः ।
पद्मकेसरवर्णैश्च श्वेतैर्हेमकृतालयैः १३
कोटीसहस्रैर्दशभिः श्रीमान्परिवृतस्तदा ।
वीरः शतबलिर्नाम वानरः प्रत्यदृश्यत १४
ततः काञ्चनशैलाभस्ताराया वीर्यवान्पिता ।
अनेकैर्बहुसाहस्रैः कोटिभिः प्रत्यदृश्यत १५
तथापरेण कोटीनां सहस्रेण समन्वितः ।
पिता रुमायाः संप्राप्तः सुग्रीवश्वशुरो विभुः १६
पद्मकेसरसंकाशस्तरुणार्कनिभाननः ।
बुद्धिमान्वानरश्रेष्ठः सर्ववानरसत्तमः १७
अनेकैर्बहुसाहस्रैर्वानराणां समन्वितः ।
पिता हनुमतः श्रीमान्केसरी प्रत्यदृश्यत १८

महाबली, मेघके सदृश गर्जनवाले वानर तथा अन्य वनचारियों (और लंगूरों) से भूमि पूर्ण हो गयी ॥ ११-१२ ॥ तरुण सूर्यके रंगवाले और चन्द्रमाके समान गोरे, पद्मकेसरके सदृश रंगवाले, सुमेरु पर्वतपर रहनेवाले दश हजार करोड वानरोंसे युक्त वीर श्री शतबलि नामक वानर दिखाई पडा ॥ १३-१४ ॥

तदनन्तर सोनेके पर्वतके सदृश कान्तिवाला, बलवान् ताराका (सुषेण) अनेक दश हजार करोड वानरोंसे युक्त दिखाई दिया ॥ १५ ॥ इसी प्रकार एक हजार करोडसे युक्त रुमाका पिता सुग्रीवका श्वसुर ॥ १६ ॥ कमलके केसरके सदृश वर्णवाला, मध्याह्नके सूर्यके सदृश वाला, बुद्धिमान्, वानरोंमें श्रेष्ठ, सब वानरोंमें सज्जन, हनुमानका केसरी बहुत हजार सेनासे दिखाई पडा ॥ १७-१८ ॥ लंगूरोंका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गोलाङ्गूलमहाराजो गवाक्षो भीमविक्रमः ।
वृतः कोटिसहस्रेण वानराणामदृश्यत ॥ १९

ऋक्षाणां भीमवेगानां धूम्रः शत्रुनिवर्हणः ।
वृतः कोटिसहस्राभ्यां द्वाभ्यां समभिवर्तत ॥ २०

महाबलनिभैर्घोरैः पनसो नाम यूथपः ।
आजगाम महावीर्यस्तिसृभिः कोटिभिर्वृतः ॥ २१

नीलाञ्जनचयाकारो नीलो नामैष यूथपः ।
अदृश्यत महाकायः कोटिभिर्दशभिर्वृतः ॥ २२

ततः काञ्चनशैलाभो गवयो नाम यूथपः ।
आजगाम महावीर्यः कोटिभिः पञ्चभिर्वृतः ॥ २३

दरीमुखश्च बलवान्यूथपोऽभ्याययौ तदा ।
वृतः कोटिसहस्रेण सुग्रीवं समवस्थितः ॥ २४

मैन्दश्च द्विविदश्चोभावश्विपुत्रौ महाबलौ ।
कोटिकोटिसहस्रेण वानराणामदृश्यताम् ॥ २५

(भीमविक्रमवाला गवाक्ष एक हजार करोड वानरोंसे युक्त दिखाई दिया ॥ १९ ॥

शत्रुओंका नाश करनेवाला धूम्र सेनापति भयानक वेगवाले दो हजार करोड रीछोंसे युक्त आया ॥ २० ॥ बडे पर्वतके सदृश, घोर, तीन करोड वानरोंसे युक्त महाबलवान् पनस नाम सेनापति आया ॥ २१ ॥ पश्चात् नीले अञ्जनके ढेरके सदृश आकारवाला, बडे शरीरवाला नील नामक यूथपति दश करोड वानरोंके साथ दिखाई दिया ॥ २२ ॥ तदनन्तर स्वर्णपर्वतके सदृश कान्तिवाला महाबली गवय नामक यूथपति पांच करोड वानरोंसे युक्त आया ॥ २३ ॥ उस समय दरीमुख नामक बलवान् सेनापति आया जो एक हजार करोड वानरोंके साथ सुग्रीवके समीपमें स्थित हो गया ॥ २४ ॥ महाबली, अश्विनीपुत्र मैन्द तथा द्विविद दोनों एक एक हजार करोड वानरोंसे संयुक्त दिखलाई दिये ॥ २५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गजश्च बलवान्वीरस्तिसृभिः कोटिभिर्वृतः २६
ऋक्षराजो महातेजा जाम्बवान्नाम नामतः ।
कोटिभिर्दशभिर्व्याप्तः सुग्रीवस्य वशे स्थितः २७
रुमणो नाम तेजस्वी विक्रान्तैर्वानरैर्वृतः ।
आगतो बलवांस्तूर्णं कोटीशतसमावृतः २८
ततः कोटिसहस्राणां सहस्रेण शतेन च ।
पृष्ठतोऽनुगतः प्राप्तो हरिभिर्गन्धमादनः २९
ततः पद्मसहस्रेण वृत्तः शङ्खशतेन च ।
युवराजोऽङ्गदः प्राप्तः पितुस्तुल्यपराक्रमः ३०
ततस्ताराद्युतिस्तारो हरिभिर्भीमविक्रमैः ।
पञ्चभिर्हरिकोटीभिर्दूरतः पर्यदृश्यत ३१
इन्द्रजानुः कपिर्वीरो यूथपः प्रत्यदृश्यत ।
एकादशानां कोटीनामीश्वरस्तैश्च संवृतः ३२
ततो रम्भस्त्वनुप्राप्तस्तरुणादित्यसंनिभः ।

बलवान्, वीर गज नामक वानर तीन करोड वानरोंसे परिवेष्टि आया ॥ २६ ॥ सुग्रीवके वशमें रहनेवाला महातेजस्वी जाम्बवान् ऋक्षराज शत करोड सेनाके साथ आया ॥ २७ ॥ विक्रान्त और रुमण्वान् नामक वानर एक अर्व वानरोंसे युक्त शीघ्र वानरेश्वर पास आया ॥ २८ ॥ तदनन्तर एक हजार करोडकी गुणी तथा एक हजार करोडकी सौ गुणी सेना जिसके पीछे चलती है गन्धमादन नामक वानर आया ॥ २९ ॥ तदनन्तर एक हजार प सौ शंखसे युक्त पिताके सदृश पराक्रमवाला युवराज अङ्गद आया।

इसके पश्चात् (आकाशस्थ) तारोंके सदृश कान्तिवाला, पराक्रमवाला तार नामक सेनापति पांच हजार वानरोंके साथ दिखाई दिया ॥ ३१ ॥ ग्यारह करोड वानरोंका स्वामी, इन्द्रजानु वीर सेनापति अपनी सेनासे युक्त दिखाई पडा ॥ ३२ ॥ पश्चात्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अयुतेन वृतश्चैव सहस्रेण शतेन च ३३
ततो यूथपतिर्वीरो दुर्मुखो नाम वानरः ।
प्रत्यदृश्यत कोटीभ्यां द्वाभ्यां परिवृतो बली ३४
कैलासशिखराकारैर्वानरैर्भीमविक्रमैः ।
वृतः कोटिसहस्रेण हनुमान्प्रत्यदृश्यत ३५
नलश्चापि महावीर्यः संवृतो द्रुमवासिभिः ।
कोटीशतेन संप्राप्तः सहस्रेण शतेन च ३६
ततो दरीमुखः श्रीमान्कोटिभिर्दशभिर्वृतः ।
संप्राप्तोऽभिनदंस्तस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ३७
शरभः कुमुदो वह्निर्वानरो रम्भ एव च ।
एते चान्ये च बहवो वानराः कामरूपिणः ३८
आवृत्य पृथिवीं सर्वां पर्वतांश्च वनानि च ।
यूथपाः समनुप्राप्ता येषां संख्या न विद्यते ३९
आगताश्च निविष्टाश्च पृथिव्यां सर्ववानराः ।
आप्लुवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवंगमाः ॥
अभ्यवर्तन्त सुग्रीवं सूर्यमभ्रगणा इव ४०

...र्यके सदृश (तेजस्वी) रम्भ नामक यूथपति एक सौ हजार अयुत वानरोंसे युक्त दिखाई पड़ा ॥ ३३ ॥ फिर बली, वीर दुर्मुख नामक सेनापति दो करोड़ वानरोंके साथ दिखाई दिया ॥ ३४ ॥ कैलासके शिखरके समान आकारवाले, भयानक विक्रमवाले एक हजार करोड़ वानरोंसे युक्त हनुमान् दिखाई दिया ॥ ३५ ॥ महाबली नल भी एक अर्ब एक हजार एक सौ वृक्षवासी वानरोंसे संयुक्त आया ॥ ३६ ॥

पश्चात् महात्मा सुग्रीवका सम्मत श्रीमान् दधिमुख नामक सेनापति दस करोड़ वानरोंके साथ आया ॥ ३७ ॥ शरभ, कुमुद, वह्नि, रहे-ये तथा अन्य कामरूपी बहुतसे वानरसेनापति समस्त पृथ्वी, पर्वत तथा वनोंको ढक कर प्राप्त हुए, जिन सबोंकी संख्या नहीं ज्ञात होती ॥ ३८-३९ ॥ पृथ्वीपर जो श्रेष्ठ वानर थे, वे सब आये उछलते, कूदते और गर्जते हुए वानर सुग्रीवके पास आये जैसे सूर्यके पास मेघसमूह ॥ ४० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कुर्वाणा बहुशब्दांश्च प्रकृष्टा बाहुशालिनः ।
शिरोभिर्वानरेन्द्राय सुग्रीवाय न्यवेदयन् ४१
अपरे वानरश्रेष्ठाः संगम्य च यथोचितम् ।
सुग्रीवेण समागम्य स्थिताः प्राञ्जलयस्तदा ४२
सुग्रीवस्त्वरितो रामे सर्वांस्तांस्त्वरितांस्तदा ।
निवेदयित्वा धर्मज्ञः स्थितः प्राञ्जलिरब्रवीत् ४३
यथासुखं पर्वतनिर्झरेषु वनेषु सर्वेषु च वानरेन्द्राः ।
निवेशयित्वा विधिवद्बलानि बलं बलज्ञः प्रतिपत्तुमीष्टे ॥

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० एकोनचत्वा० सर्गः ॥३९॥[

चत्वारिंशः सर्गः ।

अथ राजा समृद्धार्थः सुग्रीवः प्लवगेश्वरः ।
उवाच नरशार्दूलं रामं परबलार्दनम् १
आगता विनिविष्टाश्च बलिनः कामचारिणः ।
वानरेन्द्रा महेन्द्राभा ये मद्विषयवासिनः २
त इमे बहुविक्रान्तैर्बालिभिर्भीमविक्रमैः ।

बाहुबली, प्रसन्न हुए तथा बहुत शब्द करते हुए वानरोंने शि वानरेन्द्र सुग्रीवके वास्ते प्रणाम किया ॥ ४१ ॥ अन्य वानरश्रेष्ठ व कोंको सम्भाल करके और यथोचित सुग्रीवसे मिलकर हाथ जोडकर हो गये ॥ ४२ ॥ धर्मके जाननेवाले सुग्रीव हाथ जोडकर शीघ्रतासे वानरोंको रामसे निवेदन कर खडे होकर उन वानरोंसे बोले ॥४३॥ वानरेश्वरो ! सुखपूर्वक पर्वतके झरनों और सब वनोंमें विधिपूर्वक से ठहराकर बलज्ञ सेनापति अपनी अपनी सेनाओंको संभालें ॥ ४४ ॥

॥ यहाँ ३९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

इसके पश्चात् समृद्ध प्रयोजन वाले, वानरेश्वर, राजा सुग्रीव मनु श्रेष्ठ, शत्रुओंकी सेनाको नष्ट करनेवाले रामसे बोले ॥ १ ॥ गजेन्द्र कान्तिवाले बलवान् कामरूपी वानर जो मेरे राज्यमें रहनेवाले आये और बैठे हैं ॥ २ ॥ दैत्य और दानवोंके सदृश, घोर रूप ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आगता वानरा घोरा दैत्यदानवसंनिभाः　३
ख्यातकर्मापदानाश्च बलवन्तो जितक्लमाः ।
पराक्रमेषु विख्याता व्यवसायेषु चोत्तमाः　४
पृथिव्यम्बुचरा राम नानानगनिवासिनः ।
कोट्योघाश्च इमे प्राप्ता वानरास्तव किंकराः　५
निदेशवर्तिनः सर्वे सर्वे गुरुहिते स्थिताः ।
अभिप्रेतमनुष्ठातुं तव शक्ष्यन्त्यरिंदम　६
त इमे बहुसाहस्रैरनेकैर्बहुविक्रमैः ।
आगता वानरा घोरा दैत्यदानवसंनिभाः　७
यन्मन्यसे नरव्याघ्र प्राप्तकालं तदुच्यताम् ।
त्वत्सैन्यं त्वद्वशे युक्तमाज्ञापयितुमर्हसि　८
काममेवमिदं कार्यं विदितं मम तत्त्वतः ।
तथापि तु यथायुक्तमाज्ञापयितुमर्हसि　९
तथा ब्रुवाणं सुग्रीवं रामो दशरथात्मजः ।
बाहुभ्यां संपरिष्वज्य इदं वचनमब्रवीत्　१०

…से विक्रान्त व भयानक विक्रमवाले, वानरोंके साथ आये हैं ॥ ३ ॥ …राम! युद्धमें शौर्यसम्पन्न, बलवान्, थकावटको जीते हुए, पराक्रमोंमें …ख्यात और कर्मोंमें उत्तम, भूमि और जलमें रहनेवाले अनेक पर्वतोंके …वासी ये आपके किङ्कर करोडों वानर आये हुए हैं ॥ ४–५ ॥ हे अरिन्दम ! सब आज्ञामें चलनेवाले हैं और सब स्वामीके हितमें लगे …ए हैं तथा आपके अभिप्रेतको प्रतिपादन करनेको समर्थ हैं ॥ ६ ॥ हे …श्रेष्ठ! बहुत हजार भीमविक्रमवाली सेनाओंसे युक्त इन्हें आप जो काला-…नुसार उचित समझते हों सो कहिये, आपकी सेना आपके वशमें है, उसे …चित आज्ञा दीजिये ॥ ७–८ ॥ जो इन्हें करना चाहिये वह मुझे अच्छी तरह विदित है तो भी आप …यथायोग्य आज्ञा देनेके योग्य हैं ॥ ९ ॥ दशरथके पुत्र राम इस प्रकारसे …कहे हुए सुग्रीवको बाहुओंसे आलिङ्गन कर यह वचन बोले ॥ १० ॥ हे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ज्ञायतां सौम्य वैदेही यदि जीवति वा न वा।
स च देशो महाप्राज्ञ यस्मिन्वसति रावणः ११
अभिगम्य तु वैदेहीं निलयं रावणस्य च।
प्राप्तकालं विधास्यामि तस्मिन्काले सह त्वया १२
नाहमस्मिन्प्रभुः कार्ये वानरेन्द्र न लक्ष्मणः।
त्वमस्य हेतुः कार्यस्य प्रभुश्च प्लवगेश्वर १३
त्वमेवाज्ञापय विभो मम कार्यविनिश्चयम्।
त्वं हि जानासि मे कार्यं मम वीर न संशयः १४
सुहृद्द्वितीयो विक्रान्तः प्राज्ञः कालविशेषवित्।
भवानस्मद्धिते युक्तः सुहृदाप्तोर्थऽवित्तमः १५
एवमुक्तस्तु सुग्रीवो विनतं नामयूथपम्।
अब्रवीद्रामसांनिध्ये लक्ष्मणस्य च धीमतः १६
शैलाभं मेघनिर्घोषमूर्जितं प्लवगेश्वरम्।
सोमसूर्यनिभैः सार्धं वानरैर्वानरोत्तम १७

महाप्राज्ञ! मेरी सीता जीती है वा नहीं और उस देशको, जिसमें रावण बसता है, अन्वेषण करो ॥ ११ ॥ सीताको और र[ावणके] स्थानको जानकर उस समय तुम्हारे साथ समयके अनुसार कहूंगा॥[१२॥] हे वानरेश! इस कार्यमें मैं समर्थ नहीं हूं और न लक्ष्मण; [हे] वानरेश्वर! इस कार्यके तुम्ही कारण और योग्य हो ॥ १३ ॥

हे विभो! मेरे कार्यके निश्चयको तुम्ही आज्ञा दो, हे वीर! मे[रा] जो करना चाहिये उसे आप जानते हो, इसमें संदेह नहीं ॥ १४ ॥ मेरे अनुपम मित्र, बलवान्, चतुर, समयके जाननेवाले, मेरे हित[में लगे] हुए, कृतार्थ और प्रयोजनके जाननेमें कुशल हो ॥ १५ ॥ इस प्रका[र] बोधित वानरेश्वर सुग्रीव राम और बुद्धिमान् लक्ष्मणके सामने ही [...] तुल्य कान्तिवाले, मेघके समान शब्दवाले, अति बली विनतनाम[क यूथ]पतिको कहने लगा ॥ १६ ॥ हे वानरेश्वर! कार्य और अकार्यके [...]

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

देशकालनयैर्युक्तो विज्ञः कार्यविनिश्चये।
वृतः शतसहस्रेण वानराणां तरस्विनाम् १८
अधिगच्छ दिशां पूर्वां सशैलवनकाननाम्।
तत्र सीतां च वैदेहीं निलयं रावणस्य च १९
मार्गध्वं गिरिदुर्गेषु वनेषु च नदीषु च।
नदीं भागीरथीं रम्यां सरयूं कौशिकीं तथा २०
कालिन्दीं यमुनां रम्यां यामुनं च महागिरिम्।
सरस्वतीं च सिन्धुं च शोणं मणिनिभोदकम् २१
महीं कालमहीं चापि शैलकाननशोभिताम्।
ब्रह्ममालान्विदेहांश्च मालवान्काशिकोसलान् २२
मागधांश्च महाग्रामान्पुण्ड्रांस्त्वङ्गांस्तथैव च।
भूमिं च कोशकाराणां भूमिं च रजताकराम् २३
सर्वं च तद्विचेतव्यं मृगयद्भिस्ततस्ततः।
रामस्य दयितां भार्यां सीतां दशरथस्नुषाम् २४
समुद्रमवगाढांश्च पर्वतान्पत्तनानि च।
मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिताः केचिदालयाः २५

...काल‌ोचित नीतिसे युक्त तुम चन्द्र सूर्यके पुत्र वानरोंके साथ पर्वत, ...तथा वनोंवाली पूर्व दिशाको जाओ ॥ १७-१८ ॥

वहां पर्वतोंके शिखर, वन तथा नदियोंपर विदेहकी कन्या सीता और ...णके स्थानको ढूंढना। दशरथकी पुत्रवधू रामकी प्यारी पत्नीको जहां ...तलाश करते हुए तुम्हें रम्य भागीरथी नदी, सरयू तथा कौशिकी, ...लिन्दी, रमणीय यमुना और रम्य यामुन नामक पर्वत, सरस्वती, सिंधु, ...णिके समान जलवाला शोण, पर्वत तथा वनोंसे शोभित कालमही नाम ...विशेष और बडे बडे ग्रामोंवाले ब्रह्ममाल, विदेह, मालव, काशी, कोसल, ...गध, पुण्ड्र तथा वङ्ग आदि देशोंको, ढूंढने चाहिये ॥ १९-२४ ॥

हे वानरो! समुद्रमें अन्दर जो पर्वत हैं और सम्पूर्ण देश तथा मन्दरके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कर्णप्रावरणाश्चैव तथा चाप्योष्ठकर्णकाः ।
घोरलोहमुखाश्चैव जवनाश्चैकपादकाः २६
अक्षया बलवन्तश्च तथैव पुरुषादकाः ।
किरातास्तीक्ष्णचूडाश्च हेमाभाः प्रियदर्शनाः २७
आममीनाशनाश्चापि किराता द्वीपवासिनः ।
अन्तर्जलचरा घोरा नरव्याघ्रा इति स्मृताः २८
एतेषामाश्रयाः सर्वे विचेयाः काननौकसः ।
गिरिभिर्ये च गम्यन्ते प्लवनेन प्लवेन च २९
यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम् ।
सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णाकरमण्डितम् ३०
यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः ।
दिवं स्पृशति शृङ्गेण देवदानवसेवितः ३१
एतेषां गिरिदुर्गेषु प्रपातेषु वनेषु च ।
मार्गध्वं सहिताः सर्वे रामपत्नीं यशस्विनीम् ३२

विस्तृत किनारेपर स्थित ॥ २५ ॥ जो बिना कानोंके तथा ओठोंमें कान भयानक-लोहके समान मुखवाले, वेगयुक्त, एक पैरवाले, ॥ २६ ॥ बलवान् मनुष्य और राक्षस हैं इनके, और सुवर्णके सदृश प्रियदर्शन कर्णचूड नामक जो किरात हैं ॥ २७ ॥ इनके, और कच्चे योंको खानेवाले जो अन्यद्वीपस्थ किरात हैं, तथा भीतर जलमें जो घोररूप नरव्याघ्र नामसे प्रसिद्ध जीव हैं, ॥ २८ ॥ इन सबके ढूंढना चाहिये ।

इकट्ठे हुए तुम सब पर्वतोंद्वारा अर्थात् पहाडी रास्तेसे जो प्राप्त जाते हैं तथा जलयानसे और लांघनेसे जो प्राप्त होते हैं ॥ २९ ॥ द्वीपोंको तथा सप्तखण्डसे शोभित तथा रत्नोंवाले यवद्वीपको और खानोंसे शोभित सुवर्णरूप्यक द्वीपको, ॥ ३० ॥ और यवद्वीपको करके देवदानवोंसे सेवित जो शिशिर नामक पर्वत आता है जो से आकाशको स्पर्श करता है ॥ ३१ ॥ इन सब द्वीपोंके पर्वतोंकी झरनों और वनोंमें यशस्विनी रामपत्नी सीताको ढूंढना ॥ ३२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ततो रक्तजलं प्राप्य शोणाख्यं शीघ्रवाहिनम् ।
गत्वा पारं समुद्रस्य सिद्धचारणसेवितम् ३३
तस्य तीर्थेषु रम्येषु विचित्रेषु वनेषु च ।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः ३४
पर्वतप्रभवा नद्यः सुभीमबहुनिष्कुटाः ।
मार्गितव्या दरीमन्तः पर्वताश्च वनानि च ३५
ततः समुद्रद्वीपांश्च सुभीमान्द्रष्टुमर्हथ ।
ऊर्मिमन्तं महारौद्रं क्रोशन्तमनिलोद्धतम् ३६
तत्रासुरा महाकायाश्छायां गृह्णन्ति नित्यशः ।
ब्रह्मणा समनुज्ञाता दीर्घकालं बुभुक्षिताः ३७
तं कालमेघप्रतिमं महोरगनिषेवितम् ।
अभिगम्य महानादं तीर्थेनैव महोदधिम् ३८
ततो रक्तजलं भीमं लोहितं नाम सागरम् ।
गत्वा प्रेक्ष्यथ तां चैव बृहतीं कूटशाल्मलीम् ३९

तदनन्तर समुद्रके पार रक्तजलवाले, शीघ्रगतिसे वहनेवाले, अगाध, द्ध तथा चारणोंसे सेवित शोणनदको प्राप्त होकर ॥ ३३ ॥ उसके णीय तीर्थ तथा चित्रित वनमें जहां तहां सीता सहित रावणको ढूंढना ये ॥ ३४ ॥ रमणीय, बहुत उपवनोंवाली, पर्वतोंसे निकली हुई यों को और गुफावाले पर्वत तथा वनोंको ढूंढना ॥ ३५ ॥

तदनन्तर भयानक समुद्रोंके द्वीपोंको देखना तदनु लहरोंवाले, शब्द ते, पवनसे उठाये हुए (इक्षु नामक) समुद्रको जाना ॥ ३६ ॥ उस द्रमें ब्रह्मासे आज्ञप्त, बहुत समयके भूखे, बडे शरीरवाले असुर नित्य याको ग्रहण करते हैं ॥ ३७ ॥ नीले मेघके तुल्य, बडे सर्पोंसे सेवित, री शब्दवाले उस समुद्रको उपाय द्वारा प्राप्त होकर जाना ॥ ३८ ॥ वहांसे हुए तुम लाल जलवाले, भयानक लोहित नामक सागरको तथा बडे की शाल्मलीके वृक्षको देखोगे ॥ ३९ ॥ और उसमें अनेक रत्नोंसे भूषित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गृहं च वैनतेयस्य नानारत्नविभूषितम्।
तत्र कैलाससंकाशं विहितं विश्वकर्मणा ४०
तत्र शैलनिभा भीमा मन्देहा नाम राक्षसाः।
शैलशृङ्गेषु लम्बन्ते नानारूपा भयावहाः ४१
ते पतन्ति जले नित्यं सूर्यस्योदयनं प्रति।
अभितप्ताः स्म सूर्येण लम्बन्ते स्म पुनः पुनः ४२
निहता ब्रह्मतेजोभिरहन्यहनि राक्षसाः ४३
ततः पाण्डुरमेघाभं क्षीरोदं नाम सागरम्।
गत्वा द्रक्ष्यथ दुर्धर्षा मुक्ताहारमिवोर्मिभिः ४४
तस्य मध्ये महाञ्छ्वेतो ऋषभो नाम पर्वतः।
दिव्यगन्धैः कुसुमितैराचितैश्च नगैर्वृतः ४५
सरश्च राजतैः पद्मैर्ज्वलितैर्हेमकेसरैः।
नाम्ना सुदर्शनं नाम राजहंसैः समाकुलम् ४६
विबुधाश्चारणा यक्षाः किंनराश्चाप्सरोगणाः।
हृष्टाः समधिगच्छन्ति नलिनीं तां रिरंसवः ४७

कैलासके तुल्य, विश्वकर्मा द्वारारचित गरुडके घरको देखोगे ॥ ४० ॥ पर्वतोंके शिखरोंपर पर्वततुल्य, भयानक, अनेक रूपवाले, भयदायक नामक राक्षस लटकते हैं ॥ ४१ ॥

वे प्रतिदिन ब्रह्मतेजसे निहत हुए सूर्योदयके समय जलमें गिर पड़ते और सूर्यकी गर्मीसे तप्त होकर फिर वहीं लटक जाते हैं ॥ ४२ ॥ चले हुए दुर्धर्ष तुम श्वेत मेघके समान क्षीरोद नामक सागरको मोतियोंके हारकी न्याईं लहरोंसे युक्त देखोगे ॥ ४३-४४ ॥ उसके बीचमें सुगंधिवाले, पुष्पित, चांदीके वृक्षोंसे संयुक्त बडा भारी ऋषभ नामक पर्वत है ॥ ४५ ॥ उसमें सुवर्णके केशरोंवाले प्रकाशमान, चांदीके कमलों तथा राजहंसोंसे व्याप्त सुदर्शन नामवाला तालाब है ॥ ४६ ॥ क्रीडाकी इच्छावाले तथा प्रसन्न हुए और अप्सरासमुदायसे युक्त देव चारण यक्ष और किन्नर उस तालाबपर जाते हैं ॥ ४७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्षीरोदं समतिक्रम्य तदा द्रक्ष्यथ वानराः।
जलोदं सागरं शीघ्रं सर्वभूतभयावहम् ४८
तत्र तत्कोपजं तेजः कृतं हयमुखं महत्।
अस्याहुस्तं महावेगमोदनं सचराचरम् ४९
तत्र विक्रोशतां नादो भूतानां सागरौकसाम्।
श्रूयते चासमर्थानां दृष्ट्वाभूद्वडवामुखम् ५०
स्वादूदस्योत्तरे तीरे योजनानि त्रयोदश।
जातरूपशिलो नाम सुमहान्कनकप्रभः ५१
तत्र चन्द्रप्रतीकाशं पन्नगं धरणीधरम्।
पद्मपत्रविशालाक्षं ततो द्रक्ष्यथ वानराः ५२
आसीनं पर्वतस्याग्रे सर्वदेवनमस्कृतम्।
सहस्रशिरसं देवमनन्तं नीलवाससम् ५३
त्रिशिराः काञ्चनः केतुस्तालस्तस्य महात्मनः।
स्थापितः पर्वतस्याग्रे विराजति सवेदिकः ५४

हे वानरो! तदनु क्षीरोदको लांघकर सब जीवोंको भयप्रद जलोद सागरको देखोगे ॥ ४८ ॥ वहांपर (और्व द्वारा) फेंका हुआ, और्वके कोपसे उत्पन्न, हयमुख नामक प्रसिद्ध बडा तेज विद्यमान है, इस तेजका चराचर सहित महावेगवाला वह जल (संसार वेलामें) ईन्धन कहा जाता है ॥ ४९ ॥ वहांपर हयमुखको देखकर सागरनिवासी समर्थ जीवोंका भी (भयोत्पन्न) शब्द सुनाई पडता है ॥ ५० ॥ उस शुद्ध जलवाले सागरके दूसरे पार तेरह योजनका जातरूपशिल नामक सोनेका बडा पहाड है ॥ ५१ ॥

हे वानरो! इसके आगे वहां चन्द्रमाकी कान्तिवाले, कमलपत्रके सदृश, विशालनेत्रवाले, पृथ्वीको धारण करनेवाले, ॥ ५२ ॥ पर्वतके अग्रभागपर बैठे, सब प्राणियोंसे पूजित, नील वस्त्रधारी, हजार शिरवाले अनन्त देव सर्पको देखोगे ॥ ५३ ॥ उस महात्मा (शेष) की तालवृक्षरूपी, तीन शिरवाली, पर्वतके अग्रभागमें स्थापित और वेदीसहित सोनेकी ध्वजा विराजमान है ॥ ५४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पूर्वस्यां दिशि निर्माणं कृतं तत्त्रिदशेश्वरैः।
ततः परं हेममयः श्रीमानुदयपर्वतः ५५
तस्य कोटिर्दिवं स्पृष्ट्वा शतयोजनमायता।
जातरूपमयी दिव्या विराजति सवेदिका ५६
सालैस्तालैस्तमालैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः।
जातरूपमयैर्दिव्यैः शोभते सूर्यसंनिभैः ५७
तत्र योजनविस्तारमुच्छ्रितं दशयोजनम्।
शृङ्गं सौमनसं नाम जातरूपमयं ध्रुवम् ५८
तत्र पूर्वं पदं कृत्वा पुरा विष्णुस्त्रिविक्रमे।
द्वितीयं शिखरे मेरोश्चकार पुरुषोत्तमः ५९
उत्तरेण परिक्रम्य जम्बूद्वीपं दिवाकरः।
दृश्यो भवति भूयिष्ठं शिखरं तन्महोच्छ्रयम् ६०
तत्र वैखानसा नाम वालखिल्या महर्षयः।
प्रकाशमाना दृश्यन्ते सूर्यवर्णास्तपस्विनः ६१
अयं सुदर्शनो द्वीपः पुरो यस्य प्रकाशते।

इन्द्रने पूर्व दिशामें इसका निर्माण किया है, इसके आगे शोभायमान सुवर्णमय उदय पर्वत है ॥५५॥ उसकी सौ योजन लम्बी, स्वर्णमय, दिव्य वेदीयुक्त कोटी (कंगूरा) आकाशको स्पर्श करके शोभित है ॥ ५६ ॥ फूले हुए सूर्यकीसी कान्तिवाले मनोहर साल, तमाल, कर्णिकारोंसे शोभित है ॥ ५७ ॥ वहांपर एक योजन विस्तारवाला और दश योजन ऊंचा सौमनस नाम श्रृंग है ॥ ५८ ॥ वहांपर पुराकालमें त्रिविक्रमावतारके समय पुरुषोत्तम भगवान्ने पहिले पदको रखकर दूसरे पदको मेरुके शिखरपर रखा था ॥ ५९ ॥

सूर्य उत्तर दिशासे जम्बूद्वीपको परिक्रमण कर उस अतिशय ऊंचे शिखरको प्राप्त होकर दिखाई देते हैं ॥ ६० ॥ वहां सूर्यकेसे वर्णवाले प्रकाशमान, तपस्वी वैखानस और वालखिल्य नामवाले महर्षि दिखाई देते हैं ॥ ६१ ॥ यह उदयपर्वतके समीपमें स्थित सुदर्शन नामद्वीप है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तस्मिंस्तेजश्च चक्षुश्च सर्वप्राणभृतामपि ६२
शैलस्य तस्य पृष्ठेषु कंदरेषु वनेषु च ।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः ६३
काञ्चनस्य च शैलस्य सूर्यस्य च महात्मनः ।
आविष्टा तेजसा संध्या पूर्वा रक्ता प्रकाशते ६४
पूर्वमेतत्कृतं द्वारं पृथिव्या भुवनस्य च ।
सूर्यस्योदयनं चैव पूर्वा ह्येषा दिगुच्यते ६५
तस्य शैलस्य पृष्ठेषु निर्झरेषु गुहासु च ।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः ६६
ततः परमगम्या स्याद्दिक्पूर्वा त्रिदशावृता ।
रहिता चन्द्रसूर्याभ्यामदृश्या तमसावृता ६७
शैलेषु तेषु सर्वेषु कन्दरेषु नदीषु च ।
ये च नोक्ता मयोद्देशा विचेया तेषु जानकी ६८
एतावद्वानरैः शक्यं गन्तुं वानरपुंगवाः ।

जिसके सामने सब शरीरधारियोंके नेत्र प्रकाश ग्रहण करते हैं, वही तेज (सूर्य) इस द्वीपपर प्रकाशित होता है ॥६२॥ उस पहाडके शिखर, कन्दरा और वनोंमें सीता समेत रावणको जहां तहां ढूंढना ॥ ६३ ॥

सुवर्णके पहाड और महात्मा सूर्यके तेजसे व्याप्त हुई पूर्व संध्या रक्त होकर प्रकाशित होती है ॥ ६४ ॥ जिससे कि यह (उदय पर्वत) पृथिवी और भुवनका पहिला द्वार (ब्रह्माने) किया है और सूर्यके भ्रमणके वास्ते यह उदयस्थान बनाया है, अतः यह पूर्व दिशा कही जाती है ॥ ६५ ॥ उस पर्वतके ऊपर झरनोंमें और गुफाओंमें सीता समेत रावणको जहां तहां ढूंढना ॥ ६६ ॥ इसके आगे देवताओंसे घिरी हुई, चन्द्र और सूर्यसे रहित, अदृश्य, अन्धकारसे आच्छादित पूर्व दिशा अगम्य है ॥ ६७ ॥ उन सब पर्वतोंमें, गुफाओंमें तथा वनोंमें और मैंने जो देश नहीं कहे हैं, उनमें भी सीताको ढूंढना ॥ ६८ ॥

हे वानरश्रेष्ठो ! वानरोंके साथ इतना ही प्रदेश जाने योग्य है, इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अभास्करममर्यादं न जानीमस्ततः परम् ६९
अभिगम्य तु वैदेहीं निलयं रावणस्य च।
मासे पूर्णे निवर्तध्वमुदयं प्राप्य पर्वतम् ७०
ऊर्ध्वं मासान्न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेन्मम।
सिद्धार्थाः संनिवर्तध्वमधिगम्य च मैथिलीम् ७१
महेन्द्रकान्तां वनषण्डमण्डितां दिशं चरित्वा निपुणेन वानराः।
अवाप्य सीतां रघुवंशजप्रियां ततो निवृत्ताः सुखिनो भविष्यथ
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे चत्वारिंशः सर्गः ॥४०॥[१

एकचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४१ ॥

ततः प्रस्थाप्य सुग्रीवस्तन्महद्वानरं बलम्।
दक्षिणां प्रेषयामास वानरानभिलक्षितान् १
नीलमग्निसुतं चैव हनूमन्तं च वानरम्।
पितामहसुतं चैव जाम्बवन्तं महौजसम् २
सुहोत्रं च शरारिं च शरगुल्मं तथैव च।
गजं गवाक्षं गवयं सुषेणं वृषभं तथा ३

आगे जो स्थान सूर्य और मर्यादारहित है उसे हम नहीं जानते हैं॥
सीताको और रावणके स्थानको तलाश करके उदय पर्वतपर पहुंचकर
मास व्यतीत होनेपर लौट आना ॥ ७० ॥ महीनेसे अधिक वहां न
जो रहेगा वह मुझसे मारा जायगा, तुम सीताको पाकर कृतकृत्य
लौटना ॥ ७१ ॥ हे वानरो ! वनके झुंडोंसे शोभित पूर्व दिशामें बुद्धि
से घूमकर रामकी प्यारी सीताको पाकर तदनन्तर लौटोगे तो
होवोगे ॥ ७२ ॥

॥ यहाँ ४१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

इसके पश्चात् सुग्रीव वानरोंकी उस बडी सेनाको भेजकर
वानरोंको दक्षिण दिशामें भेजने लगे ॥ १ ॥ विद्वान्, वीर सुग्रीवने
अग्निपुत्र, हनुमान् ब्रह्माके पुत्र महाबली ॥ २ ॥ जाम्बवान्, सुहोत्र,
शरगुल्म, गज, गवाक्ष, गवय, सुषेण, ऋषभ, ॥ ३ ॥ मैन्द, द्विविद,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मैन्दं च द्विविदं चैव सुषेणं गन्धमादनम् ।
उल्कामुखमनङ्गं च हुताशनसुतावुभौ ४
अङ्गदप्रमुखान्वीरान्वीरः कपिगणेश्वरः ।
वेगविक्रमसंपन्नान्संदिदेश विशेषवित् ५
तेषामग्रेसरं चैव बृहद्बलमथाङ्गदम् ।
विधाय हरिवीराणामादिशद्दक्षिणां दिशम् ६
ये केचन समुद्देशास्तस्यां दिशि सुदुर्गमाः ।
कपीशः कपिमुख्यानां स तेषां समुदाहरत् ७
सहस्रशिरसं विन्ध्यं नानाद्रुमलतायुतम् ।
नर्मदां च नदीं रम्यां महोरगनिषेविताम् ८
ततो गोदावरीं रम्यां कृष्णवेणीं महानदीम् ।
मेखलानुत्कलांश्चैव दशार्णनगराण्यपि ॥
आब्रवन्तीमवन्तीं च सर्वमेवानुपश्यत ९
विदर्भानृष्टिकांश्चैव रम्यान्माहिषकानपि ।
तथा मत्स्यकालिङ्गांश्च कौशिकांश्च समन्ततः १०

गन्धमादन और अग्निके दोनों पुत्र उल्कामुख, ॥ ४ ॥ असङ्ग तथा अङ्गदादि वेगविक्रमसे सम्पन्न वीरोंको आज्ञा दी ॥ ५ ॥ सुग्रीवने उनके आगे चलने वाली वेगवाली बडी सेनाका विधान करके वानरेश्वरोंको दक्षिण दिशाकी आज्ञा दी ॥ ६ ॥

जो प्रदेश उस दिशामें दुर्गम थे, वे सुग्रीवने वानरेश्वरोंको बताये ॥ ७ ॥ अनेक वृक्ष तथा लताओंसे युक्त सहस्र शिरवाले विन्ध्यको, बडे सर्पोंसे सेवित दुर्गम नर्मदा नदीको पश्चात् रमणीय गोदावरी, महानदी कृष्णवेणी, बडे सर्पोंसे सेवित महाभागा वरदाको और मेखला उत्कल, दशार्ण नगर, अश्ववन्ती और अवन्ती इन देशोंको देखना, ॥ ८–९ ॥ विदर्भ, ऋषिक, रम्य माहिषक, वङ्ग, कलिङ्ग और कौशिक इन देशोंको सब ओरसे देख-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्वीक्ष्य दण्डकारण्यं सपर्वतनदीगुहाम् ।
नदीं गोदावरीं चैव सर्वमेवानुपश्यत ११
तथैवान्ध्रांश्च पुण्ड्रांश्च चोलान्पाण्ड्यांश्च केरलान् ।
अयोमुखश्च गन्तव्यः पर्वतो धातुमण्डितः १२
विचित्रशिखरः श्रीमांश्चित्रपुष्पितकाननः ।
सुचन्दनवनोद्देशो मार्गितव्यो महागिरिः १३
ततस्तामापगां दिव्यां प्रसन्नसलिलाशयाम् ।
तत्र द्रक्ष्यथ कावेरीं विहृतामप्सरोगणैः १४
तस्यासीनं नगस्याग्रे मलयस्य महौजसः ।
द्रक्ष्यथादित्यसंकाशमगस्त्यमृषिसत्तमम् १५
ततस्तेनाऽभ्यनुज्ञाताः प्रसन्नेन महात्मना ।
ताम्रपर्णीं ग्राहजुष्टां तरिष्यथ महानदीम् १६
सा चन्दनवनैश्चित्रैः प्रच्छन्नद्वीपवारिणी ।
कान्तेव युवती कान्तं समुद्रमवगाहते १७
ततो हेममयं दिव्यं मुक्तामणिविभूषितम् ।

कर ॥ १० ॥ पर्वत, नदी और गुफाओं सहित दण्डकारण्यको देख गोदावरी नदी ॥ ११ ॥ तथा अन्ध्र, पुण्ड्र, चोल, केरल और पाण्ड्य सबको देखना, धातुओंसे शोभित, विचित्र शिखरोंवाले, चित्रित और पु वनयुक्त चन्दन वनके प्रदेशवाले, महागिरि अयोमुख (सह्य) नाम पर्वतको ढूंढना ॥ १२-१३ ॥

वहांसे आगे अप्सराओंसे युक्त, स्वच्छ जलवाली, कल्याणकारिणी, दि कावेरी नदीको देखोगे ॥ १४ ॥ उस मलय पर्वतके अग्रभागपर बैठे हु महातेजस्वी, सूर्यके सदृश प्रकाशवाले अगस्त्य ऋषिको देखोगे ॥ १५ तदनन्तर प्रसन्न हुए महात्मा अगस्त्यसे आज्ञप्त तुम ग्राहोंसे सेवित ता पर्णी महानदीको तरोगे ॥ १६ ॥ द्वीपवाली और दिव्य चन्दनके व ढकी हुई वह नदी समुद्रको विलोडन करती है जैसे युवावस्थायुक्त अपने पतिको ॥ १७ ॥

हे वानरो ! वहांसे चले हुए तुम सुवर्णमय, दिव्य मुक्ता और मणि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

युक्तं कवाटं पाण्ड्यानां गता द्रक्ष्यथ वानराः १८
ततः समुद्रमासाद्य संप्रधार्यार्थनिश्चयम् ।
अगस्त्येनान्तरे तत्र सागरे विनिवेशितः १९
चित्रनानानगः श्रीमान्महेन्द्रः पर्वतोत्तमः ।
जातरूपमयः श्रीमानवगाढो महार्णवम् २०
नानाविधैर्नगैः फुल्लैर्लताभिश्चोपशोभितम् ।
देवर्षियक्षप्रवरैरप्सरोभिश्च शोभितम् २१
सिद्धचारणसङ्घैश्च प्रकीर्णं सुमनोरमम् ।
तमुपैति सहस्राक्षः सदा पर्वसु पर्वसु २२
द्वीपस्तस्यापरे पारे शतयोजनविस्तृतः ।
अगम्यो मानुषैर्दीप्तस्तं मार्गध्वं समन्ततः २३
तत्र सर्वात्मना सीता मार्गितव्या विशेषतः ।
स हि देशस्तु वध्यस्य रावणस्य दुरात्मनः २४
राक्षसाधिपतेर्वासः सहस्राक्षसमद्युतेः ।
दक्षिणस्य समुद्रस्य मध्ये तस्य तु राक्षसी २५

विभूषित पाण्ड्योंके उत्तम कवाट नामक नगरको देखोगे ॥ १८ ॥ फिर पाण्ड्य नगरसे (चलकर) समुद्रको प्राप्त होकर तथा समुद्रलङ्घनादि कार्यको करके अगस्त्यसे सागरके बीचमें निवेशित किया, ॥ १९ ॥ चित्रित अनेक वृक्षोंवाला, सुवर्णमय, पुष्पफलादि समृद्धियोंवाला, समुद्रमें घुसा हुआ और कान्तिमान् महेन्द्र पर्वत है ॥ २० ॥ हमेशा हर पर्वमें इन्द्र अनेक प्रकारके सब वृक्षोंसे तथा लताओंसे शोभित, देवर्षि, यज्ञप्रवर तथा अप्सराओंसे सेवित, ॥ २१ ॥ सिद्ध और चारणोंके झुंडोंसे व्याप्त मनोहर उस पर्वतपर आता है ॥ २२ ॥

उसके दूसरे पार शतयोजन विस्तृत, मानुषोंसे अगम्य, प्रकाशमान द्वीप है, उसे चारों ओरसे ढूंढना ॥ २३ ॥ तथा वहांपर सब प्रकारसे सीताको विशेष कर देखना, वह देश इन्द्रके समान कान्तिवाले, मारनेके योग्य ॥ २४ ॥ राक्षसेश्वर, दुरात्मा रावणका वासस्थान है, उस दक्षिण समुद्रके बीचमें (जीवोंकी) छायाको खींचकर भोजन करनेवाली अङ्गारका नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अङ्गारकेति विख्याता छायामाक्षिप्य भोजनी।
एवं निःसंशयान्कृत्वा संशयान्नष्टसंशयाः २६
मृगयध्वं नरेन्द्रस्य पत्नीममिततेजसः।
तमतिक्रम्य लक्ष्मीवान्समुद्रे शतयोजने २७
गिरिः पुष्पितको नाम सिद्धचारणसेवितः।
चन्द्रसूर्यांशुसंकाशः सागराम्बुसमाश्रयः २८
भ्राजते विपुलैः शृङ्गैरम्बरं विलिखन्निव।
तस्यैकं काञ्चनं शृङ्गं सेवते यं दिवाकरः २९
न तं कृतघ्नाः पश्यन्ति न नृशंसा न नास्तिकाः।
प्रणम्य शिरसा शैलं तं विमार्गथ वानराः ३०
तमतिक्रम्य दुर्धर्षं सूर्यवान्नाम पर्वतः।
अध्वना दुर्विगाहेन योजनानि चतुर्दश ३१
ततस्तमप्यतिक्रम्य वैद्युतो नाम पर्वतः।
सर्वकामफलैर्वृक्षैः सर्वकालमनोहरैः ३२

राक्षसी है, अपरिमित तेजस्वी इस प्रकार संशयोंको निःसंशय करके ... हीन हुए ॥ २१–२६ ॥ तुम अतितेजस्वी राजा रामकी स्त्रीको ढूंढो, ... उलंघन कर सौ योजनके समुद्रमें लक्ष्मीवान्, ॥ २७ ॥ सिद्ध और चा... सेवित पुष्पितक नाम पहाड है ॥ २८ ॥ चन्द्रमा और सूर्यकी कि... सदृश, सागरके जलसे घिरा हुआ वह बडे शिखरोंसे आकाशको ... हुआ सा शोभा दे रहा है, उसका एक शिखर स्वर्णका है, जिसे सूर्य ... है ॥ २९ ॥

कृतघ्नी, क्रूर, और नास्तिक उसे नहीं देख सकते, हे वानरो! ... पर्वतको शिरसे नमस्कार करके (सीताको) ढूंढना अथवा परमा... शिरसे प्रणाम करके उस पर्वतको ढूंढना ॥ ३० ॥ हे दुर्धर्षो! उसका ... करके जिसमें कष्टसे प्राप्त होने योग्य चौदह योजनके मार्गसे युक्त सू... नाम पर्वत है ॥ ३१ ॥

तदनन्तर उसका भी उल्लंघन करके सब समयमें मनोहर तथा ... कामनाओंके देनेवाले वृक्षोंसे युक्त वैद्युत नाम पर्वत है ॥ ३२ ॥ हे ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तत्र भुक्त्वा वरार्हाणि मूलानि च फलानि च।
मधूनि पीत्वा जुष्टानि परं गच्छत वानराः ३३
तत्र नेत्रमनः कान्तः कुञ्जरो नाम पर्वतः।
अगस्त्यभवनं यत्र निर्मितं विश्वकर्मणा ३४
तत्र योजनविस्तारमुच्छ्रितं दशयोजनम्।
शरणं काञ्चनं दिव्यं नानारत्नविभूषितम् ३५
तत्र भोगवती नाम सर्पाणामालयः पुरी।
विशालरथ्या दुर्धर्षा सर्वतः परिरक्षिता ३६
रक्षिता पन्नगैर्घोरैस्तीक्ष्णदंष्ट्रैर्महाविषैः।
सर्पराजो महाघोरो यस्यां वसति वासुकिः ३७
निर्याय मार्गितव्या च सा च भोगवती पुरी।
तत्र चानन्तरोद्देशा ये केचन समावृताः ३८
तं च देशमतिक्रम्य महानृषभसंस्थितिः।
सर्वरत्नमयः श्रीमानृषभो नाम पर्वतः ३९

वहां उत्तम मूल और फलोंको खाकर, उत्तम शहदोंको पीकर आगे जाना ॥३३॥ वहां नेत्र और मनको प्रिय कुञ्जर नामक पर्वत है, जहांपर कि विश्वकर्माने अगस्त्यका भवन बनाया है ॥ ३४ ॥ वहां एक योजन चौडा, दश योजन ऊंचा, अनेकरत्नोंसे शोभित दिव्य, सोनेका घर है ॥ ३५ ॥ वहां सब ओरसे रक्षित विशाल ड्यौढियोंवाली दुर्धर्षणीय, तीक्ष्ण दाढोंवाले महाविषैले घोर पन्नगोंसे रक्षित भोगवती नामक नगरी सर्पोंका स्थान है ॥ ३६ ॥

जिसमें बुद्धिमान् सर्पराज वासुकि वसता है, अगस्त्यभवनसे निकलकर उस भोगवती पुरकी तालाश करना अर्थात् उसमें सीताको ढूंढना ॥३७॥ और वहांपर जो समीपस्थ छिपे हुए देश हैं, उन्हें भी ढूंढना ॥ ३८ ॥ उस देशको उल्लंघन करके ऋषभके सदृश स्थित, सर्वरत्नमय श्रीमान् ऋषभ नामक बडा पर्वत है ॥ ३९ ॥ जहांपर कि गोरोचनके समान और पद्मके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गोशीर्षकं पद्मकं च हरिश्यामं च चन्दनम् ।
दिव्यमुत्पद्यते यत्र तच्चैवाग्निसमप्रभम् ४०
न तु तच्चन्दनं दृष्ट्वा स्प्रष्टव्यं तु कदाचन ।
रोहिता नाम गन्धर्वा घोरं रक्षन्ति तद्वनम् ४१
तत्र गन्धर्वपतयः पञ्च सूर्यसमप्रभाः ।
शैलूषो ग्रामणीः शिक्षः शुक्रो बभ्रुस्तथैव च ४२
रविसोमाग्निवपुषां निवासः पुण्यकर्मणाम् ।
अन्ते पृथिव्या दुर्धर्षास्ततः स्वर्गजितः स्थिताः ४३
ततः परं न वः सेव्यः पितृलोकः सुदारुणः ।
राजधानी यमस्यैषा कष्टेन तमसावृता ४४
एतावदेव युष्माभिर्वीरवानरपुंगवाः ।
शक्यं विचेतुं गन्तुं वा नातो गतिमतां गतिः ४५
सर्वमेतत्समालोक्य यच्चान्यदपि दृश्यते ।
गतिं विदित्वा वैदेह्याः संनिवर्तितुमर्हथ ४६

पत्तेके समान तथा तमालके समान और अग्निके सदृश कान्तिवाला दि
चन्दन उत्पन्न होता है ॥ ४० ॥

उस चन्दनको देखकर कभी भी छूना नहीं, क्योंकि रोहित नामक
गन्धर्व उस वनकी रक्षा करते हैं ॥ ४१ ॥ वहां सूर्य समान कान्तिवाले
शैलूष, ग्रामणी, शिक्षु, शुभ्र और बभ्रु पांच गन्धर्वपति हैं ॥ ४२ ॥ सूर्य
सोम और अग्निके शरीरधारी पुण्यात्माओंका स्थान है, वहां पृथ्वीके अन्त
स्वर्गके जीतनेवाले दुर्धर्ष (मनुष्य) स्थित हैं ॥ ४३ ॥

इसके आगे दो दारुण पितृलोक है वह तुमको न सेवना चाहिये और
वहां न जाना; क्योंकि वह घोर अन्धकारसे युक्त यमकी राजधानी है ॥
हे वीर वानरो ! इतने ही तक तुम जा सकते और तलाश कर सकते
इसके आगे जानेवालोंका जाना नहीं है ॥ ४५ ॥ इस सबको तथा और
कुछ दिखाई पडे, उसको देखकर सीताकी गतिको जानकर लौटना ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यश्च मासान्निवृत्तोऽग्रे दृष्टा सीतेति वक्ष्यति।
मत्तुल्यविभवो भोगैः सुखं स विहरिष्यति ४७
ततः प्रियतरो नास्ति मम प्राणाद्विशेषतः।
कृतापराधो बहुशो मम बन्धुर्भविष्यति ४८
अमितबलपराक्रमा भवन्तो विपुलगुणेषु कुलेषु च प्रसूताः।
मनुजपतिसुतां यथा लभध्वं तदधिगुणं पुरुषार्थमारभध्वम् ४९
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० एकचत्वारिंशः सर्गः ॥४१॥ [१७५३]

द्विचत्वारिंशः सर्गः।

अथ प्रस्थाप्य स हरीन्सुग्रीवो दक्षिणां दिशम्।
अब्रवीन्मेघसंकाशं सुषेणं नाम वानरम् १
तारायाः पितरं राजा श्वशुरं भीमविक्रमम्।
अब्रवीत्प्रांजलिर्वाक्यमभिगम्य प्रणम्य च २
महर्षिपुत्रं मारीचमर्चिष्मन्तं महाकपिम्।
वृतं कपिवरैः शूरैर्महेन्द्रसदृशद्युतिम् ३
बुद्धिविक्रमसंपन्नं वैनतेयसमद्युतिम्।

महीनेसे पूर्व लौटकर जो "सीता मैंने देखी है" यह कहेगा, वह मेरे सदृश ऐश्वर्यवाला होकर भोगोंसे सुखपूर्वक विहार करेगा ॥४७॥ उससे अत्यन्त प्यारा मुझे कोई न होगा, मेरे प्राणोंसे वह अधिक प्यारा होगा और बहुतसे अपराधयुक्त भी मेरा बन्धु होगा ॥ ४८ ॥ अधिक गुणवाले कुलोंमें उत्पन्न हुए, अतुलनीय पराक्रमवाले तुम जनककी कन्याको जैसे पाओ उसीके अनुकूल पुरुषार्थका आरम्भ करो ॥ ४९ ॥

॥ यहाँ ४१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

इसके बाद सुग्रीव उन वानरोंको दक्षिण दिशाको भेजकर मेघके सदृश, सुषेण नामक सेनापतिसे बोले और- ॥ १ ॥ राजा सुग्रीव ताराके पिता भीम पराक्रमी अपने श्वसुरके समीप पहुंच हाथ जोडकर प्रणाम करके बोले ॥ २ ॥ मरीचिके पुत्र, तेजस्वी महाकपि, शूर वानरोंसे युक्त, इंद्रसमान प्रकाशमान ॥ ३ ॥ बुद्धि बलसे संयुक्त, गरुडसमान तेजस्वी मारीच नामक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मरीचिपुत्रान्मारीचानर्चिर्माल्यान्महाबलान् ४
ऋषिपुत्रांश्च तान्सर्वान्प्रतीचीमादिशाद्दिशम्।
द्वाभ्यां शतसहस्राभ्यां कपीनां कपिसत्तमाः ५
सुषेणप्रमुखा यूयं वैदेहीं परिमार्गथ।
सौराष्ट्रान्सहबाह्लीकांश्चन्द्रचित्रांस्तथैव च ६
स्फीताञ्जनपदान्रम्यान्विपुलानि पुराणि च।
पुंनागगहनं कुक्षिं वकुलोद्दालकाकुलम् ७
तथा केतकखण्डांश्च मार्गध्वं हरिपुंगवाः।
प्रत्यक्स्रोतोवहाश्चैव नद्यः शीतजलाः शिवाः ८
तापसानामरण्यानि कान्तारगिरयश्च ये।
तत्र स्थलीर्मरुप्राया अत्युच्चशिशिराः शिलाः ९
गिरिजालावृतां दुर्गां मार्गित्वा पश्चिमां दिशम्।
ततः पश्चिममागम्य समुद्रं द्रष्टुमर्हथ १०
तिमिनक्राकुलजलं गत्वा द्रक्ष्यथ वानराः।
ततः केतकखण्डेषु तमालगहनेषु च ११

वानरको तथा मरीचिके अन्य पुत्र जो तेजस्वी महाबली मारीच थे॥४॥ सब ऋषिपुत्रोंको पश्चिम दिशाकी आज्ञा दी, हे सुषेणादि श्रेष्ठ वानरो तुम वानरोंकी दो लाख संख्यासे युक्त होकर सीताको ढूंढो॥५॥

हे वानरसेनापतियो! बाह्लीक देशोंके सहित सुराष्ट्र देश तथा भयानक बडे, रम्य अन्य देशोंको, और बडे नगरोंको, वकुल और लकोंसे भरे हुए,॥६–७॥ नागकेसरसे घने मध्यप्रदेशको तथा केतकी झुंडोंको ढूंढना, शीत जलवाली, कल्याणकारिणी, पूर्वको बहनेवाली नदी॥८॥ तपस्वियोंके जो वन और दुर्गम मार्गवाले पर्वत हैं, सीताको ढूंढना, हे वानरो! तदनन्तर प्रायः जलहीन मरुस्थलको तथा शिखरवाली शिला॥९॥ और पर्वतके जालोंसे ढकी हुई पश्चिम दिशा ढूंढकर पश्चिम समुद्रको प्राप्त होकर॥१०॥ मछली और नक्रोंसे युक्त जल अक्षोभ्य समुद्रको देखना, इसके अनन्तर केतकीके झुण्ड और तमाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कपयो विहरिष्यन्ति नारिकेलवनेषु च ।
तत्र सीतां च मार्गध्वं निलयं रावणस्य च १२
वेलातलनिविष्टेषु पर्वतेषु वनेषु च ।
मुरचीपत्तनं चैव रम्यं चैव जटापुरम् १३
अवन्तीमङ्गलेपां च तथा चालक्षितं वनम् ।
राष्ट्राणि च विशालानि पत्तनानि ततस्ततः १४
सिंधुसागरयोश्चैव संगमे तत्र पर्वते ।
महान्सोमगिरिर्नाम शतशृङ्गो महाद्रुमः १५
तत्र प्रस्थेषु रम्येषु सिंहाः पक्षगमास्थिताः ।
तिमिमत्स्यगजांश्चैव नीडान्यारोपयन्ति च १६
तानि नीडानि सिंहानां गिरिशृङ्गताश्च ये ।
दृप्तास्तृप्ताश्च मातङ्गास्तोयदस्वननिःस्वनाः १७
विचरन्ति विशालेस्मिस्तोयपूर्णे समन्ततः ।
तस्य शृङ्गं दिवस्पर्शं काञ्चनं चित्रपादपम् १८

...में तथा नारिकेलोंके वनोंमें वानर विहार करेंगे, वहां वेलाके किनारेके ...त, मुरचो वन, रमणीय जटीपुर और वनोंमें सीताको और रावणके ...नको ढूंढना ॥ ११–१३ ॥

अवन्ती, अङ्गलोपा, अलक्षित वन, विशाल राष्ट्र और नगरोंको जहां ...हां ढूंढना ॥१४॥ वहां सिन्धु नामक नद और सागरके सङ्गममें सौ शिखर ...वा बडे वृक्षोंवाला बडा हेमगिरि नामक पर्वत है ॥ १५ ॥ उसकी रम्य ...थानों पर सिंह नामक पक्षी रहते हैं जो तिमि, मत्स्य और हाथियोंको ...ने घोंसलोंमें ले जाते हैं ॥ १६ ॥ चारों ओरसे जलपूर्ण विशाल इस ...में जो हाथी हैं तथा पर्वतके शिखरोंपर जो अहंकारी, पुष्ट, गर्वीले ...के समान शब्द करनेवाले हाथी हैं, ॥ १७ ॥ वे सिंह नामक पक्षियोंके ...सलोंपर विचरते हैं, आकाशको छूनेवाला, चित्रित वृक्षोंवाला सोनेका ...उसका शिखर है ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सर्वमाशु विचेतव्यं कपिभिः कामरूपिभिः।
कोटिं तत्र समुद्रस्य काञ्चनीं शतयोजनाम् १९
दुर्दर्शां पारियात्रस्य गत्वा द्रक्ष्यथ वानराः।
कोट्यस्तत्र चतुर्विंशद्गन्धर्वाणां तपस्विनाम् २०
वसन्त्यग्निनिकाशानां घोराणां पापकर्मणाम्।
पावकार्चिःप्रतीकाशाः समवेताः समन्ततः २१
नात्यासादयितव्यास्ते वानरैर्भीमविक्रमैः।
नादेयं च फलं तस्माद्देशात्किंचित्प्लवंगमैः २२
दुरासदा हि ते वीराः सत्त्ववन्तो महाबलाः।
फलमूलानि ते तत्र रक्षन्ते भीमविक्रमाः २३
तत्र यत्नश्च कर्तव्यो मार्गितव्या च जानकी।
न हि तेभ्यो भयं किंचित्कपित्वमनुवर्तताम् २४
तत्र वैदूर्यवर्णाभो वज्रसंस्थानसंस्थितः।
नानाद्रुमलताकीर्णो वज्रो नाम महागिरिः। २५

वह कामरूपी वानरोंको सब तलाश करना चाहिये, हे वानरो! ... जाकर समुद्रमें पारियात्र पर्वतकी सौ योजन विस्तृत, दुर्दर्श, ... किनारी देखोगे ॥ १९-२० ॥ वहां कामरूपी, घोर, अग्निके सदृश ... वाले बलवान् गन्धर्व चौबीस करोड रहते हैं ॥ २१ ॥ अग्निकी ... सदृश प्रकाशवाले हजारों एकत्रित हुए उन गन्धर्वोंके समीप ... पराक्रमवाले वानरोंको न जाना चाहिये ॥ २२ ॥ वानरोंको उस देश... भी फल न ग्रहण करना चाहिये; क्योंकि वे वीर, उद्योगी और ... हैं ॥ २३ ॥

भीम विक्रमवाले वे ही वहां फल और मूलोंकी रक्षा करते हैं ... फलोंकी निवृत्तिमें यत्न करना और सीताको ढूंढना। वानरत्व... तुमको उनसे कुछ भय नहीं है (क्योंकि वानर वनमें घूमते ... ॥ २४ ॥ वहां वैदूर्यके रंगके सदृश कान्तिवाला, वज्रके समान ... अनेक वृक्ष और लताओंसे व्याप्त और सौ योजन चौरस (जैसा ... वैसा लम्बा) शोभासम्पन्न वज्र नामक बडा पर्वत है ॥ २५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्रीमान्समुदितस्तत्र योजनानां शतं समम्।
गुहास्तत्र विचेतव्याः प्रयत्नेन प्लवंगमाः २६
चतुर्भागे समुद्रस्य चक्रवान्नाम पर्वतः।
तत्र चक्रं सहस्रारं निर्मितं विश्वकर्मणा २७
तत्र पञ्चजनं हत्वा हयग्रीवं च दानवम्।
आजहार ततश्चक्रं शङ्खं च पुरुषोत्तमः २८
तत्र सानुषु रम्येषु विशालासु गुहासु च।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः २९
योजनानि चतुःषष्टिर्वराहो नाम पर्वतः।
सुवर्णशृङ्गः सुमहानगाधे वरुणालये ३०
तत्र प्राग्ज्योतिषं नाम जातरूपमयं पुरम्।
तस्मिन्वसति दुष्टात्मा नरको नाम दानवः ३१
तत्र सानुषु रम्येषु विशालासु गुहासु च।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः ३२
तमतिक्रम्य शैलेन्द्रं काञ्चनान्तरदर्शनम्।
पर्वतः सर्वसौवर्णो धाराप्रस्रवणायुतः ३३

हे वानरो! वहां गुफाओंको प्रयत्नसे ढूंढना, समुद्रके चौथे भागमें चक्रवान नामक पर्वत है, वहां विश्वकर्माने हजार धारों वाला चक्र बनाया था॥ २६-२७॥ उस चक्र पर्वतपर पुरुषोत्तम (विष्णु) ने हयग्रीव दानव तथा पञ्चजनको मारकर शंख तथा चक्रको वहांसे ग्रहण किया था॥ २८॥ उसके चित्रित शिखर और विशाल गुफाओंमें सीताके सहित रावणको ढूंढना॥ २९॥ इसके आगे अथाह समुद्रमें सोनेके शिखरोंवाला साठ योजनका श्रीमान् वराह नामक पर्वत है॥ ३०॥
वहां प्राग्ज्योतिष नामक सोनेका नगर है जिसमें दुष्टात्मा नरक नाम दानव वसता है॥ ३१॥ उसके चित्रित शिखर और विशाल गुफाओंमें सीताके सहित रावणको ढूंढना॥ ३२॥ उस पर्वतेन्द्रका उल्लङ्घन करके स्वर्णमय हैं भीतरी देशवाली कन्दरा जिसकी ऐसा तथा धारा और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तं गजाश्च वराहाश्च सिंहा व्याघ्राश्च सर्वतः।
अभिगर्जन्ति सततं तेन शब्देन दर्पिताः ३४
यस्मिन्हरिहयः श्रीमान्महेन्द्रः पाकशासनः।
अभिषिक्तः सुरै राजा मेघो नाम स पर्वतः ३५
तमतिक्रम्य शैलेन्द्रं महेन्द्रपरिपालितम्।
षष्टिं गिरिसहस्राणि काञ्चनानि गमिष्यथ ३६
तरुणादित्यवर्णानि भ्राजमानानि सर्वशः।
जातरूपमयैर्वृक्षैः शोभितानि सुपुष्पितैः ३७
तेषां मध्ये स्थितो राजा मेरुरुत्तमपर्वतः।
आदित्येन प्रसन्नेन शैलो दत्तवरः पुरा ३८
तेनैवमुक्तः शैलेन्द्रः सर्व एव त्वदाश्रयाः।
मत्प्रसादाद्भविष्यन्ति दिवा रात्रौ च काञ्चनाः ३९
त्वयि ये चापि वत्स्यन्ति देवगन्धर्वदानवाः।
ते भविष्यन्ति भक्ताश्च प्रभया काञ्चनप्रभाः ४०

झरनोंसे संयुक्त सर्वसौवर्ण पर्वत है ॥ ३३ ॥ अपने शब्दसे गर्वित हुए हा[थी,] वराह, सिंह और बघेरा उसके ऊपर निरन्तर शब्द करते रहते हैं॥३[४॥] वह मेघवान् नामक पर्वत है जिसपर कि श्यामवर्ण घोडोंवाले पाक [दैत्यको] मारनेवाले इन्द्रका देवोंने अभिषेक किया था ॥ ३५ ॥

इन्द्रसे पालन किये हुए उस पर्वतका उल्लङ्घन करके तरुण सूर्यके [समान] वर्णवाले, सब ओरसे प्रकाशमान, पुष्पित सुवर्णमय वृक्षोंसे शोभित साठ हजार सोनेके पर्वतोंपर जाओगे ॥ ३६-३७ ॥ जिसको कि [पूर्वमें] प्रसन्न हुए सूर्यने वर दिया है ऐसा उत्तरीय मेरु पर्वत उनके बीचमें [स्थित] है ॥ ३८ ॥ सूर्यने ही पर्वतसे यह कहा था कि हमारी प्रसन्नतासे [तुम्हारे] आश्रित सब पर्वत दिन रात्रिमें सुवर्णमय हो जायंगे ॥ ३९ ॥ और [जो] देव, दानव, गन्धर्व तुम्हारे ऊपर वास करेंगे वे कान्तिसे सुवर्णसमान[वर्ण] हो जायंगे ॥ ४० ॥

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विश्वेदेवाश्च वसवो मरुतश्च दिवौकसः।
आगत्य पश्चिमां संध्यां मेरुमुत्तमपर्वतम् ४१
आदित्यमुपतिष्ठन्ति तैश्च सूर्योऽभिपूजितः।
अदृश्यः सर्वभूतानामस्तं गच्छति पर्वतम् ४२
योजनानां सहस्राणि दश तानि दिवाकरः।
मुहूर्तार्धेन तं शीघ्रमभियाति शिलोच्चयम् ४३
शृङ्गे तस्य महद्दिव्यं भवनं सूर्यसंनिभम्।
प्रासादगणसंबाधं विहितं विश्वकर्मणा ४४
शोभितं तरुभिश्चित्रैर्नानापक्षिसमाकुलैः।
निकेतं पाशहस्तस्य वरुणस्य महात्मनः ४५
अन्तरा मेरुमस्तं च तालो दशशिरा महान्।
जातरूपमयः श्रीमान्भ्राजते चित्रवेदिकः ४६
तेषु सर्वेषु दुर्गेषु सरःसु च सरित्सु च।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः ४७
यत्र तिष्ठति धर्मज्ञस्तपसा स्वेन भावितः।
मेरुसावर्णिरित्येष ख्यातो वै ब्रह्मणा समः ४८

विश्वेदेवा, मरुत्, वसु और देवता पश्चिम सन्ध्याके समय उत्तरीय मेरु पर आकर सूर्यकी उपासना करते हैं और उनसे पूजन किये गये सूर्य सब जीवोंको दिखाई न देते हुए अस्त पर्वतको चले जाते हैं ॥४१-४२॥ सूर्य आधे मुहूर्तमें शीघ्र ही उस पर्वतसे दश हजार योजन निकल जाता है ॥४३॥ उसके शिखर पर पाशहस्त महात्मा वरुणका बडा दिव्य, सूर्यके सदृश, महलोंके झुण्डोंसे घिरा हुआ, विश्वकर्मासे रचित, अनेक पक्षियोंसे भरा हुआ, चित्र विचित्र वृक्षोंसे शोभित स्थान है ॥ ४४-४५ ॥

मेरु और अस्तके मध्यमें दशस्कन्धोंवाला, सुवर्णमय, चित्रित वेदियों वाला श्रीमान् ताल (वृक्षविशेष) है ॥४६॥ उन सब दुर्ग, तालाब तथा नदियोंमें सीताके सहित रावणको ढूंढना ॥४७॥ जहां पर धर्मज्ञ, अपने तेजसे पूर्ण ब्रह्माके समान, मेरु सावर्णि नामसे प्रसिद्ध [ऋषि] हैं ॥४८॥ [तुम]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रष्टव्यो मेरुसावर्णिर्महर्षिः सूर्यसंनिभः।
प्रणम्य शिरसा भूमौ प्रवृत्तिं मैथिलीं प्रति ४९
एतावज्जीवलोकस्य भास्करो रजनीक्षये।
कृत्वा वितिमिरं सर्वमस्तं गच्छति पर्वतम् ५०
एतावद्वानरैः शक्यं गन्तुं वानरपुंगवाः।
अभास्करममर्यादं न जानीमस्ततः परम् ५१
अवगम्य तु वैदेहीं निलयं रावणस्य च।
अस्तं पर्वतमासाद्य पूर्णे मासे निवर्तत ५२
ऊर्ध्वं मासान्न वस्तव्यं वसन्वध्यो भवेन्मम।
सहैव शूरो युष्माभिः श्वशुरो मे गमिष्यति ५३
श्रोतव्यं सर्वमेतस्य भवद्भिर्दिष्टकारिभिः।
गुरुरेष महाबाहुः श्वशुरो मे महाबलः ५४
भवन्तश्चापि विक्रान्ताः प्रमाणं सर्व एव हि।
प्रमाणमेनं संस्थाप्य पश्यध्वं पश्चिमां दिशम् ५५

शिरसे भूमिमें प्रणाम करके सूर्यके सदृश मेरु सावर्णि महर्षिसे सीत वृत्तान्तके प्रति पूंछना ॥४९॥ सूर्य रात्रि व्यतीत हो जानेपर संसारको इतने के (उदायास्तादि मध्यको) सबको अन्धकाररहित करके अस्त पर्वतपर चले जाते हैं ॥५०॥

हे वानरश्रेष्ठो ! वानरोंसे इतना ही जाया जा सकता है, इसके आगे सूर्य और मर्यादासे रहितको हम नहीं जानते ॥५१॥ सीताको तथा रावणके स्थानको पाकर अस्त पर्वत तक पहुंच कर एक मास पूर्ण होनेपर लौट आना माससे ज्यादा न रहना जो रहेगा, वह मुझसे मारा जायगा ॥५२॥ तुम्हारे साथ शूरवीर मेरे श्वसुर जायंगे, आज्ञामें रहनेवाले तुम्हें इनकी सब बातें सुननी चाहियें ॥५३॥ मेरे श्वसुर महाबली ये तुम्हारे गुरु हैं ... बलशाली तुम भी सब कार्योंमें (इन को) व्यवस्थापक समझना॥५४॥

इनको व्यवस्थापक करके तुम सब पश्चिमदिशाको देखो और जैसे ... दिखाई पडे वैसे ही तुम लोग देखो ॥ ५५ ॥ अतुलनीय तेजस्वी ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कृतकृत्या भविष्यामः कृतस्य प्रतिकर्मणा ५६
अतोऽन्यदपि यत्कार्यं कार्यस्यास्य प्रियं भवेत्।
संप्रधार्य भवद्भिश्च देशकालार्थसंहितम् ५७
ततः सुषेणप्रमुखाः प्लवंगमाः सुग्रीववाक्यं निपुणं निशम्य।
आमन्त्र्य सर्वे प्लवगाधिपास्ते जग्मुर्दिशं तां वरुणाभिगुप्ताम् ५८
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४२ ॥ [१८११]

त्रिचत्वारिंशः सर्गः।

ततः संदिश्य सुग्रीवः श्वशुरं पश्चिमां दिशम्।
वीरं शतबलं नाम वानरं वानरेश्वरः १
उवाच राजा सर्वज्ञः सर्ववानरसत्तमः।
वाक्यमात्महितं चैव रामस्य च हितं तदा २
वृतः शतसहस्रेण त्वाद्विधानां वनौकसाम्।
वैवस्वतसुतैः सार्धं प्रविष्टः सर्वमन्त्रिभिः ३
दिशं ह्युदीचीं विक्रान्त हिमशैलावतंसिकाम्।
सर्वतः परिमार्गध्वं रामपत्नीं यशस्विनीम् ४

सीताके देखने (अन्वेषण करके) पर प्रत्युपकारसे कृतकृत्य हो जायंगे ॥५६॥ इसके सिवाय अन्य भी जो सीताके ढूंढनेका हित कार्य होव, देश, काल और प्रयोजनके योग्य उसे विचार कर तुम सब कुछ करना ॥५७॥ तदनन्तर सुषेण आदि सब वानर सुग्रीवके निपुणवाक्यको सुनकर, सुग्रीवको पूंछकर, वरुणसे रक्षित दिशा (पश्चिम) को गये ॥ ५८ ॥

॥ यहां ४२ वा सर्ग समाप्त हुआ ॥

इसके पश्चात् धर्मके जाननेवाले वानरेश्वर सुग्रीव श्वसुरको पश्चिम दिशाकी आज्ञा देकर सब वानरोंमें श्रेष्ठ, वीर शतबलि नामक वानरसे अपनेको हितकारी तथा रामको हितकारी वाक्य बोले ॥ १–२॥ तुम अपने सदृश एक लाख वनवासी वानरोंसे युक्त यमराजके पुत्र अपने मंत्रियोंके साथ हिमालयसे शृङ्गारवाली, विक्रान्त उत्तर दिशाको जाओ और श्रेष्ठ रामपत्नीको सब ओरसे ढूंढों ॥ ३–४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अस्मिन्कार्ये विनिर्वृत्ते कृते दाशरथेः प्रिये।
ऋणान्मुक्ता भविष्यामः कृतार्थार्थविदां वर ५
कृतं हि प्रियमस्माकं राघवेण महात्मना।
तस्य चेत्प्रतिकारोऽस्ति सफलं जीवितं भवेत् ६
अर्थिनः कार्यनिर्वृत्तिमकर्तुरपि यश्चरेत्।
तस्य स्यात्सफलं जन्म किं पुनः पूर्वकारिणः ७
एतां बुद्धिं समास्थाय दृश्यते जानकी यथा।
तथा भवद्भिः कर्तव्यमस्मत्प्रियहितैषिभिः ८
अयं हि सर्वभूतानां मान्यस्तु नरसत्तमः।
अस्मासु च गतः प्रीतिं रामः परपुरञ्जयः ९
इमानि बहुदुर्गाणि नद्यः शैलान्तराणि च।
भवन्तः परिमार्गन्तु बुद्धिविक्रमसंपदा १०
तत्र म्लेच्छान्पुलिन्दांश्च शूरसेनांस्तथैव च।
प्रस्थलान्भरतांश्चैव कुरूंश्च सह मद्रकैः ११
काम्बोजयवनांश्चैव शकानां पत्तनानि च।

इस कार्यके पूर्ण होनेपर रामका प्रिय कर देनेपर कृतकृत्य हुए और ...ओंमें श्रेष्ठ हम ऋणसे छूट जायंगे ॥ ५ ॥ महात्मा रामने हमारा ...किया था, जो उसका बदला हो जाय तो जीवन सफल हो ॥ ६ ॥ ... उपकार न करनेवाले याचकोंको भी कार्यपूर्ति करते हैं, उनका भी ... सफल होता है, फिर उपकारीका तो कहना ही क्या है ? ॥ ७ ॥ इस... को निश्चय करके जैसे भी सीता दिखलाई पडे वैसा ही हमारे प्रियकी इ... करनेवाले तुमको करना चाहिये ॥ ८ ॥ ये राम सब प्राणियोंके मान... नरश्रेष्ठ, शत्रुका नाश करनेवाले, हममें प्रीति वाले हैं ॥ ९ ॥ तुम ... बुद्धि और पराक्रमकी सम्पत्तिसे इन वनोंके दुर्गोंको, नदी तथा पर्वतों... को ढूंढो ॥ १० ॥

वहां म्लेच्छ, पुलिन्द, शूरसेन, प्रस्थल, भरत और मद्रकोंके ... कुरु ॥ ११ ॥ काम्बोज, यवन, शक, आरट्टक, बाह्लीक, ऋषिक, ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वाह्लीकानृषिकांश्चैव पौरवानथ टङ्कणान् १२
लोध्रपद्मकखण्डेषु देवदारुवनेषु च ।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः १३
ततः सोमाश्रमं गत्वा देवगन्धर्वसेवितम् ।
कालं नाम महासानुं पर्वतं तं गमिष्यथ १४
महत्सु तस्य शैलेषु पर्वतेषु गुहासु च ।
विचिन्वत महाभागां रामपत्नीमनिन्दिताम् १५
तमतिक्रम्य शैलेन्द्रं हेमगर्भं महागिरिम् ।
ततः सुदर्शनं नाम पर्वतं गन्तुमर्हथ १६
ततो देवसखा नाम पर्वतः पतगालयः ।
नानापक्षिसमाकीर्णो विविधद्रुमभूषितः १७
तस्य काञ्चनखण्डेषु निर्दरेषु गुहासु च ।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः १८
तमतिक्रम्य चाकाशं सर्वतः शतयोजनम् ।
अपर्वतनदीवृक्षं सर्वसत्त्वविवर्जितम् १९
तत्तु शीघ्रमतिक्रम्य कान्तारं रोमहर्षणम् ।

और टङ्कण, ॥ १२ ॥ लोध्र और पद्मकके झुंड तथा देवदारुके वनोंमें जाकर सीताके सहित रावणको जहां तहां ढूंढना ॥ १३ ॥ तदनन्तर देव और गन्धर्वोंसे सेवित सोमाश्रम पर पहुंच कर बडे शिखरोंवाले काल नामक पर्वत पर जाओगे ॥ १४ ॥ उस पर्वतके बडे फाटोंमें तथा गुफाओंमें महाभाग्यशालिनी रामकी स्त्रीको जहां तहां ढूंढना ॥ १५ ॥

जिसमें कि सोनेकी खानें हैं ऐसे पर्वतोंके राजा उस बडे पर्वत (काल) को उल्लंघन कर वहांसे सुदर्शन नामक पर्वत पर जानेके योग्य हो ॥ १६ ॥ उसके आगे अनेक पक्षिगणोंसे व्याप्त, अनेक वृक्षोंसे भूषित, पक्षियोंका निवासभूत देवसख नामक पहाड है ॥ १७ ॥ उस वनके प्रदेशोंमें, झरनोंमें और गुफाओंमें सीताके सहित रावणको जहां तहां तलाश करना ॥ १८ ॥ उस देवसख नामक पर्वतको उल्लंघन करके पर्वत, नदी और वृक्षोंसे रहित, सब जीवोंसे हीन सौ योजनके मध्यमें आकाशमात्र है ॥ १९ ॥

रोमहर्षण करनेवाले उस विषम [देश] को शीघ्र उल्लंघन करके तुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कैलासं पाण्डुरं प्राप्य हृष्टा यूयं भविष्यथ २०
तत्र पाण्डुरमेघाभं जाम्बूनदपरिष्कृतम्।
कुबेरभवनं रम्यं निर्मितं विश्वकर्मणा २१
विशाला नलिनी यत्र प्रभूतकमलोत्पला।
हंसकारण्डवाकीर्णा अप्सरोगणसेविता २२
तत्र वैश्रवणो राजा सर्वलोकनमस्कृतः।
धनदो रमते श्रीमान्गुह्यकैः सह यक्षराट् २३
तस्य चन्द्रनिकाशेषु पर्वतेषु गुहासु च।
रावणः सह वैदेह्या मार्गितव्यस्ततस्ततः २४
क्रौञ्चं तु गिरिमासाद्य बिलं तस्य सुदुर्गमम्।
अप्रमत्तैः प्रवेष्टव्यं दुष्प्रवेशं हि तत्स्मृतम् २५
वसन्ति हि महात्मानस्तत्र सूर्यसमप्रभाः।
देवैरभ्यर्थिताः सम्यग्देवरूपा महर्षयः २६
क्रौञ्चस्य तु गुहाश्चान्याः सानूनि शिखराणि च।
दर्दराश्च नितम्बाश्च विचेतव्यास्ततस्ततः २७

श्वेत पर्वत कैलासको पाकर प्रसन्न हो जाओगे ॥ २० ॥ वहां श्वेत
सदृश, सुवर्णसे मढा हुआ, दिव्य, विश्वकर्मा द्वारा निर्मित कुबेरका
है ॥ २१ ॥ जहां पर कि बहुत कमल और उत्पल वाली, हंस और
से व्याप्त और अप्सराओंसे सेवित विशाल नाम्नी नलिनी (
है ॥ २२ ॥ वहां सब प्राणियोंसे नमस्कृत, विश्रवाके पुत्र यक्षोंके
श्रीमान् कुबेर गुह्यकोंके साथ रमण करते हैं ॥ २३ ॥ उस
चन्द्रसमान प्रकाशित (इधर उधरकी) छोटी पहाडियोंमें और
सीता समेत रावणको जहां तहां तलाश करना ॥ २४ ॥

क्रौञ्च गिरि पर पहुंच कर उसके दुर्गम बिलमें सावधान हो तुम्हें
चाहिये, क्योंकि उसमें दुःखसे प्रवेश किया जाता है ॥ २५ ॥ वहां
महात्मा, सूर्यसमान कान्तिवाले, देवोंसे पूजित, देवरूपी महर्षि
प्रकार वास करते हैं ॥ २६ ॥ क्रौञ्च पर्वतकी अन्य गुफा, चोटियां,
शिखर, फांट और गढे जहां तहां ढूंढना ॥ २७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अवृक्षं कामशैलं च मानसं विहगालयम् ।
न गतिस्तत्र भूतानां देवानां न च रक्षसाम् २८
स च सर्वैर्विचतव्यः ससानुप्रस्थभूधरः।
क्रौञ्चं गिरिमतिक्रम्य मैनाको नाम पर्वतः २९
मयस्य भवनं तत्र दानवस्य स्वयंकृतम् ।
मैनाकस्तु विचेतव्यः ससानुप्रस्थकन्दरः ३०
स्त्रीणामश्वमुखीनां तु निकेतस्तत्र तत्र तु ।
तं देशं समतिक्रम्य आश्रमं सिद्धसेवितम् ३१
सिद्धा वैखानसा यत्र वालखिल्याश्च तापसाः ।
वन्दितव्यास्ततः सिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः ॥
प्रष्टव्या चापि सीतायाः प्रवृत्तिर्विनयान्वितैः ३२
हिमपुष्करसंछन्नं तत्र वैखानसं सरः ।
तरुणादित्यसंकाशैर्हंसैर्विचारितं शुभैः ३३
औपवाह्यः कुबेरस्य सार्वभौम इति स्मृतः ।

अवृक्ष नामक पर्वत और पक्षियोंका स्थान मानसपर्वतको ढूंढना, वहां देव, दानव और राक्षस, तथा अन्य प्राणियोंकी गति नहीं है ॥ २८ ॥ ऊपर नीचे और मध्यप्रदेशयुक्त वह गिरि तुम सबको ढूंढना चाहिये, क्रौञ्च पर्वतको उल्लंघन करके मैनाकपर्वत है ॥ २९ ॥ जहां मयदानवका अपने आप बनाया हुआ भवन है शिखर, चट्टान और गुफाओं समेत मैनाक तथा अश्वमुखी स्त्रियोंके स्थान मुख्य २ प्रदेशोंमें ढूंढना उस प्रदेशको उल्लंघन करके सिद्धसेवित आश्रम है ॥ ३०-३१ ॥

वहां सिद्ध, वैखानस और वालखिल्य तपस्वी निवास करते हैं ॥३२॥ विनययुक्त तुम्हें तपमें सिद्ध तथा तप द्वारा नष्ट पापोंवाले उन्हें अभिवादन करना चाहिये और सीताका वृत्तान्त पूछना चाहिये ॥ ३२ ॥ वहां पर सोनेके कमलोंसे ढंका हुआ और मध्यान्हके सूर्यके समान सुन्दर हंसोंसे विचरित (सेवित) वैखानस नाम तालाब है ॥ ३३ ॥ राजाके योग्य-वाहन सार्वभौम इस नामसे प्रसिद्ध कुबेरका हाथी हथनियोंके साथ सदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गजः पर्येति तं देशं सदा सह करेणुभिः ३४
तत्सरः समतिक्रम्य नष्टचन्द्रदिवाकरम् ।
अनक्षत्रगणं व्योम निष्पयोदमनादितम् ३५
गभस्तिभिरिवार्कस्य स तु देशः प्रकाशते ।
विश्राम्यद्भिस्तपः सिद्धैर्देवकल्पैः स्वयंप्रभैः ३६
तं तु देशमतिक्रम्य शैलोदा नाम निम्नगा ।
उभयोस्तीरयोस्तस्याः कीचका नाम वेणवः ३७
ते नयन्ति परं तीरं सिद्धान्प्रत्यानयन्ति च ३८
उत्तराः कुरवस्तत्र कृतपुण्यप्रतिश्रयाः ।
ततः काञ्चनपद्माभिः पद्मिनीभिः कृतोदकाः ३९
नीलवैदूर्यपत्राढ्यानद्यस्तत्र सहस्रशः ।
रक्तोत्पलवनैश्चात्रमण्डिताश्च हिरण्मयैः ४०
तरुणादित्यसंकाशा भान्ति तत्र जलाशयाः ।
महार्हमणिरत्नैश्च काञ्चनप्रभकेसरैः ४१

उस स्थान पर आता है ॥ ३४ ॥ उस तालावको उलंघन करके सू
चन्द्रसे रहित तथा नक्षत्रगणोंसे हीन, मेघरहित, शब्दहीन आका
है ॥ ३५ ॥

वह देश सूर्यकी किरणोंके समान स्थित, विश्राम लेते, देवोंके समा
स्वतः सिद्ध ज्ञानवाले तपस्वियोंसे प्रकाशित होता है ॥ ३६ ॥ उस देशका
घन करके शैलोदा नामवाली नदी है उसके दोनों किनारों पर कीचक नाम
बांस (थोथे बांस जिनमें वायु भरनेसे शब्द होता है) हैं ॥ ३७ ॥ वे (आप
में गुंथे होनेसे) सिद्धोंको दूसरे पार ले जाते हैं और लौटा लाते हैं ॥ ३
वहां पुण्य करनेवालोंके आश्रयभूत उत्तर कुरु नाम देश है, उस
आगे वहां पर सोनेकेसे कमलोंवाली ॥ ३९ ॥ नीले वैदूर्यके समान पत्
वाली कमलकी लताओंसे आच्छादित जलवाली हजारों नदियां हैं, वहां
सूर्यके सदृश सोनेके लाल कमलोंके वनोंसे विभूषित जलाशय शोभा दे
बहुमूल्य मणिके पत्तोंवाले, सुवर्णकी कान्तिके सदृश केसरवाले, हैं ॥ ४०-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नीलोत्पलवनैश्चित्रैः स देशः सर्वतो वृतः ।
निस्तुलाभिश्च मुक्ताभिर्मणिभिश्च महाधनैः ४२
उद्धूतपुलिनास्तत्र जातरूपैश्च निम्नगाः ।
सर्वरत्नमयैश्चित्रैरवगाढा नगोत्तमैः ४३
जातरूपमयैश्चापि हुताशनसमप्रभैः ।
नित्यपुष्पफलास्तत्र नगाः पत्ररथाकुलाः ४४
दिव्यगन्धरसस्पर्शाः सर्वकामान्स्रवन्ति च ।
नानाकाराणि वासांसि फलन्त्यन्ये नगोत्तमाः ४५
मुक्तावैदूर्यचित्राणि भूषणानि तथैव च ।
स्त्रीणां यान्यनुरूपाणि पुरुषाणां तथैव च ४६
सर्वर्तुसुखसेव्यानि फलन्त्यन्ये नगोत्तमाः ।
महार्हमणिचित्राणि फलन्त्यन्ये नगोत्तमाः ४७
शयनानि प्रसूयन्ते चित्रास्तरणवन्ति च ।
मनःकान्तानि माल्यानि फलन्त्यत्रापरे द्रुमाः ४८
पानानि च महार्हाणि भक्ष्याणि विविधानि च ।

चित्रित नीले कमलोंके वनसे वह देश सब ओरसे घिरा हुआ है, वहां बहुमूल्य मोती और मणियोंसे तथा सुवर्णसे ऊंचे किनारे वाली; सर्वरत्नमय, ॥४२-४३॥ चित्रित, सोनेके, अग्निसदृश कान्तिवाले श्रेष्ठ पर्वतोंसे घिरी हुई नदी शोभा देती हैं, वहां नित्य फूल और फलवाले, पक्षियोंसे व्याप्त, ॥४४॥ दिव्य गन्ध रस और स्पर्शवाले वृक्ष सब कामनाओंको वर्षाते हैं, अन्य वृक्ष अनेक आकारवाले वस्त्रोंको (फलरूप से) देते हैं ॥ ४५ ॥

अन्य वृक्ष मुक्ता और वैदूर्यसे चित्रित, सब ऋतुओंमें सुखसे सेवन योग्य स्त्री और पुरुषोंके योग्य भूषणोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ४६ ॥ कोई वृक्ष चित्र विचित्र बिछौने वाले, बहुमूल्य, चित्रित, सोनेके शयनोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ४७ ॥ कोई वृक्ष मनोहर फूलोंको तथा बहुमूल्य पान और अनेक भक्ष्योंको उत्पन्न करते हैं, वहां गुणयुक्त और रूप तथा यौवनसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स्त्रियश्च गुणसंपन्ना रूपयौवनलक्षिताः ४९
गन्धर्वाः किंनराः सिद्धा नागा विद्याधरास्तथा।
रमन्ते सततं तत्र नारीभिर्भास्वरप्रभाः ५०
सर्वे सुकृतकर्माणः सर्वे रतिपरायणाः।
सर्वे कामार्थसहिता वसन्ति सह योषितः ५१
गीतवादित्रनिर्घोषः सोत्कृष्टहसितस्वरैः।
श्रूयते सततं तत्र सर्वभूतमनोरमः ५२
तत्र नामुदितः कश्चिन्नात्र काश्चिदसत्प्रियः।
अहन्यहनि वर्धन्ते गुणास्तत्र मनोरमाः ५३
तमतिक्रम्य शैलेन्द्रमुत्तरः पयसां निधिः।
तत्र सोमगिरिर्नाम मध्ये हेममयो महान् ५४
स तु देशो विसूर्योऽपि तस्य भासा प्रकाशते।
सूर्यलक्ष्म्याभिविज्ञेयस्तपतेव विवस्वता ५५
भगवांस्तत्र विश्वात्मा शंभुरेकादशात्मकः।
ब्रह्मा वसति देवेशो ब्रह्मर्षिपरिवारितः ५६

लक्षित स्त्रियां हैं ॥४८–४९॥ सूर्य की सी कान्तिवाले गन्धर्व, किन्नर, सिद्ध, नाग और विद्याधर स्त्रियोंके साथ रमण करते हैं ॥ ५० ॥

सब पुण्यात्मा हैं, सब रतिमें तत्पर हैं, सब काम और अर्थसे युक्त तथा स्त्रियोंके साथ वास करते हैं ॥ ५१ ॥ वहांपर हमेशा गाने बाजोंका शब्द और सब जीवोंको मनोहर ऊंचे हास्यका स्वर सुना जाता है ॥ ५२ ॥ वहां कोई दुःखी नहीं है और न कोई स्नेहरहित है, मनोरम गुण दिन प्रति दिन बढते हैं ॥ ५३ ॥ उस देशका उल्लङ्घन करके उत्तर अर्थात् लवण समुद्र है, उस लवण समुद्रमें सोमगिरि नामक सुवर्णका बडा पर्वत है, ॥ ५४ ॥

इन्द्रलोक वह देश सूर्यरहित भी उस सोमागिरिकी कान्तिसे प्रकाशित होता है जैसे सूर्यकी कान्तिसे जानने योग्य देश तपते हुए सूर्यसे प्रकाशित होते हैं ॥ ५५ ॥ (वहां पर) विश्वव्यापी विष्णु, एकादश मूर्ति महादेव तथा ब्रह्मार्षियोंसे सेवित देवेश ब्रह्मा वसते हैं ॥ ५६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

न कथंचन गन्तव्यं कुरूणामुत्तरेण वः ।
अन्येषामपि भूतानां नानुक्रामति वै गतिः ५७
स हि सोमगिरिर्नाम देवानामपि दुर्गमः ।
तमालोक्य ततः क्षिप्रमुपावर्तितुमर्हथ ५८
एतावद्वानरैः शक्यं गन्तुं वानरपुंगवाः ।
अभास्करममर्यादं न जानीमस्ततः परम् ५९
सर्वमेतद्विचेतव्यं यन्मया परिकीर्तितम् ।
यदन्यदपि नोक्तं च तत्रापि क्रियतां मतिः ६०
ततः कृतं दाशरथेर्महत्प्रियं महत्प्रियं चापि ततो मम प्रियम् ।
कृतं भविष्यत्यनिलानलोपमा विदेहजादर्शनजेन कर्मणा ६१
ततः कृतार्थाः सहिताः सबान्धवा मयार्चिताः सर्वगुणैर्मनोरमैः ।
चरिष्यथोर्वीं प्रति शान्तशात्रवाः सहप्रिया भूतधराः प्लवंगमाः ६२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० त्रिचत्वा० सर्गः ॥ ४३ ॥ [१८७३]

...रूँ कुरुओंके उत्तरसें कभी न जाना चाहिये; क्योंकि वहांपर अन्य देवोंकी गति नहीं पहुँचती ॥५७॥ वह सोमगिरि देवोंको भी दुर्गम है, उसे ...कर वहांसे शीघ्र ही पीछेको लौटना ॥ ५८ ॥

हे वानरश्रेष्ठो ! वानरोंसे युक्त तुमसे इतने ही तक जाया जा सकता है, ...के आगे सूर्य और मर्यादारहितको हम नहीं जानते ॥ ५९ ॥ जो मैंने ...हा है यह सब ढूंढना और जो मैंने नहीं भी कहा है, उस देशमें भी (जानेकी) बुद्धि करना ॥ ६० ॥ हे पवन तथा अग्निके सदृश वानरो ! सीताके देखने रूप कार्यसे रामका बहुत प्रिय किया हुआ हो जायगा और ...से भी अधिक मेरा प्रिय हो जायगा ॥ ६१ ॥ इसके अनन्तर कृतकृत्य ...र, बन्धुओं समेत, मनोरम समस्त गुणोंसे युक्त, मुझसे पूजित, शान्त-...त्रवाले, प्राणियोंके आश्रयरूप तुम प्रियाओं सहित पृथ्वी पर घूमना ॥ ६२ ॥

॥ यहाँ ४३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ।

विशेषेण तु सुग्रीवो हनूमत्यर्थमुक्तवान् ।
स हि तस्मिन्हरिश्रेष्ठे निश्चितार्थोऽर्थसाधने १
अवलोक्य हनूमन्तं विक्रान्तमनिलात्मजम् ।
सुग्रीवः परमप्रीतः प्रभुः सर्ववनौकसाम् २
न भूमौ नान्तरिक्षे वा नाम्बरे नामरालये ।
नाप्सु वा गतिसङ्गं ते पश्यामि हरिपुंगव ३
सासुराः सहगन्धर्वाः सनागनरदेवताः ।
विदिताः सर्वलोकास्ते ससागरधराधराः ४
गतिर्वेगश्च तेजश्च लाघवं च महाकपे ।
पितुस्ते सदृशं वीर मारुतस्य महौजसः ५
तेजसा वापि ते भूतं न समं भुवि विद्यते ।
तद्यथा लभ्यते सीता तत्त्वमेवाऽनुचिन्तय ६
त्वय्येव हनुमन्नस्ति बलं बुद्धिः पराक्रमः ।
देशकालाऽनुवृत्तिश्च नयश्च नयपण्डित ७

विशेष करके सुग्रीवने हनुमान्के विषयमें प्रयोजनका निक्षेप किया क्योंकि वह सुग्रीव अर्थ साधनके विषयमें हनुमान् पर निश्चितार्थ अर्थात् विश्वास रखता था ॥ १ ॥ सब वानरोंके स्वामी, प्रसन्न हुए सुग्रीव विक्रान्त पवनकुमार हनुमान्से बोले ॥ २ ॥ हे वानरश्रेष्ठ ! भूमिमें, अन्तरिक्षमें, अम्बर (वायुचक्रसे आक्रान्त प्रदेश) में स्वर्गमें और आकाशमें तुम्हारी गतिकी रोकको मैं नहीं देखता हूं ॥ ३ ॥ असुर, गन्धर्व, नाग, मनुष्य, देवता, सागर और पर्वतों समेत सब लोक तुम्हें विदित हैं ॥ ४ ॥ हे महाकपे ! हे वीर ! महातेजस्वी स्वपिता पवनके समान तुम्हारी गति, वेग, तेज और शीघ्रता है ॥ ५ ॥ तेजसे तुम्हारे समान भूमि पर कोई नहीं हुआ, न है सो जैसे सीता मिले उसे तुम ही सिद्ध करो ॥ ६ ॥ हे नीतिनिपुण ! हनुमन् ! तुममें ही स्वस्ति, बल, बुद्धि, पराक्रम और देशकालके अनुकूल बुद्धि है ॥ ७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ततः कार्यसमासङ्गमवगम्य हनूमति ।
विदित्वा हनुमन्तं च चिन्तयामास राघवः ८
सर्वथा निश्चितार्थोऽयं हनूमति हरीश्वरः ।
निश्चितार्थतरश्चापि हनूमान्कार्यसाधने ९
तदेव प्रस्थितस्यास्य परिज्ञातस्य कर्मभिः ।
भर्त्रा परिगृहीतस्य ध्रुवः कार्यफलोदयः १०
तं समीक्ष्य महातेजा व्यवसायोत्तरं हरिम् ।
कृतार्थ इव संहृष्टः प्रहृष्टेन्द्रियमानसः ११
ददौ तस्य ततः प्रीतः स्वनामाङ्कोपशोभितम् ।
अङ्गुलीयमभिज्ञानं राजपुत्र्याः परंतपः १२
अनेन त्वां हरिश्रेष्ठ चिह्नेन जनकात्मजा ।
मत्सकाशादनुप्राप्तमनुद्विग्नाऽनुपश्यति १३
व्यवसायश्च ते वीर सत्त्वयुक्तश्च विक्रमः ।
सुग्रीवस्य च संदेशः सिद्धिं कथयतीव मे १४

तदनन्तर राम हनुमान् पर कार्यभार समझ कर और स्वयं भी हनुमान् को (कार्यसाधक) जान कर विचार करने लगे ॥ ८ ॥ सर्वथा यह सुग्रीव हनुमान्में निश्चितार्थ है और कार्यसाधनमें हनुमान् भी निश्चित कार्य करनेवाला है ॥ ९ ॥ सो इस प्रकार जाते हुए, कर्मोंसे परीक्षित, स्वामीसे स्वीकृत हनुमान्के कार्यके फलका उदय अर्थात् कार्यसिद्धि निश्चित है ॥ १० ॥ प्रसन्न हैं इन्द्रियां तथा मन जिनका ऐसे महातेजस्वी राम उद्योगसे श्रेष्ठ हनुमान्को देखकर कृतार्थसे हो गये ॥ ११ ॥ तत्पश्चात् परमतपस्वी प्रसन्न रामने अपने नामके अक्षरोंसे शोभित अंगूठी सीताके ज्ञानके वास्ते हनुमान्को दिया ॥ १२ ॥

हे वानरश्रेष्ठ ! सीता इस चिन्हसे मेरे समीपसे प्राप्त हुए तुमको अव्यग्रचित होकर देखेगी ॥ १३ ॥ हे वीर ! तुम्हारा उद्योग, सत्त्वयुक्त पराक्रम और सुग्रीवका सन्देशा-यह मुझको सिद्धि भी प्रकट करता है ॥ १४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स तद्गृह्य हरिश्रेष्ठः कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ।
वन्दित्वा चरणौ चैव प्रस्थितः प्लवगर्षभः १५
स तत्प्रकर्षन्हरिणां महद्बलं बभूव वीरः पवनात्मजः कपिः।
गताम्बुदे व्योम्नि विशुद्धमण्डलः शशीव नक्षत्रगणोपशोभितः १६
अतिबल बलमाश्रितस्तवाहं हरिवर विक्रम विक्रमैरनल्पैः ।
पवनसुत यथाधिगम्यते सा जनकसुता हनुमंस्तथा कुरुष्व १७
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० चतुश्च० सर्गः ॥४४॥ [१८९०]

पञ्चचत्वारिंशः सर्गः ।

सर्वांश्चाहूय सुग्रीवः प्लवगान्प्लवगर्षभः ।
समस्तांश्चाब्रवीद्राजा रामकार्यार्थसिद्धये १
एवमेतद्विचेतव्यं भवद्भिर्वानरोत्तमैः ।
तदुग्रशासनं भर्तुर्विज्ञाय हरिपुंगवाः २
शलभा इव संछाद्य मेदिनीं संप्रतस्थिरे।

वानरोंमें श्रेष्ठ और कूदनेवालोंमें उत्तम हनुमान्‌ने उस अंगूठीको ग्रहण कर अपने शिरमें रखके हाथ जोडकर रामके चरणोंकी वन्दना करके प्रस्थान किया ॥ १५ ॥

पवनपुत्र वीर हनुमान् वानरोंकी उस बडी सेनाको लेजाते हुए मेघ रहित आकाशमें स्वच्छ मण्डलवाले, नक्षत्रगणोंसे सुशोभित चन्द्रमाके न्याई (प्रकाशित) हुए ॥ १६ ॥ (फिर राम बोले) हे अतिबल! हे श्रेष्ठ सिंहके समान पराक्रमी ! हे पवनसुत ! विशेष पराक्रमोंसे मैं तुम्हारे बलके आश्रय हूं । हे हनुमन् ! जनकसुता सीता जिस प्रकार मिले उसी प्रकार करो ॥ १७ ॥

॥ यहाँ ४४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

वानरेश्वर हरिश्रेष्ठ सुग्रीवने सब वानरोंको बुला कर रामकार्यकी सिद्धि के लिये उन सबसे फिर कहा ॥ १ ॥ कि मैंने जो कुछ कहा है, इस प्रकार तुम सब उसे ढूंढना, स्वामीकी उस कठिन आज्ञाको समझ कर ॥ २ ॥ वानर शलभ (टीडी) के समान भूमिको ढककर चल दिये, जो मास सीताके पाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रामः प्रस्रवणे तस्मिन्न्यवसत्सहलक्ष्मणः ३
प्रतीक्षमाणस्तं मासं सीताधिगमने कृतः ।
उत्तरां तु दिशं रम्यां गिरिराजसमावृताम् ४
प्रतस्थे सहसा वीरो हरिः शतबलिस्तदा ।
पूर्वां दिशं प्रतिययौ विनतो हरियूथपः ५
ताराङ्गदादिसहितः प्लवगः पवनात्मजः ।
अगस्त्याचरितामाशां दक्षिणां हरियूथपः ६
पश्चिमां च दिशं घोरां सुषेणः प्लवगेश्वरः ।
प्रतस्थे हरिशार्दूलो दिशं वरुणपालिताम् ७
ततः सर्वा दिशो राजा चोदयित्वा यथातथम् ।
कपिसेनापतिर्वीरो मुमोद सुखितः सुखम् ८
एवं संचोदिताः सर्वे राज्ञा वानरयूथपाः ।
स्वां स्वां दिशमभिप्रेत्य त्वरिताः संप्रतस्थिरे ९
नदन्तश्चोन्नदन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवंगमाः ।
क्ष्वेडन्तो धावमानाश्च विनदन्तो महाबलाः १०

अवधि किया था, उसकी प्रतीक्षा करते हुए रामने लक्ष्मण समेत प्रस्रवण गिरि पर निवास किया ॥ ३ ॥ तब वीर शतबलि वानर गिरिराज (हिमालय) से युक्त रमणीय उत्तर दिशाको एक दम चल पडा और पूर्व दिशाको विनत सेनापति गया ॥ ३-५ ॥

तार और अङ्गद आदिकोंके साथ सेनापति वानर हनुमान् अगस्त्यसे सेवित दाक्षिण दिशाको चल दिया ॥ ६ ॥ वानरश्रेष्ठ सुषेण सेनापति वरुणसे पालित पश्चिम दिशाको चला ॥ ७ ॥ इसके पश्चात् सुखी राजा (सुग्रीव) मुख्य वानरसेनापतियोंकी यथाक्रमसे सब दिशाओंको प्रेषित कर सुखपूर्वक आनन्दित हुआ ॥ ८ ॥

सुग्रीवसे प्रेरित, ' हम सीताको लावेंगे, हम रावणको मारेंगे ॥ ९ ॥ इस प्रकार कहते, शब्द करते, उच्चस्वरसे नाद करते, अपनी अपनी तारीफ करते, सिंहसदृश चीखमारते, दौडते, भयङ्कर शब्दोंको करते महाबली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एवं संचोदिताः सर्वे राज्ञा वानरयूथपाः ।
आनयिष्यामहे सीतां हनिष्यामश्च रावणम् ११
अहमेको वधिष्यामि प्राप्तं रावणमाहवे ।
ततश्चोन्मथ्य सहसा हरिष्ये जनकात्मजाम् १२
वेपमानां श्रमेणाद्य भवद्भिः स्थीयतामिति ।
एक एवाहरिष्यामि पातालादपि जानकीम् १३
विधमिष्याम्यहं वृक्षान्दारयिष्याम्यहं गिरीन् ।
धरणीं दारयिष्यामि क्षोभयिष्यामि सागरान् १४
अहं योजनसंख्यायाः प्लवेयं नात्र संशयः ।
शतयोजनसंख्यायाः शतं समधिकं ह्यहम् १५
भूतले सागरे वापि शैलेषु च वनेषु च ।
पातालस्यापि वा मध्ये न ममाच्छिद्यते गतिः १६
इत्येकैकस्तदा तत्र वानरा बलदर्पिताः ।
ऊचुश्च वचनं तस्य हरिराजस्य संनिधौ १७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० पञ्चचत्वारिंशः सर्गः॥४५॥[५१

॥ १० ॥ वानरसेनापति अपनी अपनी दिशाको लक्ष्यमें करके शीघ्र ... दिये, संग्राममें प्राप्त हुए रावणको उन्मथन करके मैं अकेला मार डालूं... तदनन्तर एक दम श्रमसे कांपती सीताको ले आऊंगा, ॥ १२ ॥ आप ... यहीं ठहरिये । मैं अकेला ही पातालसे भी सीताको ले आऊंगा ॥ १३ ... मैं वृक्षोंको तोड डालूंगा, मैं पर्वतोंको गिरा दूंगा, मैं भूमिको फाड डालूं... मैं सागरोंको क्षोभित कर दूंगा ॥ १४ ॥

मैं सौ योजन कूद जाऊंगा—इसमें सन्देह नहीं, मैं सौ योजनसे ... अथवा उससे अधिक कूद जाऊंगा ॥ १५ ॥ भूतल, सागर, पर्वत ... और पातालके बीचमें मेरी गति नहीं रुकती ॥ १६ ॥ इस प्रकार ... एक वचनको बलसे अभिमानी हुए वानरोंने उस वानरपतिके ... कहा ॥ १७ ॥

॥ यहाँ ४५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

षट्चत्वारिंशः सर्गः ।

गतेषु वानरेन्द्रेषु रामः सुग्रीवमब्रवीत् ।
कथं भवान्विजानीते सर्वं वै मण्डलं भुवः १
सुग्रीवश्च ततो राममुवाच प्रणतात्मवान् ।
श्रूयतां सर्वमाख्यास्ये विस्तरेण वचो मम २
यदा तु दुन्दुभिं नाम दानवं महिषाकृतिम् ।
प्रतिकालयते वाली मलयं प्रति पर्वतम् ३
तदा विवेश महिषो मलयस्य गुहां प्रति ।
विवेश वाली तत्रापि मलयं तज्जिघांसया ४
ततोऽहं तत्र निक्षिप्तो गुहाद्वारि विनीतवत् ।
न च निष्क्रामते वाली तदा संवत्सरे गते ५
ततः क्षतजवेगेन आपुपूरे तदा बिलम् ।
तदहं विस्मितो दृष्ट्वा भ्रातुः शोकविषार्दितः ६
अथाहं गतबुद्धिस्तु सुव्यक्तं निहतो गुरुः ।
शिला पर्वतसंकाशा बिलद्वारि मया कृता ७

वानरोंके चले जानेपर राम सुग्रीवसे बोले कि आप पृथ्वीके सब मण्डल को कैसे जानते हैं ॥ १ ॥ नम्र आत्मावाले सुग्रीव तब रामसे बोले कि हे नरश्रेष्ठ ! सुनिये, सबको मैं विस्तारसे कहता हूं ॥ २ ॥ जब कि दुन्दुभि नामक महिषाकृति वानरको वालीने मलय पर्वतको भगाया था तब महिष मलयकी गुफामें घुस गया था, वाली भी वहां पर उसके मारनेकी इच्छा से घुस गया ॥ ३-४ ॥

तदनु गुफाके द्वार पर नम्रकी न्याई मुझे नियुक्त किया । जब संवत्सर पूर्ण होनेपर वाली न निकला तब लोहूके वेगसे वह गुफा भर गई, भाईके शोकसे दुःखित मैं उसे देख कर विस्मित होगया और मैंने विचार किया कि निश्चय मेरा भाई मरगया ॥ ५,-६ ॥ महिष निकलनेमें असमर्थ होजावे तथा नाशको प्राप्त हो जावे, इस हेतुसे मैंने पर्वतसमान शिलाको बिलके द्वार पर लगा दिया ॥ ७ ॥ तदनन्तर उस वालीके जीवनमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अशक्नुवन्निष्क्रमितुं महिषो विनशिष्यति ।
ततोऽहमागां किष्किन्धां निराशस्तस्य जीविते ८
राज्यं च सुमहत्प्राप्य तारां च रुमया सह ।
मित्रैश्च सहितस्तस्य वसामि विगतज्वरः ९
आजगाम ततो वाली हत्वा तं वानरर्षभः ।
ततोऽहमददां राज्यं गौरवाद्भययन्त्रितः १०
स मां जिघांसुर्दुष्टात्मा वाली प्रव्यथितेन्द्रियः ।
परिकालयते वाली धावन्तं सचिवैः सह ११
ततोऽहं वालिना तेन अनुबद्धः प्रधावितः ।
नदीश्च विविधाः पश्यन्वनानि नगराणि च १२
आदर्शतलसंकाशा ततो वै पृथिवी मया ।
अलातचक्रप्रतिमा दृष्टा गोष्पदवत्कृता १३
पूर्वां दिशं ततो गत्वा पश्यामि विविधान्द्रुमान् ।
पर्वतान्सदरीन्रम्यान्सरांसि विविधानि च १४

निराश हुआ मैं किष्किन्धाको आया ॥ ८ ॥ मैंने तारा और रुमाके सा बडा राज्य पाया और चिन्तारहित होकर मित्रोंके साथ वहां व लगा ॥ ९ ॥

इसके पश्चात् वालि उस दानवको मारकर आया, तब बडे भयसे डरता हुआ उसे मैं राज्य देने लगा ॥ १० ॥ मुझे मारनेकी इ चाले, दुष्टात्मा, विह्वलित इन्द्रियों वाले वालीने मंत्रियोंके साथ भा हुए मुझे क्रोधसे निकाल दिया ॥ ११ ॥ तदनन्तर उस वालिसे मंत्रियों अनेक नदियोंको तथा वन और नगरोंको देखता हुआ मैं भगाया ॥ १२ ॥ तब मैंने गौ के खुरकी तरह अर्थात् विना कठिनताके उल्का समान अर्थात् घूमती हुई और दर्पणतलके सदृश अर्थात् प्रत्यक्ष पृथ्वी देखा था ॥ १३ ॥

तदनन्तर वालीसे भगाये हुए दौडते मैंने पूर्व दिशामें जाकर विविध पर्वत, नदी, तालाब और अनेक पर्वतोंको देखा और वहां धातुओंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उदयं तत्र पश्यामि पर्वतं धातुमण्डितम्।
क्षीरोदं सागरं चैव नित्यमप्सरसालयम् १५
परिकाल्यमानस्तु तदा वालिनाभिद्रुतो ह्यहम्।
पुनरावृत्य सहसा प्रस्थितोऽहं तदा विभो १६
दिशस्तस्यास्ततो भूयः प्रस्थितो दक्षिणां दिशम्।
विन्ध्यपादपसंकीर्णां चन्दनद्रुमशोभिताम् १७
द्रुमशैलान्तरे पश्यन्भूयो दक्षिणतोऽपराम्।
अपरां च दिशं प्राप्तो वालिना समभिद्रुतः १८
स पश्यन्विविधान्देशानस्तं च गिरिसत्तमम्।
प्राप्य चास्तं गिरिश्रेष्ठमुत्तरं संप्रधावितः १९
हिमवन्तं च मेरुं च समुद्रं च तथोत्तरम्।
यदा न विन्दे शरणं वालिना समभिद्रुतः॥
ततो मां बुद्धिसंपन्नो हनुमान्वाक्यमब्रवीत् २०
इदानीं मे स्मृतं राजन्यथा वाली हरीश्वरः।
मतङ्गेन तदा शप्तो ह्यस्मिन्नाश्रममण्डले २१

उदय पर्वत और अप्सराओंका स्थान क्षीरोदसागर देखा॥ १४-१५॥ हे विभो! तब मैं फिर पूर्व दिशासे लौटकर चल दिया, लौटे हुए मेरे पीछे फिर भी वाली दौड़ा॥ १६॥ तदनु उस दिशासे विन्ध्य और वृक्षोंसे घिरी हुई तथा चन्दनके वृक्षोंसे शोभित दक्षिण दिशाको चला॥ १७॥ वालीसे भगाया हुआ मैं फिर वहां अन्य वृक्ष और पर्वतोंको देखता तथा अनेक देश और अस्तपर्वतको देखता हुआ दक्षिणसे पश्चिम दिशाको प्राप्त हुआ॥ १८॥ श्रेष्ठ अस्तगिरिको प्राप्त होकर उत्तम दिशामें भागते हुए मैंने हिमवान्, मेरु और उत्तर समुद्रको देखा॥ १९॥ वालीके पीछे भाग आनेसे मैंने जब शरण न पाया तब मुझसे बुद्धियुक्त हनुमान्ने यह वचन कहा॥ २०॥

हे राजन्! अब मुझे वह स्मरण आया है जब कि मतङ्ग (ऋषि) ने हरीश्वर वालीको "जब वाली इस आश्रममें घुसेगा तभी उसका मस्तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रविशेद्यदि वा वाली मूर्धास्य शतधा भवेत्।
तत्र वासः सुखोऽस्माकं निरुद्विग्नो भविष्यति २२
तत्र पर्वतमासाद्य ऋष्यमूकं नृपात्मज।
न विवेश तदा वाली मतङ्गस्य भयात्तदा २३
एवं मया तदा राजन्प्रत्यक्षमुपलक्षितम्।
पृथिवीमण्डलं सर्वं गुहामस्म्यागतस्ततः २४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥ ४६ ॥ [१९

सप्तचत्वारिंशः सर्गः।

दर्शनार्थं तु वैदेह्याः सर्वतः कपिकुञ्जराः।
व्यादिष्टाः कपिराजेन यथोक्तं जग्मुरञ्जसा १
ते सरांसि सरित्कक्षानाकाशं नगराणि च।
नदीदुर्गांस्तथा देशान्विचिन्वन्ति समन्ततः २
सुग्रीवेण समाख्याताः सर्वे वानरयूथपाः।
तत्र देशान्विचिन्वन्ति सशैलवनकाननान् ३
विचित्य दिवसं सर्वे सीताधिगमने धृताः।

सौ टुकडे हो जायगा" यह शाप दिया था। वहां पर हम लोगोंका भयर... सुखपूर्वक वास होगा ॥ २१-२२ ॥ तब मैं ऋष्यमूक पर्वत पर ... स्थित होगया। हे नृपपुत्र! उस समयसे वाली मतङ्गके भयसे यहां ... आ सका था ॥ २३ ॥ हे राजन्! उस समय इस प्रकार मैंने सम्... पृथ्वी मण्डलको प्रत्यक्ष देखा था, इसके पश्चात् इस ऋष्यमूककी गु... आगया ॥ २४ ॥

॥ यहाँ ४६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुग्रीवसे आज्ञप्त वानरसेनापति सीताके देखनेके वास्ते यथोक्त ... सब ओर शीघ्र गये ॥ १ ॥ (वानर) सब ओरसे तालाब, नदी, लता... घर, शून्यप्रदेश, नगर पर्वत और नदीके दुर्गोंको देखने लगे ॥ २ ॥ सु... से आज्ञप्त सब वानरसेनापति पर्वत, जल और वन समेत प्रदेशोंको ... लगे ॥ ३ ॥ सीताके पानेमें लगे हुए सब वानर दिनमें ढूंढकर रा...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

समायान्ति स्म मेदिन्यां निशाकालेषु वानराः ४
सर्वर्तुकांश्च देशेषु वानराः सफलद्रुमान्।
आसाद्य रजनीं शय्यां चक्रुः सर्वेष्वहःसु ते ५
तदहः प्रथमं कृत्वा मासे प्रस्रवणं गताः।
कपिराजेन संगम्य निराशाः कपिकुञ्जराः ६
विचित्य तु दिशं पूर्वां यथोक्तां सचिवैः सह।
अदृष्ट्वा विनतः सीतामाजगाम महाबलः ७
दिशमप्युत्तरां सर्वां विविच्य स महाकपिः।
आगतः सह सैन्येन भीतः शतबलिस्तदा ८
सुषेणः पश्चिमामाशां विविच्य सह वानरैः।
समेत्य मासे पूर्णे तु सुग्रीवमुपचक्रमे ९
तं प्रस्रवणपृष्ठस्थं समासाद्याभिवाद्य च।
आसीनं सह रामेण सुग्रीवमिदमब्रुवन् १०
विचिताः पर्वताः सर्वे वनानि गहनानि च।
निम्नगाः सागरान्ताश्च सर्वे जनपदाश्च ये ११

समय भूमि पर आ लेटते थे ॥ ४ ॥ सब देशोंमें सब ऋतुओंमें होनेवाले, फल, फूलोंसे युक्त सफल वृक्षोंको पाकर सब दिनोंमें रात्रिमें ही होते थे ॥ ५ ॥

प्रस्थानके दिनसे मास पूर्ण हो जानेपर निराश हुए वानरसेनापति सुग्रीवसे मिलकर प्रस्रवण पर्वत पर चले गये ॥ ६ ॥ तदनन्तर यथोक्त पूर्वदिशाको मंत्रियोंके साथ ढूंढ कर सीताको न देखकर महाबली विनत लौट आया ॥ ७ ॥ वीर महाकपि शतबलि सेनाके साथ सब उत्तर दिशाको देख कर (वापिस) आगया ॥ ८ ॥ वानरोंके साथ सुषेण भी पश्चिम दिशाको ढूंढकर मास पूर्ण हो जानेपर आकर सुग्रीव से मिला ॥ ९ ॥ प्रस्रवण पर्वतके ऊपर स्थित, रामके साथ बैठे हुए सुग्रीवके पास पहुंच, उन्हें अभिवादन कर (सब वानर) यह बोले ॥ १० ॥

सब पर्वत, घने वन, सागरपर्यन्त नदी और जो देश हैं, वे सब देख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गुहाश्च विचिताः सर्वा याश्च ते परिकीर्तिताः।
विचिताश्च महागुल्मा लतावितत्तसंतताः १२
गहनेषु च देशेषु दुर्गेषु विषमेषु च।
सत्त्वान्यातिप्रमाणानि विचितानि हतानि च॥
ये चैव गहना देशा विचितास्ते पुनः पुनः १३
उदारसत्त्वाभिजनो हनुमान्स मैथिलीं ज्ञास्यति वानरेन्द्र।
दिशं तु यामेव गता तु सीता तामास्थितो वायुसुतो हनूमान्॥

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० सप्तचत्वारिंशः सर्गः॥ ४७॥ [१४

अष्टचत्वारिंशः सर्गः।

सह ताराङ्गदाभ्यां तु सहसा हनुमान्कपिः।
सुग्रीवेण यथोद्दिष्टं गन्तुं देशं प्रचक्रमे १
स तु दूरमुपागम्य सर्वैस्तैः कपिसत्तमैः।
ततो विचित्य विन्ध्यस्य गुहाश्च गहनानि च २
पर्वताग्रनदीदुर्गान्सरांसि विपुलद्रुमान्।
वृक्षखण्डांश्च विविधान्पर्वतान्वनपादपान् ३

डाले॥ ११॥ जो तुमने गुफा बताई थीं, वे सब ढूंढीं और लता तंतुओंसे सब ओरसे भरे हुए महा गुल्म (बडी झाडी) ढूंढ डालीं॥१२॥ ऊंचे नीचे, दुःखसे जाने योग्य वन और देशोंमें बडे बडे जीव ढूंढे मारे॥ १३॥ और जितने घने देश थे वे वार वार ढूंढे। सदाचारी कुटुम्ब वाला, धर्मात्मा वानरेश्वर, वायुपुत्र, जिस दिशाको सीता गई उसी दिशाको प्रस्थित (गया हुआ) हनुमान् सीताको देखेगा॥ १४॥

॥ यहाँ ४७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

तारा और अङ्गदके साथ वह हनुमान् वानर सुग्रीवसे बताये देश जाकर (सीताको तलाश करनेका) आरम्भ करने लगा॥ १॥ हनुमान् उन सब वानरोंके साथ दूर जाकर विन्ध्याचलकी गुफा और वनोंको पर्वतके अग्रभाग, नदी, दुर्ग, तालाव, बडे वृक्ष, अनेक प्रकारके वृक्ष झुंड और मेघ जिनके वृक्षोंपर छाये हुए हैं ऐसे पर्वतोंको ढूंढा॥ २-३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अन्वेषमाणास्ते सर्वे वानराः सर्वतोदिशम्।
न सीतां ददृशुर्वीरा मैथिलीं जनकात्मजाम् ४
ते भक्षयन्तो मूलानि फलानि विविधान्यपि।
निर्जलं निर्जनं शून्यं गहनं रोम हर्षणम् ५
तादृशान्यप्यरण्यानि विचित्य भृशपीडिताः।
स देशश्च दुरन्वेष्यो गुहागहनवान्महान् ६
त्यक्त्वा तु तं ततो देशं सर्वे वै हरियूथपाः।
देशमन्यं दुराधर्षं विविशुश्चाकुतोभयाः ७
यत्र वन्ध्यफला वृक्षा विपुष्पाः पर्णवर्जिताः।
निस्तोयाः सरितो यत्र मूलं यत्र सुदुर्लभम् ८
न सन्ति महिषा यत्र न मृगा न च हस्तिनः।
शार्दूलाः पक्षिणो वापि ये चान्ये वनगोचराः ९
न चात्र वृक्षा नौषध्यो न वल्ल्यो नापि वीरुधः।
स्निग्धपत्राः स्थले यत्र पद्मिन्यः फुल्लपङ्कजाः १०
प्रेक्षणीयाः सुगन्धाश्च भ्रमरैश्च विवर्जिताः ११

सब वीर वानरोंने सब ओरसे उस दिशाको खोजते हुए जनककन्या सीताको न देखा ॥ ४ ॥ वे दुर्धर्षणीय वानर (सीताको) खोजते, अनेक मूल और फलोंको खाते हुए भयरहित होकर जलहीन, शून्य, रोमाञ्चित करनेवाले, ॥ ५ ॥ गुफा और वनों वाला वह देश बडा दुःखसे खोजने योग्य था ॥ ६ ॥ वे सब वानरसेनापति उस देशको त्यागकर और वैसे ही अन्य वनोंको खोजकर अत्यन्त थककर, दुराधर्ष, अन्य घने प्रदेशमें घुस गये ॥ ७ ॥ जहां विना फलके तथा फूल और पत्तेहीन वृक्ष हैं और जहां जलहीन नदी हैं तथा जहांपर मूलों (जडों अर्थात् जो जडें खाई जाती हैं) का मिलना बडा ही दुर्लभ है ॥ ८ ॥ और जहांपर भैंसे, हरिण, हाथी, सिंह और पक्षी नहीं हैं तथा अन्य वनचारी भी नहीं हैं ॥ ९ ॥ जहां वृक्ष, औषधि, लता और बेलें नहीं है, जिस स्थलमें चिकनेपत्तोंवाली, फूले कमलोंवाली देखने योग्य सुगन्धियुक्त पद्मिनी भ्रमरोंसे रहित हैं ॥ १०-११ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कण्डुर्नाम महाभागः सत्यवादी तपोधनः।
महर्षिः परमामर्षी नियमैर्दुष्प्रधर्षणः १२
तस्य तस्मिन्वने पुत्रो बालको दशवार्षिकः।
प्रनष्टो जीवितान्ताय क्रुद्धस्तेन महामुनिः १३
तेन धर्मात्मना शप्तं कृत्स्नं तत्र महद्वनम्।
अशरण्यं दुराधर्षं मृगपक्षिविवर्जितम् १४
तस्य ते काननान्तांस्तु गिरीणां कंदराणि च।
प्रभवाणि नदीनां च विचिन्वन्ति समाहिताः १५
तत्र चापि महात्मानो नापश्यञ्जनकात्मजाम्।
हर्तारं रावणं वापि सुग्रीवप्रियकारिणः १६
ते प्रविश्य तु तं भीमं लतागुल्मसमावृतम्।
ददृशुर्भीमकर्माणमसुरं सुरनिर्भयम् १७
तं दृष्ट्वा वानरा घोरं स्थितं शैलमिवासुरम्।
गाढं परिहिताः सर्वे दृष्ट्वा तं पर्वतोपमम् १८

वहां महाभाग, सत्यवादी, तपोधन, परमक्रोधी नियमोंसे दुष्प्रधर्ष कण्डु नाम महर्षि थे ॥ १२ ॥ उस वनमें उसका दश वर्षका बालक नष्ट हो गया था, तब उसका अन्त करनेके लिये महामुनि कुपित हो थे ॥ १३ ॥ धर्मात्मा मुनिने वहां समस्त बडे वनको शाप दिया था हेतुसे वह शरणहीन (रक्षाहीन वा गृहादिहीन) दुराधर्ष और पक्षियोंसे हीन हो गया था ॥ १४ ॥ एकत्रित हुए वे वानर उस वनप्रदेश, पर्वतोंकी कन्दरा और नदियोंके उत्पत्तिस्थानोंको लगे ॥ १५ ॥

सुग्रीवके प्रिय करनेवाले उन महात्माओंने वहां सीताको तथा हरनेवाले रावणको न देखा ॥ १६ ॥ उन्होंने लता और झाडियोंसे उस भयानक वनमें शीघ्र प्रवेश करके क्रूरकर्मवाले, देवोंसे भी असुरको देखा ॥ १७ ॥ पहाडके सदृश तथा पहाडके समान बैठे हुए असुरको देखकर सब वानरोंने वस्त्र सम्भाल लिये ॥ १८ ॥ बलात्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सोऽपि तान्वानरान्सर्वान्नष्टाः स्थेत्यब्रवीद्बली।
अभ्यधावत संक्रुद्धो मुष्टिमुद्यम्य संगतम् १९
तमापतन्तं सहसा वालिपुत्रोऽङ्गदस्तदा।
रावणोऽयमिति ज्ञात्वा तलेनाभिजघान ह २०
स वालिपुत्राभिहतो वक्त्राच्छोणितमुद्वमन्।
असुरो न्यपतद्भूमौ पर्यस्त इव पर्वतः २१
ते तु तस्मिन्निरुच्छ्वासे वानरा जितकाशिनः।
विचिन्वन्प्रायशस्तत्र सर्वं ते गिरिगह्वरम् २२
विचितं तु ततः सर्वं सर्वे ते काननौकसः।
अन्यदेवापरं घोरं विविशुर्गिरिगह्वरम् २३
ते विचित्य पुनः खिन्ना विनिष्पत्य समागताः।
एकान्ते वृक्षमूले तु निषेदुर्दीनमानसाः २४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० अष्टचत्वारिंशः सर्गः॥ ४८॥ [१९६९]

एकोनचत्वारिंशः सर्गः

अथाङ्गदस्तदा सर्वान्वानरानिदमब्रवीत्।
परिश्रान्तो महाप्राज्ञः समाश्वास्य शनैर्वचः १

असुर वानरोंसे यह बोला कि "तुम नष्ट हो जाओ" और क्रुद्ध होकर बंधी हुई मुट्ठीको उठाकर दौड़ा॥ १९॥ तब एकदम ऊपर टूटते हुए उसको "रावण है" यह समझकर वालिपुत्र अङ्गदने चपेटेसे मारा॥ २०॥ वालिके पुत्रसे ताडित वह असुर मुखसे लोहूको उगलने लगा और गिराये गये पर्वतके सदृश भूमिपर गिर पडा॥ २१॥ उसके श्वासहीन होने अर्थात् मर जानेपर विजय प्राप्त किये हुए वानरोंने प्रायः वहां पर्वतके गह्वरोंको देखा॥ २२॥ तदनन्तर वे सब वनको फिर खोजकर समीपके ही अन्य घोर पर्वतप्रदेशमें प्रविष्ट हो गये॥ २३॥ दीन मन वाले वे वानर फिर ढूंढकर दुःखित हो एकत्रित होकर एकान्तमें वृक्षकी जड़में बैठ गये॥ २४॥

॥ यहाँ ४८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

तदनन्तर थका हुआ महाबुद्धिमान् अङ्गद सब वानरोंको उस समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वनानि गिरयो नद्यो दुर्गाणि गहनानि च ।
दरी गिरिगुहाश्चैव विचिताः सर्वमन्ततः २
तत्र तत्र सहाऽस्माभिर्जानकी न च दृश्यते ।
तथा रक्षोपहर्ता च सीतायाश्चैव दुष्कृती ३
कालश्च नो महान्यातः सुग्रीवश्चोग्रशासनः ।
तस्माद्भवन्तः सहिता विचिन्वन्तु समन्ततः ४
विहाय तन्द्रां शोकं च निद्रां चैव समुत्थिताम् ।
विचिनुध्वं तथा सीतां पश्यामो जनकात्मजाम् ५
अनिर्वेदं च दाक्ष्यं च मनसश्चापराजयम् ।
कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद्ब्रवीम्यहम् ६
अद्यापीदं वनं दुर्गं विचिन्वन्तु वनौकसः ।
खेदं त्यक्त्वा पुनः सर्वं वनमेव विचिन्वताम् ७
अवश्यं कुर्वतां तस्य दृश्यते कर्मणः फलम् ।
परं निर्वेदमागम्य न हि नोन्मीलनं क्षमम् ८

समझाकर धीरेसे यह बोला ॥ १ ॥ हम लोगोंने वन, पर्वत, नदी, दुर्ग, फांट और पर्वतोंकी गुफा सब ओरसे जहां तहां खोज डाली, जानकी नहीं दिखाई देती और वह राक्षस भी दिखाई नहीं देता है, कि देवकन्याके समान सीताको हरा है ॥ २-३ ॥ तुम सबको बहुत वीत गया है. सुग्रीव भी कठोर आज्ञा देनेवाले हैं, इससे आप लोग कर सब ओरसे (सीताको) ढूंढो ॥ ४ ॥

आलस्य, शोक और आई हुई निद्राको छोडकर जिस तरह जनक सीताको देखें वैसे ही ढूंढो ॥ ५ ॥ खेदरहित होना और सामर्थ्य कार्यसे मनको न मोडना-ये कार्यसिद्धि करनेवाले हैं, इससे मैं यह हूं ॥ ६ ॥ अब फिर उस दुर्गम वनको सब वानर देखें । खेदको त्याग सब वानरोंको फिर यह वन खोजना चाहिये ॥ ७ ॥ किये हुए कर्मका अवश्य दिखाई पडता है, खेदको प्राप्त होकर हम लोगोंको नेत्र बन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सुग्रीवः क्रोधनो राजा तीक्ष्णदण्डश्च वानराः।
भेतव्यं तस्य सततं रामस्य च महात्मनः ९
हितार्थमेतदुक्तं वः क्रियतां यदि रोचते।
उच्यतां हि क्षमं यत्तत्सर्वेषामेव वानराः १०
अङ्गदस्य वचः श्रुत्वा वचनं गन्धमादनः।
उवाच व्यक्तया वाचा पिपासाश्रमखिन्नया ११
सदृशं खलु वो वाक्यमङ्गदो यदुवाच ह।
हितं चैवानुकूलं च क्रियतामस्य भाषितम् १२
पुनर्मार्गामहे शैलान्कन्दरांश्च शिलास्तथा।
काननानि च शून्यानि गिरिप्रस्रवणानि च १३
यथोद्दिष्टानि सर्वाणि सुग्रीवेण महात्मना।
विचिन्वन्तु वनं सर्वे गिरिदुर्गाणि संगताः १४
ततः समुत्थाय पुनर्वानरास्ते महाबलाः।
विन्ध्यकाननसंकीर्णां विचेयुर्दक्षिणां दिशम् १५

...य नहीं है ॥ ८ ॥ राजा सुग्रीव क्रोधी और कठिन दण्ड देनेवाला वानर ..., उससे तथा महात्मा रामसे हमेशा भय करना चाहिये ॥ ९ ॥ तुम ...ोंके हितके वास्ते यह कहा है, यदि अच्छा लगे तो करो। हे वानरो! ... जो हम सबोंको योग्य हो सो बताओ ॥ १० ॥

अङ्गदके वचनको सुनकर गन्धमादनने प्यास और परिश्रमसे खिन्न ...ई स्पष्ट वाणीसे कहा ॥ ११ ॥ अङ्गदने जो तुम सबसे कहा है, वह ठीक ..., इसके हित और अनुकूल वाक्यको करो ॥ १२ ॥ हम सब पर्वत, कन्दरा, फांट, शून्यवन और पर्वतोंके झरनोंको फिर ढूंढें ॥ १३ ॥ महात्मा सुग्रीवके बतलाये हुए सब पर्वतके दुर्ग तथा वनको हम सब लोग ढूंढें ॥ १४ ॥ इसके पश्चात् वे महाबली वानर पुनः उठकर विन्ध्याचलके वनसे घिरी हुई दक्षिण दिशामें विचरने लगे ॥ १५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ते शारदाभ्रप्रतिमं श्रीमद्रजतपर्वतम् ।
शृङ्गवन्तं दरीवन्तमधिरुह्य च वानराः १६
तत्र लोध्रवनं रम्यं सप्तपर्णवनानि च ।
विचिन्वन्तो हरिवराः सीतादर्शनकाङ्क्षिणः १७
तस्याग्रमधिरूढास्ते श्रान्ता विपुलविक्रमाः ।
न पश्यन्ति स्म वैदेहीं रामस्य महिषीं प्रियाम् १८
ते तु दृष्टिगतं दृष्ट्वा तं शैलं बहुकंदरम् ।
अध्यारोहन्त हरयो वीक्षमाणाः समन्ततः १९
अवरुह्य ततो भूमिं श्रान्ता विगतचेतसः ।
स्थिता मुहूर्तं तत्राथ वृक्षमूलमुपाश्रिताः २०
ते मुहूर्तं समाश्वस्ताः किञ्चिद्भग्नपरिश्रमाः ।
पुनरेवोद्यताः कृत्स्नां मार्गितुं दक्षिणां दिशम् २१
हनुमत्प्रमुखास्ताvत्प्रस्थिताः प्लवगर्षभाः ।
विन्ध्यमेवादितः कृत्वा विचेरुश्च समन्ततः २२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥४९॥ [१९...

वानरोंमें श्रेष्ठ, सीताके दर्शनकी इच्छा करनेवाले वे वानर शरद् मेघके सदृश, शिखरों और कन्दराओं वाले, शोभायमान रजतपर्वत पर चढकर वहां रम्य लोध्रवन और सप्तपर्णके वनोंको खोजने लगे॥ १६-१७ ॥ बडे पराक्रमी, उसके अग्रभागपर चढे, थके हुए, उन वानरोंने रा... प्यारी रानीको न देखा ॥ १८ ॥ वे वानर बहुत कन्दराओं वाले ... पर्वतको देखकरके चारों ओरसे देखते हुए उत्तरे ॥ १९ ॥

इसके पश्चात् संज्ञाहीन और थके हुए वे भूमिपर उतरकर मुहूर्त... ठहरकर वहीं पर वृक्षके तले बैठ गये ॥ २० ॥ मुहूर्त भर विश्रान्त, ... कम हुए थकानवाले वे सब पुनः समस्त दक्षिण दिशाको ढूंढनेको ... हुए ॥ २१ ॥ हनुमान् आदि वे श्रेष्ठ वानर चल दिये और विन्ध्या... शुरूसे ही इधर उधर घूमने लगे ॥ २२ ॥

॥ यहां ४९ वा सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पञ्चाशः सर्गः ॥ ५० ॥

सह ताराङ्गदाभ्यां तु संगम्य हनुमान्कपिः ।
विचिनोति च विन्ध्यस्य गुहाश्च गहनानि च १
सिंहशार्दूलजुष्टाश्च गुहाश्च परितस्तदा ।
विषमेषु नगेन्द्रस्य महाप्रस्रवणेषु च २
आसेदुस्तस्य शैलस्य कोटिं दक्षिणपश्चिमाम् ।
तेषां तत्रैव वसतां स कालो व्यत्यवर्तत ३
स हि देशो दुरन्वेष्यो गुहागहनवान्महान् ।
तत्र वायुसुतः सर्वं विचिनोति स्म पर्वतम् ४
परस्परेणरहिता अन्योन्यस्याविदूरतः ।
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः ५
मैन्दश्च द्विविदश्चैव हनूमाञ्जाम्बवानपि ।
अङ्गदो युवराजश्च तारश्च वनगोचरः ६
गिरिजालावृतान्देशान्मार्गित्वा दक्षिणां दिशम् ।
विचिन्वन्तस्ततस्तत्र ददृशुर्विवृतं बिलम् ७

तारा और अङ्गदके साथ मिलकर वानर हनुमान् विन्ध्याचलकी गुफा और वन तथा सिंह और शार्दूलोंसे सेवित, विषम प्रदेशोंमें शिला और झरनोंमें नदियोंको खोजने लगे ॥ १-२ ॥ वे उस पर्वतकी नैर्ऋत्यकी ...रीपर बैठ गये और वहां बसते हुए उनका सुग्रीवसे निर्दिष्ट समय ...त हो गया ॥ ३ ॥

गुफा और वनोंवाला वह देश बडे कष्टसे खोजने योग्य था, पवनपुत्र हनुमान्ने एक दूसरेके पास (रहते हुए) परस्पर मिलकर सब पर्वतको ..., पर्वतके समूहोंसे ढके हुए देशोंको ढूंढकर दक्षिण दिशाको ढूंढते हुए ..., गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, मैन्द, द्विविद, सुषेण, जाम्बवान्, ..., युवराज अङ्गद और तार आदिकोंने वहां चौडे बिलको देखा ॥४-७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दुर्गमृक्षाबिलं नाम दानवेनाभिरक्षितम् ८
क्षुत्पिपासापरीतास्तु श्रान्तास्तु सलिलार्थिनः।
अवकीर्णं लतावृक्षैर्ददृशुस्ते महाबिलम् ९
तत्र क्रौञ्चाश्च हंसाश्च सारसाश्चापि निष्क्रमन्।
जलार्द्राश्चक्रवाकाश्च रक्ताङ्गाः पद्मरेणुभिः १०
ततस्तद्बिलमासाद्य सुगन्धि दुरतिक्रमम्।
विस्मयव्यग्रमनसो बभूवुर्वानरर्षभाः ११
संजातपरिशङ्कास्ते तद्बिलं प्लवगोत्तमाः।
अभ्यपद्यन्त संहृष्टास्तेजोवन्तो महाबलाः १२
नानासत्त्वसमाकीर्णं दैत्येन्द्रनिलयोपमम्।
दुर्दर्शमिव घोरं च दुर्विगाह्यं च सर्वशः १३
ततः पर्वतकूटाभो हनूमान्मारुतात्मजः।
अब्रवीद्वानरान्घोरान्कान्तारवनकोविदः १४
गिरिजालावृतान्देशान्मार्गित्वा दक्षिणां दिशम्।
वयं सर्वे परिश्रान्ता न च पश्याम मैथिलीम् १५

भूख प्याससे व्याप्त, थके हुए और जलकी इच्छावाले उन वा... दुर्गरूप, दानवसे रक्षित, लता और वृक्षोंसे ढका हुआ, ऋक्षबिल ना... महाबिल देखा, वहांसे जलसे भीगे हुए, कमलकी रेणुसे लाल शरी... क्रौञ्च, हंस, सारस तथा चकवा निकले ॥ ८-१० ॥ इसके अन... सुगन्धियुक्त और दुःखसे प्रवेशके योग्य बिलको प्राप्त होकर वे ... विस्मयसे खिन्नमनवाले हो गये ॥ ११ ॥ तेजोधारी, महाबली, ... अप्रसन्न हुए वे वानर अनेक जीवोंसे पूर्ण, दैत्येन्द्रके स्थानके समान, दु... अतिघोर और सब ओरसे दुर्विगाह्य उस बिलपर पहुंचे ॥ १२-१३ ॥

इसके पश्चात् दुर्ग मार्गवाले वनमें समर्थ पर्वतके शिखरके सदृश ... पुत्र हनुमान् सब वानरोंसे बोला ॥ १४ ॥ पर्वतके जालोंसे आवृत दे... तथा दक्षिण दिशाको तलाश करके हम सब थक गये हैं; किन्तु मै...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अस्माच्चापि बिलाद्धंसाः क्रौञ्चाश्च सह सारसैः ।
जलार्द्राश्चक्रवाकाश्च निष्पतन्ति स्म सर्वशः १६
नूनं सलिलवानत्र कूपो वा यदि वा ह्रदः ।
तथा चेमे बिलद्वारे स्निग्धास्तिष्ठन्ति पादपाः १७
इत्युक्तास्तद्बिलं सर्वे विविशुस्तिमिरावृतम् ।
अचन्द्रसूर्यं हरयो ददृशू रोमहर्षणम् १८
निशाम्य तस्मात्सिंहांश्च तांस्तांश्च मृगपक्षिणः ।
प्रविष्टा हरिशार्दूला बिलं तिमिरसंवृतम् १९
न तेषां सज्जते दृष्टिर्न तेजो न पराक्रमः ।
वायोरिव गतिस्तेषां दृष्टिस्तमसि वर्तते २०
ते प्रविष्टास्तु वेगेन तद्बिलं कपिकुञ्जराः ।
प्रकाशं चाभिरामं च ददृशुर्देशमुत्तमम् २१
ततस्तस्मिन्बिले भीमे नानापादपसंकुले ।
अन्योऽन्यं संपरिष्वज्य जग्मुर्योजनमन्तरम् २२

देखा ॥ १५ ॥ इस बिलसे जलसे भीगे हुए क्रौंच और सारसोंके साथ तथा चकवा, चकवी सब ओरसे निकलते हैं ॥ १६ ॥ निश्चय ही इस में जल वाला कूप वा तालाब है और इसीसे बिलके द्वारपर ये घने खडे हैं ॥ १७ ॥

ऐसा कह सब वानर अन्धकारसे आच्छादित, चन्द्रसूर्यसे रहित उस बिलमें घुस गये और रोमोंको खडा करनेवाले उस बिलको देखा ॥ १८ ॥ उससे निकलते हुए सिंह और अनेक प्रकारके मृग पक्षियोंको देखकर वानर अन्धकारसे घिरे हुए उस बिलमें घुस गये ॥ १९ ॥ (वहांकी वस्तुओंमें) न उनके नेत्र लगते थे, न तेज और न पराक्रम; किन्तु वायुकी गतिके समान उनकी दृष्टि अन्धकारमें वर्त्तमान थी ॥ २० ॥ वेगसे उस बिलमें घुसे हुए वानरोंने रमणीय उत्तम देश और प्रकाशको देखा ॥ २१ ॥ इसके अनन्तर सब वानर अनेक प्रकारके वृक्षोंसे पूर्ण उस दुर्गम बिलमें आपसमें एक दूसरेको पकड कर एक योजन भीतर चले गये ॥ २२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ते नष्टसंज्ञास्तृषिताः संभ्रान्ताः सलिलार्थिनः।
परिपेतुर्बिले तस्मिन्कंचित्कालमतन्द्रिताः २३
ते कृशा दीनवदनाः परिश्रान्ताः प्लवंगमाः।
आलोकं ददृशुर्वीरा निराशा जीविते यदा २४
ततस्तं देशमागम्य सौम्या वितिमिरं वनम्।
ददृशुः काञ्चनान्वृक्षान्दीप्तवैश्वानरप्रभान् २५
सालांस्तालांस्तमालांश्च पुंनागान्वञ्जुलान्धवान्।
चम्पकान्नागवृक्षांश्च कर्णिकारांश्च पुष्पितान् २६
स्तबकैः काञ्चनैश्चित्रै रक्तैः किसलयैस्तथा।
आपीडैश्च लताभिश्च हेमाभरणभूषितान् २७
तरुणादित्यसंकाशान्वैदुर्यमयवेदिकान्।
विभ्राजमानान्वपुषा पादपांश्च हिरण्मयान् २८
नीलवैदूर्यवर्णाश्च पद्मिनीः पतगैर्वृताः।
महद्भिः काञ्चनैर्वृक्षैर्वृता बालार्कसंनिभैः २९
जातरूपमयैर्मत्स्यैर्महद्भिश्चाथ पङ्कजैः।
नलिनीस्तत्र ददृशुः प्रसन्नसलिलायुताः ३०

प्यासे, बेहोश हुए, श्रमयुक्त, जलकी इच्छावाले, कुछ समयको निद्रारहि[त]
हुए वे वानर उस बिलसें, चले गये ॥ २३ ॥ तब निर्बल, दीनमुखवा[ले]
थके हुए, जीवनमें निराश हुए वीर वानरोंने प्रकाशको देखा ॥ २४ ॥

इसके अनन्तर अन्धकाररहित, श्रेष्ठ उस वनप्रदेशमें आकर (वानरों[ने])
जलती हुई अग्निके समान सुवर्णके फूले हुए साल, ताल, नागकेसर, क[दम्ब]
वञ्जुल, धव, चम्पक, अगस्तिया और कन्हेरके वृक्षोंको देखा॥ २५-२[६]
और चित्रित सोनेके गुच्छे तथा लाल पत्तोंसे युक्त, चोटियां और लता[ओंसे]
शोभित, तरुण सूर्यके समान, वैदूर्यकी वेदियोंवाले, देहसे शोभा देते [हुए]
स्वर्ण तथा चांदीके अन्य वृक्षोंको देखा ॥ २७--२८ ॥ नील, वैदू[र्यके]
समान रङ्गवाली, पाक्षियोंसे युक्त, बालसूर्यके समान बडे सोनेके कम[लोंसे]
संयुक्त पद्मिनी तथा सोनेके बडे मत्स्य, कछवोंसे युक्त, स्वच्छ जलसे [युक्त]
नलिनीको देखा॥ २९--३० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

काञ्चनानि विमानानि राजतानि तथैव च।
तपनीयगवाक्षाणि मुक्ताजालावृतानि च ३१
हैमराजतभौमानि वैदूर्यमणिमन्ति च।
ददृशुस्तत्र हरयो गृहमुख्यानि सर्वशः ३२
पुष्पितान्फलिनो वृक्षान्प्रवालमणिसंनिभान्।
काञ्चनभ्रमरांश्चैव मधूनि च समन्ततः ३३
मणिकाञ्चनचित्राणि शयनान्यासनानि च।
विविधानि विशालानि ददृशुस्ते समन्ततः ३४
हैमराजतकांस्यानां भाजनानां च राशयः।
गुरूणां च दिव्यानां चन्दनानां च संचयान् ३५
शुचीन्यभ्यवहाराणि मूलानि च फलानि च।
महार्हाणि च यानानि मधूनि रसवन्ति च ३६
दिव्यानामम्बराणां च महार्हाणां च संचयान्।
कम्बलानां च चित्राणामजिनानां च संचयान् ३७

वहां वानरोंने सोने और चांदीके विमान और सोनेके झरोखोंवाले, मोतियोंके समूहोंसे ढके हुए सोने चांदीकी भूमिवाले, वैडूर्य और मणि युक्त मुख्य भवनोंको देखा ॥ ३१-३२ ॥ उन्होंने सब ओरसे प्रवाल और मणिके सदृश, फूले हुए और फलयुक्त वृक्ष और सोनेके भौंरों तथा महुआ (वृक्षविशेष) और मणि सुवर्णसे चित्रित शयन और आसन तथा बहुमूल्य विमानोंको देखा ॥ ३३-३४ ॥ (वानरोंने) सोना, चांदी और कांसेके वर्तनोंके ढेर, अगरु और दिव्य चन्दनके ढेर, पवित्र और खाने योग्य मूल, फल तथा श्रेष्ठ पान (मद्य) एवं रसवाले महुआ और बहु-मूल्य दिव्य वस्त्रोंके ढेर चित्रित कम्बल और मृगचर्मोंके ढेर तथा प्रत्येक स्थान पर रक्खे हुए प्रकाशित, अग्निसमान कान्तिवाले निर्मल सोनेके ढेरों-को देखा ॥ ३५-३७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तत्र तत्र विचिन्वन्तो बिले तत्र महाप्रभाः।
ददृशुर्वानराः शूराः स्त्रियं कांचिददूरतः ३८
तां च ते ददृशुस्तत्र चीरकृष्णाजिनाम्बराम्।
तापसीं नियताहारां ज्वलन्तीमिव तेजसा ३९
विस्मिता हरयस्तत्र व्यवतिष्ठन्त सर्वशः।
पप्रच्छ हनुमांस्तत्र कासि त्वं कस्य वा बिलम् ४०
ततो हनूमान्गिरिसंनिकाशः कृताञ्जलिस्तामभिवाद्य वृद्धाम्।
पप्रच्छ का त्वं भवनं बिलं च रत्नानि चेमानि वदस्व कस्य ४१

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डे पञ्चाशः सर्गः ॥५०॥ [२०३...]

एकपञ्चाशः सर्गः

इत्युक्त्वा हनुमांस्तत्र चीरकृष्णाजिनाम्बराम्।
अब्रवीत्तां महाभागां तापसीं धर्मचारिणीम् १
इदं प्रविष्टाः सहसा बिलं तिमिरसंवृतम्।
क्षुत्पिपासापरिश्रान्ताः परिखिन्नाश्च सर्वशः २

उस बिलमें प्रत्येक स्थान पर खोजते हुए महाबली शूर वानरोंने समी... में किसी स्त्री को देखा ॥ ३८ ॥ अत्यन्त डरे हुए वानर चीर और का... मृगचर्मको पहिने हुई, परिमित भोजनवाली, तेजसे जलती हुई सी तप... स्विनीको देखकर विस्मित हो सबके सब ठहर गये और वहां हनुमान्... पूंछा तुम कौन हो और यह बिल किसका है? ॥ ३९-४० ॥ इसके अनन्तर पर्वतके तुल्य हनुमान् हाथ जोडकर उस वृद्धाको प्रणाम कर पूंछ... लगा "तुम कौन हो यह बिल और सोना तथा रत्न किसके हैं" य... बताओ ॥ ४१ ॥

॥ यहाँ ५० सर्ग समाप्त हुआ ॥

हनुमान् वहां ऐसा कह फिर काले मृगचर्मके वस्त्रवाली, महाभागा, धर्मचारिणी तापसीसे बोला ॥ १ ॥ भूख, प्याससे थके हुए और सबके सब दुःखी हुए हम अंधेरेसे ढके हुए इस बिलमें सहसा घुसे हैं, ॥ २ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

महद्धरण्या विवरं प्रविष्टा स्म पिपासिताः।
इमांस्त्वेवंविधान्भावान्विविधानद्भुतोपमान् ३
दृष्ट्वा वयं प्रव्यथिताः संभ्रान्ता नष्टचेतसः।
कस्यैते काञ्चना वृक्षास्तरुणादित्यसंनिभाः ४
शुचीन्यभ्यवहाराणि मूलानि च फलानि च।
काञ्चनानि विमानानि राजतानि गृहाणि च ५
तपनीयगवाक्षाणि मणिजालावृतानि च।
पुष्पिताः फलवन्तश्च पुण्याः सुरभिगन्धयः ६
इमे जाम्बूनदमयाः पादपाः कस्य तेजसा।
काञ्चनानि च पद्मानि जातानि विमले जले ७
कथं मत्स्याश्च सौवर्णा दृश्यन्ते सह कच्छपैः।
आत्मनस्त्वनुभावाद्वा कस्य वै तत्तपोबलम् ८
अजानतां नः सर्वेषां सर्वमाख्यातुमर्हसि ९
एवमुक्ता हनुमता तापसी धर्मचारिणी।
प्रत्युवाच हनूमन्तं सर्वभूतहिते रता १०
मयो नाम महातेजा मायावी वानरर्षभ।

इस प्रकारके विविध, अद्भुत इन पदार्थोंको देखकर प्यासे होकर पृथ्वीके बड़े छिद्रमें घुसे हैं ॥ ३ ॥ (हम) पीडित, भ्रमयुक्त और कर्तव्यबुद्धि-रहित होगये हैं, तरुणसूर्यके समान प्रकाशमान सोनेके वृक्ष ॥ ४ ॥ और पवित्र खानेके योग्य, मूल, फल तथा सोनेके विमान, सोनेके झरोखों वाले, मणिके जालसे संयुक्त चांदीके घर-ये किसके हैं, पुष्पित, फलवाले, पवित्र, सुगन्ध युक्त ये सुवर्णमय वृक्ष किसके तेजसे हैं ॥ ५-६ ॥ सोनेके कमल विमलजलमें कैसे उत्पन्न हुए हैं ॥ ७ ॥ और सोनेके मत्स्य कछवोंके साथ कैसे विचरते हैं तुमको, प्रभावको और यह तपोबल किसका है ॥ ८ ॥ यह सब न जानते हुए हमसे कहनेको योग्य हो ॥ ९ ॥ इस प्रकार कही गई, सब प्राणियोंके हितमें अनुरक्त धर्मचारिणी तापसी-ने हनुमान्‌को ज़वाब दिया ॥ १० ॥ महातेजस्वी, मायायुक्त, दानवोंमें श्रेष्ठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तनेदं निर्मितं सर्वं मायया काञ्चनं वनम् ११
पुरा दानवमुख्यानां विश्वकर्मा बभूव ह।
येनेदं काञ्चनं दिव्यं निर्मितं भवनोत्तमम् १२
स तु वर्षसहस्राणि तपस्तप्त्वा महद्वने।
पितामहाद्वरं लेभे सर्वमौशनसं धनम् १३
विधाय सर्वं बलवान्सर्वकामेश्वरस्तदा।
उवास सुखितः कालं कंचिदस्मिन्महावने १४
तमप्सरसि हेमायां सक्तं दानवपुङ्गवम्।
विक्रम्यैवाशनिं गृह्य जघानेशः पुरंदरः १५
इदं च ब्रह्मणा दत्तं हेमायै वनमुत्तमम्।
शाश्वतः कामभोगश्च गृहं चेदं हिरण्मयम् १६
दुहिता मेरुसावर्णेरहं तस्याः स्वयंप्रभा।
इदं रक्षामि भवनं हेमाया वानरोत्तम १७
मम प्रियसखी हेमा नृत्तगीतविशारदा।
तया दत्तवरा चाऽस्मि रक्षामि भवनं महत् १८

मय नामक दैत्य हुआ है। उसने अपनी मायासे यह सब वन सोने
बनाया है ॥ ११ ॥ पुराकालमें वह दानवोंमें मुख्य शिल्पी था, जि
दिव्य सोनेका श्रेष्ठ भवन बनाया है ॥ १२ ॥

उसने महावनमें एक हजार वर्ष तपस्या करके ब्रह्मासे सब शिल्प
का वर प्राप्त किया था ॥ १३ ॥ तब सबके निर्माण करनेमें स्वतन्त्र बल
उसने वनको रच कर इस महावनमें सुखपूर्वक कुछ काल तक वास कि
था ॥ १४ ॥ त्रैलोक्याधिपति इन्द्रने हेमा नामवाली अप्सरामें आसक्त
दानवोंमें उत्तम उसको वज्र लेकर पराक्रम करके अर्थात् युद्धमें मारा
॥ १५ ॥ ब्रह्माने हेमाके वास्ते यह उत्तम वन, हमेशा रहनेवाले भोग
यह सुवर्णमय गृह दिया था ॥ १६ ॥ हे वानर ! मैं मेरुसावर्णिकी
स्वयंप्रभा नाम्नी उस हेमाके इस भवनकी रक्षा करती हूं ॥ १७
नाच और गानेमें प्रवीण हेमा मेरी प्यारी सखी थी, मैं उससे वर
हूं, मैं इस भवनोत्तमकी रक्षा करती हूं ॥ १८ ॥ क्या कार्य है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

किं कार्यं कस्य वा हेतोः कान्ताराणि प्रपद्यथ।
कथं चेदं वनं दुर्गं युष्माभिरुपलक्षितम् १९
शुचीन्यभ्यवहाराणि मूलानि च फलानि च।
भुक्त्वा पीत्वा च पानीयं सर्वं मे वक्तुमर्हसि २०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० एकपञ्चाशः सर्गः ॥५१॥ [२०५२]

द्विपञ्चाशः सर्गः।

अथ तानब्रवीत्सर्वान्विश्रान्तान्हरियूथपान्।
इदं वचनमेकाग्रा तापसी धर्मचारिणी १
वानरा यदि वः खेदः प्रनष्टः फलभक्षणात्।
यदि चैतन्मया श्राव्यं श्रोतुमिच्छामि तां कथाम् २
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा हनूमान्मारुतात्मजः।
आर्जवेन यथातत्त्वमाख्यातुमुपचक्रमे ३
राजा सर्वस्य लोकस्य महेन्द्रवरुणोपमः।
रामो दाशरथिः श्रीमान्प्रविष्टो दण्डकावनम् ४
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वैदेह्या सह भार्यया।
तस्य भार्या जनस्थानाद्रावणेन हृता बलात् ५

हेतुसे (तुम) विषम वनोंको देखते हो और क्यों यह दुर्ग वन तुम लोगोंने देखा है? ॥ १९ ॥ खाने योग्य इन मूल और फलोंको खाकर जल पीकर (तुम) मुझसे सब कहना ॥ २० ॥

॥ यहाँ ५१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

अब एकान्तचित्त हुई धर्मचारिणी तापसी उन सब विश्रान्त वानरोंसे यह वचन बोली ॥ १ ॥ हे वानरो! फलोंके भक्षण करनेसे यदि तुम्हारा खेद नष्ट होगया हो और वह (कारण) मेरे सुनने योग्य हो तो कहिये, मैं सुननेकी इच्छा करती हूं ॥ २ ॥ तापसीके इस वचनको सुनकर वायु-पुत्र हनुमान्ने निष्कपटतासे ज्योंका त्यों कहना आरम्भ किया ॥ ३ ॥ सब लोकके राजा, (शूरता और गम्भीरता में) इन्द्र तथा वरुणके समान, दशरथके पुत्र श्रीमान् राम भाई लक्ष्मण और स्त्री सीताके साथ दण्डकारण्य में प्रविष्ट हुए थे ॥ ४ ॥ उनकी भार्याको जनस्थानसे रावणने बलसे हर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वीरस्तस्य सखा राज्ञः सुग्रीवो नाम वानरः।
राजा वानरमुख्यानां येन प्रस्थापितो वयम् ६
अगस्त्यचरितामाशां दक्षिणां यमरक्षिताम्।
सहैभिर्वानरैर्मुख्यैरङ्गदप्रमुखैर्वयम् ७
रावणं सहिताः सर्वे राक्षसं कामरूपिणम्।
सीतया सह वैदेह्या मार्गध्वमिति चोदिताः ८
विचित्य तु वनं सर्वं समुद्रं दक्षिणां दिशम्।
वयं बुभुक्षिताः सर्वे वृक्षमूलमुपाश्रिताः ९
विवर्णवदनाः सर्वे सर्वे ध्यानपरायणाः।
नाधिगच्छामहे पारं मग्नाश्चिन्तामहार्णवे १०
चारयन्तस्ततश्चक्षुर्दृष्टवन्तो महद्बिलम्।
लतापादपसंपन्नं तिमिरेण समावृतम् ११
अस्माद्धंसा जलक्लिन्नाः पक्षैः सलिलरेणुभिः।
कुरराः सारसाश्चैव निष्पतन्ति पतत्रिणः॥
साध्वत्र प्रविशामेति मया तूक्ताः प्लवंगमाः १२

लिया। ॥ ४-५ ॥

वानरेश्वरोंके राजा वीर सुग्रीव नामक वानर उन राजाके मित्र हैं जिन्होंने अगस्त्यसे सेवित, यमसे रक्षित दक्षिण दिशाको हम लोग भेजे हैं और "अंगदादि इन भयंकर वानरोंके साथ सब मिलकर कामरूपी राक्षस रावणको विदेह कन्या सीताके सहित ढूंढो" इस प्रकार हमें प्रेरित किया है ॥६-८॥ समस्त दक्षिण दिशाको खोजकर थके हुए, भूखे, वृक्षमूलमें बैठे सब विवर्णमुख वाले, ॥ ९ ॥ सब ध्यानमें परायण और चिन्तारूपी समुद्र में डूबे हुए हम (चिन्तारूपी समुद्र का) पार नहीं पाते ॥ १० ॥

इसके बाद दृष्टिको फैलाते हुए हमने लता और वृक्षोंसे ढके हुए अन्धकारसे युक्त इस बिलको देखा ॥ ११ ॥ "जल जिनसे टपक रहा है ऐसे पंखोंसे (दिखाई देते हुए), जलमें भीगे हंस, कुरर और सारस पक्षी इस बिलसे निकलते हैं। अच्छा, यहां घुसें" यह मैंने इन वानरोंसे कहा॥१२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तेषामपि हि सर्वेषामनुमानमुपागतम्।
अस्मिन्निपतिताः सर्वेऽप्यथ कार्यत्वरान्विताः १३
ततो गाढं निपतिता गृह्य हस्तैः परस्परम्।
इदं प्रविष्टाः सहसा बिलं तिमिरसंवृत्तम् १४
एतन्नः कार्यमेतेन कृत्येन वयमागताः।
त्वां चैवोपगताः सर्वे परिद्यूना बुभुक्षिताः १५
आतिथ्यधर्मदत्तानि मूलानि च फलानि च।
अस्माभिरुपयुक्तानि बुभुक्षापरिपीडितैः १६
यत्त्वया रक्षिताः सर्वे म्रियमाणा बुभुक्षया।
ब्रूहि प्रत्युपकारार्थं किं ते कुर्वन्तु वानराः १७
एवमुक्ता तु सर्वज्ञा वानरैस्तैः स्वयंप्रभा।
प्रत्युवाच ततः सर्वानिदं वानरयूथपान् १८
सर्वेषां परितुष्टाऽस्मि वानराणां तरस्विनाम्।
चरन्त्या मम धर्मेण न कार्यमिह केनचित् १९
एवमुक्तः शुभं वाक्यं तापस्या धर्मसंहितम्।

उन सबको भी यह अनुमान् हुआ कि "स्वामीके कार्यकी शीघ्रतासे युक्त हम चलें और इसमें घुसें" ॥ १३ ॥

तदनन्तर (हम) परस्पर हाथोंको पकड कर दृढतासे गिरते पडते और अन्धकारसे युक्त इस बिलमें घुस गये ॥१४॥ यह हमारा कार्य है, इसी कार्यसे आये हुए हम सब क्षीण और बुभुक्षित हो तुम्हारे समीपमें प्राप्त हुए हैं॥ १५ ॥ आतिथ्य धर्मसे दिये हुए मूल और फल भूखसे पीडित हम लोगोंने खाये ॥ १६ ॥ भूखसे मरते हुए हम सबको जो आपने बचाये हैं अतएव बताइये कि वानर आपका क्या प्रत्युपकार करें ॥ १७ ॥ उन वानरोंसे इस प्रकार कही गई सर्वज्ञ स्वयंप्रभाने वानरयूथपतियोंको यह जवाब दिया ॥ १८ ॥ बलवान् सब वानरोंसे (वचन सेही) मैं प्रसन्न हूं यहां धर्मसे रहती हुई मुझे किसीसे कुछ काम नहीं है ॥ १९ ॥

तापसीसे धर्म्मयुक्त यह शुभ वाक्य कहे जाने पर हनुमान् श्रेष्ठ चरित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उवाच हनुमान्वाक्यं तामनिन्दितलोचनाम् २०
शरणं त्वां प्रपन्नाः स्मः सर्वे वै धर्मचारिणीम्।
यः कृतः समयोऽस्मासु सुग्रीवेण महात्मना २१
स तु कालो व्यतिक्रान्तो बिले च परिवर्तताम्।
सा त्वमस्माद्बिलादस्मादुत्तारयितुमर्हसि २२
तस्मात्सुग्रीववचनादतिक्रान्तान्गतायुषः।
त्रातुमर्हसि नः सर्वान्सुग्रीवभयशङ्कितान् २३
महच्च कार्यमस्माभिः कर्तव्यं धर्मचारिणि।
तच्चापि न कृतं कार्यमस्माभिरिह वासिभिः २४
एवमुक्ता हनुमता तापसी वाक्यमब्रवीत्।
जीवता दुष्करं मन्ये प्रविष्टेन निवर्तितुम् २५
तपसः सुप्रभावेण नियमोपार्जितेन च।
सर्वानेव बिलादस्मात्तारयिष्यामि वानरान् २६
निमीलयत चक्षूंषि सर्वे वानरपुंगवाः।
न हि निष्क्रमितुं शक्यमनिमीलितलोचनैः २७

वाली उससे बोले ॥ २० ॥ हे धर्मचारिणी! हम सबोंने तुम रक्षक पाया है और महात्मा सुग्रीवने जो समय हमको दिया था।। २१ ॥ बिलमें घूमते हुए हम लोगोंका वह समय बीत चुका, सो तुम इस घोर बिल (हम लोगों को) उतारनेके योग्य हो ॥२२॥ उस सुग्रीवके वचनका उल्लङ्घन करनेवाले, व्यतीत आयुवाले और सुग्रीवके भयसे दुबले हुए हम सबको (तुम) बचानेको समर्थ हो ॥ २३ ॥

हे धर्मचारिणि! हम लोगोंको (उसका) बडा कार्य करना था, वह यहां पर वसते हुए हमने नहीं किया ॥ २४ ॥ इस प्रकार हनुमान्से कही हुई तापसी वाक्य बोली, इसमें घुसे हुए का जीते जी लौटना दुष्कर समझती हूं ॥ २५ ॥ (तौभी) नियमसे उपार्जन किये हुए तपके प्रभावसे सब वानरोंको इस बिलसे निकालूंगी ॥ २६ ॥

हे वानरश्रेष्ठो! तुम सब नेत्रोंको बन्द करलो, क्योंकि विना नेत्र बन्द किये हुए नहीं निकल सकते ॥ २७ ॥ तदनन्तर नेत्र बन्द किये हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ततो निमीलिताः सर्वे सुकुमाराङ्गुलैः करैः ।
सहसा पिदधुर्दृष्टिं हृष्टा गमनकाङ्क्षया २८
वानरास्तु महात्मानो हस्तरुद्धमुखास्तदा ।
निमेषान्तरमात्रेण बिलादुत्तारितास्तया २८
उवाच सर्वांस्तांस्तत्र तापसी धर्मचारिणी ।
निःसृतान्विषमात्तस्मात्समाश्वास्येदमब्रवीत् ३०
एष विन्ध्यो गिरिः श्रीमान्नानाद्रुमलतायुतः ।
एष प्रस्रवणः शैलः सागरोऽयं महोदधिः ३१
स्वस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि भवनं वानरर्षभाः ।
इत्युक्त्वा तद्बिलं श्रीमत्प्रविवेश स्वयंप्रभा ३२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० द्विपञ्चाशः सर्गः ॥५२॥[२०८४]

त्रिपञ्चाशः सर्गः

ततस्ते ददृशुर्घोरं सागरं वरुणालयम् ।
अपारमभिगर्जन्तं घोरैरूर्मिभिराकुलम् १
मयस्य मायाविहितं गिरिदुर्गं विचिन्वताम् ।

वानरों) ने प्रसन्न हो गमनकी इच्छासे सुकुमार अंगुलियों वाले हाथोंसे सहसा दृष्टिको बन्द कर लिया ॥ २८ ॥ हाथोंसे ढक लिये हैं मुख जिन्होंने ऐसे महात्मा वानर उस तापसीने क्षण भरमें ही बिलसे निकाल दिये ॥२९॥ तदनन्तर उस विषम स्थलसे निकले हुए उन सब वानरोंको धर्मचारिणी तपस्विनी समझाकर यह बोली कि– ॥ ३० ॥ अनेक वृक्ष और लताओंसे व्याप्त यह शोभायमान विन्ध्याचल है, यह प्रस्रवण गिरि है और यह महोदधि सागर है ॥ ३१ ॥

हे वानरो ! तुम्हारा भला हो, मैं (अपने) भवनको जाऊंगी, ऐसा कह स्वयंप्रभा शोभायुक्त बिलमें घुस गयी ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ ५२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

तदनन्तर उन्होंने घोर लहरोंसे संयुक्त, गर्जते हुए, अपार, वरुणके निवासभूत, घोर, सागरको देखा ॥ १ ॥ मयकी मायासे रचे हुए पर्वतके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तेषां मासो व्यतिक्रान्तो यो राज्ञा समयः कृतः २
विन्ध्यस्य तु गिरेः पादे संप्रपुष्पितपादपे।
उपविश्य महात्मानश्चिन्तामापेदिरे तदा ३
ततः पुष्पातिभाराग्राँल्लताशतसमावृतान्।
द्रुमान्वासन्तिकान्दृष्ट्वा बभूवुर्भयशङ्किताः ४
ते वसन्तमनुप्राप्तं प्रतिवेद्य परस्परम्।
नष्टसंदेशकालार्था निपेतुर्धरणीतले ५
ततस्तान्कपिवृद्धांश्च शिष्टांश्चैव वनौकसः।
वाचा मधुरयाभाष्य यथावदनुमान्य च ६
स तु सिंहवृषस्कन्धः पीनायतभुजः कपिः।
युवराजो महाप्राज्ञ अङ्गदो वाक्यमब्रवीत् ७
शासनात्कपिराजस्य वयं सर्वे विनिर्गताः।
मासः पूर्णो बिलस्थानां हरयः किं न बुध्यत ८

दुर्गमें खोजते हुए उन (वानरों) का मास बीत गया जो कि राजा... अवधि किया था ॥ २ ॥ तब विन्ध्याचलके पुष्पयुक्त वृक्षों वाले ... पार्श्व पर बैठकर महात्मा वानर चिन्ताको प्राप्त हो गये ॥ ३ ॥

इसके अनन्तर फूलोंसे अति भारी हो रहे हैं अग्रभाग जिनके ... सैकडों लताओंसे घिरे हुए, वसन्तमें फूलने वाले वृक्षोंको देख कर वे भ... शङ्कित हो गये ॥ ४ ॥ नष्ट हो गया है संदेशका समय और प्रयो... जिनका ऐसे वानर समीपमें प्राप्त हुए वसन्तको परस्पर समझ कर भूमि... पर गिर पडे ॥ ५ ॥ इसके बाद वानरोंमें वृद्ध तथा शिष्ट उन वनचारि... को मधुर वाणीसे सम्बोधन कर और यथावत् अनुमान करके सिंह ... वृषभके समान कंधे वाला, पुष्ट और लम्बी भुजाओं वाला, महाबुद्धि... युवराज वानर अङ्गद बोला ॥ ६–७ ॥

हम सब सुग्रीवकी आज्ञासे निकले थे । हे वानरो ! बिलमें ... हुओंको मास पूर्ण हुआ क्या नहीं जाना जाता ॥ ८ ॥ अपने (गृह...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वयमाश्वयुजे मासि कालसंख्याव्यवस्थिताः।
प्रस्थिताः सोपि चातीतः किमतः कार्यमुत्तरम् ९
भवन्तः प्रत्ययं प्राप्तानीतिमार्गविशारदाः।
हितेष्वभिरता भर्तुर्निसृष्टाः सर्वकर्मसु १०
कर्मस्वप्रतिमाः सर्वे दिक्षु विश्रुतपौरुषाः।
मां पुरस्कृत्य निर्याताः पिङ्गाक्षप्रतिचोदिताः ११
इदानीमकृतार्थानां मर्तव्यं नात्र संशयः।
हरिराजस्य संदेशमकृत्वा कः सुखी भवेत् १२
अस्मिन्नतीते काले तु सुग्रीवेण कृते स्वयम्।
प्रायोपवेशनं युक्तं सर्वेषां च वनौकसाम् १३
तीक्ष्णः प्रकृत्या सुग्रीवः स्वामिभावे व्यवस्थितः
न क्षमिष्यति नः सर्वानपराधकृतो गतान् १४
अप्रवृत्तौ च सीतायाः पापमेव करिष्यति १५

...की संख्यामें स्थित हुए हम आश्विन मासमें चले थे, वह (एक मास) व्यतीत हो चुका, इससे आगे क्या करना चाहिये ? ॥ ९ ॥ विश्वासको ..., नीतिमार्गमें विशारद, स्वामीके हितमें दत्तचित्त, सब कार्योंमें प्रवीण, ... करनेमें अतुलनीय, सब दिशाओंमें प्रसिद्ध पुरुषार्थवाले, सुग्रीवसे ...त किये हुए आप सब मुझे आगे करके निकले थे ॥ १०-११ ॥ इसमें ... नहीं कि अकृतकृत्य हुए हमको मरना योग्य है, वानरेश्वरका संदेश ...ना किये कौन सुखी हो सकता है ॥ १२ ॥

सुग्रीवसे स्वयं किये गये उस कालके व्यतीत हो जाने पर सब वानरों- ... मरनेके लिये सोनाही उचित है ॥१३॥ स्वभावसे तीक्ष्ण, स्वामिभावमें ... सुग्रीव अपराध करनेवाले, (सीताको ढूंढनेको) गये हुए हम सबों- ... क्षमा नहीं करेगा ॥ १४ ॥ सीताका वृत्तान्त न मिलने पर (सुग्रीव) ... ही करेगा, इससे पुत्र, स्त्री, धन और घरको छोडकर हम सबका आज ... मरणार्थ शयन करना ही योग्य है ॥ १५ ॥ निश्चय ही राजा यहां लौटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तस्मात्क्षममिहाद्यैव गन्तुं प्रायोपवेशनम्।
त्यक्त्वा पुत्रांश्च दारांश्च धनानि च गृहाणि च १६
ध्रुवं नो हिंसते राजा सर्वान्प्रतिगतानितः।
वधेनाप्रतिरूपेण श्रेयान्मृत्युरिहैव नः १७
न चाहं यौवराज्येन सुग्रीवेणाभिषेचितः।
नरेन्द्रेणाभिषिक्तोऽस्मि रामेणाक्लिष्टकर्मणा १८
स पूर्वं बद्धवैरो मां राजा दृष्ट्वा व्यतिक्रमम्।
घातयिष्यति दण्डेन तीक्ष्णेन कृतनिश्चयः १९
किं मे सुहृद्भिर्व्यसनं पश्यद्भिर्जीवितान्तरे।
इहैव प्रायमासिष्ये पुण्ये सागररोधसि २०
एतच्छ्रुत्वा कुमारेण युवराजेन भाषितम्।
सर्वे ते वानरश्रेष्ठाः करुणं वाक्यमब्रुवन् २१
तीक्ष्णः प्रकृत्या सुग्रीवः प्रियारक्तश्च राघवः।
समीक्ष्याकृतकार्यांस्तु तस्मिंश्च समये गते २२
अदृष्टायां च वैदेह्यां दृष्ट्वा चैव समागतान्।

हुए हम सबको अयोग्य वधसे मारेगा, इससे हमारी मृत्यु यहां ही कल्याणदायक है ॥ १६ ॥

सुग्रीव द्वारा मैं यौवराज्यमें अभिषिक्त नहीं हुआ, किन्तु सरलकर्मा राजा राम द्वारा अभिषिक्त हुआ हूं ॥ १७ ॥ पहिलेका वैर बांधे हुए निश्चय किये हुए वह राजा व्यतिक्रम (आज्ञाभङ्ग) को देखकर तीक्ष्ण दण्डसे मुझे मारेगा ॥ १८ ॥ जीवनावधिके समय मेरे दुःखको देखते हुए मित्रोंसे क्या प्रयोजन है ? मैं यहीं पवित्र समुद्रके किनारे मरनेको बैठूंगा। युवराज कुमारका यह कथन सुन वे सब वानरश्रेष्ठ दयायुक्त वचन बोले ॥ १९-२१ ॥

सुग्रीव स्वभावसे ही कठोर है और राम प्रियामें आसक्त है, अकृतकृत्य हुए और उस (किये हुए) समयके बीत जाने पर सीताको

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

राघवप्रियकामाय घातयिष्यत्यसंशयम्। २३
न क्षमं चापराद्धानां गमनं स्वामिपार्श्वतः।
प्रधानभूताश्च वयं सुग्रीवस्य समागताः २४
इहैव सीतामन्वीक्ष्य प्रवृत्तिमुपलभ्य वा।
नो चेद्गच्छाम तं वीरं गमिष्यामो यमक्षयम् २५
प्लवंगमानां तु भयार्दितानां श्रुत्वा वचस्तार इदं बभाषे।
अलं विषादेन बिलं प्रविश्य वसाम सर्वे यदि रोचते वः २६
इदं हि मायाविहितं सुदुर्गमं प्रभूतपुष्पोदकभोज्यपेयम्।
इहास्ति नो नैव भयं पुरंदरान्न राघवाद्वानरराजतोऽपि वा २७
श्रुत्वाङ्गदस्यापि वचोनुकूलमूचुश्च सर्वे हरयः प्रतीताः।
यथा न हन्येम तथा विधानमसक्तमद्यैव विधीयतां नः २८

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥ ५३ ॥ [२११२]

वे पहुंचे हुए हम सबको (सुग्रीव) रामकी प्रियकामनाके वास्ते निःसंदेह मारेगा ॥ २२–२३ ॥ अपराधियोंका स्वामीके समीपमें जाना योग्य नहीं है, सुग्रीवके प्रधानभूत, यहां आये हुए हम सीताको खोजकर वा संदेश पाकर उस वीरके पास जांयगे; नहीं तो यहीं यमलोकको चले जांयगे ॥ २४–२५ ॥

भयपीडित वानरोंके वचनको सुनकर तार यह बोला-खेद करनेसे अलम् अर्थात् कुछ नहीं है, यदि तुमको भाता हो तो बिलमें घुसकर सब रहने लगें ॥ २६ ॥ यह मायासे बना हुआ, दुर्गम और अत्यन्त वृक्ष, जल, भोज्य और पेय (पीनेकी चीजें) वाला है, यहां हमको न इन्द्रसे भय है और न राम तथा सुग्रीवसे ॥ २७ ॥ अङ्गदके अनुकूल तारके वचनको सुनकर विश्वस्त हुए सब वानर बोले कि जिस प्रकार वे हमको न मारें, आप वैसा कार्य अविलम्बसे अभी ही कीजिये ॥ २८ ॥

॥ यहां ५३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चतुष्पञ्चाशः सर्गः ।

तथा ब्रुवति तारे तु ताराधिपतिवर्चसि ।
अथ मेने हृतं राज्यं हनूमानङ्गदेन तत् १
बुद्ध्या ह्यष्टाङ्गया युक्तं चतुर्बलसमन्वितम् ।
चतुर्दशगुणं मेने हनूमान्वालिनः सुतम् २
आपूर्यमाणं शश्वच्च तेजोबलपराक्रमैः ।
शशिनं शुक्लपक्षादौ वर्धमानमिव श्रिया ३
बृहस्पतिसमं बुद्ध्या विक्रमे सदृशं पितुः ।
शुश्रूषमाणं तारस्य शुक्रस्येव पुरंदरम् ४
भर्तुरर्थे परिश्रान्तं सर्वशास्त्रविशारदः ।
अभिसंधातुमारेभे हनूमानङ्गदं ततः ५
स चतुर्णामुपायानां द्वितीयमुपवर्णयन् ।
भेदयामास तान्सर्वान्वानरान्वाक्यसंपदा ६
तेषु सर्वेषु भिन्नेषु ततोऽभीषयदङ्गदम् ।
भीषणैर्विविधैर्वाक्यैः कोपोपायसमन्वितैः ७

चन्द्रसमान कान्तिवाले तारके ऐसा कहनेपर हनुमान् अङ्गदसे हि… हुए उस राज्यको समझे ॥ १ ॥ हनुमान्ने अष्टाङ्ग बुद्धिसे युक्त, चार ब… से संयुक्त और चौदह गुणवाला वालिसुतको माना ॥ २ ॥ निरन्तर तेज, ब… और पराक्रमसे पूर्ण होते हुए, शुक्लपक्षके आदिमें चन्द्रमाके समान शो… से बढते हुए ॥ ३ ॥ बुद्धिसे बृहस्पतिके समान, विक्रममें पिताके सम… शुक्रके वाक्यको सुनते हुए इन्द्रके समान तारके वाक्यको सुनते हुए ॥ ४ … थके हुए और सर्वशास्त्रवेत्ताओंमें श्रेष्ठ अङ्गदको स्वामीके प्रयोजनमें लगा… का हनुमान्ने आरम्भ किया ॥ ५ ॥ उसने चार उपायोंमेंसे ती… का वर्णन करते हुए वाक्यसम्पति से उन सब वानरोंको भिन्न भि… कर दिया ॥ ६ ॥

उन सबके भिन्न हो जानेपर तदनन्तर दण्डसे युक्त, कोपके उपा… संयुक्त भीषण बहुत वाक्योंसे अङ्गदको डराया ॥ ७ ॥ हे तारके पु…

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

त्वं समर्थतरः पित्रा युद्धे तारेय वै ध्रुवम् ।
दृढं धारयितुं शक्तः कपिराज्यं यथा पिता ८
नित्यमस्थिरचित्ता हि कपयो हरिपुंगव ।
नाज्ञाप्यं विषहिष्यन्ति पुत्रदारं विना त्वया ९
त्वां नैते ह्यनुरञ्जेयुः प्रत्यक्षं प्रवदामि ते ।
यथायं जाम्बवान्नीलः सुहोत्रश्च महाकपिः १०
नह्यहं ते इमे सर्वे सामदानादिभिर्गुणैः ।
दण्डेन न त्वया शक्याः सुग्रीवादपकर्षितुम् ११
विगृह्यासनमप्याहुर्दुर्बलेन बलीयसा ।
आत्मरक्षाकरस्तस्मान्न विगृह्णीत दुर्बलः १२
यां चेमां मन्यसे धात्रीमेतद्बिलमिति श्रुतम् ।
एतल्लक्ष्मणबाणानामीषत्कार्यं विदारणम् १३
स्वल्पं हि कृतमिन्द्रेण क्षिपता ह्यशनिं पुरा ।
लक्ष्मणो निशितैर्बाणैर्भिन्द्यात्पत्रपुटं यथा १४

...में तुम पिता सुग्रीवसे अधिक समर्थ हो और पिताके समान वानरराज्य ...ण करनेको दृढतासे समर्थ भी हो ॥ ८ ॥ हे वानरश्रेष्ठ ! नित्य अस्थिर-...त्त वानर पुत्र और स्त्रियोंके विना तुमसे दी हुई आज्ञाको नहीं सहेंगे ...९ ॥ मैं तुम्हारे प्रत्यक्ष कहता हूं कि ये तुम्हारा अनुवर्तन नहीं करेंगे ...े यह जाम्बवान्, नील और महाकपि सुहोत्र ये सब तथा मैं ...ी तुमसे सामदान आदि गुणोंके द्वारा सुग्रीवसे नहीं खींचे जा ...कते ॥ १०-११ ॥

बलवान्का दुर्बलके साथ बिगाडकर निवास करना भी (नीतिज्ञ) ...हते हैं और दुर्बलका बलवान्के साथ बिगाड करना अच्छा नहीं, इससे ...पने कुशलकी कामनावाला दुर्बल बलवानसे बिगाड न करे ॥१२॥ जो ...स गुफाको रक्षा करनेवाली समझते हो और " यह बिल है " यह तारसे ...ना है सो यह लक्ष्मणके बाणोंको विदीर्ण करनेमें थोडासा कार्य है ॥१३॥ ...हिले वज्रको छोडते हुए इन्द्रने थोडा काम ही किया क्योंकि लक्ष्मण तो ...ने बाणोंसे दौना या सूखे पत्तेके समान इसे वेध डालेंगे ॥ १४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grah

लक्ष्मणस्य च नाराचा बहवः सन्ति तद्विधाः।
वज्राशनिसमस्पर्शा गिरीणामपि दारकाः १५
अवस्थानं यदैव त्वमासिष्यसि परंतप।
तदैव हरयः सर्वे त्यक्ष्यन्ति कृतनिश्चयाः १६
स्मरन्तः पुत्रदाराणां नित्योद्विग्ना बुभुक्षिताः।
खेदिता दुःखशय्याभिस्त्वां करिष्यन्ति पृष्ठतः १७
स त्वं हीनः सुहृद्भिश्च हितकामैश्च बन्धुभिः।
तृणादपि भृशोद्विग्नः स्पन्दमानाद्भविष्यसि १८
न च जातु न हिंस्युस्त्वां घोरा लक्ष्मणसायकाः।
अपावृत्तं जिघांसन्तो महावेगा दुरासदाः १९
अस्माभिस्तु गतं सार्धं विनीतवदुपस्थितम्।
आनुपूर्व्यात्तु सुग्रीवो राज्ये त्वां स्थापयिष्यति २०
धर्मराजः पितृव्यस्ते प्रीतिकामो दृढव्रतः।
शुचिः सत्यप्रतिज्ञश्च स त्वां जातु न नाशयेत् २१

लक्ष्मणके बहुतसे बाण तो ऐसे हैं जो वज्र और बिजलीके समान स्पर्श
और पर्वतोंको भी तोडनेवाले हैं ॥ १५ ॥ हे परंतप ! तुम जभी
बैठोगे तभी निश्चय किये हुए सब वानर तुमको छोड देंगे ॥ १६ ॥
और स्त्रियोंका स्मरण करते, नित्य उदास हुए, भूखे और दुःखशय्यासे
हुए वानर तुम्हें पीछे कर देंगे अर्थात् तुम्हारे प्रतिकूल हो जायंगे ॥ १
हितकी कामनावाले मित्र और बन्धुओंसे हीन हुए तुम चलते हुए तिनकेसे
अत्यन्त उदास हो जाया करोगे ॥ १८ ॥ चरित्रहीनको मारनेकी चाहना
महावेगवाले, दुरासद, घोर लक्ष्मणके बाण तुम्हारी हिंसा नहीं करेंगे-
कभी नहीं हो सकता ॥ १९ ॥

हमारे साथ गये हुए, नम्रके समान उपस्थित तुमको सुग्रीव क्रम
होनेसे राज्यपर स्थापित कर देंगे ॥ २० ॥ धर्मकी इच्छा तथा (तुम्हा
प्रीतिकी कामनावाले, दृढव्रत, शुद्ध, सत्यप्रतिज्ञावाले तुम्हारे चचा
कभी भी मारनेकी इच्छा न करेंगे ॥ २१ ॥ सुग्रीव तुम्हारी माताकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रियकामश्च ते मातुस्तदर्थं चास्य जीवितम्।
तस्यापत्यं च नास्त्यन्यत्तस्मादङ्गद गम्यताम् २२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० चतुष्पञ्चाशः सर्गः ॥ ५४ ॥ [२१३४]

पञ्चपञ्चाशः सर्गः।

श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं प्रश्रितं धर्मसंहितम्।
स्वामिसत्कारसंयुक्तमङ्गदो वाक्यमब्रवीत् १
स्थैर्यमात्ममनः शौचमानृशंस्यमथार्जवम्।
विक्रमश्चैव धैर्यं च सुग्रीवे नोपपद्यते २
भ्रातुर्ज्येष्ठस्य यो भार्यां जीवतो महिषीं प्रियाम्।
धर्मेण मातरं यस्तु स्वीकरोति जुगुप्सितः ३
कथं स धर्मं जानीते येन भ्रात्रा महात्मना।
युद्धायाभिनियुक्तेन बिलस्य पिहितं मुखम् ४
सत्यात्पाणिगृहीतश्च कृतकर्मा महायशाः।
विस्मृतो राघवो येन स कस्य सुकृतं स्मरेत् ५

कामनावाले हैं उसीके लिये उनका जीना है, सुग्रीवके दूसरा कोई सन्तान नहीं, इससे हे अङ्गद चलिये ॥ २२ ॥

॥ यहाँ ५४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

हनुमान्‌के धर्मसे युक्त, स्वामीके सत्कारसे युक्त नम्र वाक्यको सुनकर अङ्गद कहने लगा ॥ १ ॥ सुग्रीवमें स्थिरता, आत्मा और मनकी शुद्धि, अक्रूरता, कोमलता, विक्रम और धैर्य उत्पन्न नहीं होता है ॥ २ ॥ निन्दनीय जो सुग्रीव बड़े भाईकी प्यारी पटरानी (जो कि धर्मसे माता है) को जीते हुए मेरे समक्ष ग्रहण करता है ॥ ३ ॥ महात्मा भाई द्वारा युद्धके वास्ते नियुक्त किये हुए जिसने बिलका मुख ढांक दिया था, वह कैसे धर्मको जानता है ? ॥ ४ ॥

सत्यसे हाथ ग्रहण किये हुए उपकारी यशस्वी रामको जिसने भुला दिया था, वह किसके किये हुएको स्मरण करेगा ॥ ५ ॥ अधर्मसे भयभीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लक्ष्मणस्य भयेनेह नाधर्मभयभीरुणा।
आदिष्टा मार्गितुं सीता धर्मस्तस्मिन्कथं भवेत् ६
तस्मिन्पापे कृतघ्ने तु स्मृतिभिन्ने चलात्मनि।
आर्यः को विश्वसेज्जातु तत्कुलीनो विशेषतः ७
राज्ये पुत्रं प्रतिष्ठाप्य सगुणं निर्गुणोऽपि वा।
कथं शत्रुकुलीनं मां सुग्रीवो जीवयिष्यति ८
भिन्नमन्त्रोपराद्धश्च भिन्नशक्तिः कथं ह्यहम्।
किष्किन्धां प्राप्य जीवेयमनाथ इव दुर्बलः ९
उपांशुदण्डेन हि मां बन्धनेनोपपादयेत्।
शठः क्रूरो नृशंसश्च सुग्रीवो राज्यकारणात् १०
बन्धनाच्चावसादान्मे श्रेयः प्रायोपवेशनम्।
अनुजानन्तु मां सर्वे गृहं गच्छन्तु वानराः ११
अहं वः प्रतिजानामि न गमिष्याम्यहं पुरीम्।
इहैव प्रायमासिष्ये श्रेयो मरणमेव मे १२

नहीं, किन्तु लक्ष्मणके भयसे जिसने हम सब सीताको ढूंढनेको भेजे हैं, उसमें धर्म कैसे हो सकता है ॥ ६ ॥ उस पापी, कृतघ्न, स्मृतिहीन, चलात्मा सुग्रीवपर उसके कुलमें उत्पन्न हुआ, जीनेकी इच्छा करनेवाला कौन आर्य विश्वास करेगा, ॥ ७ ॥ सगुण हो वा निर्गुण पुत्रको राज्यपर स्थापित कर देना चाहिये, शत्रुकुलमें उत्पन्न हुए मुझे सुग्रीव कैसे जीने देगा॥ ८॥

प्रकाशित हो गया है (बिगाड करके स्थित होना) मत जिसका ऐसा अपराधी, शक्तिहीन मैं किष्किन्धामें प्राप्त होकर दुर्बल अनाथके समान कैसे जीऊंगा ॥ ९ ॥ शठ (गूढद्वेषी) क्रूर, नृशंस (घाती) सुग्रीव राज्यके कारणसे लोकविदित शिक्षाबन्धनसे मुझे युक्त करेगा ॥ १० ॥ हे वानरो! बन्धन वा दुःखसे मेरा मरना ही श्रेयस्कर है—ऐसा समझो और तुम सब घरको जाओ ॥ ११ ॥ मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं नगरीको नहीं जाऊंगा, यहीं मरूंगा, मेरा मरना ही श्रेयस्कर है ॥ १२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अभिवादनपूर्वं तु राजा कुशलमेव च।
अभिवादनपूर्वं तु राघवौ बलशालिनौ।
वाच्यस्तातो यवीयान्मे सुग्रीवो वानरेश्वरः १३
आरोग्यपूर्वं कुशलं वाच्या माता रुमा च मे।
मातरं चैव मे तारामाश्वासयितुमर्हथ १४
प्रकृत्या प्रियपुत्रा सा सानुक्रोशा तपस्विनी।
विनष्टमिह मां श्रुत्वा व्यक्तं हास्यति जीवितम् १५
एतावदुक्त्वा वचनं वृद्धांस्तानभिवाद्य च।
विवेश चाङ्गदो भूमौ रुदन्दर्भेषु दुर्मुखः १६
तस्य संविशतस्तत्र रुदन्तो वानरर्षभाः।
नयनेभ्यः प्रमुमुचुरुष्णं वै वारि दुःखिताः १७
सुग्रीवं चैव निन्दन्तः प्रशशंसन्त वालिनम्।
परिवार्याङ्गदं सर्वे व्यवसन्प्रायमासितुम् १८
तद्वाक्यं वालिपुत्रस्य विज्ञाय प्लवगर्षभाः।
उपस्पृश्योदकं सर्वे प्राङ्मुखाः समुपाविशन् १९

प्रणामपूर्वक बलशाली राघव और प्रणामपूर्वक मेरे छोटे चचा वानरेश्वर राजा सुग्रीवसे मेरा कुशल कहना ॥ १३ ॥ मेरी माता रुमासे आरोग्य पूर्वक कुशल कहना और तुम मेरी माता ताराको समझानेके योग्य हो ॥ १४ ॥ स्वभावसे ही प्रियपुत्रवाली, दयायुक्त, तपस्विनी वह यहांपर नष्ट हुए मुझे सुनकर निश्चय ही जीवनको छोड देगी ॥१५॥ दुर्मना अङ्गद रोते हुआ इतना वचन कह और उन वृद्धोंको अभिवादन करके भूमिके ऊपर कुशोंपर बैठ गया ॥ १६ ॥ वहां (मरनेके वास्ते) अङ्गदके बैठनेपर रोते हुए वानर दुःखित हो नेत्रोंसे गरम जल छोडने लगे ॥ १६ ॥ सुग्रीवकी निन्दा करते और वालीकी प्रशंसा करते वे सब वानर अङ्गदको घेरकर मरनेके वास्ते बैठनेको निश्चित हो गये ॥ १८ ॥

वे सब वानरेश्वर वालिपुत्रके उस मतको समझकर जलको आचमन करके पूर्वको मुख कर वहां बैठ गये ॥ १९ ॥ दक्षिणकी ओर जिनकी जड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दक्षिणाग्रेषु दर्भेषु उदक्तीरं समाश्रिताः।
मुमूर्षवो हरिश्रेष्ठा एतत्क्षममिति स्म ह २०
रामस्य वनवासं च क्षयं दशरथस्य च।
जनस्थानवधं चैव वधं चैव जटायुषः २१
हरणं चैव वैदेह्या वालिनश्च वधं तथा।
रामकोपं च वदतां हरीणां भयमागतम् २२
स संविशद्भिर्बहुभिर्महीधरो महाद्रिकूटप्रतिमैः प्लवंगमैः।
बभूव संनादितनिर्झरान्तरो भृशं नदद्भिर्जलदैरिवाम्बरम् २३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥५५॥ [२१

षट्पञ्चाशः सर्गः।

उपविष्टास्तु ते सर्वे यस्मिन्प्रायं गिरिस्थले।
हरयो गृध्रराजश्च तं देशमुपचक्रमे १
संपातिर्नाम नाम्ना तु चिरजीवी विहंगमः।
भ्राता जटायुषः श्रीमान्विख्यातबलपौरुषः २
कंदरादभिनिष्क्रम्य स विन्ध्यस्य महागिरेः।
उपविष्टान्हरीन्दृष्ट्वा हृष्टात्मा गिरमब्रवीत् ३

है ऐसे दर्भोंपर उत्तरके तीरपर बैठे मरनेकी इच्छा करनेवाले वानरश्रे... भी यह (मरना) योग्य है, यह मान लिया ॥ २० ॥ रामका वनवा... और दशरथका नाश, जनस्थानस्थित राक्षसोंका वध एवं जटायुका... सीताका हरना, रणमें वालीका मरना, रामका कोप और आये हुए... (मरण रूप) को वानरोंके कहनेपर वह पर्वत बैठते, बडे पर्वतके शिख... तुलनावाले, बढे हुए मेघके समान अत्यन्त शब्द करते बहुत वान... शब्दायमान कन्दराओं वाला हो गया ॥ २१-२३ ॥

॥ यहां ५५ वा सर्ग समाप्त हुआ ॥

जिस पर्वतस्थलपर वे सब वानर मरनेको बैठे थे उस स्थानपर एक... पहुंचा ॥ १ ॥ विख्यात बल और पुरुषार्थवाला जटायुका भाई चिरजी... पक्षी श्रीमान् सम्पाति नामसे प्रसिद्ध महापर्वत विन्ध्यकी कन्दरासे नि... कर बैठे हुए वानरोंको देखकर प्रसन्नचित्त हो यह वाणी कहने लगा ॥ ३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विधिः किल नरं लोके विधानेनानुवर्तते।
यथायं विहितो भक्ष्यश्चिरान्मह्यमुपागतः ४
परम्पराणां भक्षिष्ये वानराणां मृतं मृतम्।
उवाचैतद्वचः पक्षी तान्निरीक्ष्य प्लवंगमान् ५
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा भक्ष्यलुब्धस्य पक्षिणः।
अङ्गदः परमायस्तो हनूमन्तमथाब्रवीत् ६
पश्य सीतोपदेशेन साक्षाद्वैवस्वतो यमः।
इमं देशमनुप्राप्तो वानराणां विपत्तये ७
रामस्य न कृतं कार्यं न कृतं राजशासनम्।
हरीणामियमज्ञाता विपत्तिः सहसागता ८
वैदेह्याः प्रियकामेन कृतं कर्म जटायुषा।
गृध्रराजेन यत्तत्र श्रुतं वस्तदशेषतः ९
तथा सर्वाणि भूतानि तिर्यग्योनिगतान्यपि।
प्रियं कुर्वन्ति रामस्य त्यक्त्वा प्राणान्यथा वयम् १०

निश्चय ही दैव संसारमें पूर्व कर्मके अनुरोधसे मनुष्यका अनुवर्तन करता है जैसे यह (दैवसे) विहित भक्ष्य बहुत समयमें मेरे लिये आया है॥ ४ ॥ 'श्रेष्ठ वानरके बीचमें मरे हुए एक दूसरे (वानर) को खाऊंगा' यह वचन उन वानरोंको देखकर पक्षीने कहा ॥ ५ ॥

अब भक्ष्यके लोभी उस पक्षीके पूर्वोक्त वचनको सुनकर बडा उदास हुआ अङ्गद हनुमान्से कहने लगा ॥ ६ ॥ देखो, साक्षात् विवस्वान्का पुत्र यम सीताके बहानेसे वानरोंकी विपत्तिके वास्ते यहां आया है ॥ ७ ॥ रामका कार्य न किया और न राजाका वचन किया, किन्तु वानरोंपर यह अज्ञात विपत्ति एकदम आ पडी ॥ ८ ॥ सीताके प्रियाभिलाषी गृध्रराज जटायुने जो कार्य वहां (जनस्थानमें) किया था, वह सब तुम सबोंने सुना ही है ॥ ९ ॥

वैसे ही तिर्यग्योनिगत (पशु, पक्षी आदि) समस्त प्राणी प्राणोंको त्यागकर रामका प्रिय कार्य करते हैं ॥ १० ॥ जैसे कि हम सब, क्योंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्योन्यमुपकुर्वन्ति स्नेहकारुण्ययन्त्रिताः।
ततस्तस्योपकारार्थं त्यजतात्मानमात्मना ११
प्रियं कृतं हि रामस्य धर्मज्ञेन जटायुषा।
राघवार्थे परिश्रान्ता वयं संत्यक्तजीविताः १२
कान्ताराणि प्रपन्नाः स्म न च पश्याम मैथिलीम्।
स सुखी गृध्रराजस्तु रावणेन हतो रणे १३
मुक्तश्च सुग्रीवभयाद्गतश्च परमां गतिम् १४
जटायुषो विनाशेन राज्ञो दशरथस्य च।
हरणेन च वैदेह्याः संशयं हरयो गताः १५
रामलक्ष्मणयोर्वासमरण्ये सह सीतया।
राघवस्य च बाणेन वालिनश्च तथा वधम् १६
रामकोपादशेषाणां रक्षसां च तथा वधम्।
कैकेय्या वरदानेन इदं च विकृतं कृतम् १७
तदसुखमनुकीर्तितं वचो भुवि पतितांश्च निरीक्ष्य वानरान्
भृशचकितमतिर्महामतिः कृपणमुदाहृतवान्स गृध्रराजः १८
तत्तु श्रुत्वा तथा वाक्यमङ्गदस्य मुखोद्गतम्।

स्नेह तथा दयाभावसे बंधे हुए वे हरएकका उपकार करते हैं? राम उपकारके लिये आत्मासे शरीरको छोडते हुए ॥ ११ ॥ धर्मज्ञ उस जटायु रामका प्रिय किया था, रामके अर्थ जीवन त्यागे हुए और थके हम विषम स्थलोंको प्राप्त हुए हैं ॥ १२ ॥ किन्तु सीताको नहीं देखते, रावणसे रण मारा गया और सुग्रीवके भयसे छूटा, सुखी हुआ वह गृध्रराज मुक्तिको प्राप्त गया ॥ १३–१४ ॥ जटायु और राजा दशरथके नाश तथा सीताके हरणसे वानर संदेहको प्राप्त हो गये हैं ॥ १५ ॥

वनमें सीताके साथ राम लक्ष्मणका वनमें वास, उसी प्रकार रामके बाणसे वालीका वध और रामके क्रोधसे सब राक्षसोंका वध, यह सब कैकेयीके बरदानने बुरा किया ॥ १६–१७ ॥ कहे हुए उस दुःखदायी वचनको और भूमिपर गिरे हुए वानरोंको देखकर अत्यन्त चलायमान हो गई है बुद्धि जिसकी ऐसा महाबुद्धिमान् वह गृध्रराज कृपणतापूर्वक बोला ॥ १८ ॥ उस समय अङ्गदके मुखसे निकले उस वचनको सुनकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अब्रवीद्वचनं गृध्रस्तीक्ष्णतुण्डो महास्वनः १९
कोऽयं गिरा घोषयति प्राणैः प्रियतरस्य मे ।
जटायुषो वधं भ्रातुः कम्पयन्निव मे मनः २०
कथमासीज्जनस्थाने युद्धं राक्षसगृध्रयोः ।
नामधेयमिदं भ्रातुश्चिरस्याद्य मया श्रुतम् ॥
इच्छेयं गिरिदुर्गाच्च भवद्भिरवतारितुम् २१
यवीयसो गुणज्ञस्य श्लाघनीयस्य विक्रमैः ।
अतिदीर्घस्य कालस्य परितुष्टोऽस्मि कीर्तनात् २२
तदिच्छेयमहं श्रोतुं विनाशं वानरर्षभाः ।
भ्रातुर्जटायुषस्तस्य जनस्थाननिवासिनः २३
तस्यैव च मम भ्रातुः सखा दशरथः कथम् ।
यस्य रामः प्रियः पुत्रो ज्येष्ठो गुरुजनप्रियः २४
सूर्यांशुदग्धपक्षत्वान्न शक्नोमि विसर्पितुम् ।
इच्छेयं पर्वतादस्मादवतर्तुमरिंदमाः २५

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० षट्पञ्चाशः सर्गः ॥५६॥ [२१८२]

...क्ष्णचञ्चुवाला, बडे शब्दवाला गृध्र कहने लगा ॥ १९ ॥ कौन यह मेरे ...को कंपाता हुआ सा प्राणोंसे प्यारे मेरे भाई जटायुके वधको वाणीसे ...र रहा है ॥ २० ॥

...जनस्थानमें राक्षस और गृध्रका युद्ध क्यों हुआ था ? यह भाईका नाम ...ज मैंने बहुत कालमें सुना है । मैं गिरिदुर्गपरसे आप द्वारा (अपनेको) ...रनेकी इच्छा करता हूं ॥ २१ ॥ गुणज्ञ, पराक्रमोंसे प्रशंसाके योग्य, ...टे (भाई जटायु) के अतिदीर्घ समयके (बाद) कीर्तनसे मैं प्रसन्न ...आ हूं ॥ २२ ॥ हे श्रेष्ठ वानरो ! जनस्थाननिवासी उस भाई जटायुके ...नाशको मैं सुननेकी इच्छा करता हूं ॥ २३ ॥ उसी मेरे भाईके दशरथ ...स तरह मित्र थे, जिनके बडे पुत्र, गुरुजनोंके प्यारे प्रिय राम हैं ॥ २४ ॥ ...शत्रुनाशको ! मैं इस पर्वतसे उतरना चाहता हूं; परन्तु सूर्यकी किरणों ...द्वारा जले हुए पंख होनेसे मैं चलनेको समर्थ नहीं हूं ॥ २५ ॥

॥ यहाँ ५६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सप्तपञ्चाशः सर्गः।

शोकाद्भ्रष्टस्वरमपि श्रुत्वा वानरयूथपाः।
श्रद्दधुर्नैव तद्वाक्यं कर्मणा तस्य शङ्किताः १
ते प्रायमुपविष्टास्तु दृष्ट्वा गृध्रं प्लवंगमाः।
चक्रुर्बुद्धिं तदा रौद्रां सर्वान्नो भक्षयिष्यति २
सर्वथा प्रायमासीनान्यदि नो भक्षयिष्यति।
कृतकृत्या भविष्यामः क्षिप्रं सिद्धिमितो गताः ३
एतां बुद्धिं ततश्चक्रुः सर्वे ते हरियूथपाः।
अवतार्य गिरेः शृङ्गाद्गृध्रमाहाङ्गदस्तदा ४
बभूवर्क्षरजो नाम वानरेन्द्रः प्रतापवान्।
ममार्यः पार्थिवः पक्षिन्धार्मिकौ तस्य चात्मजौ ५
सुग्रीवश्चैव वाली च पुत्रौ घनबलावुभौ।
लोके विश्रुतकर्माभूद्राजा वाली पिता मम ६
राजा कृत्स्नस्य जगत इक्ष्वाकूणां महारथः।
रामो दाशरथिः श्रीमान्प्रविष्टो दण्डकावनम् ७

उसके कर्मसे शङ्कित हुए वानरसेनापतियोंने शोकसे हीनस्वरवाले उसके वाक्यको सुनकर (उसके वाक्यपर) श्रद्धा न की ॥ १ ॥ मरनेको बैठे हुए वे वानर गृध्रको देखकर क्रूर बुद्धि करने लगे कि यह सबोंको खा जायगा ॥ २ ॥ सब तरह मरनेको बैठे हुए हमें यदि खालेगा तो यहांसे शीघ्रही सिद्धिको प्राप्त हुए हम कृतार्थ हो जावेंगे॥ ३ ॥ तदनन्तर उन सब वानरोंने यह विचार कर लिया तब अङ्गद पर्वत शिखरसे गृध्रको उतार कर यह वचन बोला ॥ ४ ॥

हे पक्षिन्! वानरोंका स्वामी, प्रतापी, धर्मात्मा ऋक्षरजा नामक हमारा बाबा था, उसके बहुत बलवाले सुग्रीव और वाली दो पुत्र थे, उनमें लोकमें प्रसिद्ध कर्मवाला मेरा पिता वाली राजा था ॥ ५-६ ॥ संसारके राजा, इक्ष्वाकुवंशियोंमें महारथी, पिताकी आज्ञामें तत्पर, धर्म मार्गके आश्रित, दशरथपुत्र श्रीमान् राम भाई लक्ष्मण और स्त्री सीता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वैदेह्या सह भार्यया ।
पितुर्निर्देशनिरतो धर्मं पन्थानमाश्रितः ८
तस्य भार्या जनस्थानाद्रावणेन हृता बलात् ९
रामस्य तु पितुर्मित्रं जटायुर्नाम गृध्रराट् ।
ददर्श सीतां वैदेहीं ह्रियमाणां विहायसा १०
रावणं विरथं कृत्वा स्थापयित्वा च मैथिलीम् ।
परिश्रान्तश्च वृद्धश्च रावणेन हतो रणे ११
एवं गृध्रो हतस्तेन रावणेन बलीयसा ।
संस्कृतश्चापि रामेण जगाम गतिमुत्तमाम् १२
ततो मम पितृव्येण सुग्रीवेण महात्मना ।
चकार राघवः सख्यं सोऽवधीत्पितरं मम १३
मम पित्रा निरुद्धो हि सुग्रीवः सचिवैः सह ।
निहत्य वालिनं रामस्ततस्तमभिषेचयत् १४
स राज्ये स्थापितस्तेन सुग्रीवो वानरेश्वरः ।
राजा वानरमुख्यानां तेन प्रस्थापिता वयम् १५

...थ दण्डक वनमें आये हुए हैं, उनकी स्त्री रावणने जबरदस्ती जनस्थानसे ...र ली है ॥ ७-९ ॥ रामके पिताके मित्र जटायु नामक गृध्रराजने हरी गई वैदेहकन्या सीताको आकाशमें देखा ॥ १० ॥ रावणको रथहीन करके ...और सीताको (भूमिपर) स्थित करके थका हुआ वृद्ध जटायुको रावणने ...णमें मार डाला ॥ ११ ॥ इस तरह उस बलवान् रावणसे मारा गया ...जटायु राम द्वारा संस्कृत हो उत्तम गतिको प्राप्त हो गया ॥ १२ ॥

तदनन्तर मेरे चचा महात्मा सुग्रीवके साथ रामने मित्रता की और ...उन्होंने ही मेरे पिताको मार दिया ॥ १३ ॥ सुग्रीव (चार) मन्त्रियोंके ...साथ मेरे पितासे विरुद्ध ही था, इसीसे रामने वालीको मारकर सुग्रीवको ...राज्यमें अभिषिक्त किया ॥ १४ ॥ वानरेश्वर सुग्रीवको रामने राज्यपर स्थापित किया है, वह वानर सरदारोंका राजा है, जिसने कि हम लोगोंको भेजे है ॥ १५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एवं रामप्रयुक्तास्तु मार्गमाणास्ततस्ततः ।
वैदेहीं नाधिगच्छामो रात्रौ सूर्यप्रभामिव १६
ते वयं दण्डकारण्यं विचित्य सुसमाहिताः ।
अज्ञानात्तु प्रविष्टाः स्म धारण्या विवृत्तं बिलम् १७
मयस्य मायाविहितं तद्बिलं च विचिन्वताम् ।
व्यतीतस्तत्र नो मासो यो राज्ञा समयः कृतः १८
ते वयं कपिराजस्य सर्वे वचनकारिणः ।
कृतां संस्थामतिक्रान्ता भयात्प्रायमुपासिताः १९
क्रुद्धे तस्मिंस्तु काकुत्स्थे सुग्रीवे च सलक्ष्मणे ।
गतानामपि सर्वेषां तत्र नो नास्ति जीवितम् २०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥५७॥ [२२०]

अष्टपञ्चाशः सर्गः ।

इत्युक्तः करुणं वाक्यं वानरैस्त्यक्तजीवितैः ।
सबाष्पो वानरान्गृध्रः प्रत्युवाच महास्वनः १

इस कारण रामसे आज्ञा दिये हुए हम जहां तहां तलाश करनेसे सीताको ऐसे नहीं पाते जैसे रात्रिमें धूपको ॥ १६ ॥ एकत्रित हुए हम दण्डकारण्यको ढूंढ करके तपस्विनीके विस्तृत बिलमें अज्ञानसे घुस गये थे॥ १७॥ मयकी मायासे निर्मित उस बिलको खोजते हुए हम लोगोंका मास व्यतीत हो गया जो कि राजाने समय (अवधि) कर दिया था ॥ १८ ॥ आज्ञाकारी वे हम वानरेश्वरकी की हुई व्यवस्थाका उल्लङ्घन करते हुए भयसे मरनेको बैठे हैं ॥ १९ ॥ उन लक्ष्मण समेत राम और सुग्रीवके क्रुद्ध होनेपर वहां गये हुए भी हम सबोंका जीवन नहीं है ॥ २० ॥

॥ यहाँ ५७ सर्ग समाप्त हुआ ॥

जीनेकी आशा छोडे हुए वानरोंसे पूर्वोक्त दीन वाक्योंसे बोधित, बड़े शब्दवाला गृध्र (सम्पाति) आसुओं सहित हो वानरोंसे बोला ॥ १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यवीयान्स मम भ्राता जटायुर्नाम वानराः।
यमाख्यात हतं युद्धे रावणेन बलीयसा २
वृद्धभावादपक्षत्वाच्छृण्वंस्तदपि मर्षये।
न हि मे शक्तिरस्त्यद्य भ्रातुर्वैरविमोक्षणे ३
पुरा वृत्रवधे वृत्ते स चाहं च जयैषिणौ।
आदित्यमुपयातौ स्वो ज्वलन्तं रश्मिमालिनम् ४
आवृत्याकाशमार्गेण जवेन स्वर्गतौ भृशम्।
मध्यं प्राप्ते तु सूर्ये तु जटायुरवसीदति ५
तमहं भ्रातरं दृष्ट्वा सूर्यरश्मिभिरार्दितम्।
पक्षाभ्यां छादयामास स्नेहात्परमविह्वलम् ६
निर्दग्धपत्रः पतितो विन्ध्येऽहं वानरर्षभाः।
अहमस्मिन्वसन्भ्रातुः प्रवृत्तिं नोपलक्षये ७
जटायुषस्त्वेवमुक्तो भ्रात्रा संपातिना तदा।
युवराजो महाप्राज्ञः प्रत्युवाचाङ्गदस्तदा ८

वानरो ! वह मेरा छोटा भाई जटायु नामक था, जिसे तुम बलवान्-
णसे युद्धमें मारा हुआ बतलाते हो ॥ २ ॥ वृद्धत्व और पक्षहीन होनेके
रण उस (भाईके मरण) को सुनता हुआ भी सहता हूं, क्योंकि अब
ईके वैरका बदला लेनेमें मेरी शक्ति नहीं है ॥ ३ ॥ पुराकालमें वृत्रा-
के वधके समय परस्पर जीतकी इच्छा करते हम दोनों भाई किरणों
ले दीप्त सूर्यके पास गये थे ॥ ४ ॥
चक्कर लगानेकी चालसे आकाशमार्गमें वेगपूर्वक हम शीघ्र गये तब
्यान्ह समय जटायु दुःखी होने लगा ॥ ५ ॥ तब स्नेहसे अत्यन्त विकल
र मैंने सूर्यकी किरणोंसे पीडित भाईको देखकर उसे पंखोंसे ढक लिया
६ ॥ हे वानरो ! मैं जले पंखवाला हो विन्ध्याचलपर गिर पडा, मैं
हां बसता हुआ भाईके वृत्तान्तको नहीं सुनता ॥ ७ ॥ उस समय
टायुके भाई सम्पातिसे इस प्रकार कहा गया महाबुद्धिमान् युवराज अङ्गद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जटायुषो यदि भ्राता श्रुतं ते गदितं मया ।
आख्याहि यदि जानासि निलयं तस्य रक्षसः ९
अदीर्घदर्शिनं तं वै रावणं राक्षसाधमम् ।
अन्तिके यदि वा दूरे यदि जानासि शंस नः १०
ततोऽब्रवीन्महातेजा भ्राता ज्येष्ठो जटायुषः ।
आत्मानुरूपं वचनं वानरान्संप्रहर्षयन् ११
निर्दग्धपक्षो गृध्रोऽहं गतवीर्यः प्लवंगमाः ।
वाङ्मात्रेणापि रामस्य करिष्ये साह्यमुत्तमम् १२
जानामि वारुणाँल्लोकान्विष्णोस्त्रैविक्रमानपि ।
देवासुरविमर्दांश्च ह्यमृतस्य विमन्थनम् १३
रामस्य यदिदं कार्यं कर्तव्यं प्रथमं मया ।
जरया च हृतं तेजः प्राणाश्च शिथिला मम १४
तरुणी रूपसंपन्ना सर्वाभरणभूषिता ।
ह्रियमाणा मया दृष्टा रावणेन दुरात्मना १५

बोला ॥ ८ ॥ मुझसे कहा हुआ तुमने सुना ही है और यदि तुम जटायु भाई हो तथा उस राक्षसके स्थानको यदि जानते हो तो बताओ ॥ ९ ॥ आगामी अनर्थको न देखनेवाले राक्षसेश्वर रावणको यदि दूर या पास जानते हो तो हमसे कहो ॥ १० ॥

तदनन्तर महातेजस्वी जटायुका बडा भाई (सम्पाति) वानरोंको प्र करता हुआ उचित वचनको कहने लगा ॥ ११ ॥ हे वानरो ! मैं जले पंखवाला बलहीन गृध्र हूं तो भी वाणीमात्रसे रामका उत्तम साहाय्य करूंगा ॥ १२ ॥ मैं वरुणके लोक (नीचेके लोक), विष्णुके तीन पद परिमित (ऊपरके लोक), देवासुरसंग्राम और अमृतके वास्ते समुद्रमन्थन भी जानता हूं ॥ १३ ॥ रामका तो यह कार्य मुझे प्रथम करना चाहि किन्तु मेरे प्राण शिथिल हो गये हैं और तेज बुढापेने खींच लिया है ॥ १

तरुणी, रूपयुक्त, सब आभूषणोंसे भूषित, ' हे राम ! राम !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रोशन्ती रामरामेति लक्ष्मणेति च भामिनी।
भूषणान्यपविध्यन्ती गात्राणि च विधुन्वती १६
सूर्यप्रभेव शैलाग्रे तस्याः कौशेयमुत्तमम्।
असिते राक्षसे भाति यथा विद्युदिवाम्बरे १७
तां तु सीतामहं मन्ये रामस्य परिकीर्तनात्।
श्रूयतां मे कथयतो निलयं तस्य रक्षसः १८
पुत्रो विश्रवसः साक्षाद्भ्राता वैश्रवणस्य च।
अध्यास्ते नगरीं लङ्कां रावणो नाम राक्षसः १९
इतो द्वीपे समुद्रस्य संपूर्णे शतयोजने।
तस्मिँल्लङ्का पुरी रम्या निर्मिता विश्वकर्मणा २०
जाम्बूनदमयैर्द्वारैश्चित्रैः काञ्चनवेदिकैः।
प्रासादैर्हेमवर्णैश्च महद्भिः सुसमाकृता २१
प्राकारेणार्कवर्णेन महता च समन्विता।
तस्यां वसति वैदेही दीना कौशेयवासिनी २२
रावणान्तःपुरे रुद्धा राक्षसीभिः सुरक्षिता।

...क्ष्मण ! ' इस प्रकार चिल्लाती, भूषणोंको तोडती और गात्रोंको कंपाती ...क स्त्री दुरात्मा रावणसे हरी गई मैंने देखी थी ॥ १५-१६ ॥ पर्वतके ...ग्रभागपर धूप जैसे शोभा दे या मेघमें बिजली शोभा दे उसी प्रकार ...स स्त्रीका उत्तम रेशमी वस्त्र काले राक्षस पर शोभा देता था ॥ १७ ॥ ...रामका कीर्तन करनेसे उसे मैं सीता समझता हूं कहते हुए मुझसे उस ...राक्षसके स्थानको सुनो ॥ १८ ॥ विश्रवाका साक्षात् पुत्र और कुबेरका ...भाई रावण नाम राक्षस लङ्का नगरीमें वसता है ॥ १९ ॥ यहांसे पूरे सौ ...योजनपर समुद्रका द्वीप है, उसमें रमणीय लङ्कापुरी विश्वकर्माने बनाई ...है ॥ २० ॥

सुवर्णमय द्वार, चित्र विचित्र सुवर्णकी वेदी और सोनेकेसे रङ्गवाले बडे ...महलोंसे एकसी बनी हुई है ॥२१॥ और सूर्यवर्णके बडे परकोटेसे घिरी हुई ...है, उस लङ्कामें रावणके महलमें रोकी हुई, राक्षसियोंसे अच्छे प्रकार रक्षित,

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जनकस्यात्मजां राज्ञस्तस्यां द्रक्ष्यथ मैथिलीम् २३
ज्ञानेन खलु पश्यामि दृष्ट्वा प्रत्यागमिष्यथ।
आद्यः पन्थाः कुलिङ्गानां ये चान्ये धान्यजीविनः २४
द्वितीयो बलिभोजानां ये च वृक्षफलाशनाः।
भासास्तृतीयं गच्छन्ति क्रौञ्चाश्च कुररैः सह २५
श्येनाश्चतुर्थं गच्छन्ति गृध्रा गच्छन्ति पञ्चमम्।
बलवीर्योपपन्नानां रूपयौवनशालिनाम् २६
षष्ठस्तु पन्था हंसानां वैनतेय गतिः परा।
वैनतेयाच्च नो जन्म सर्वेषां वानरर्षभाः २७
गर्हितं तु कृतं कर्म येन स्म पिशिताशिनः।
प्रतिकार्यं च मे तस्य वैरं भ्रातृकृतं भवेत् २८
इहस्थोऽहं प्रपश्यामि रावणं जानकीं तथा।
अस्माकमपि सौपर्णं दिव्यं चक्षुर्बलं तथा २९
तस्मादाहारवीर्येण निसर्गेण च वानराः।
आयोजनशतात्साग्राद्वयं पश्याम नित्यशः ३०

रेशमी वस्त्रवाली, दीन सीता रहती है ॥ २२-२३ ॥ मैं ज्ञानसे देखता हूं कि तुम देखकर लौट आवोगे, (वहां जानेको) पहिला मार्ग कुलिङ्ग पक्षी तथा अन्य धान्यजीवियोंका है ॥२४॥ और दूसरा काक तथा अन्य वृक्षफल खानेवालोंका है, तीसरे जलकाक और चीलोंके साथ क्रौञ्च जाते हैं। और चौथे बाज एवं पाचवें गृध्र जाते हैं; बल और वीर्ययुक्त, रूप और यौवन वाले हंसोंका छठा मार्ग है ॥२६॥ इसके आगे गरुड की गति है। हे वानरो! हम सबोंका जन्म गरुडसे ही है ॥ २७ ॥ जिस मांसाहारीने सीताहरण दुष्कर्म किया है, मेरे भाईके हेतु बदला लेने योग्य उसके वैरका बदला ... द्वारा होगा ॥२८॥ यहांपर स्थित हुआ मैं रावण तथा जानकीको देखता हूं ... पूर्व हमारे भी सुवर्णकेसे दिव्यनेत्र तथा बल था ॥ २९ ॥ हे वानरो! ... हेतुसे स्वाभाविक आहार तथा पराक्रमसे हम सत्रासौ योजनकी दूरी ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अस्माकं विहिता वृत्तिर्निसर्गेण च दूरतः ।
विहिता वृक्षमूले तु वृत्तिश्चरणयोधिनाम् ३१
उपायो दृश्यतां कश्चिल्लङ्घने लवणाम्भसः ।
अभिगम्य तु वैदेहीं समृद्धार्था गमिष्यथ ३२
समुद्रं नेतुमिच्छामि भवद्भिर्वरुणालयम् ।
प्रदास्याम्युदकं भ्रातुः स्वर्गतस्य महात्मनः ३३
ततो नीत्वा तु तं देशं तीरे नदनदीपतेः ।
निर्दग्धपक्षं संपातिं वानराः सुमहौजसः ३४
तं पुनः प्रापयित्वा च तं देशं पतगेश्वरम् ।
बभूवुर्वानरा हृष्टाः प्रवृत्तिमुपलभ्य ते ३५

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धाकाण्डेऽष्टपञ्चाशः सर्गः॥५८॥[२२३७]

एकोनषष्टितमः सर्गः

ततस्तदमृतास्वादं गृध्रराजेन भाषितम् ।
निशम्य वदतो हृष्टास्ते वचः प्लवगर्षभा १
जाम्बवान्वानरश्रेष्ठः सह सर्वैः प्लवंगमैः ।

लिये देखते हैं ॥ ३० ॥ हमारी भक्ष्यवृत्ति स्वभावसे ही दूरकी विधान की हुई है जैसे मुर्गोंकी वृत्ति पैरके तले ही विधान की है ॥ ३१ ॥ (अब तुम) लवणार्णवके लङ्घनके विषयमें कोई उपाय देखो, तुम सीताको पाकर कृतकृत्य हो लौटोगे ॥ ३२ ॥ मैं तुम द्वारा वरुणालय समुद्रको जाना चाहता हूं; क्योंकि मैं स्वर्गगत, महात्मा भाईको जल दूंगा ॥ ३३ ॥ तदनन्तर महातेजस्वी वानर समुद्रके उस तीरप्रदेशपर जले हुए पंखवाले, पक्षियोंके स्वामी सम्पातिको ले जाकर फिर उस देशपर लौटा लाकर (सीताके) समाचारको पाकर प्रसन्न हो गये ॥ ३४-३५ ॥

॥ यहां ५८ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

तदनन्तर श्रेष्ठ वानर गृध्रराजसे कहे हुए अमृतसमान मधुर वचनको सुनकर प्रसन्न और रोमाञ्च युक्त हो गये ॥ १ ॥ इसके अनन्तर वानरोंमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भूतलात्सहसोत्थाय गृध्रराजानमब्रवीत् २
क्व सीता केन वा दृष्टा को वा हरति मैथिलीम्।
तदाख्यातु भवान्सर्वं गतिर्भव वनौकसाम् ३
को दाशरथिबाणानां वज्रवेगनिपातिनाम्।
स्वयं लक्ष्मणमुक्तानां न चिन्तयति विक्रमम् ४
स हरीन्प्रति संमुक्तान्सीताश्रुतिसमाहितान्।
पुनराश्वासयन्प्रीत इदं वचनमब्रवीत् ५
श्रूयतामिह वैदेह्या यथा मे हरणं श्रुतम्।
येन चापि ममाख्यातं यत्र चाऽऽयतलोचना ६
अहमस्मिन्गिरौ दुर्गे बहुयोजनमायते।
चिरान्निपतितो वृद्धः क्षीणप्राणपराक्रमः ७
तं मामेवंगतं पुत्रः सुपार्श्वो नाम नामतः।
आहारेण यथा कालं बिभर्ति पततां वरः ८
तीक्ष्णकामास्तु गन्धर्वास्तीक्ष्णकोपा भुजंगमाः
मृगाणां तु भयं तीक्ष्णं ततस्तीक्ष्णक्षुधा वयम् ९

श्रेष्ठ जाम्बवान्ने सब वानरोंके साथ भूमितलसे सहसा उठकर गृध्रराजसे कहा ॥ २ ॥ सीता कहां है ? वा किसने देखी है ? वा किसने हरी है ? यह सब आप बताइये और वानरोंके रक्षक होइये ॥ ३ ॥ कौन वज्रके वेगके समान गिरनेवाले, स्वयं लक्ष्मण द्वारा चलाये गये राम लक्ष्मणके बाणोंके पराक्रमकी चिन्ता नहीं करता ? ॥ ४ ॥ प्रसन्न हुआ वह (सम्पाति) प्रीतियुक्त, सीताके समाचारसे स्वस्थचित्त हुए, वानरोंको फिर दिलासा देता हुआ यह वचन बोला ॥ ५ ॥

मैंने जैसे यहां सीताका हरना सुना था और जिसने कहा था तथा जहां विस्तृत नेत्रवाली सीता है ? सो सुनो ॥ ६ ॥ अल्प प्राण तथा पराक्रमवाला वृद्ध मैं इस पर्वतपर बहुत योजन फैले हुए दुर्गमें बहुत समयसे पड़ा हुं ॥ ७ ॥ इस दशाको प्राप्त हुए मुझको पक्षियोंमें श्रेष्ठ सुपार्श्व नामवाला पुत्र भोजनसे यथा समय रक्षित करता है ॥ ८ ॥ गन्धर्व बहुत कामवाले होते हैं, सर्प अति क्रोधी होते हैं, मृगोंके भी तीक्ष्ण भय है इसी तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

स कदाचित्क्षुधार्तस्य ममाहाराभिकाङ्क्षिणः।
गतः सूर्येऽहनि प्राप्तो मम पुत्रो ह्यनामिषः १०
स मयाहारसंरोधात्पीडितः प्रीतिवर्धनः।
अनुमान्य यथातत्त्वमिदं वचनमब्रवीत् ११
अहं तात यथाकालमामिषार्थी खमाप्लुतः।
महेन्द्रस्य गिरेर्द्वारमावृत्य सुसमाश्रितः १२
तत्र सत्त्वसहस्राणां सागरान्तरचारिणाम्।
पन्थानमेकोऽध्यवसं संनिरोद्धुमवाङ्मुखः १३
तत्र कश्चिन्मया दृष्टः सूर्योदयसमप्रभाम्।
स्त्रियमादाय गच्छन्वै भिन्नाञ्जनचयोपमः १४
सोऽहमभ्यवहारार्थं तौ दृष्ट्वा कृतनिश्चयः।
तेन साम्ना विनीतेन पन्थानमनुयाचितः १५
न हि सामोपपन्नानां प्रहर्ता विद्यते क्वचित्।
नीचेष्वपि जनः कश्चित्किमङ्ग वत मद्विधः १६

तीव्र भूखवाले हम होते हैं ॥ ९ ॥ एक समय भूखसे पीडित और भोजनकी इच्छा करते मेरे समीपमें सायंकालके समय वह मेरा पुत्र विना मांस लिये आया ॥ १० ॥

प्रीतिका बढानेवाला वह मुझे भोजनके न मिलनेसे पीडित हुआ समझकर तत्त्वयुक्त यह वचन बोला ॥ ११ ॥ हे तात! मांसार्थी मैं यथासमय आकाशको उडा और महेन्द्रपर्वतके द्वारको रोक कर बैठ गया ॥ १२ ॥ तदनन्तर नीचेको मुख किये हुए अकेला मैं सागरके मध्यमें चलनेवाले हजारों जीवोंके मार्गके रोकनेको बैठ गया ॥ १३ ॥ टूटे हुए अंजनके ढेरके सदृश कोई (राक्षस) सूर्योदयके सूर्यके समान कान्तिवाली स्त्रीको लेकर जाता हुआ वहां मैंने देखा ॥१४॥ उन दोनोंको देखकर कर लिया है (मारनेका) निश्चय जिसने ऐसे भोजनाभिलाषी मुझसे नम्र हुए उसने विनयसे मार्ग मांगा ॥ १५ ॥ नम्रतासे शरणागत हुए मनुष्योंका मारनेवाला कोई मनुष्य कहीं नीचोंमें भी नहीं है। हे गुरो! फिर मुझ सदृश कैसे हो सकता था ॥ १६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स यातस्तेजसा व्योम संक्षिपन्निव वेगितः।
अथाहं खेचरैर्भूतैरभिगम्य सभाजितः १७
दिष्ट्या जीवसि तातेति अब्रुवन्मां महर्षयः।
कथंचित्सकलत्रोऽसौ गतस्ते स्वस्त्यसंशयम् १८
एवमुक्तस्ततोऽहं तैः सिद्धैः परमशोभनैः।
स च मे रावणो राजा रक्षसां प्रतिवेदितः १९
पश्यन्दाशरथेर्भार्यां रामस्य जनकात्मजाम्।
भ्रष्टाभरणकौशेयां शोकवेगपराजिताम् २०
रामलक्ष्मणयोर्नाम क्रोशन्तीं मुक्तमूर्धजाम्।
एष कालात्ययस्तात इति वाक्यविदां वरः २१
एतदर्थं समग्रं मे सुपार्श्वः प्रत्यवेदयत्।
तच्छ्रुत्वापि हि मे बुद्धिर्नासीत्काचित्पराक्रमे २२
अपक्षो हि कथं पक्षी कर्म किंचित्समारभेत्।
यत्तु शक्यं मया कर्तुं वाग्बुद्धिगुणवर्तिना २३

वह अपने तेजसे आकाशको वेगपूर्वक फेंकता हुआ सा चला ग
इसके अनन्तर आकाशचारी जीवोंने मिलकर मुझे पूजा ॥ १७ ॥ "
तात! आनन्द हुआ जो तुम जीते हो" यह मुझसे महर्षियोंने कहा। "
समेत यह किसी तरह चला गया, निस्संदेह तुम्हारा कल्याण हुआ ॥ १८ ॥
इस प्रकार फिर परम श्रेष्ठ उन सिद्धोंने भी मुझसे कहा, वह मुझे आ
और वस्त्रहीन, शोकवेगसे तिरस्कृत, राम और लक्ष्मणके नामको पुका
खुले केशवाली, दशरथके पुत्र रामकी स्त्री सीताको हरले जाता हु
राक्षसोंका राजा रावण बताया गया, "यह समय व्यतीत हो
हेतु है" १९-२१॥

कालज्ञोंमें श्रेष्ठ सुपार्श्वने मुझसे यह सब मतलब निवेदन किया
सुनकर भी मेरी बुद्धि पराक्रममें नहीं हुई ॥ २२ ॥ मैं पक्षहीन पक्षी
किसी कामका प्रारम्भ करूं; वाणी, बुद्धिसे गुणोंका अनुवर्तन करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्रूयतां तत्र वक्ष्यामि भवतां पौरुषाश्रयम् ।
वाङ्मतिभ्यां हि सर्वेषां करिष्यामि प्रियं हि वः २४
यद्धि दाशरथेः कार्यं मम तन्नात्र संशयः ।
तद्भवन्तो मतिश्रेष्ठा बलवन्तो मनस्विनः २५
प्रहिताः कपिराजेन देवैरपि दुरासदाः २६
रामलक्ष्मणबाणाश्च विहिताः कङ्कपत्रिणः ।
त्रयाणामपि लोकानां पर्याप्तास्त्राणनिग्रहे २७
कामं खलु दशग्रीवस्तेजोबलसमन्वितः ।
भवतां तु समर्थानां न किंचिदपि दुष्करम् २८
तदलं कालसङ्गेन क्रियतां बुद्धिनिश्चयः ।
न हि कर्मसु सज्जन्ते बुद्धिमन्तो भवद्विधाः २९

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० एकोनषष्टितमः सर्गः ॥५९॥[२२६६]

षष्टितमः सर्गः ।

ततः कृतोदकं स्नातं तं गृध्रं हरियूथपाः ।
उपविष्टा गिरौ रम्ये परिवार्य समन्ततः १

मुझसे जो किया जा सकता है ॥२३॥ आपके पुरुषार्थके आश्रय उसको कहता हूं, सुनो मैं तुम सबोंका वाणी और बुद्धिसे प्रिय करूंगा, ॥ २४॥ इसमें सन्देह नहीं कि जो रामका कार्य है, वह मेरा ही है ॥२५॥ सुग्रीवसे भेजे हुए, देवोंसे भी दुर्जय, बुद्धिमें श्रेष्ठ, बलवान् आप लोग सीताके ढूंढनेमें तत्पर होवें ॥ २५–२६ ॥

राम, लक्ष्मणके तीक्ष्ण तथा कङ्कपत्रोंवाले बाण तीनों लोकोंके रक्षण और दण्डमें समर्थ हैं ॥ २७ ॥ निश्चय ही रावण तेज और बलसे युक्त है; किन्तु आप समर्थोंको भी कुछ दुष्कर नहीं है ॥ २८ ॥ अतः कालविलम्बसे न रुको, बुद्धिसे निश्चय करो, आप सदृश बुद्धिमान् कार्योंमें शिथिल नहीं हो जाते हैं ॥ २९॥

॥ यहां ५९ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

तदनन्तर सब वानरसेनापति जल जिसने दे लिया है ऐसे, नहाये हुए गृध्रको सब ओरसे घेरकर पर्वतपर दुर्गमें बैठ गये ॥ १॥ उन सब वानरोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तमङ्गदमुपासीनं तैः सर्वैर्हरिभिर्वृतम्।
जनितप्रत्ययो हर्षात्संपातिः पुनरब्रवीत् २
कृत्वा निःशब्दमेकाग्राः शृण्वन्तु हरयो मम।
तथ्यं संकीर्तयिष्यामि यथा जानामि मैथिलीम् ३
अस्य विन्ध्यस्य शिखरे पतितोऽस्मि पुरानघ।
सूर्यतापपरीताङ्गो निर्दग्धः सूर्यरश्मिभिः ४
लब्धसंज्ञस्तु षड्रात्राद्विवशो विह्वलन्निव।
वीक्षमाणो दिशः सर्वा नाभिजानामि किंचन ५
ततस्तु सागराञ्शैलान्नदीः सर्वाः सरांसि च।
वनानि च प्रदेशांश्च निरीक्ष्य मतिरागता ६
हृष्टपक्षिगणाकीर्णः कंदरोदरकूटवान्।
दक्षिणस्योदधेस्तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चितः ७
आसीच्चात्राश्रमं पुण्यं सुरैरपि सुपूजितम्।
ऋषिर्निशाकरो नाम यस्मिन्नुग्रतपाभवत् ८
अष्टौ वर्षसहस्राणि तेनास्मिन्नृषिणा गिरौ।

युक्त बैठे हुए उस अङ्गदसे विश्वस्त हुआ सम्पाति हर्षसे फिर कहने लगा॥२
एकाग्र हुए वानर चुप हो करके मेरे वचनको सुनो, मैं यथार्थ कहता हूं
जिस प्रकार कि मैं सीताको जानता हूं ॥ ३ ॥ पुराकालमें सूर्यकी गर्मी
व्याप्त अङ्गवाला और सूर्यकी किरणोंसे जला हुआ मैं वनमें इस विन्ध्य
शिखरपर गिरा था ॥ ४ ॥ विवश हुआ मैं छः रातमें चेतनता पा
विकलके समान सब दिशाओंको देखता हुआ कुछ नहीं जानता था ॥५

तदनन्तर समुद्र, पर्वत, सब नदी, तालाब, वन और समुद्र तीर
देखकर (मुझे) बुद्धि प्राप्त हुई ॥ ६ ॥ प्रसन्नचित्त पक्षिगणोंसे भरा हुआ
मध्यमें कन्दरा और शिखरोंवाला, दक्षिण समुद्रके किनारे यह विन्ध्य है, य
मुझे निश्चय हुआ ॥ ७ ॥ देवोंसे भी पूजित यहां पवित्र आश्रम था, जिसमें
बडे तपस्वी निशाकर नाम ऋषि थे ॥ ८ ॥ हे धर्मज्ञो ! निशाकरके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वसतो मम धर्मज्ञे स्वर्गते तु निशाकरे ९
अवतीर्य च विन्ध्याग्रात्कृच्छ्रेण विषमाच्छनैः।
तीक्ष्णदर्भां वसुमतीं दुःखेन पुनरागतः १०
तमृषिं द्रष्टुकामोऽस्मि दुःखेनाभ्यागतो भृशम्।
जटायुषा मया चैव बहुशोऽधिगतो हि सः ११
तस्याश्रमपदाभ्याशे ववुर्वाताः सुगन्धिनः।
वृक्षो नापुष्पितः कश्चिदफलो वा न दृश्यते १२
उपेत्य चाश्रमं पुण्यं वृक्षमूलमुपाश्रितः।
द्रष्टुकामः प्रतीक्षे च भगवन्तं निशाकरम् १३
अथ पश्यामि दूरस्थमृषिं ज्वलिततेजसम्।
कृताभिषेकं दुर्धर्षमुपावृत्तमुदङ्मुखम् १४
तमृक्षाः सृमरा व्याघ्राः सिंहा नानासरीसृपाः।
परिवार्योपगच्छन्ति दातारं प्राणिनो यथा १५

…ले जानेपर उन ऋषिके विना यहांपर वसते हुए मुझे आठ हजार वर्ष व्यतीत हो गये ॥ ९ ॥ फिर मैं कष्टसे विषम विन्ध्यके अग्रभागसे शनैः शनैः उतरकर तीक्ष्ण दर्भोंवाली भूमिपर दुःखसे यहां आया ॥ १० ॥

उन ऋषिको देखनेकी इच्छावाला मैं बडे दुःखसे समीप मैं आया, वे ऋषि मुझसे और जटायुसे बहुत सेवित किये गये थे ॥ ११ ॥ उनके आश्रम-के समीपमें सुगन्धवाले पवन चलते थे, विना पुष्प और विना फलका कोई वृक्ष नहीं था ॥ १२ ॥ मैं उस पवित्र आश्रममें पहुंचकर वृक्षकी जडमें बैठ गया और देखनेकी इच्छावाला भगवान् निशाकरकी प्रतीक्षा करने लगा ॥ १३ ॥

इसके अनन्तर समीपस्थ जलते हुए तेजवाले, स्नान किये, दुर्धर्षणीय, उत्तरका मुख किये लौटते हुए ऋषिको मैंने देखा ॥ १४ ॥ रीछ, सृमर, व्याघ्र, सिंह, हाथी और अन्य शरीरधारी उनको घेरकर समीपमें चलते थे जैसे कि प्राणी पोषकको घेरकर चलते हैं ॥ १५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ततः प्राप्तमृषिं ज्ञात्वा तानि सत्त्वानि वै ययुः।
प्रविष्टे राजनि यथा सर्वं सामात्यकं बलम् १६
ऋषिस्तु दृष्ट्वा मां तुष्टः प्रविष्टश्चाश्रमं पुनः।
मुहूर्तमात्रान्निर्गम्य ततः कार्यमपृच्छत १७
सौम्य वैकल्यतां दृष्ट्वा रोम्णां ते नावगम्यते।
अग्निदग्धाविमौ पक्षौ त्वक्चैव व्रणिता तव १८
गृध्रौ द्वौ दृष्टपूर्वौ मे मातरिश्वसमौ जवे।
गृध्राणां चैव राजानौ भ्रातरौ कामरूपिणौ १९
ज्येष्ठोवितस्त्वं संपाते जटायुरनुजस्तव।
मानुषं रूपमास्थाय गृह्णीतां चरणौ मम २०
किं ते व्याधिसमुत्थानं पक्षयोः पतनं कथम्।
दण्डो वाऽयं धृतः केन सर्वमाख्याहि पृच्छतः २१

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० षष्टितमः सर्गः ॥६०॥ [२२८

तदनन्तर आये हुए ऋषिको समझकर वे जीव चले गये जैसे राजा (स्वनिवेशमें) प्रविष्ट हो जानेपर मंत्रियों समेत सेना लौट जाती है॥१६॥ प्रसन्न हुए ऋषि आश्रममें प्रविष्ट हो गये और वहांसे फिर मुहूर्त भरमें निकलकर मुझे देखकर कार्य पूंछने लगे ॥ १७ ॥

हे सौम्य ! तुम्हारे रोमोंकी विकलता देखकर स्वरूप ज्ञात नहीं होता तुम्हारे पक्ष अग्निसे जले हुए तथा त्वचा व्रणित दिखाई पडती है॥१८॥ वेगमें पवनके समान, गृध्रोंके राजा, कामरूपी भाई मेरे पहिलेके देखे हुए हैं ॥ १९ ॥ हे संपाते ! तू बडा है और तेरा छोटा भाई जटायु है, मनुष्य रूपको धारण करके तू मेरे चरण ग्रहण कर ॥ २० ॥ तेरी व्याधिका उत्थान होना कैसे हुआ ? और पंखोंका पतन कैसे हुआ ? वा यह दण्ड किसने दिया है-यह सब पूंछते हुए मुझसे कहो ॥ २१ ॥

॥ ६० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एकषष्टितमः सर्गः ।

ततस्तद्दारुणं कर्म दुष्करं सहसा कृतम् ।
आचचक्षे मुनेः सर्वं सूर्यानुगमनं तथा १
भगवन्व्रणयुक्तत्वाल्लज्जया चाकुलेन्द्रियः ।
परिश्रान्तो न शक्नोमि वचनं परिभाषितुम् २
अहं चैव जटायुश्च संघर्षाद्दर्पमोहितौ ।
आकाशं पतितौ दूराज्जिज्ञासन्तौ पराक्रमम् ३
कैलासशिखरे बद्ध्वा मुनीनामग्रतः पणम् ।
रविः स्यादनुयातव्यो यावदस्तं महागिरिम् ४
अप्यावां युगपत्प्राप्तावपश्याव महीतले ।
रथचक्रप्रमाणानि नगराणि पृथक्पृथक् ५
क्वचिद्वादित्रघोषश्च क्वचिद्भूषणनिःस्वनः ।
गायन्तीः स्माङ्गना बह्वीः पश्यावो रक्तवाससः ६
तूर्णमुत्पत्य चाकाशमादित्यपदमास्थितौ ।
आवामालोकयावस्तद्वनं शाद्वलसंस्थितम् ७

तदनन्तर साहससे किये हुए, दुष्कर उस दारुण सूर्यके समीप जाने रूपकार्यको आद्योपान्त मैंने उस समय मुनिको सुनाया ॥ १ ॥ हे भगवान्! व्याकुलेन्द्रिय और थका हुआ मैं घाव सहित होनेके कारण लज्जासे वचन कहनेको समर्थ नहीं हूं ॥ २ ॥ अहंकारसे मत्त हुए, वीर मैं और जटायु दोनों पराक्रमके जाननेकी इच्छा करते हुए कैलास शिखरपर मुनियोंके सामने यह शर्त कर करके कि "सूर्य जबतक अस्त महागिरिपर पहुंचे तबतक हमें उनके पास पहुंच जाना चाहिये वा तबतक अस्त पर्वतपर हमें पहुंच जाना चाहिये" ईर्ष्यासे आकाशको उडे थे ॥ ३-४ ॥

इसके अनन्तर एक साथ प्राप्त हुए हम भूमितलपर रथचक्रके समान नगरको अलग २ देखते थे ॥ ५ ॥ कहीं बाजोंके शब्द और कहीं वेदध्वनि सुनते थे और कहीं गाती हुई, लाल वस्त्र पहिने बहुत स्त्रियोंको देखते थे ॥ ६ ॥ आकाशमें जल्दी उडकर सूर्यमार्गमें पहुंचे हम दोनोंने हरी घासके समान वनको देखा ॥ ७ ॥ पृथिवी पर्वतोंकी छोटी छोटी शिलाओंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उपलैरिव संछन्ना दृश्यते भूः शिलोच्चयैः।
आपगाभिश्च संवीता सूत्रैरिव वसुंधरा ८
हिमवांश्चैव विन्ध्यश्च मेरुश्च सुमहागिरिः।
भूतले संप्रकाशन्ते नागा इव जलाशये ९
तीव्रः स्वेदश्च खेदश्च भयं चासीत्तदावयोः।
समाविशत मोहश्च ततो मूर्छा च दारुणा १०
न च दिग्ज्ञायते याम्या न चाग्नेयी न वारुणी।
युगान्ते नियतो लोको हतो दग्ध इवाग्निना ११
मनश्च मे हतं भूयश्चक्षुः प्राप्य तु संश्रयम्।
यत्नेन महता ह्यस्मिन्मनः संधाय चक्षुषी।
यत्नेन महता भूयो भास्करः प्रतिलोकितः १२
तुल्यपृथ्वीप्रमाणेन भास्करः प्रतिभाति नौ १३
जटायुर्मामनापृच्छ्य निपपात महीं ततः।
तं दृष्ट्वा तूर्णमाकाशादात्मानं मुक्तवानहम् १४

ढकी हुई सी लगती थी और नदियोंसे सत्रोंके समान बंधी हुई मालूम होती थी ॥ ८ ॥ हिमवान्, विंध्य और बडा पहाड मेरु–ये भूमितलमें ऐसे दिखलाई पडते थे जैसे जलाशयमें हाथी ॥ ९ ॥

उस समय हम दोनोंको अति पसीना, दुःख और डर हुआ और मुझे मनमें घबडाहट, अज्ञान और घोर मूर्च्छा होने लगी ॥ १० ॥ न दक्षिण दिशा जानी जाती थी, न आग्नेयी और न पश्चिम। नियमित लोक युगान्त समयमें अग्निसे जला हुआ हतके समान दिखाई देता था ॥ ११ ॥ मेरा मन आश्रयभूत नेत्रोंसे अलग होकर अत्यन्त हत हो गया, पश्चात् हमने बडे यत्नसे इस मनमें फिर नेत्रोंको धारण कर अनेक यत्नोंसे सूर्यको देखा ॥ १२ तो हम दोनोंको सूर्य पृथ्वीके बराबर प्रमाणवाला प्रतीत हुआ ॥ १३ ॥ जटायु मुझसे विना पूछे ही वहांसे भूमिपर गिरा, उसे देख कर मैंने भी शीघ्र ही आकाशसे अपनेको गिराया ॥ १४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पक्षाभ्यां च मया गुप्तो जटायुर्न प्रदह्यत।
प्रमादात्तत्र निर्दग्धः पतन्वायुपथादहम् १५
आशङ्के तं निपतितं जनस्थाने जटायुषम्।
अहं तु पतितो विन्ध्ये दग्धपक्षो जडीकृतः १६
राज्याच्च हीनो भ्रात्रा च पक्षाभ्यां विक्रमेण च।
सर्वथा मर्तुमेवेच्छन्पातिष्ये शिखराद्गिरेः १७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० एकषष्टितमः सर्गः॥ ६१॥ [२३०४]

द्विषष्टितमः सर्गः।

एवमुक्त्वा मुनिश्रेष्ठमरुदं भृशदुःखितः।
अथ ध्यात्वा मुहूर्तं च भगवानिदमब्रवीत् १
पक्षौ च ते प्रपक्षौ च पुनरन्यौ भविष्यतः।
चक्षुषी चैव प्राणाश्च विक्रमश्च बलं च ते २
पुराणे सुमहत्कार्यं भविष्यं हि मया श्रुतम्।
दृष्टं मे तपसा चैव श्रुत्वा च विदितं मम ३
राजा दशरथो नाम कश्चिदिक्ष्वाकुवर्धनः।

जटायुको मैंने पंखोंसे ढक लिया, इससे वह न जला; किन्तु वायुमार्गसे गिरता हुआ मैं प्रमादसे वहां जल गया॥ १५॥ वह जटायु जनस्थानपर गिरा था, मैं ऐसी शङ्का करता हूं और जले हुए पंखवाला, जडीभूत मैं विन्ध्यपर गिरा हूं॥ १६॥ राज्य, भाई, पंख और पराक्रमसे हीन मैं सर्वथा मरनेकी इच्छा करता हुआ पर्वतके शिखरसे गिरूंगा॥ १७॥

॥ यहाँ ६१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

अत्यन्त दुःखी हुआ मैं श्रेष्ठमुनिसे ऐसा कह रोने लगा। इसके अनन्तर मुहूर्तमात्र ध्यान करके भगवान् (निशाकर) यह बोले॥ १॥ तुम्हारे पंख, छोटे छोटे पर फिर अन्य हो जावेंगे और प्राण, नेत्र, विक्रम और बल भी तुम्हारा फिर पूर्ववत् हो जायगा॥ २॥ पुराण में मैंने सुना है कि एक महान् कार्य होगा, मुझे तप द्वारा दिखाई पडा है और सुनकर मुझे विदित हुआ है॥ ३॥ कोई इक्ष्वाकुवंशी राजा दशरथ नामक हैं, उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तस्य पुत्रो महातेजा रामो नाम भविष्यति ४
अरण्यं च सह भ्रात्रा लक्ष्मणेन गमिष्यति।
तस्मिन्नर्थे नियुक्तः सन्पित्रा सत्यपराक्रमः ५
नैर्ऋतो रावणो नाम तस्य भार्यां हरिष्यति।
राक्षसेन्द्रो जनस्थाने अवध्यः सुरदानवैः ६
सा च कामैः प्रलोभ्यन्ती भक्ष्यैर्भोज्यैश्च मैथिली।
न भोक्ष्यति महाभागा दुःखमग्ना यशस्विनी ७
परमान्नं च वैदेह्या ज्ञात्वा दास्यति वासवः।
यदन्नममृतप्रख्यं सुराणामपि दुर्लभम् ८
तदन्नं मैथिली प्राप्य विज्ञायेन्द्रादिदं त्विति।
अग्रमुद्धृत्य रामाय भूतले निर्वपिष्यति ९
यदि जीवति मे भर्ता लक्ष्मणो वापि देवरः।
देवत्वं गच्छतोर्वापि तयोरन्नमिदं त्विति १०
एष्यन्ति प्रेषितास्तत्र रामदूताः प्लवंगमाः।
आख्येया राममहिषी त्वया तेभ्यो विहंगम ११

पुत्र महातेजस्वी राम नामक होंगे ॥ ४ ॥ सत्यपराक्रमवाले वह इस कार्य पिता द्वारा नियोजित होकर लक्ष्मण भाईके साथ वनको जावेंगे ॥ ५ ॥

देव और दानवोंसे अवध्य, राक्षसोंका स्वामी रावण नाम राक्षस ज स्थानसे उनकी स्त्रीको हरेगा ॥ ६ ॥ महाभागा, यशस्विनी दुःखमें डू हुई वह सीता इच्छित भक्ष्य और भोज्योंसे लुभाई हुई उनको खायगी ॥ ७ ॥ (उनको न खाया) समझकर इन्द्र सीताको श्रेष्ठ अ देंगे जो अमृतसमान अन्न देवोंको भी दुर्लभ है ॥ ८ ॥ सीता उस अन्न पाकर 'इन्द्रसे यह आया है' यह समझकर अग्रभागको उठाकर रा लिये भूमितलपर यह कहकर बखेरेगी कि यदि मेरे स्वामी प्रभु (रा लक्ष्मणके सहित जीते हैं वा देवलोकको जा रहे हों तो भी यह अन्न उन मिले ॥ ९-१० ॥ उसको ढूंढनेवाले, रामके दूत वानर आवेंगे। हे पक्षिरा तुम रामकी स्त्रीको उन्हें बताना ॥ ११ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सर्वथा तु न गन्तव्यमीदृशः क गमिष्यसि।
देशकालौ प्रतीक्षस्व पक्षौ त्वं प्रतिपत्स्यसे १२
उत्सहेयमहं कर्तुमद्यैव त्वां सपक्षकम्।
इहस्थस्त्वं हि लोकानां हितं कार्यं करिष्यसि १३
त्वयापि खलु तत्कार्यं तयोश्च नृपपुत्रयोः।
ब्राह्मणानां गुरूणां च मुनीनां वासवस्य च १४
इच्छाम्यहमपि द्रष्टुं भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।
नेच्छे चिरं धारयितुं प्राणांस्त्यक्ष्ये कलेवरम् १५
महर्षिस्त्वब्रवीदेवं दृष्टतत्त्वार्थदर्शनः १६
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किं० द्विषष्टितमः सर्गः ॥६२॥ [२३२०]

त्रिषष्टितमः सर्गः ॥ ६३ ॥

एतैरन्यैश्च बहुभिर्वाक्यैर्वाक्यविशारदः।
मां प्रशस्याभ्यनुज्ञाप्य प्रविष्टः स स्वमालयम् १
कंदरात्तु विसर्पित्वा पर्वतस्य शनैः शनैः।
अहं विन्ध्यं समारुह्य भवतः प्रतिपालये २

तुम यहांसे किसी हालतमें न जाओ, ऐसी दशायुक्त जा ही कहां सकते ... देश और कालकी प्रतीक्षा करो, तुम अपने पंखोंको पाओगे ॥ १२ ॥ ... आज ही तुम्हें पंखयुक्त करना नहीं चाहता क्योंकि यहांपर स्थित तुम ... संसारका हित कार्य करोगे ॥ १३ ॥ उन दोनों राजपुत्रोंका तथा ब्राह्मण, ... मुनि और इन्द्रका वह काम तुम्हें भी करनेयोग्य है ॥ १४ ॥ भाई ... राम, लक्ष्मणको देखनेकी मैं भी इच्छा करता हूं परन्तु चिरकालतक प्राण ... धारण की इच्छा नहीं करता, इससे शरीरको छोडूंगा– सिद्ध हो गया है ... तत्त्वार्थदर्शन जिनको ऐसे महर्षिने मुझसे यह कहा था ॥ १५-१६ ॥

॥ यहाँ ६२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

वाक्यज्ञोंमें श्रेष्ठ मुनि इन तथा अन्य बहुतसे वाक्योंसे मुझे प्रशंसित ... और आज्ञा देकर अपने आश्रममें घुस गये ॥ १ ॥ पर्वतकी कन्दरासे ... शनैः शनैः चलकर विन्ध्याचलपर चढकर आप लोगोंकी प्रतीक्षा कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अद्य त्वेतस्य कालस्य वर्षं साग्रशतं गतम्।
देशकालप्रतिक्षोऽस्मि हृदि कृत्वा मुनेर्वचः ३
महाप्रस्थानमासाद्य स्वर्गते तु निशाकरे।
मां निर्दहति संतापो वितर्कैर्बहुभिर्वृतम् ४
उदितां मरणे बुद्धिं मुनिवाक्यैर्निवर्तये।
बुद्धिर्या तेन मे दत्ता प्राणानां रक्षणे मम।
सा मेपनयते दुःखं दीप्तेवाग्निशिखा तमः ५
बुद्ध्यता च मया वीर्यं रावणस्य दुरात्मनः।
पुत्रः संतर्जितो वाग्भिर्न त्राता मैथिलीं कथम् ६
तस्या विलपितं श्रुत्वा तौ च सीतावियोजितौ।
न मे दशरथस्नेहात्पुत्रेणोत्पादितं प्रियम् ७
तस्य त्वेवं ब्रुवाणस्य संहतैर्वानरैः सह।
उत्पेततुस्तदा पक्षौ समक्षं वनचारिणाम् ८
स दृष्ट्वा स्वां तनुं पक्षैरुद्गतैररुणच्छदैः।

रहा था ॥ २ ॥ आज उस समयको सौ वर्षसे भी अधिक बीत चुके। मुनिके वचनको हृदयमें धरकर देश और कालकी प्रतीक्षावाला हूं॥ न लौटनेवाले मार्गको पाकर निशा करके स्वर्ग चले जानेपर अनेक तर्कोंसे युक्त हुए मुझे दुःख जला रहा है ॥ ४ ॥

मरणविषयमें उत्पन्न हुई बुद्धिको मुनिके वाक्योंसे निवारण करता हूं और जो बुद्धि उन्होंने मेरे प्राणोंके रक्षणके लिये दी थी वह मेरे दुःखको दूर करती है जैसे जलती हुई अग्निशिखा अन्धकारको ॥५॥ दुरात्मा रावणके बलको जानते हुए मैंने (अपने) पुत्रको वाणीसे दपटा कि तूने सीता क्यों नहीं बचायी ॥ ६ ॥ उसका विलाप सुन और सीतासे वियोजित किये हुए राम, लक्ष्मणको समझकर दशरथके स्नेह होनेके कारण पुत्रने मेरा प्रिय (कार्य) नहीं किया ॥ ७ ॥ उस समय वानरोंके साथ इस प्रकार कहते हुए सम्पातिके वानरोंके समक्ष ही पंख निकल आये ॥ ८ ॥ वह लाल परोंवाले निकले हुए पंखोंसे युक्त अपने शरीरको देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रहर्षमतुलं लेभे वानरांश्चेदमब्रवीत् ९
निशाकरस्य राजर्षेः प्रसादादमितौजसः।
आदित्यरश्मिनिर्दग्धौ पक्षौ पुनरुपस्थितौ १०
यौवने वर्तमानस्य ममासीद्यः पराक्रमः।
तमेवाद्यावगच्छामि बलं पौरुषमेव च ११
सर्वथा क्रियतां यत्नः सीतामधिगमिष्यथ।
पक्षलाभो ममायं वः सिद्धिप्रत्ययकारकः १२
इत्युक्त्वा तान्हरीन्सर्वान्संपातिः पतगोत्तमः।
उत्पपात गिरेः शृङ्गाज्जिज्ञासुः खगमो गतिम् १३
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रतिसंहृष्टमानसाः।
बभूवुर्हरिशार्दूला विक्रमाभ्युदयोन्मुखाः १४
अथ पवनसमानविक्रमाः प्लवगवराः प्रतिलब्धपौरुषाः।
अभिजिदभिमुखां दिशं ययुर्जनकसुतापरिमार्गणोन्मुखाः १५
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० त्रिषष्टितमः सर्गः ॥ ६३ ॥ [२३३५]

...आनन्दको प्राप्त हुआ और वानरोंसे यह बोला ॥ ९ ॥ ... महात्मा ऋषि निशाकरके प्रभावसे ही सूर्यकी किरणोंसे जले हुए मेरे ... फिर उग आये ॥ १० ॥ युवावस्थामें वर्तमान मेरा जो पराक्रम था, उसी ... और पुरुषार्थको आज मैं प्राप्त हुआ हूं ॥ ११ ॥ यत्न करो, तुम सीताको ...ओगे, मेरा यह पंखोंका होना तुम्हारी सिद्धिका विश्वास करानेवाला है ॥ १२ ॥ ...क्षियोंमें श्रेष्ठ, आकाशमें उडनेवाला वह सम्पाति सब वानरोंसे ऐसा कह- ... उडानशक्तिके जाननेकी इच्छा करता पहाडके शिखरसे उडा ॥ १३ ॥ ...तिसे हर्षित हैं मन जिनके ऐसे वे श्रेष्ठ वानर सम्पातिके उस वचनको ...कर विक्रमसाध्य अभ्युदयमें उत्कण्ठित हो गये ॥ १४ ॥ फिर पवनके ...मान पराक्रमी, पुरुषार्थको पाये हुए, सीताके ढूंढनेमें उत्कंठित, अभिजित ...त्रकी प्रतीक्षा करते वानर (दक्षिण) दिशाको गये ॥ १५ ॥

॥ यहाँ ६३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चतुषष्टितमः सर्गः।

आख्याता गृध्रराजेन समुत्प्लुत्य प्लवंगमाः।
संगताः प्रतिसंयुक्ता विनेदुः सिंहविक्रमाः १
संपातेर्वचनं श्रुत्वा हरयो रावणक्षयम्।
हृष्टाः सागरमाजग्मुः सीतादर्शनकाङ्क्षिणः २
अभिगम्य तु तं देशं ददृशुर्भीमविक्रमाः।
कृत्स्नं लोकस्य महतः प्रतिबिम्बमवस्थितम् ३
दक्षिणस्य समुद्रस्य समासाद्योत्तरां दिशम्।
संनिवेशं ततश्चक्रुर्हरिवीरा महाबलाः ४
प्रसुप्तमिव चान्यत्र क्रीडन्तमिव चान्यतः।
क्वचित्पर्वतमात्रैश्च जलराशिभिरावृतम् ५
संकुलं दानवेन्द्रैश्च पातालतलवासिभिः।
रोमहर्षकरं दृष्ट्वा विषेदुः कपिकुञ्जराः ६
आकाशमिव दुष्पारं सागरं प्रेक्ष्य वानराः।
विषेदुः सहिताः सर्वे कथं कार्यमिति ब्रुवन् ७
विषण्णां वाहिनीं दृष्ट्वा सागरस्य निरीक्षणात्।

गृध्रराजसे बोधित, सिंहोंके समान पराक्रमी वानर उछलकर फिर ... युक्त हो मिलकर गर्जने लगे॥ १॥ सम्पातिके वचनको सुनकर प्रसन्न ... और सीताके दर्शनकी इच्छावाले वानर रावणके स्थानका उद्देश कर समुद्र पर आये॥ २॥ भयानक पराक्रमवाले वानरोंने घूमकर बडे संसार... छायाके समान स्थित उस समस्त प्रदेश (तट) को देखा॥३॥ तदनन्तर ... महाबली वानर वीर दक्षिणीय समुद्रकी उत्तर दिशाको पहुंचकर ... गये॥ ४॥

कहीं सोते हुएसे और कहीं खेलते हुए से, कहीं पर्वतके समान ... ढेरोंसे संयुक्त, पातालके तले रहनेवाले दानवेन्द्रोंसे व्याप्त, रोमाञ्चित ... वाले समुद्रको देखकर वानरेन्द्र दुःखित हो गये॥ ५-६॥ सब ... आकाशके समान दुष्पार समुद्रको देखकर "कार्य कैसे होगा" यह ... साथ कहते हुए दुःखी होने लगे॥ ७॥ समुद्रके देखनेसे दुःखित हुई ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आश्वासयामास हरीन्भयार्तान्हरिसत्तमः ८
न विषादे मनः कार्यं विषादो दोषवत्तरः ।
विषादो हन्ति पुरुषं बालं क्रुद्ध इवोरगः ९
यो विषादं प्रसहते विक्रमे समुपस्थिते ।
तेजसा तस्य हीनस्य पुरुषार्थो न सिद्ध्यति १०
तस्यां रात्र्यां व्यतीतायामङ्गदो वानरैः सह ।
हरिवृद्धैः समागम्य पुनर्मन्त्रममन्त्रयत् ११
सा वानराणां ध्वजिनी परिवार्याङ्गदं बभौ ।
वासवं परिवार्येव मरुतां वाहिनीस्थितम् १२
कोऽन्यस्तां वानरीं सेनां शक्तः स्तम्भयितुं भवेत् ।
अन्यत्र वालितनयादन्यत्र च हनूमतः १३
ततस्तान्हरिवृद्धांश्च तच्च सैन्यमरिन्दमः ।
अनुमान्याङ्गदः श्रीमान्वाक्यमर्थवदब्रवीत् १४
क इदानीं महातेजा लङ्घयिष्यति सागरम् ।
कः करिष्यति सुग्रीवं सत्यसंघमरिंदमम् १५

कर अङ्गद भयभीत हुए वानरोंको दिलासा देने लगा ॥ ८ ॥ खेदमें मन करो, खेद अत्यन्त दोषवाला है, खेद पुरुषको हिंसा ऐसे कर डालता जैसे क्रुद्ध हुआ सर्प बालककी हिंसा कर डालता है ॥ ९ ॥ पराक्रमके प्राप्त होनेपर खेद जिस पुरुषका तिरस्कार करता है; तेजहीन उसका पुरुषार्थ सिद्ध नहीं होता है ॥ १० ॥ उस रात्रिके व्यतीत हो जाने- पर अङ्गद वृद्ध वानरोंके साथ मिलकर फिर सलाह करने लगा ॥ ११ ॥ वह वानरोंकी सेना अङ्गदको घेरकर इस तरह शोभा देती थी जैसे इन्द्रको घेरकर बैठी हुई देवोंकी सेना ॥ १२ ॥ वालिपुत्रके विना या हनुमानके विना अस्थिर वानरी सेनाको कौन धैर्ययुक्त करनेको समर्थ है? ॥ १३ ॥ तदनन्तर शत्रुओंका दमन करनेवाला श्रीमान् अङ्गद उन वृद्ध वानरोंका सम्मान कर उस सेनासे प्रयोजनयुक्त वाक्य बोला ॥ १४ ॥ कौन महातेजस्वी इस समय समुद्रको फांदेगा ? कौन शत्रुदमनकारी सुग्रीव- को सत्यप्रतिज्ञावाला करेगा ? ॥ १५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

को वीरो योजनशतं लङ्घयेत प्लवंगमः ।
इमांश्च यूथपान्सर्वान्मोचयेत्को महाभयात् १६
कस्य प्रसादाद्दारांश्च पुत्रांश्चैव गृहाणि च ।
इतो निवृत्ताः पश्येम सिद्धार्थाः सुखिनो वयम् १७
कस्य प्रसादाद्रामं च लक्ष्मणं च महाबलम् ।
अभिगच्छेम संहृष्टाः सुग्रीवं च वनौकसम् १८
यदि कश्चित्समर्थो वः सागरप्लवने हरिः ।
स ददात्विह नः शीघ्रं पुण्यामभयदक्षिणाम् १९
अङ्गदस्य वचः श्रुत्वा न कश्चित्किंचिदमब्रवीत् ।
स्तिमितेवाभवत्सर्वा सा तत्र हरिवाहिनी २०
पुनरेवाङ्गदः प्राह तान्हरीन्हरिसत्तमः २१
सर्वे बलवतां श्रेष्ठा भवन्तो दृढविक्रमाः ।
व्यपदेशकुले जाताः पूजिताश्चाप्यभीक्ष्णशः २२
न हि वो गमने सङ्गः कदाचित्कस्यचिद्भवेत् ।

हे वानरो ! कौन वीर सौ योजनको फांद जायगा और इन सब सेनापति-को कौन बडे भयसे छुड़ावेगा ? ॥ १६ ॥ कृतकृत्य और सुखी हुए हम किसके प्रभावसे स्त्री, पुत्र और घरोंको यहांसे लौटकर देखेंगे ? ॥ १७ ॥ प्रसन्न हुए हम किसकी प्रसन्नतासे महाबली राम लक्ष्मण और महाबली सुग्रीवके पास पहुंचेंगे ? ॥ १८ ॥ यदि तुम्हारेमें कोई वानर समुद्रके लांघने-में समर्थ हो तो वह शीघ्र ही हमें अभयता प्रदान करे ॥ १९ ॥ अङ्गदके इस वचनको सुनकर किसीने कुछ नहीं कहा और वह सारी वानरी सेना निश्चलसी हो गई ॥ २० ॥

वानर श्रेष्ठ अङ्गदने फिर उन वानरोंसे कहा ॥ २१ ॥ कि तुम सब बलवानोंमें श्रेष्ठ तथा अतिशय पराक्रमी हो, उत्तम कुलमें उत्पन्न हुए हो और अनेक वार पूजित हुए हो ॥ २२ ॥ कभी भी तुम्हारी किसी भी गति कहीं भी प्रतिहत (अवरुद्ध) नहीं है अतः हे श्रेष्ठ वानरो ! (इस समुद्रके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ब्रुवध्वं यस्य या शक्तिः प्लवने प्लवगर्षभाः २३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्कि० चतुषष्टितमः सर्गः ॥६४॥ [२३५८]

पञ्चषष्टितमः सर्गः।

अथाङ्गदवचः श्रुत्वा ते सर्वे वानरर्षभाः।
स्वं स्वं गतौ समुत्साहमूचुस्तत्र यथाक्रमम् १
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः।
मैन्दश्च द्विविदश्चैव अङ्गदो जाम्बवांस्तथा २
आबभाषे गजस्तत्र प्लवेयं दशयोजनम्।
गवाक्षो योजनान्याह गमिष्यामीति विंशतिम् ३
शरभो वानरस्तत्र वानरांस्तानुवाचह।
त्रिंशतं तु गमिष्यामि योजनानां प्लवंगमाः ४
चत्वारिंशद्गमिष्यामि योजनानां न संशयः ५
वानरांस्तु महातेजा अब्रवीद्गन्धमादनः।
योजनानां गमिष्यामि पञ्चाशत्तु न संशयः ६

लांघनेमें जिसकी जितनी शक्ति है सो कहो ॥ २३ ॥

॥ यहाँ ६५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

इसके बाद अंगदका वचन सुनकर समस्त गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, मैन्द, द्विविद, सुषेण, जाम्बवान् आदि श्रेष्ठ वानर गमन विषयमें अपने अपने उत्साह (सामर्थ्य) को कहने लगे ॥१-२॥ उस समय गजने कहा कि मैं दश योजन कूद जाऊंगा और गवाक्षने कहा कि मैं बीस योजन जा सकूंगा ॥ ३ ॥ गवयने उन वानरोंसे कहा कि हे वानरो! मैं तीस योजनतक जा सकूंगा ॥ ४ ॥ वानरोंमें श्रेष्ठ ऋषभ वानरने अन्य वानरोंसे कहा कि हे वानरो! मैं चालीस योजन जा सकूंगा ॥ ५ ॥ तेजस्वी गन्धमादन वानरने कहा कि मैं तो पचास योजनतक जा सकूंगा इसमें कुछ संशय नहीं ॥ ६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मैन्दस्तु वानरस्तत्र वानरांस्तानुवाच ह।
योजनानां परं षष्टिमहं प्लवितुमुत्सहे ७
ततस्तत्र महातेजा द्विविदः प्रत्यभाषत।
गमिष्यामि न संदेहः सप्ततिं योजनान्यहम् ८
सुषेणस्तु महातेजाः सत्त्ववान्कपिसत्तमः।
अशीतिं प्रतिजानेऽहं योजनानां पराक्रमे ९
तेषां कथयतां तत्र सर्वांस्ताननुमान्य च।
ततो वृद्धतमस्तेषां जाम्बवान्प्रत्यभाषत १०
पूर्वमस्माकमप्यासीत्काश्चिद्गतिपराक्रमः।
ते वयं वयसः पारमनुप्राप्ताः स्म सांप्रतम् ११
किं तु नैवं गते शक्यमिदं कार्यमुपेक्षितुम्।
यदर्थं कपिराजश्च रामश्च कृतनिश्चयौ १२
सांप्रतं कालमस्माकं या गतिस्तां निबोधत।
नवतिं योजनानां तु गमिष्यामि न संशयः १३
तांश्च सर्वान्हरिश्रेष्ठाञ्जाम्बवानिदमब्रवीत्।
न खल्वेतावदेवासीद्गमने मे पराक्रमः १४

उन वानरोंमें जो मैन्द वानर था उसने कहा कि मैं अच्छी तरह साठ योजन तक जानेका उत्साह करता हूं ॥ ७ ॥ इसके पीछे तेजस्वी द्विविद बोला मैं सत्तर योजन जा सकता हूं ॥ ८ ॥ और वानरश्रेष्ठ सुषेणने कहा कि हे प्लवगोत्तमो! मैं अस्सी योजन पार कर सकता हूं ॥ ९ ॥ इस तरह समग्र वानरोंके कहनेपर उनका सत्कार करता हुआ समस्त वानरोंमें अति-वृद्ध जाम्बवान् बोला ॥ १० ॥ पहले हमारेमें भी गमन करनेका अतिशय पराक्रम था, पर सम्प्रति हम आयुकी समाप्ति पर पहुंच गये हैं ॥ ११ ॥ किन्तु हम इस कार्यको त्यागनेको समर्थ नहीं हैं जिसके लिये सुग्रीव और रामने निश्चय किया है ॥ १२ ॥

अब जो गति कालके भेदसे प्राप्त हुई है उसे तुम जानो, मैं तो ९० योजन जा सकता हूं इसमें संशय नहीं ॥ १३ ॥ उन समस्त श्रेष्ठ वानरोंसे जाम्बवान्ने कहा कि गमन करनेमें इतना ही मेरा पराक्रम था ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मया वैरोचने यज्ञे प्रभविष्णुः सनातनः ।
प्रदक्षिणीकृतः पूर्वं क्रममाणस्त्रिविक्रमः १५
स इदानीमहं वृद्धः प्लवेन मन्दविक्रमः ।
यौवने च तदासीन्मे बलमप्रतिमं परम् १६
संप्रत्येतावदेवाद्य शक्यं मे गमने स्वतः ।
नैतावता च संसिद्धिः कार्यस्यास्य भविष्यति १७
अथोत्तरमुदारार्थमब्रवीदङ्गदस्तदा ।
अनुमान्य तदा प्राज्ञो जाम्बवन्तं महाकपिम् १८
अहमेतद्गमिष्यामि योजनानां शतं महत् ।
निवर्तने तु मे शक्तिः स्यान्न वेति न निश्चितम् १९
तमुवाच हरिश्रेष्ठं जाम्बवान्वाक्यकोविदः ।
ज्ञायते गमने शक्तिस्तव हर्यृक्षसत्तम २०
कामं शतसहस्रं वा नह्येष विधिरुच्यते ।
योजनानां भवाञ्छक्तो गन्तुं प्रतिनिवर्तितुम् २१
न हि प्रेषयिता तात स्वामी प्रेष्यः कथंचन ।

मैंने पूर्व महाबलीके यज्ञमें सनातन विष्णुकी प्रदक्षिणा की है जो कि तीनों लोकोंको आक्रान्त किये हुए है ॥ १५ ॥ सो मैं सम्प्रति वृद्ध तैरनेमें मन्दविक्रम हूं, यौवनमें परम उत्कृष्टबलवाला था ॥ १६ ॥ सम्प्रति गमनमें इतनी शक्तिका सोचता हूं कि इतनी शक्तिसे इस कार्यकी सिद्धि कैसी नहीं होगी ॥ १७ ॥

इसके बाद महाकपि अङ्गदने बुद्धिमान् जाम्बवान्‌से आज्ञा लेकर एक उदारतापूर्ण उत्तर दिया ॥ १८ ॥ कि इस १०० योजन चौड़े महान् समुद्रको मैं तैरूंगा। लेकिन लौटनेमें मेरी शक्ति हो वा न हो-यह मैं निश्चय नहीं कर सकता हूं ॥१९॥ अति बुद्धिमान् जाम्बवान्‌ने अङ्गदसे कहा कि अब वानरश्रेष्ठ ! जानी गई गमनमें तेरी शक्ति ॥ २० ॥ किन्तु यथेष्ट सौ या हजार योजन गमन करनेकी और लौट आनकी तुम्हारी शक्ति है या नहीं यह हम नहीं कह सकते ॥ २१ ॥ ऐ तात ! आज्ञा देनेवाला स्वामी कभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भवतायं जनः सर्वः प्रेष्यः प्लवगसत्तम २२
भवान्कलत्रमस्माकं स्वामिभावे व्यवस्थितः।
स्वामी कलत्रं सैन्यस्य गतिरेषा परंतप २३
अपि वै तस्य कार्यस्य भवान्मूलमरिंदम।
तस्मात्कलत्रवत्तात प्रतिपाल्यः सदा भवान् २४
मूलमर्थस्य संरक्ष्यमेष कार्यविदां नयः।
मूले हि सति सिद्ध्यन्ति गुणाः सर्वे फलोदयाः २५
तद्भवानस्य कार्यस्य साधनं सत्यविक्रम।
बुद्धिविक्रमसंपन्नो हेतुरत्र परंतप २६
गुरुश्च गुरुपुत्रश्च त्वं हि नः कपिसत्तम।
भवन्तमाश्रित्य वयं समर्था ह्यर्थसाधने २७
उक्तवाक्यं महाप्राज्ञं जाम्बवन्तं महाकपिः।
प्रत्युवाचोत्तरं वाक्यं वालिसूनुरथाङ्गदः २८

(प्रेष्य) यानी भेजनेके लायक नहीं होता; ऐ श्रेष्ठवानर! यह जन सर्व आपके आज्ञा देनेके लायक हैं ॥ २२ ॥

जैसे स्वामी अपनी स्त्रीकी रक्षा करता है एवं आप हमारे स्वामी भावमें स्थित हैं। स्त्री और सेनाकी रक्षा करनेवाला स्वामी होता है। ये परंतप! यह प्राचीन (गति) नीति है ॥ २३ ॥ ऐ शत्रुनाशक! इस कार्यके आप ही मूलकारण हैं अतः ऐ तात! स्त्रीके समान आप सदैव रक्षा करनेयोग्य हैं ॥ २४ ॥ अर्थके मूलकी हमेशा रक्षा करनी चाहिये यह पण्डितोंकी नीति है, मूल ही से तमाम गुण पुष्प फलादिक सिद्ध होते हैं ॥ २५ ॥ ऐ सत्यपराक्रम! सो आप ही बुद्धि और पराक्रमसंयुक्त हुवे इस कार्यके साधन करनेमें कारण होंगे ॥ २६ ॥ कपिसत्तम! गुरु और गुरुपुत्र आप ही हमारे हैं, आपका ही सहारा लेकर हम कार्यके साधनमें समर्थ हो सकेंगे ॥ २७ ॥ ऐसे वचन कहनेवाले महाबुद्धिमान् जाम्बवान्के प्रति बालि का पुत्र (महाकपि) अङ्गद उत्तर वाक्य कहने लगा ॥ २८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यदि नाहं गमिष्यामि नान्यो वानरपुंगवः ।
पुनः खल्विदमस्माभिः कार्यं प्रायोपवेशनम् २९
न ह्यकृत्वा हरिपतेः संदेशं तस्य धीमतः।
तत्रापि गत्वा प्राणानां न पश्ये परिरक्षणम् ३०
स हि प्रसादे चात्यर्थकोपे च हरिरीश्वरः।
अतीत्य तस्य संदेशं विनाशो गमने भवेत् ३१
तत्तथा ह्यस्य कार्यस्य न भवत्यन्यथा गतिः।
तद्भवानेव दृष्टार्थः संचिन्तयितुमर्हति ३२
सोऽङ्गदेन तदा वीरः प्रत्युक्तः प्लवगर्षभः।
जाम्बवानुत्तमं वाक्यं प्रोवाचेदं ततोऽङ्गदम् ३३
तस्य ते वीर कार्यस्य न किंचित्परिहास्यते।
एष संचोदयाम्येनं यः कार्यं साधयिष्यति ३४
ततः प्रतीतं प्लवतां वरिष्ठमेकान्तमाश्रित्य सुखोपविष्टम्।
संचोदयामास हरिप्रवीरो हरिप्रवीरं हनुमन्तमेव ३५

इत्यार्षे श्रीमद्रा॰ वाल्मी॰ आदि॰ किष्किन्धा॰ पञ्चषष्टितमः सर्गः॥६५॥[२३९३]

यदि मैं या और वानरश्रेष्ठ जानेमें समर्थ न होंगे तो निश्चय ही हमको अपने प्राण त्याग देने चाहिये ॥ २९ ॥ उस महाबुद्धिमान् रामचन्द्रके संदेसेको विना पूरे किये वहां जाकर भी हम अपने प्राणोंकी रक्षा नहीं कर सकेंगे ॥ ३० ॥ वह ही सुग्रीव अतिप्रसन्नतामें और अतिकोपमें होनेपर उसके संदेसेको छोडकर गमनमें विनाशरूप होगा ॥ ३१ ॥ इसलिये जिस तरह इस कार्यकी (गति) हालत खराब न होवे उस दृष्ट अर्थके आप ही सोचनेवाले हो सकते हैं ॥ ३२ ॥ इस तरह उस अङ्गद वीरने जाम्बवान्से कहा कि जाम्बवान् उत्तर वाक्य अङ्गदसे कहने लगा ॥३३॥ हे वीर ! इस तेरे कार्यमें कभी हानि न होगी; यह आज्ञा मैं उसको दूंगा जो इस कार्यका साधित कर सकेगा ॥ ३४ ॥ इसके बाद निश्चय किये हुवे तैरनेवालोंमें श्रेष्ठ सुखसे एकान्तमें बैठे हुवे वानरोंमें वीर हनुमान् ही को जाम्बवान्ने आज्ञा दी ॥ ३५ ॥

॥ यहाँ ६६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

षट्षष्टितमः सर्गः।

अनेकशतसाहस्त्रीं विषण्णां हरिवाहिनीम्।
जाम्बवान्समुदीक्ष्यैवं हनूमन्तमथाब्रवीत् १
वीर वानरलोकस्य सर्वशास्त्रविदां वर।
तूष्णीमेकान्तमाश्रित्य हनूमन्कि न जल्पसि २
हनूमन्हरिराजस्य सुग्रीवस्य समो ह्यसि।
रामलक्ष्मणयोश्चापि तेजसा च बलेन च ३
अरिष्टनेमिनः पुत्रो वैनतेयो महाबलः।
गरुत्मानिव विख्यात उत्तमः सर्वपक्षिणाम् ४
बहुशो हि मया दृष्टः सागरे स महाबलः।
भुजंगानुद्धरन्पक्षी महाबाहुर्महाबलः ५
पक्षयोर्यद्बलं तस्य भुजवीर्यबलं तव।
विक्रमश्चापि तेजश्च न ते तेनापहीयते ६
बलं बुद्धिश्च तेजश्च सत्त्वं च हरिपुंगव।
विशिष्टं सर्वभूतेषु किमात्मानं न सज्जसे ७

इस तरह बहुतसी सैकडों हजारों (विषाद) शोकको प्राप्त होती वानरोंकी सेनाको देखकर जाम्बवान्‌ने हनुमान्‌से कहा ॥ १ ॥ ऐ वानरलोकके वीर! ऐ तमाम शास्त्रोंके जाननेवाले हनुमान्! तुम एकान्तमें चुप बैठे हुए क्यों नहीं बोलते हो ? ॥ २ ॥ ऐ हनुमान्! तुम तो वाली और सुग्रीवके समान बल और तेजमें राम लक्ष्मणके तुल्य हो ॥ ३ ॥ अरिष्टनेमीका पुत्र वैनतेय महाबलवान् जो कि गरुत्मान् इस नामसे प्रसिद्ध है समस्त पक्षियोंमें श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ बहुत बार मैंने उस महाबली बडे यशवाले और अतिवेगवाले पक्षीको समुद्रमें सर्पोंको फेंकते हुए देखा है ॥ ५ ॥ जो उसके पंखोंमें बल है वही बल तुम्हारी भुजाओंमें है पराक्रम और वेग आपका उससे कम नहीं है ॥ ६ ॥

ऐ वानरश्रेष्ठ! बल, बुद्धि, तेज, पराक्रम समस्त भूतोंमें विशेष है क्या तू अपनेको नहीं जानता है ? ॥ ७ ॥ अप्सराओंमें (पुञ्जिकस्थला) अप्सरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अप्सराप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः ८
विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि।
अभिशापादभूत्तात कपित्वे कामरूपिणी ९
दुहिता वानरेन्द्रस्य कुञ्जरस्य महात्मनः।
मानुषं विग्रहं कृत्वा रूपयौवनशालिनी १०
विचित्रमाल्याभरणा कदाचित्क्षौमधारिणी।
अचरत्पर्वतस्याग्रे प्रावृडम्बुदसंनिभे ११
तस्या वस्त्रं विशालाक्ष्याः पीतं रक्तदशं शुभम्।
स्थितायाः पर्वतस्याग्रे मारुतोपहरच्छनैः १२
स ददर्श ततस्तस्या वृत्तावूरू सुसंहितौ।
स्तनौ च पीनौ सहितौ सुजातं चारु चाननम् १३
तां बलादायतश्रोणीं तनुमध्यां यशस्विनीम्।
दृष्ट्वैव शुभसर्वाङ्गीं पवनः काममोहितः १४

श्रेष्ठ है और केसरी नाम वानरकी स्त्री (अञ्जना) नामसे प्रसिद्ध है ॥ ८ ॥ समस्त लोगोंमें प्रसिद्ध है अति रूपवाली; किन्तु किसी शापके वश कामरूपिणी वानरी हुई ॥ ९ ॥ वानरोंमें उत्तम महात्मा कुञ्जरकी पुत्री है। वह सुन्दर अङ्ग मनुष्यशरीरको धारण करके रूप और यौवनवाली विचित्र २ माला और आभूषण पहिने हुए अच्छे स्वच्छ वस्त्र पहिने हुए वर्षाऋतुके मेघके समान पर्वतके अग्रभागमें विचरती थी ॥ १०-११ ॥

पर्वतके अग्रभागमें बैठी हुई उस विशालनेत्रवालीके वस्त्रोंको जो कि पीले लाल रंगके और पवित्र थे वायुने सहजसे उड़ा दिये ॥ १२ ॥ उस वायुने उसकी गोल और (अति सघन) अति मिली हुई जङ्घायें, स्थूल स्तन और सुन्दर मुख देखा ॥ १३ ॥ उस विशाल और अति फैली हुई श्रोणी सूंडीवाली सूक्ष्म कटिवाली और यशस्विनीको जिसके समस्त अङ्ग सुन्दर थे देखते ही पवन कामसे अति मोहित हो गया ॥ १४ ॥ उस मारुतने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

स तां भुजाभ्यां दीर्घाभ्यां पर्यष्वजत मारुतः ।
मन्मथाविष्टसर्वाङ्गो गतात्मा तामनिन्दिताम् १५
सा तु तत्रैव संभ्रान्ता सुव्रता वाक्यमब्रवीत् ।
एकपत्नीव्रतमिदं को नाशयितुमिच्छति १६
अञ्जनाया वचः श्रुत्वा मारुतः प्रत्यभाषत ।
न त्वां हिंसामि सुश्रोणि माभूत्ते मनसो भयम् १७
मनसाऽस्मि गतो यत्त्वां परिष्वज्य यशस्विनि ।
वीर्यवान्बुद्धिसंपन्नस्तव पुत्रो भविष्यति १८
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः ।
लङ्घने प्लवने चैव भविष्यति मया समः १९
एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे ।
गुहायां त्वां महाबाहो प्रजज्ञे प्लवगर्षभ २०
अभ्युत्थितं ततः सूर्यं बालो दृष्ट्वा महावने ।
फलं चेति जिघृक्षुस्त्वमुत्पत्याभ्युत्पतो दिवम् २१

अपनी दोनों बडी विशाल भुजाओंसे उसे पकड लिया, जिसके तमाम शरीरमें काम व्याप्त हो गया था और बेहोश था ॥ १५ ॥ वह (सुव्रता) यशस्विनी घबराई हुई यह कहने लगी इस एक पत्नीव्रतको कौन नाश करनेकी इच्छा करता है ? ॥ १६ ॥

अञ्जनाके वचन सुनकर मारुतने कहा ऐ सुश्रोणि ! ऐ सुभगे ! तू मत डर मैं तुझको नहीं मारूंगा ॥ १७ ॥ जिस कारणसे मैंने तुझको पकडा है और मनसे प्राप्त हुआ हूं तेरे बडा बुद्धिमान् और पराक्रमी पुत्र उत्पन्न होगा ॥ १८ ॥ बडा पराक्रमी, तेजस्वी, महान् बल पराक्रमवाला लांघने और तैरनेमें मेरे समान होगा ॥ १९ ॥ ऐ महाकपि ! ऐ महाबाहो ! इस तरह कही गई प्रसन्न मनवाली तेरी माताने एक गुफामें जाकर तुझको उत्पन्न किया ॥ २० ॥ तू बालक उस महावनमें उदय हुए सूर्यको देखकर और फल जानकर, उसे ग्रहण करनेकी इच्छा करके उछलकर आकाशको चला गया ॥ २१ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शतानि त्रीणि गत्वाथ योजनानां महाकपे।
तेजसा तस्य निर्धूतो न विषादं गतस्ततः २२
त्वामप्युपगतं तूर्णमन्तरिक्षं महाकपे।
क्षिप्तमिन्द्रेण ते वज्रं कोपाविष्टेन तेजसा २३
तदा शैलाग्रशिखरे वामो हनुरभज्यत।
ततोभिनामधेयं ते हनुमानिति कीर्तितम् २४
ततस्त्वां निहतं दृष्ट्वा वायुर्गन्धवहः स्वयम्।
त्रैलोक्यं भृशसंक्रुद्धो न ववौ वै प्रभञ्जनः २५
संभ्रान्तश्च सुराः सर्वे त्रैलोक्ये क्षुभिते सति।
प्रसादयन्ति संक्रुद्धं मारुतं भुवनेश्वराः २६
प्रसादिते च पवने ब्रह्मा तुभ्यं वरं ददौ।
अशस्त्रवध्यतां तात समरे सत्यविक्रम २७
वज्रस्य च निपातेन विरुजं त्वां समीक्ष्य च।
सहस्रनेत्रः प्रीतात्मा ददौ ते वरमुत्तमम् २८
स्वच्छन्दतश्च मरणं तव स्यादिति वै प्रभो।
स त्वं केसरिणः पुत्रः क्षेत्रजो भीमविक्रमः २९

ऐ महाकपि ! तीन सौ योजन जाकर उस सूर्यके तेजसे कँपाया हुआ तू शोकको न प्राप्त हुआ ॥ २२ ॥ उस समय गिरते हुए आकाशसे क्रोधसे भरे हुये बुद्धिमान् इन्द्रने, ऐ महाबाहो ! तेरे एक वज्र मारा ॥ २३ ॥ तब उस पर्वतके शिखरपर तेरी बांई ठोढी टूट गई इसी कारणसे तेरा नाम हनुमान् हुआ ॥२४॥ इस तरह तुझको निहत देखकर गन्धवाहन करनेवाला वायु (स्वयं) आप ही त्रैलोक्यमें क्रुद्ध होकर प्रवाहरहित हो गया ॥ २५ ॥ तीनों लोकोंके क्षुभित होनेसे समस्त देवता घबडा गये और समस्त भुवनेश्वर क्षुभित वायुको प्रसन्न करने लगे ॥ २६ ॥

ऐ तात सत्यविक्रम ! ब्रह्माने प्रसन्न होकर तुझको वरदान दिया-युद्धमें शस्त्रसे तू कभी वध नहीं होगा ॥ २७ ॥ वज्रके लगनेपर भी तुमको नीरोग देखकर इन्द्रने प्रसन्न होकर वरदान दिया ॥ २८ ॥ ऐ प्रभो ! तुम्हारा मरण स्वतन्त्र ही होगा सो तू क्षेत्रज केसरीका पुत्र भयानक पराक्रमवाला ॥ २९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मारुतस्यौरसः पुत्रस्तेजसा चापि तत्समः।
त्वं हि वायुसुतो वत्स प्लवने चापि तत्समः ३०
वयमद्य गतप्राणा भवानस्मासु सांप्रतम्।
दाक्ष्यविक्रमसंपन्नः कपिराज इवापरः ३१
त्रिविक्रमे मया तात सशैलवनकानना।
त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवी परिक्रान्ता प्रदक्षिणम् ३२
तदा चौषधयोऽस्माभिः संचिता देवशासनात्।
निर्मथ्यममृतं याभिस्तदानीं नो महद्बलम् ३३
स इदानीमहं वृद्धः परिहीनपराक्रमः।
सांप्रतं कालमस्माकं भवान्सर्वगुणान्वितः ३४
तद्विजृम्भस्व विक्रान्त प्लवतामुत्तमो ह्यसि।
त्वद्वीर्यं द्रष्टुकामा हि सर्वा वानरवाहिनी ३५
उत्तिष्ठ हरिशार्दूल लङ्घयस्व महार्णवम्।
परा हि सर्वभूतानां हनुमन्या गतिस्तव ३६

मारुतका औरसपुत्र तेजमें भी पिताके समान हुआ और तुम ही ऐ वत्स! वायुके पुत्र तैरनेमें भी उसीके समान हो ॥ ३० ॥ तुम ही आज हम लोगोंकी रक्षा करनेमें समर्थ हो, चतुरता और पराक्रम सहित दूसरे गरुड़के समान हो ॥ ३१ ॥ त्रिविक्रममें ऐ तात! मैंने पर्वत, वन, कानन सहित इस पृथ्वी की २१ वार परिक्रमा की है ॥ ३२ ॥ और हमने देवताओंकी औषधियां सञ्चय की और उनसे जो अमृत निकाला है वह ही हमारा बल है ॥ ३३ ॥

सो मैं पराक्रमहीन वृद्ध हुआ हूं और अब हमारा काल है। आप सर्वगुण भरे हुए हैं ॥ ३४ ॥ सो मुख फैला भयानक तुम तैरनेवालोंमें उत्तम हो यह समस्त वानरीसेना तुम्हारा पराक्रम देखनेकी इच्छा करती है ॥ ३५ ॥ ऐ वानरसिंह ? इस महान् समुद्रको उल्लंघन कर- हे हनुमान्! ये तेरी गति समस्त भूतोंके पूर्ण करनेवाली है ॥ ३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विषण्णा हरयः सर्वे हनुमन्किमुपेक्षसे।
विक्रमस्व महावेग विष्णुस्त्रीन्विक्रमानिव ३७
ततः कपीनामृषभेण चोदितः प्रतीतवेगः पवनात्मजः कपिः।
प्रहर्षयंस्तां हरिवीरवाहिनीं चकार रूपं पवनात्मजस्तदा ३८
इत्यार्षे श्रीमद्वा० वाल्मी० आदि० किष्कि० षट्षष्टितमः सर्गः॥ ६६॥ [२४३१]

सप्तषष्टितमः सर्गः।

तं दृष्ट्वा जृम्भमाणं ते क्रमितुं शतयोजनम्।
वेगेनापूर्यमाणं च सहसा वानरोत्तमम् १
सहसा शोकमुत्सृज्य प्रहर्षेण समन्विताः।
विनेदुस्तुष्टुवुश्चापि हनूमन्तं महाबलम् २
प्रहृष्टा विस्मिताश्चापि ते वीक्षन्ते समन्ततः।
त्रिविक्रमं कृतोत्साहं नारायणमिव प्रजाः ३
संस्तूयमानो हनुमान्व्यवर्धत महाबलः।
समाविद्ध्य च लाङ्गूलं हर्षाद्बलमुपेयिवान् ४

हनुमान् यह समस्त वानर घबडा उठे हैं तू क्यों लापरवाही करता है? महावेगवान् होकर पराक्रम कर जैसे विष्णुने अपने पराक्रमसे तीनों लोकोंको लांघा है॥ ३७॥ तत्पश्चात् वह हनुमान् पवनपुत्र विख्यात वेगवाला ऋक्षवानूसे आज्ञा पाकर वीर वानरोंकी सेनाको आनन्द देता हुआ अपने स्वरूपको बढाने लगा॥ ३८॥

॥ यहाँ ६६ वा सर्ग समाप्त हुआ॥

वे वानर उस हनुमानको मुख खोले हुवे और शतयोजन समुद्रको लांघते हुवे पराक्रमसे पूर्ण एक वार ही देखकर॥ १॥ (सहसा) एकसाथी शोकको छोडकर अति आनन्द होते हुवे शब्द करने लगे और हनुमानकी स्तुति की॥ २॥ आनन्द होते हुवे और विस्मयको प्राप्त हुवे चारों तरफ देखने लगे, जैसे विष्णुने पराक्रमसे तीनों लोकोंके लांघनेका उत्साह किया था और प्रजा देखती थी॥ ३॥ स्तुति किया गया हनुमान महाबलवान् बढने लगा, पूंछको फटकारता हुआ हर्षसे बल करने लगा॥ ४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तस्य संस्तूयमानस्य वृद्धैर्वानरपुङ्गवैः ।
तेजसापूर्यमाणस्य रूपमासीदनुत्तमम् ५
यथा विजृम्भते सिंहो विवृते गिरिगह्वरे ।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तथा संप्रति जृम्भते ६
अशोभत मुखं तस्य जृम्भमाणस्य धीमतः ।
अम्बरीषोपमं दीप्तं विधूम इव पावकः ७
हरीणामुत्थितो मध्यात्संप्रहृष्टतनूरुहः ।
अभिवाद्य हरीन्वृद्धान्हनूमानिदमब्रवीत् ८
आरुजन्पर्वताग्राणि हुताशनसखोऽनिलः ।
बलवानप्रमेयश्च वायुराकाशगोचरः ९
तस्याहं शीघ्रवेगस्य शीघ्रगस्य महात्मनः ।
मारुतस्यौरसः पुत्रः प्लवनेनास्मि तत्समः १०
उत्सहेयं हि विस्तीर्णमालिखन्तमिवाम्बरम् ।
मेरुं गिरिमसङ्गेन परिगन्तुं सहस्रशः ११

इस तरह चतुर वृद्ध वानरोंसे स्तूयमान होकर तेज़से परिपूर्ण ब[illegible] उत्तम रूपको प्राप्त हुवा ॥ ५ ॥ जैसे बलवान् सिंह पर्वतकी कन्दरा[illegible] शब्द करता है, मारुतका औरस पुत्र भी उसी तरह शब्द करने ल[illegible] ॥ ६ ॥ उस जंभाई लेते हुवे हनुमानका मुख बडी शोभाको प्राप्त हुवा अम्बरीशके समान बडी दीप्तिको प्राप्त हुवा और निधूम अग्निके सम[illegible] प्रकाश करने लगा ॥ ७ ॥ तमाम वानरोंके मध्यसे उठकर पुलकित रोमां[illegible] हुवा हनुमान् अन्य वृद्ध वानरोंको अभिवादन करके यह कहने लगा ॥ ८ ॥ कि जो अग्निका सखा वायु पर्वतोंके अग्रभागोंको कंपाता हुवा बलवा[illegible] अप्रमेय आकाशमें घूमनेवाला है उस अति वेगवाले और शीघ्र गम[illegible] करनेवाले महात्मा वायुका मैं औरस पुत्र हूं, मुझको समुद्र लांघनेमें कु[illegible] भय नहीं ॥ ९–१० ॥

मैं अति विस्तारवाले आकाशको स्पर्श करता हुआ अकेला हजा[illegible] सुमेरुके समान पर्वतोंके लांघनेको उत्साह कर सकता हूं ॥ ११ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बाहुवेगप्रणुन्नेन सागरेणाहमुत्सहे ।
समाप्लावयितुं लोकं सपर्वतनदीह्रदम् १२
ममोरुजङ्घावेगेन भविष्यति समुत्थितः ।
समुत्थितमहाग्राहः समुद्रो वरुणालयः १३
पन्नगाशनमाकाशे पतन्तं पक्षिसेवितम् ।
वैनतेयमहं शक्तः परिगन्तुं सहस्रशः १४
उदयात्प्रस्थितं वापि ज्वलन्तं रश्मिमालिनम् ।
अनस्तमितमादित्यमहं गन्तुं समुत्सहे १५
ततो भूमिमसंस्पृष्ट्वा पुनरागन्तुमुत्सहे ।
प्रवेगेनैव महता भीमेन प्लवगर्षभाः १६
उत्सहेयमतिक्रान्तुं सर्वानाकाशगोचरान् ।
सागरान्क्षोभयिष्यामि दारयिष्यामि मेदिनीम् १७
पर्वतांश्चूर्णयिष्यामि प्लवमानः प्लवंगमः ।
हरिष्याम्यूरुवेगेन प्लवमानो महार्णवम् १८

हुवोंके वेग द्वारा चलायमान हुवे समुद्रसे पर्वत, नदी, तालाब सहित तमाम लोकके पार करनेके लिये भी उत्साह कर सकता हूं ॥ १२ ॥ हृदय और जंघाके वेगसे यह समुद्र वरुणालय उछल जायगा जिसमें महान् ग्राह निवास करते हैं ॥ १३ ॥ सर्पोंके खानेवाले आकाशसे चरते हुवे वैनतेय गरुडके प्रति भी मैं जानेको हजारों प्रकारसे समर्थ हूं १४ ॥ उदयसे घूमनेवाला प्रकाशमान (रश्मिमाली) असंख्य किरणों जो कि अस्त नहीं हुवा है ऐसे सूर्यके समीप जानेको भी मैं उत्साह रता हूं ॥ १५ ॥

ऐ वानरो ! पृथिवीको न छूना हुवा महान् अति भीम वेगसे फिर नेका मैं उत्साह करता हूं जो आकाशमें विचरनेवाले हैं उन तमामको उल्लंघन करनेका उत्साह करता हूं, समुद्रको सुखा डालूंगा और पृथिवीको कर डालूंगा ॥ १७ ॥ ऐ वानरो ! मैं लांघता हुवा पर्वतोंको चूर्ण कर डालूंगा और ऊरुके वेगसे तैरता हुवा उस महार्णवको अति क्षोभको प्राप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लतानां विविधं पुष्पं पादपानां च सर्वशः।
अनुयास्यति मामद्य प्लवमानं विहायसा।
भविष्यति हि मे पन्थाः स्वातेः पन्था इवाम्बरे १९
चरन्तं घोरमाकाशमुत्पतिष्यन्तमेव च।
द्रक्ष्यन्ति निपतन्तं च सर्वभूतानि वानराः २०
महामेरुप्रतीकाशं मां द्रक्ष्यध्वं प्लवंगमाः।
दिवमावृत्य गच्छन्तं ग्रसमानमिवाम्बरम् २१
विधमिष्यामि जीमूतान्कम्पयिष्यामि पर्वतान्।
सागरं शोषयिष्यामि प्लवमानः समाहितः २२
वैनतेयस्य वा शक्तिर्मम वा मारुतस्य वा।
ऋते सुपर्णराजानं मारुतं वा महाबलम् २३
न तद्भूतं प्रपश्यामि यन्मां प्लुतमनुव्रजेत् २४
निमेषान्तरमात्रेण निरालम्बनमम्बरम्।
सहसा निपतिष्यामि घनाद्विद्युदिवोत्थिता २५
भविष्यति हि मे रूपं प्लवमानस्य सागरम्।

कर दूंगा ॥ १८ ॥ आज लताओं और वृक्षोंके विविध प्रकारके पुष्प चारों तरफसे मुझ लांघते हुवेके पीछे आकाशमें खिंचकर चले जायगें। आकाशमें मेरा रास्ता स्वातिमार्गके समान होगा ॥ १९ ॥

ऐ वानरो! आकाशमें विचरते, कूदते, ऊपरसे गिरते हुए और चारों तरफसे फिरते हुए मुझको समस्त जीव देखेंगे ॥ २० ॥ ऐ वानरो! महा- मेघके समान आकाशको ढककर जाते हुए और आकाशको ग्रसते हुए मुझे देखोगे ॥ २१ ॥ कूदता हुआ सावधान मैं मेघोंको हिला दूंगा, पर्वतोंको कम्पा दूंगा और समुद्रको क्षोभित कर दूंगा ॥ २२ ॥ जो मेरी शक्ति है वह गरुडकी वा वायुकी है, गरुड वा बडे वेगवाले वायुके अतिरिक्त मैं अन्य प्राणीको नहीं देखता हूं जो कि कूदते मेरे पीछे जावे ॥ २३-२४ ॥ निमेषान्तरमें एकदम निरालम्ब आकाशको प्राप्त हो जाऊंगा जैसे बादलोंसे उत्पन्न बिजली ॥ २५ ॥ सागरमें कूदते हुए मेरा रूप पुराकालके त्रिविक्रम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विष्णोः प्रक्रममाणस्य तदा त्रीन्विक्रमानिव २६
बुद्ध्या चाहं प्रपश्यामि मनश्चेष्टा च मे तथा ।
अहं द्रक्ष्यामि वैदेहीं प्रमोदध्वं प्लवंगमाः २७
मारुतस्य समो वेगे गरुडस्य समो जवे ।
अयुतं योजनानां तु गमिष्यामीति मे मतिः २८
वासवस्य सवज्रस्य ब्रह्मणो वा स्वयंभुवः ।
विक्रम्य सहसा हस्तादमृतं तदिहानये ।
लङ्कां वापि समुत्क्षिप्य गच्छेयमिति मे मतिः २९
तमेवं वानरश्रेष्ठं गर्जन्तममितप्रभम् ।
प्रहृष्टा हरयस्तत्र समुदैक्षन्त विस्मिताः ३०
तच्चास्य वचनं श्रुत्वा ज्ञातीनां शोकनाशनम् ।
उवाच परिसंहृष्टो जाम्बवान्प्लवगेश्वरः ३१
वीर केसरिणः पुत्र वेगवान्मारुतात्मज ।
ज्ञातीनां विपुलः शोकस्त्वया तात प्रणाशितः ३२
तव कल्याणरुचयः कपिमुख्याः समागताः ।

...र विष्णुके रूपके समान हो जायगा ॥ २६ ॥ ...बुद्धिसे जानता हूं तथा मेरी मनकी चेष्टा ऐसी है कि मैं सीताको ..., हे वानरो ! तुम प्रसन्न होओ ॥ २७ ॥ वेगमें मारुतके समान तथा ...(शीघ्रगति) में गरुडके समान मैं हजार योजन जाऊंगा, ऐसी मेरी ...है ॥ २८ ॥ वज्रयुक्त इन्द्र वा स्वयम्भू ब्रह्माके हाथसे एकदम विक्रम ...अमृतको यहां ले आऊंगा और लङ्काको कूद कर जाऊं यह मेरी बुद्धि ...२९ ॥ इस प्रकार गर्जते हुए अतुलपराक्रमी वानरश्रेष्ठ हनुमान्को ...न्दित तथा विस्मित हुए वानर देखने लगे ॥ ३० ॥ उसके ऐसे वचन ...र आनन्दयुक्त जाम्बवान्ने जातिका शोक नाश करनेवाले हनुमान्से ...॥ ३१ ॥

...वीर केसरीके पुत्र, मारुतपुत्र हनुमन् ! तूने अपनी जातिका बडा ...शोक दूर कर दिया ॥ ३२ ॥ एकत्रित हुए कल्याणकी इच्छावाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मङ्गलान्यर्थसिद्ध्यर्थं करिष्यन्ति समाहिताः ३३
ऋषीणां च प्रसादेन कपिवृद्धमतेन च।
गुरूणां च प्रसादेन संप्लव त्वं महार्णवम् ३४
स्थास्यामश्चैकपादेन यावदागमनं तव।
त्वद्गतानि च सर्वेषां जीवनानि वनौकसाम् ३५
ततश्च हरिशार्दूलस्तानुवाच वनौकसः।
कोपि लोके न मे वेगं प्लवने धारयिष्यति ३६
एतानीह नगस्यास्य शिलासंकटशालिनः।
शिखराणि महेन्द्रस्य स्थिराणि च महान्ति च ३७
येषु वेगं गमिष्यामि महेन्द्रशिखरेष्वहम्।
नानाद्रुमविकीर्णेषु धातुनिष्पन्दशोभिषु ३८
एतानि मम वेगं हि शिखराणि महान्ति च।
प्लवतो धारयिष्यन्ति योजनानामितः शतम् ३९
ततस्तु मारुतप्रख्यः स हरिर्मारुतात्मजः।
आरुरोह नगश्रेष्ठं महेन्द्रमरिमर्दनः ४०

श्रेष्ठ कपि कार्यसिद्धिके लिये मङ्गल करेंगे ॥ ३३ ॥ ऋषियोंकी प्रसन्नता तथा वृद्ध कपियोंकी सलाहसे तथा गुरुओंके प्रसादसे तुम महार्णवको जाओ ॥ ३४ ॥ जबतक तुम्हारा आना होगा तबतक हम एक पैरसे रहेंगे; क्योंकि सब वानरों के जीवन तुम्हारे आधीन हैं ॥३५॥ तदनन्तर श्रेष्ठ हनुमान्ने उन वानरों से कहा कि कूदनेपर यह पृथ्वी मेरे वेगको धारण नहीं करेगी ॥ ३६ ॥ शिलातुङ्ग प्रदेश हैं अधिक जिनमें ऐसे महेन्द्रके बडे भारी स्थिर शिखर हैं ॥ ३७ ॥

मैं इन महेन्द्रशिखरोंपर वेगको करूंगा जो कि अनेक वृक्षोंसे तथा धातु और झरनोंसे शोभित हैं ॥ ३८ ॥ ये यहांसे १०० योजन हुए मेरे निष्पेषको धारण करेंगे ॥ ३९ ॥ तदनन्तर शत्रुनाशक पवन वायुपुत्र हनुमान् पर्वतश्रेष्ठ महेन्द्रपर चढ गया ॥ ४० ॥ तदनु महेन्द्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वृतं नानाविधैः पुष्पैर्मृगसेवितशाद्वलम् ।
लताकुसुमसंबाधं नित्यपुष्पफलद्रुमम् ४१
सिंहशार्दूलसहितं मत्तमातङ्गसेवितम् ।
मत्ताद्विजगणोद्घुष्टं सलिलोत्पीडसंकुलम् ४२
महाद्भिरुच्छ्रितैः शृङ्गैर्महेन्द्रस्य महाबलः ।
विचचार हरिश्रेष्ठो महेन्द्रसमविक्रमः ४३
बाहुभ्यां पीडितस्तेन महाशैलो महात्मना ।
ररास सिंहाभिहतो महान्मत्त इव द्विपः ४४
मुमोच सलिलोत्पीडान्विप्रकीर्णशिलोच्चयः ।
वित्रस्तमृगमातङ्गः प्रकम्पितमहाद्रुमः ४५
नानागन्धर्वमिथुनैः पानसंसर्गकर्कशैः ।
उत्पतद्भिर्विहङ्गैश्च विद्याधरगणैरपि ४६
त्यज्यमानमहासानुः संनिलीनमहोरगः ।
शैलशृङ्गशिलोत्पातस्तदाभूत्स महागिरिः ४७
निःश्वसद्भिस्तदा तैस्तु भुजगैरर्धनिःसृतैः ।

...क्रमी कपिश्रेष्ठ हनुमान् अनेक वृक्षोंसे व्याप्त मृगोंसे सेवित घासवाले, ...तथा पुष्पोंसे पूर्ण; नित्य फूल फलयुक्त वृक्षोंवाले, सिंह; -शार्दूलसे ...वित, मस्त हाथियोंसे सेवित, मस्त पक्षिसमूहोंसे शब्दायमान, जलप्रवा-...से पूर्ण तथा बडे २ श्रृंगोंसे उन्नत उस महेन्द्रपर विचरने लगा ॥४१-४३॥ ... महात्मा उसने पैरोंसे पीडित किया। महेंद्र सिंहसे विक्षत बडे मत्त ...थीके समान प्रकाशित हुआ ॥ ४४ ॥ फटी हुई शिलाओंवाला, कम्पित ...क्षोंवाला तथा भयभीत मृग तथा हाथियोंवाला वह पर्वत जलप्रवाहोंको ...छोडने लगा ॥ ४५ ॥ मद्य पानसे कर्कश हुए नाग तथा गन्धर्वोंके जोडोंसे ...ते हुए पक्षियोंसे तथा विद्याधरसमूहोंसे त्यक्तसानुवाला, छिपे हुए ...लीन तथा उरगोंवाला तथा चलायमान शिखर तथा शिलासमूहवाला वह ...गिरि हो गया ॥ ४६-४७ ॥ उस समय वह पर्वत श्वास लेते हुए, पीडित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सपताक इवाभाति स तदा धरणीधरः ४८
ऋषिभिस्त्राससंभ्रान्तैस्त्यज्यमानः शिलोच्चयः।
सीदन्महति कान्तारे सार्थहीन इवाध्वगः ४९
स वेगवान्वेगसमाहितात्मा हरिप्रवीरः परवीरहन्ता।
मनः समाधाय महानुभावो जगाम लङ्कां मनसा मनस्वी ५०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० किष्किन्धा० सप्तषष्टितमः सर्गः ॥६७॥ [२४८]

॥ समाप्तमिदं किष्किन्धाकाण्डम् ॥

(बिलोंसे) आधे निकले हुए सर्पोंसे पताकायुक्तसा प्रकाशित होने लगा ॥ ४८ ॥ दुःखयुक्त ऋषियोंसे त्यक्त वह पर्वत बड़े भारी वनमें दुःखी हुए साथियोंसे हीन पथिकके समान प्रतीत होने लगा ॥ ४९ ॥ शत्रु वीरोंका नाशक, सावधान चित्तवाला, मनस्वी, महानुभाव, वेगवान् हरिश्रेष्ठ हनुमान् मनको सावधान करके मनसे लङ्काको चला दिया ॥ ५० ॥

॥ इति वाल्मीकिरामायणे किष्किन्धाकाण्डं समाप्तम् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री वाल्मीकि रामायणान्तर्गत

किष्किन्धाकाण्डकी

समालोचना

इस काण्डमें किन्हीं अत्यन्त महत्त्वपूर्ण राजनैतिक घटनाओंका उल्लेख है। उसका महत्त्व समझनेकी आवश्यकता है और साथ ही उसके अगले पिछले सन्दर्भोंका पारस्परिक सम्बन्ध जानना भी आवश्यक है। अतः इन घटनाओंके विषयमें चार शब्द लिख देना यहाँ अधिक उपयुक्त होगा। उनमें भी राजनैतिक सावधानीको प्रथम मानते हुए तद्विषयक उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है—

सुग्रीवकी सावधानी

परायोंपर अविश्वास

सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वतपर अपने मन्त्रियोंके साथ सुरक्षित स्थानपर रहता था। रामलक्ष्मण घूमते घूमते उस पर्वतके समीप आ पहुँचे। सुग्रीवने उन्हें देखा। विशालकाय, सुन्दर, तेजोमय आकृति तथा शौर्य और धैर्यके मानो वे पुतले ही थे। ऐसे रामलक्ष्मणको देखकर सुग्रीवको प्रथम आशङ्का हुई और वह इस प्रकार कि– 'इन्हें सम्भवतः शत्रुरूप वालिने मुझे मारनेके लिये भेजा है'

वरायुधधरौ वीरौ सुग्रीवः शंकितोऽभवत् ॥ १ ॥
एतौ वनमिदं दुर्गं वालिप्रणिहितौ ध्रुवम् ॥ ६ ॥ कि० स० २

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निःसन्देह इन वीरोंको बालिने भेजा है। 'विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत्' अत्यन्त विश्वसनीय मनुष्यपर भी विश्वास नहीं रखना चाहिये। ऐसी स्थितिमें जो पराया है उसपर तो विश्वास रक्खा ही कैसे जा सकता है? राजनीतिमें यह इस प्रकारकी सावधानी रखनी चाहिये।

भारतवर्षमें अनादिकालसे बाहरके असुर, दानव और राक्षस यहाँ आते और भारतीय आर्य उनपर विश्वास रखते तथा अन्तमें पश्चात्ताप करते आये हैं। वैसा न करके सुग्रीवने यहाँपर सावधानीका व्यवहार किया है। राजनीतिमें इस प्रकारकी सावधानी रखनी चाहिये। नये मनुष्यको देखकर प्रथमतः उसपर कभी भी विश्वास न रखना चाहिये। उससे सावधान रहना चाहिये तथा अपनी रक्षाका पूरा प्रबन्ध रखना चाहिये। बाहरसे आये हुए मनुष्यकी-चाहे वह कितना ही भला क्यों न हो- पूरी परीक्षा करके ही उसपर विश्वास करना चाहिये।

न ह्यबुद्धिगतो राजा सर्वभूतानि शास्ति हि ॥ १८ ॥ कि. स. २

'बुद्धिका अवलम्बन न करनेवाला कोई भी राजा अपनी प्रजापर ठीक प्रकारसे राज्य नहीं कर सकता' अतः सदैव बुद्धिका उपयोग करके व्यवहार करना चाहिये। सुग्रीवके मन्त्री हनुमानने सुग्रीवसे कहा कि, इस ऋष्यमूक पर्वतपर बालि नहीं आ सकता, अतः डरनेका कोई कारण नहीं है। इसपर सुग्रीव पुनः कहता है—

वालिप्रणिहितावेव शंकेऽहं पुरुषोत्तमौ।
राजानो बहुमित्राश्च विश्वासो नात्र हि क्षमः ॥ २१ ॥
अरयश्च मनुष्येण विज्ञेयाः छद्मचारिणः।
विश्वस्तानामविश्वस्ताश्छिद्रेषु प्रहरन्त्यपि ॥ २२ ॥
कृत्येषु वाली मेधावी राजा नो बहुदर्शिनः।
भवन्ति परहन्तारस्ते ज्ञेयाः प्राकृतैर्नरैः ॥ २३ ॥ कि० स० २

'बालिने ही इनको भेजा होगा, ऐसा मुझे सन्देह होता है। राजाओंके अनेक मित्र होते हैं। अतः ये भी बालिके ही मित्र होंगे। अतः इनपर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विषयमें सावधान रहना ही उचित है। कपटपूर्वक घूमनेवाले शत्रुओंको मनुष्यने पहिचान लेना चाहिये। यदि हम इनकी परीक्षा न करके विश्वास कर बैठेंगे तो यह भी पता नहीं चल सकता कि ये कब विश्वासघात कर दें। राजा बालि इस कार्यमें बहुत ही बुद्धिमान है। वह प्रतिपक्षको धोखा देकर घात करनेमें अत्यन्त कुशल है' अतः हमें इन वीरोंके विषयमें सचेत रहना चाहिये।

ऐसा कहकर सुग्रीवने हनुमानको रामलक्ष्मणके पास भेज दिया और उनकी अच्छी प्रकारसे परीक्षा करके आनेके लिये कहा। राजनीतिमें ऐसी सावधानी अत्यन्त आवश्यक है, यह बोध हमें यहाँपर मिलता है।

कामवश हुआ मनुष्य

सीताका हरण रावणद्वारा हो जानेपर सीताकी याद आकर रामको दुःख होना स्वाभाविक था। अपहृत स्त्रियोंके पतियोंका दुःख कितना भीषण होता है, इसे अपहृत स्त्रियोंके पति ही जान सकते हैं। यहाँ ऐसी ही स्थिति रामकी दिखाई देती है। देखिये—

स कामवशमापन्नः सौमित्रिमिदमब्रवीत् ॥ २ ॥
मां हि शोकसमाक्रान्तं संतापयति मन्मथः ॥ १३ ॥
प्रणदन् मन्मथाविष्टं शोचयिष्यति लक्ष्मण ॥ २४ ॥
स्वनन्ति पादपाश्चेमे मम अनंगप्रदीपकाः ॥ २९ ॥
मन्मथायास संभूतो वसन्तगुणवर्धितः।
अयं मां धक्ष्यति क्षिप्रं शोकाग्निर्न चिरादिव ॥ ३३ ॥
मन्मथाभिपरीतस्य मम मन्मथवर्धनाः।
पश्य लक्ष्मण नृत्यन्तं मयूरमुपनृत्याति ॥ ३८ ॥
ममाप्येवं विशालाक्षी जानकी जातसंभ्रमा।
मदनेनाभिवर्तेत यदि नापहृता भवेत् ॥ ४३ ॥
नदन्ति कामं शकुना मुदिताः संघशः कलम्।
आह्वयन्त इवान्योन्यं कामोन्मादकरा मम ॥ ४६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पश्य लक्ष्मण संनादं वने मदविवर्धनम् ।
पुष्पिताग्रेषु वृक्षेषु द्विजानामवकूजताम् ॥ ५७ ॥
शक्यो धारयितुं कामो भवेदभ्यागतो मया ।
यदि भूयो वसन्तो मां न हन्यात् पुष्पितद्रुमः ॥ ६९ ॥
प्राप्य दुःखं वने श्यामा मां मन्मथविकार्शितम् ।
नष्टदुःखेव हृष्टेव साध्वी साध्वभ्यभाषत ॥ ११२ ॥

वा० रा० किष्किंधा०

इस वनमें, नाचते हुए मयूर देखकर, प्रफुल्लित वृक्षोंको देखकर, पक्षियोंके जोडे देखकर, बांग देते हुए मुर्गोंको देखकर, वृक्षोंपर चढी हुई लतायें देखकर, बसन्तकी शोभा देखकर रामको सीताकी याद आ जाती थी और इस कारण रामका शोक बढ जाता था । यह स्वाभाविक भी है । बलवान्, सामर्थ्यशाली, पराक्रमी, युद्धमें विजयी, ज्ञानी, शूर इस प्रकारका राम था । किसी भी श्रेष्ठ गुणकी कमी उसमें नहीं थी । ऐसे रामकी प्रिय पत्नीका दुष्टोंद्वारा अपहरण हुआ । कौन ले गया, इसका पता नहीं लगता था, कहाँ ले गया यह पता न था और उसकी क्या अवस्था है, इसका भी किसीको ज्ञान न था । ऐसी अवस्थामें तरुण पतिके अन्तःकरणमें जो वेदनायें हो सकती हैं वे वेदनायें रामको हो रही थीं और इनके कारण वह अत्यन्त व्याकुल था । यहाँ ' काम ' था, किन्तु यह वह काम न था । प्रिय पत्नीका वियोग तो इसमें है ही, किन्तु उसके साथ ही शत्रुके घरमें अपनी प्राणसे भी अधिक प्रिय पत्नीके होनेवाले कष्टोंका स्मरण करके जो क्लेश होते हैं, वे भी रामको यहाँ त्रस्त कर रहे हैं ।

जिनकी स्त्रियाँ, बहनें, मातायें और पुत्रियाँ अपहृत हुई होंगी उनको भी ऐसे ही क्लेश होते होंगे । गत २-४ वर्षोंमें हमारी हजारों मा, बहिनें और पुत्रियाँ अपहृत हुई हैं और इनके भी कष्ट ऐसे ही हैं । यहाँ रामके शब्द आजके अपहृत स्त्रियोंके सम्बन्धियोंके शब्दोंसे मिलते जुलते हैं । अपहृत स्त्रियोंके सम्बन्धियोंके दुःख हिन्दुओंपर ही क्यों आ पडते हैं, इसका विचार हमें यहाँ करना चाहिये । हिन्दुओंने किसीकी भी स्त्रियाँ अपने घरोंमें नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ती हैं। यही नहीं, अपितु हिन्दु गृहव्यवस्था और जातिव्यवस्था ऐसी कि उस जातिव्यवस्थाके कारण दूसरी जातिकी स्त्री हिन्दुओंके घरोंमें रहना ही सम्भव नहीं है।

इसीलिये हिन्दुघरमें आजतक अपहृत स्त्री नहीं आई है, ऐसा कहा जा सकता है। किन्तु हिन्दु स्त्रियोंका अपहरणमात्र राक्षस करते आये हैं। रामावतारमें भी रावणने अनेक आर्य स्त्रियोंका अपहरण किया था तथा कृष्णावतारमें भी अनेक स्त्रियोंका सामुदायिक अपहरण हुआ था। इसके बाद यावनी आक्रमणके युगमें अनेक स्त्रियोंका अपहरण हुआ है। ऐसा क्यों होता है इसका विचार अब होना चाहिये।

लक्ष्मणकी अक्षम्य भूल

सीताका अपहरण न हुआ होता यदि लक्ष्मणने आज्ञाभङ्ग न किया होता। रामने सीताका संरक्षण करनेका काम करनेके लिये लक्ष्मणको वहीं रहनेका आदेश दिया था। यह सैनिक आज्ञा थी। यदि उसने उसका पालन किया होता तो सीताका अपहरण हुआ ही न होता। यह सत्य है कि मारीचने कपटसे पुकार की थी और इसके कारण सीताको भ्रम हुआ था तथा लक्ष्मणको उसने अपशब्द कहे। ये अपशब्द लक्ष्मणको सहन न हुए और वह वहाँसे चल दिया। किन्तु रामलक्ष्मण वनमें थे, घरमें नहीं थे। अतः नागरिक नियम यहाँ लागू नहीं पडते।

जंगलका निवास था, चारों ओर राक्षसोंका भय था, इस भयका ज्ञान लक्ष्मणको था। रामने इस भयका उल्लेख किया था और कहा था कि यहीं रहकर सीताकी रक्षा करना। राक्षस लोग ऋषियोंका संहार कर रहे हैं, यह लक्ष्मण देख रहा था। मैं यदि यहाँसे चला जाऊंगा तो सीताकी रक्षा होनी सम्भव नहीं है, यह लक्ष्मणको मालूम था। इस प्रकार यह परिस्थिति युद्धजन्य परिस्थितिके सदृश ही थी। ऐसे अवसरपर सीताने अविचारसे यद्यपि अपशब्दोंका प्रयोग किया, जो न कहना चाहिये था वह कहा तथापि केवल इन कारणोंको लेकर अपने स्थानसे हट जाना सैनिक आज्ञाके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उल्लङ्घनके सदृश अपराध था। लक्ष्मणने रामकी आज्ञाका पालन नहीं किया, इसलिये सीताका अपहरण हुआ। यह सत्य है। सीताके अपशब्दोंसे जो व्रण लक्ष्मणके अन्तःकरणमें हुए उन्हें सहन करके भी उसे वहाँ रहना चाहिये था।

स्त्रियोंका अपहरण पुरुषोंकी निर्बलताके कारण हुआ करता है। यह दोष कितना भयानक है, इसका अनुभव आज भी हमें करना चाहिये। श्री-राम और श्रीकृष्णके समयसे आर्यस्त्रियोंका अपहरण होता आया है। राक्षस, असुर, दानव इत्यादि भारतवर्षके निवासी नहीं थे। वे परदेशी थे। वे यहाँ आवें, यहाँ सुखपूर्वक निर्भय होकर रहें और यहाँकी स्त्रियोंका अप-हरण करें, किन्तु इतना सब होनेपर भी हम यह भी न सोचें कि आखिर यह सब क्यों और क्या हो रहा है? यह कितने आश्चर्यकी बात है!! स्त्रीका अपहरण होते ही हम उसे समाजच्युत मान लेते हैं और इससे भी अधिक आश्चर्य और दुःखकी बात यह है कि हम उस स्त्रीको सदाके लिये असुरोंको अर्पण कर देते हैं। यह स्थिति अत्यन्त प्राचीन कालसे इस देशमें चलती आरही है। इस ओर हमें ध्यान देना चाहिये।

श्रीभगवान् राम और कृष्णने अपहरण करनेवालोंकी जडमूल उखाड़-कर फेंक दी, यह अच्छा ही हुआ; किन्तु उनकी यह शिक्षा उन्हें देव मानकर उनकी पूजा करनेवालोंने आत्मसात् नहीं की, यही दुःखकी बात है।

हनुमान्‌की विद्वत्ता

सुग्रीवका मन्त्री हनुमान् रामलक्ष्मणके पास आया और उनसे बहुत देर तक चर्चा करता रहा। इनकी बातचीतका श्रीरामचन्द्रपर कितना अच्छा प्रभाव पड़ा यह देखिये।

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ॥ २६ ॥
नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः ।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम् ॥ २८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नूनं व्याकरणं कृत्स्नं अनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहुव्याहरतानेन न किंचिदपभाषितम् ॥ २९ ॥
न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा ।
अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित् ॥ ३० ॥
अविस्तरं असंदिग्धं अविलम्बितं अव्यथम् ।
उरस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमस्वरम् ॥ ३१ ॥
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम् ।
अनया चित्रया वाचां त्रिस्थानव्यंजनस्थया ॥ ३२ ॥
कस्य नाराध्यते चित्तं उद्यतासेररेरपि ॥ ३३ ॥
एवंविधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु ।
सिध्यन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतयोऽनघ ॥ ३४ ॥

किं० स० ३

'हे लक्ष्मण ! यह वानरराज सुग्रीवका मन्त्री मेरे पास आया है। ...सने ऋग्वेदका अध्ययन नहीं किया है, जो यजुर्वेद धारण नहीं करता, ...सामवेद नहीं जानता वह इस प्रकारका भाषण नहीं कर सकता। ...ने तो सम्पूर्ण व्याकरणका अध्ययन किया है। इतनी देरतक भाषण ...ता रहनेपर भी एक भी अशुद्धि इसके भाषणमें नहीं हुई। इसके मुख, ...ाट, भवें आदि अवयवोंमें कहीं भी दोष नहीं है। इसका भाषण ...ीं भी असङ्गत नहीं है, संदिग्ध नहीं है, अस्खलित प्रवाहसे बोलनेपर ...ी श्रोताको इससे कहीं उबकाहट नहीं आती। यह मध्यम स्वरसे बोल ...ा है। व्यर्थका जोरशोर नहीं है और नही स्वर इतना धीमा ...र अस्पष्ट ही है कि किसीको सुनाई भी न दे। इस प्रकारका यह ...किसका चित्त आकर्षित नहीं कर लेगा ? तलवार खींचकर आक्रमण ...नेकी इच्छावाला शत्रु भी इसका भाषण सुनकर ही स्तब्ध हो जावेगा !! ...ा योग्य दूत जिस राजाके पास होगा उसके कार्य निःशंसय सफल होंगे' ...ो हो तो ऐसा हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्रीरामचन्द्रके मनपर हनुमानके बोलनेका यह परिणाम हुआ। इससे यह सिद्ध होता है कि हनुमान् बहुत बडे विद्वान् थे। वानरराज्यके मन्त्रियोंकी विद्वत्ताका स्तर कितना ऊंचा था, यह इस बातसे सिद्ध होता है।

तत्कालीन सभ्य लोग मध्यम स्वरमें बोलते थे। व्यर्थका हल्ला गुल्ला नहीं मचाते थे। राज्यशासनके अधिकारी एवं राजदूतपदके अधिकारी वानरराज्यमें भी कितने विद्वान् और योग्य नियुक्त किये जाते थे, यह बात उपर्युक्त विवरणसे स्पष्ट दिखाई देती है।

रामकी दीनता

सुग्रीवके मन्त्री हनुमान्ने रामके पास आकर उससे संभाषण किया और सुग्रीवका परिचय करा दिया। उस समय लक्ष्मणने उससे कहा कि यह राम वास्तवमें राजा होकर भी सुग्रीवको मित्र बनानेकी इच्छासे उसकी शरणमें आना चाहता है-

अहं चैव च रामश्च सुग्रीवं शरणं गतौ ॥ १७॥
एष दत्त्वा च वित्तानि प्राप्य चानुत्तमं यशः।
लोकनाथः पुरा भूत्वा सुग्रीवं नाथमिच्छति ॥ १८॥
सीता यस्य स्नुषा चासीच्छरण्यो भक्तवत्सलः।
तस्य पुत्रः शरण्यस्य सुग्रीवं शरणं गतः ॥ १९॥
सर्वलोकस्य धर्मात्मा शरण्यः शरणं पुरा।
गुरुर्मे राघवः सोऽयं सुग्रीवं शरणं गतः ॥ २०॥
यस्य प्रसादे सततं प्रसीदेयुरिमाः प्रजाः।
स रामो वानरेन्द्रस्य प्रसादमभिकांक्षते॥ २१॥
सुग्रीवं वानरेन्द्रं तु रामः शरणमागतः॥ २३॥
शोकाभिभूते रामे तु शोकार्ते शरणं गते।
कर्तुमर्हति सुग्रीवः प्रसादं सह यूथपैः ॥ २४॥ किं० स० ४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मैं और लक्ष्मण (हम दोनों ही) सुग्रीवकी शरणमें आये हैं। रामने ब्राह्मणोंको अगणित द्रव्यका दान दिया है और इस कारण उसकी कीर्ति भी हुई है। इसी प्रकार यह राजा भी बन ही गया था; दैवगति कुछ ऐसी विचित्र हुई है कि उसी रामको आज सुग्रीवको नाथ बननेके लिये प्रार्थना करनी पड रही है ! दशरथ जैसे सम्राट्‌की (व)धु और उसका पुत्र युवराज राम आज सुग्रीवकी शरणमें जारहे हैं। राम मेरा ज्येष्ठ बन्धु और सबके लिये शरण जानेयोग्य होनेपर आज (ग)ति विपरीत होनेके कारण सुग्रीवकी शरणमें आरहा है। जिसकी (से) सारी प्रजा आनन्दित हुआ करती थी वह राम आज सुग्रीवकी (कृपा)की अभिलाषा करता है। शोकग्रस्त राम यदि वानरराज सुग्रीवकी (शरण) आया है तो उस दीन रामपर अपनी सम्पूर्ण सेनाके साथ सुग्रीवको (कृपा) करनी ही चाहिये।'

(दै)वगति विरुद्ध होनेके कारण प्रतापी वीरोंको भी यह इस प्रकारकी (दुर्)गति स्वीकार करनी पडती है। ऐसे अवसरपर राम और लक्ष्मण (जैसे) प्रतापी वीरोंके अन्तःकरणमें कितनी असह्य वेदनायें हो रही होंगी (इस)का स्पष्ट प्रतिबिम्ब लक्ष्मणके उपर्युक्त एक एक शब्दमें दिखाई पड रहा (है)। रामकी पत्नीका अपहरण हुआ। उसका स्मरण होते ही रामके अन्तः—(करण)में कितनी वेदनायें होती होंगी ? एक भयानक जङ्गलमें असहाय होकर (किस) प्रकार सीताको ढूंढा जाय ? ऐसे अवसरपर सुग्रीव जैसा वनका राजा (यदि) मित्र बन जाय तो उसके तथा उसकी सेनाके सहयोगसे सीताकी खोज (की) जा सकती है और अपहरण करनेवालेका जडमूलसे विनाश भी किया (जा) सकता है। अकेले रामलक्ष्मणसे ऐसे निबिड अरण्यमें यह कार्य सम्भव (न)हीं है। यही कारण है कि एतादृश दीनता ऐसे समय इन समर्थ वीरोंको (दिखा)नी पडी।

समदुःखी वीरोंकी मैत्री

सुग्रीव वानरोंका राजा था और राम आर्योंका राजा था। इन दोनोंकी (मैत्री) समदुःखी होनेके कारण होती है। सुग्रीवकी स्त्री उसके भाई बालिने

२४ (हिं. रा.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

छीन ली है और रामकी पत्नी सीताको रावण चुराकर ले गया है। दोनों ही स्त्रीके अपहरणके कारण समदुःखी थे। सुग्रीवके पास राज्य न था और जो थोडेसे समयके लिये प्राप्त हुआ था वह भी बालिने छीन लिया था। रामको राज्याभिषेकके ही दिन वनवासके लिये जाना पडा; अतः उसका भी हाथमें आया राज्य निकल गया। इस प्रकार दोनों ही राज्यभ्रष्टताके कारण समदुःखी थे। राम भी वनमें आया हुआ था और सुग्रीव भी घरसे निकाल दिया जानेके कारण वनमें आया हुआ था। यह भी दोनोंके लिये समान दुःख था। इस प्रकारके दो समदुःखी यहाँ मिल गये थे। इसीलिये इन दोनोंकी मैत्री ऋष्यमूक पर्वतपर बडी सरलतासे और शीघ्र होजाती है।

सुग्रीवकी पत्नीका अपहरण उसके भाई बालिने किया था। राज्य... करके उसीने सुग्रीवको वनमें जानेके लिये विवश किया था। अतः राम... सहायता की और बालिको मारकर सुग्रीवका राज्य सुग्रीवको देनेका व... हनुमानको दिया। हनुमान्ने सुग्रीवको (राज्याच्च विभ्रष्टः। कि० ४।२७) राज्यसे भ्रष्ट हुआ बताकर और बालिके अन्यायका अतिरं... वर्णन करके रामको खूब उभारा; यद्यपि हनुमानकी बातें राजकीय दृष्टि... सत्य थीं। किन्तु वास्तवमें बालि ज्येष्ठबंधु होनेके कारण राज्यका अधि... कारी वही था। सुग्रीव तो किसी कारणविशेषसे थोडेसे समयके लिये गद्दीपर बैठा था। वास्तवमें सुग्रीवको गद्दीका अधिकार होना सम्भव... था और वह स्वयं भी इसी बातको मानता है। किन्तु सुग्रीवका यह चतुर मन्त्री बालिके दोषोंका अतिरंजित वर्णन रामसे कर रहा है। राजनैतिक डांवपेंचकी दृष्टिसे यह सब उचित ही था। वैसे यह सत्य नहीं है, किन्तु राजनीतिमें तो इतना ही सत्य रहता है।

अस्तु। इस प्रकार समदुःखी राम और सुग्रीवकी मित्रता होती है। रामायणके अन्तर्गत यह एक बहुत बडी घटना है। इस मैत्रीसे रामको एक बहुत बडे ससैन्य राजाकी सहायता मिलती है। एकाकी एवं असहाय राम ऐसी स्थितिमें ससहाय और अधिक सबल बना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हस्तान्दोलनसे सख्य

जिनमें मित्रता होनी होती है वे बडे प्रेमसे एक दूसरेके समीप आते हस्तान्दोलन करते हैं और फिर उन दोनोंकी प्रदीप्त अग्निके सन्मुख ...की प्रतिज्ञा होती है। तत्कालीन यही पद्धति प्रतीत होती है। ...व कहता है-

...त् त्वं इच्छसि सौहार्दं वानरेण मया सह ॥ १० ॥
...चते यदि मे सख्यं बाहुरेष प्रसारितः ॥
...ह्यतां पाणिना पाणिः मर्यादा बध्यतां ध्रुवा ॥ ११ ॥
...तत्तु वचनं श्रुत्वा सुग्रीवस्य सुभाषितम्।
...प्रहृष्टमना हस्तं पीडयामास पाणिना ॥ १२ ॥
...ः सौहृदमालम्ब्य पर्यष्वजत पीडितम्। कि० स० ५

हे राम ! मुझसे सख्य करना यदि तुम्हें अच्छा लगता हो तो यह मैं आगे बढाता हूँ। अपने हाथसे यह मेरा हाथ पकडें तथा एक ...का कार्य पूरा करनेके लिये कभी भी न बदलनेवाले निश्चयके साथ ...ा करें।' सुग्रीवका यह कथन रामने सुना और बहुत ही प्रसन्नता ...की। रामने अपने हाथसे सुग्रीवका हाथ पकडा और बादमें इस ...दके अतिरेकमें उसने सुग्रीवका गाढ आलिङ्गन भी किया।

...के पश्चात् हनुमानने भिक्षुरूप हटाकर वानररूप धारण कर लिय ...दो लकडियोंका घर्षण करके अग्नि उत्पन्न की-

...तोऽग्निं दीप्यमानं तौ चक्रतुश्च प्रदक्षिणम्।
...ग्रीवो राघवश्चैव वयस्यत्वमुपागतौ ॥ १६ ॥ कि० स० ५

...के बाद सुग्रीव और रामने प्रदीप्त अग्निकी प्रदक्षिणा की और 'हम ...आजसे मित्र हो गये' यह सोचकर उन्हें अतीव आनन्द हुआ। अग्नि-...द्वारा होनेवाला सख्य दोनोंके लिये हितावह होता है और वह कभी ...हीं टूटता। अग्नि प्रज्वलित करके इन दोनोंने इस प्रकार उसकी ...की।

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दीप्यमानं ततो वह्निं पुष्पैरभ्यर्च्य सत्कृतम् । कि० स० ५।१५

प्रदीप्त अग्निकी फूलोंसे पूजा की और उन दोनोंके बीच उस प्रदीप्त अग्निको हनुमानने रखा । यहाँ फूलोंसे अग्निकी पूजा करनेका उल्लेख है, अन्य किसी भी पदार्थका हवन करनेका उल्लेख नहीं है । जिस परिस्थितिमें राम और सुग्रीव थे उस परिस्थितिमें हवनके लिये घृत तथा हविष्यान्न मिलना सम्भव नहीं था । अतः उन्होंने अग्निमें घृतादिका होम नहीं किया ऐसा कहा जा सकता है; किन्तु पुष्पोंसे अग्निकी पूजा करनेका उल्लेख मात्र स्पष्ट है । अनेक आधुनिक टीकाकार रामायणकालमें अथवा वैदिककालमें पुष्पोंसे पूजा करनेकी प्रथा नहीं थी, ऐसा कहते हैं । उन्हें उपर्युक्त वचनोंका मनन करना चाहिये । वेदमन्त्रोंमें पुष्पोंसे पूजा करनेका उल्लेख नहीं है, यह बात सत्य है, किन्तु अश्विनौ देवता 'पुष्करस्रजौ' फूलोंकी माला धारण करते हैं । इससे यह अवश्य सिद्ध होता है कि वैदिककालमें फूलोंके धारण करनेकी प्रथा अवश्य थी । किन्तु रामायणमें फूलोंसे पूजा करनेका यह उल्लेख स्पष्ट दिखाई दे रहा है ।

अग्निसाक्षिक प्रतिज्ञाका कोई भी उल्लङ्घन नहीं करते थे, इतना महत्त्व ऐसी प्रतिज्ञाओंका हुआ करता था । अतएव राम और सुग्रीवका अग्निसाक्षिपूर्वक हुआ सख्य अन्ततक टिका है ।

त्वं वयस्योऽसि हृद्यो मे एकं दुःखं सुखं च नौ ।
सुग्रीवो राघवं वाक्यमित्युवाच प्रहृष्टवत् ॥ १८ ॥ कि० स०

'तू और मैं अब मित्र बन गये हैं तथा दोनोंके सुखःदुख एकसे हैं' इस प्रकार आनन्दसे रामको सुग्रीवने कहा । यह सख्य हो जानेके कारण सीता, बालि और रावणकी बांयी आंखें फडकने लगीं ।

सीता-कपीन्द्र-क्षणदाचराणां राजीव-हेम-ज्वलनोपमानि ।
सुग्रीव-राम-प्रणयप्रसंगे वामानि नेत्राणि समं स्फुरन्ति ॥
कि० स० ५।३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ीता, बालि और राक्षसकी राम और सुग्रीवकी मैत्री हो जानेपर बांयी फड़कने लगीं ' सीताकी आंखें कमल जैसी थीं, बालिकी सवर्णके पीली थीं और राक्षसकी अंगारेके समान लाल आंखें थीं। पुरुषोंकी आंखका फड़कना अशुभ माना जाता है, किन्तु स्त्रीकी बांयी आंखका ना शुभ माना जाता है। अतः सीताके लिये यह शुभ चिन्ह था एवं और राक्षसके लिये राम और सुग्रीवकी मैत्रि अशुभ सूचक बन

स प्रकार नेत्रोंका फड़कना रामायणकालमें भी शुभ और अशुभ समझा था, ऐसा दिखाई पड़ता है।

स अवसरपर सुग्रीव कहता है—

ार्या वियोगजं दुःखं न चिरात्त्वं विमोक्ष्यसे।
हं तानानयिष्यामि नष्टां वेदश्रुतीमिव ॥ ५ ॥ कि० स०

राम! भार्यावियोगके कारण हुआ हुआ दुःख अब तुम्हें अधिक क भोगना नहीं पड़ेगा। क्योंकि मधुकैटभ राक्षसोंद्वारा चोरकर ई गई श्रुति जिस प्रकार भगवान् विष्णु वापस ले आये उसी प्रकार द्वारा अपहृत सीताको मैं शीघ्र वापस ले आऊँगा। यह उपमा एक कथाके आधारपर दी गई है। देवताओंके पास वेदग्रन्थ थे। वे व वेदोंकी आज्ञानुसार अपने कर्तव्य किया करते थे और उन्नति प्राप्त थे। राक्षसोंने इसे जान लिया और इसीलिये वे इन वेदोंको चुराकर े। इस कारण देवोंका सामर्थ्य घट गया। यह देख विष्णुने राक्षसोंका र करके वेद वापस लौटा लिये और उनकी सहायतासे अपनी शक्ति थी। इस कथासे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि हम वेदोंकी आज्ञाके ार बल बढायेंगे तो मानवकी शक्ति बढ सकती है। यह उपमा दे रहा है। अतः यह सिद्ध होता है कि सुग्रीव श्रुतिके इस महत्त्वको ा है।

सीताकी निशानी

ीवने कहा कि मैंने एक राक्षसको किसी स्त्रीको ले जाते हुए देखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वह स्त्री 'हे राम ! हे लक्ष्मण !' इस प्रकारका आक्रोश कर रही थी और उसने हमें देखकर अपने उत्तरीयमें कुछ आभूषण लपेटकर फेंके थे। आभूषण मैंने सुरक्षित रखे हैं। मुझे लगता है कि वही स्त्री सीता होगी। इसके बाद सुग्रीवने वे आभूषणादि मंगवाये और राम तथा लक्ष्मणके सामने रख दिये। रामने इन्हें तत्काल पहचान लिया, उत्तरीय वस्त्रको भी उसने पहचान लिया। किन्तु लक्ष्मण बोला-

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुंडले ।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवंदनात् ॥ २२ ॥ कि. स.

'मैं बाजूबंद नहीं पहचानता और कानके कुण्डल भी नहीं पहचानता किन्तु मैं प्रतिदिन चरणवन्दन करनेके कारण नूपुरोंको ही पहचानता और ये निश्चयपूर्वक सीताके ही हैं।"

इससे यह सिद्ध होता है कि लक्ष्मण एक आदर्श व्रती था। सीताका मुख उसने कभी भी नहीं देखा था, यह तात्पर्य यहाँ नहीं है। अपितु उसने एकटक बडे गौरसे उसके चेहरेको कभी भी नहीं देखा था, यही अभिप्राय है। अतएव पैरोंके आभूषण वह जिस प्रकार पहचान सका तद्वत् ऊपरके आभूषण पहचाननेमें असमर्थ रहा। यह आदर्श मर्यादा प्रत्येक युवकको अपने जीवनमें ढालनेयोग्य है।

राम उन आभूषणोंको देखकर जब शोक करने लगा तो सुग्रीवने कहा

मर्यादां सत्त्वयुक्तानां धृतिं नोत्स्रष्टुमर्हसि ॥ ८ ॥
व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे ॥
विमृशंश्च स्वया बुद्ध्या धृतिमान्नावसीदति ॥ ९ ॥
बालिशस्तु नरो नित्यं वैक्लव्यं योऽनुवर्तते ।
स मज्जत्यवशः शोके भाराक्रान्तेव नौर्जले ॥ १० ॥ कि.स.

'सत्त्वगुणी लोगोंकी मर्यादा छोडना तुम्हारे लिये उचित नहीं है चाहे इष्ट वियोग होवे, संकट आवे, धनका नाश हो या प्राणोंपर ही आ बीते, स्वयंकी बुद्धिसे कार्य करनेवाला मनुष्य कभी हताश नहीं होता। किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नुष्य सदैव शोक करता रहता है वह उसी प्रकार शोकसागरमें डूब-नष्ट हो जाता है जिस प्रकार बोझेसे अधिक बोझिल हुई नौका समुद्रमें जाती है।' सुग्रीवके ऐसा कहनेपर रामने अपने आंसुओंसे आर्द्र को वस्त्रसे पोंछ लिया और धैर्यशाली पुरुषके समान वह पुनः ओजस्वी ाई देने लगा। जिसकी स्त्रीका अपहरण गुण्डोंने किया हो उसे ना दुःख होता है, यह रामकी इस अवस्थासे भली प्रकार जाना सकता है।

यहाँ वाल्मीकि 'नर--वानरौ' (कि० स० ७।२४) शब्दका प्रयोग के नर राम तथा वानर सुग्रीवकी मैत्री हो चुकी है, इस बातको सिद्ध रहे हैं। अनेक स्थानोंपर 'शाखामृग' (कि. स. २।१७) शब्दका प्रयोग हुआ है। इस बातसे कोई यह भी कह सकता है कि सुग्रीव र हनुमान बन्दर थे; किन्तु 'वेद जाननेवाला, संस्कृतमें अस्खलित ण करनेवाला' आदि वर्णन देखनेपर यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि र मनुष्य जातिका एक नाम ही था। 'वानर, शाखामृग' आदि ोंके प्रयोग मिलनेपर भी उनका भिक्षुरूप लेना, पुनः वानररूप धारण ना आदि वेषान्तर कार्य बन्दरोंद्वारा होना सम्भव नहीं है। अतः ऐसे दप्रयोगोंके आधारपर पुनः पुनः भ्रम करनेकी आवश्यकता नहीं है।

सीताका अपहरण परराष्ट्रीय राक्षस द्वारा हुआ था तथा सुग्रीवकी का अपहरण स्वयं उसके भाईने किया था। अपहरणमें यह इस ारका अन्तर था। इसके पश्चात् जब सुग्रीव राज्यारूढ हुआ तो उसने लिकी स्त्री ताराको अपने पास रखा ही था। वह तारा जो पांच सती ओंमें गिनी जाती है वही बालिके पास और बादमें सुग्रीवके पास रही, ा उल्लेख मिलता है। किन्तु सीताके लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता। : सुग्रीवके पत्नीहरणके दुःखकी अपेक्षा रामका दुःख अत्यन्त असह्य था। ोंके साथ पंचकन्याओंमें जिसकी गणना होती है वह यही तारा है अथवा ा कोई? यह शङ्का भी उपस्थित होना स्वाभाविक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बालिकी शक्ति अत्यन्त प्रचण्ड थी। राम चाहे जितना वीर हो; किन्तु फिर भी वह बालिके सामने खडा रह सकेगा अथवा नहीं इसमें सुग्रीवको सन्देह ही था। सुग्रीवने अपना यह सन्देह कि. सं. १९।७९ तथा ११।९ में व्यक्त किया है। इसके बाद जब रामने अपने बाणसे सात ताडवृक्ष भेदकर दिखला दिये तब कहीं सुग्रीवको यह विश्वास हुआ कि यह बालिको मार सकेगा और वह खूब प्रसन्न भी हुआ। इतना होनेपर सुग्रीव और रामकी बालि-वधके विषयमें मन्त्रणा हुई और वृक्षकी ओटमें छिपकर राम बैठे और सुग्रीवने बालिको आह्वान दिया। बालि आया और सुग्रीव बालिका मुष्टियुद्ध हुआ। जब यह युद्ध हो रहा था तब रामके लिये यह पहचानना कठिन हो गया था कि बालि कौनसा है और सुग्रीव कौनसा? क्योंकि दूरसे दोनों ही एक जैसे दिखाई पडते थे। यदि भूलसे सुग्रीवको बाण लग जाय तो मित्रवध हो जाएगा। इसी डरसे रामने बाण नहीं चलाया। किन्तु इस स्थितिमें सुग्रीवको अत्यन्त मार्मिक व्यथा सहन करनी पडीं। बालिके मुष्टिप्रहारको सहन करना कोई साधारण बात नहीं थी। इस अवसरपर सुग्रीवको ऐसा ही लगा कि मानो रामने उसे धोखा दिया हो। किन्तु जब रामने कहा कि तू कोई चिन्ह धारण कर जिससे कि मैं पहचान सकूं कि सुग्रीव कौनसा है। तभी बालिको ठीक निशाना साध सकूंगा। सुग्रीवको यह बात जंची और उसने पुनः बालिको आह्वान दिया।

रामलक्ष्मण वृक्षकी ओटमें छिपे रहे और सुग्रीव युद्धके स्थानपर तैयार होकर खडा रहा। सुग्रीवका आह्वान बालितक पहुँचा और बालि उस गर्जनाको सुनकर बहुत ही क्रोधित हुआ और भिन्नाता हुआ सुग्रीव की ओर चल दिया। उस समय तारा आगे बढी और बालिको आलिङ्गन देकर बोली—

> सहसा तव निष्क्रामो मम तावन्न रोचते।
> श्रूयतां अभिधास्यामि यन्निमित्तं निवार्यते ॥ ९ ॥

'हे बालि! युद्धके लिये एकदम इस प्रकार जाना मुझे ठीक प्रतीत नहीं होता। मैं क्यों इस प्रकार मना कर रही हूँ वह तू सुन। ताराने कहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तब एक बार पराजित सुग्रीव पुनः युद्धका आह्वान कर रहा है तब यह मान होता है कि कोई न कोई उसे सहयोग अवश्य दे रहा होगा यह निश्चित समझना चाहिये, क्योंकि बिना किसीके सहयोगके उसका युद्धके लिये आना सम्भव नहीं दीखता। हे बालि! मुझसे अभी अंगदने यह कहा है कि सुग्रीव और धनुर्धर रामकी मित्रता हुई है वह राम बहुत ही पराक्रमी है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि उस की सहायतासे ही वह पुनः युद्धार्थ आया होगा। अतः तू—

'यौवराज्येन सुग्रीवं तूर्णं साध्वाभिषेचय॥ २३॥
विग्रहं मा कृथा वीर भ्रात्रा राजन् यवीयसा॥
अहं हि ते क्षमं मन्ये तेन रामेण सौहृदम्॥ २४॥
सुग्रीवेण च संप्रीतिं वैरमुत्सृज्य दूरतः॥ कि० स० १५

'हे बालि राजा! तू सुग्रीवका यौवराज्याभिषेक कर दे। सुग्रीवके वैरभावका परित्याग कर। उसके साथ स्नेह कर तथा रामसे त्रता कर'। ताराका यह कहना उचित था, किन्तु वैसा होना सम्भव था। इसका कारण एक तो यह था कि बालि अपने अजस्र सामर्थ्यके बहुत घमण्डी हो गया था और वह स्त्रियोंकी सलाह माननेके लिये भी नहीं था! साथ ही दूसरी बात यह भी थी कि उसका तथा का अग्निसाक्षिक सख्य भी हुआ हुआ था। इस प्रकार रामकी का अपहरण करनेवालेका वह मित्र था, अतः रामका और बालिका सम्भव ही नहीं था। इन दो कारणोंसे ताराका उपदेश बालिके उतरना सम्भव ही नहीं था और अन्तमें जो होना था वही हुआ—

तामेवं ब्रुवतीं तारां ताराधिपनिभाननाम्।
वाली निर्भर्त्सयामास वचनं चेदमब्रवीत्॥ १॥
सोढुं न च समर्थोऽहं युद्धकामस्य संयुगे।
सुग्रीवस्य च संरम्भं हीनग्रीवस्य गर्जितम्॥ ४॥
न च कार्यो विषादस्ते राघवं प्रति मत्कृते।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च कथं पापं करिष्यति॥ ५॥ कि० स० १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'ताराकी भर्त्सना करता हुआ बालि उससे बोला– युद्धका आह्वान होनेपर मैं चुप नहीं बैठ सकता। विशेषतः सुग्रीवका आह्वान तो मैं कदापि सहन नहीं कर सकूंगा। रामके विषयमें मुझे जरा भी भय नहीं है, क्योंकि वह धर्मको जाननेवाला है और इस प्रकारका महापुरुष ऐसा कोई पाप क्योंकर भला करेगा?' बालिने इस प्रकार तारासे कहा और युद्धके लिये चल पडा और अन्तमें रामके बाणसे ही उसका अन्त हुआ।

'राम धर्मको जाननेवाला है' बालिने यह बात सुन रखी थी। किन्तु उसके ध्यानमें यह बात नहीं आई कि वह इस समय किन्हीं राजनैतिक दांवपेचोंमें फंसा हुआ है। यही कारण हुआ कि वह धोखेमें आगया। राजनीति राजनीति है और धर्म धर्म है। मैंने जो सुग्रीवसे निष्कारण विरोध किया है इस कारण वह चिढ गया है तथा रामसे मैत्री करके मेरे वधका उसने निश्चय किया है और राम भी मुझे छिपकर अपने बाणोंसे मारनेके लिये तत्पर हो गया है, इन सब बातोंकी उसे जरा भी थाह नहीं मिल सकी थी। निष्कारण अपने बन्धुजनोंसे विरोध करना उचित नहीं है, यह बोध हमें यहाँ मिलता है। सुग्रीवका दोष न होनेपर भी उसकी बातपर कोई ध्यान न देकर उसे घरसे निकाल देना बालिके लिये उचित नहीं था, इसका यह परिणाम हुआ कि रामके साथ सुग्रीवकी मित्रता होकर बालिका वध हुआ। अस्तु। इस प्रकार सुग्रीव और बालिका युद्ध जारी रहते समय रामने वृक्षकी ओटसे बाण चलाकर बालिका वध कर दिया।

बालि घायल होकर जब मौतकी घडियां गिन रहा था तब राम और लक्ष्मण उसके समीप पहुँचे। उस समय वह बोला—

पराङ्मुखवधः कृत्वा कोऽत्र प्राप्तस्त्वया गुणः॥ २०॥
न मां अन्येन संरब्धं प्रमत्तं वेद्धुमर्हसि।
इति ते बुद्धिरुत्पन्ना बभूवादर्शने तव॥ २१॥
स त्वां विनिहतात्मानं धर्मध्वजमधार्मिकम्।
जाने पापसमाचारं तृणैः कूपमिवावृतम्॥ २२॥ किं० स०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मैं जब दूसरेके साथ युद्ध करनेमें व्यस्त था तब गुप्तरूपसे मेरा वध भला तुम्हें क्या मिला ? तू इस प्रकारका अधर्म न करेगा, ऐसा तुझे से पूर्व लगता था। तू धर्मकी डींग हांकता है; किन्तु तू तो पूरा र्मिक है, पाप करनेवाला है। घाससे आच्छादित कुएँके सदृश तू तो र घातकी है।' इस प्रकार अत्यन्त कठोर शब्दोंमें वह रामसे बोला। तीपर तुझे धार्मिक कहकर जो बखाना जाता है, वह सब असत्य है। तु तेरे प्रत्यक्ष दर्शनसे तो मुझे जान पडता है कि तू सर्वथा कपटी और है' इस प्रकार बालि कहने लगा और अन्तमें उसने कहा कि—

कामसेवंविधो लोकः कालेन विनियुज्यते।
क्षेमं चेद्भवतो प्राप्तं उत्तरं साधु चिन्त्यताम् ॥५२॥ कि. स. १७

'तुझे उचित समयपर राज्य प्राप्त होनेके बाद प्रजाजन मेरे वधके यमें यदि तुझसे प्रश्न पूछे तो उन्हें क्या उत्तर दिया जाय, इस विषयमें मीसे सोचकर तैयार रह' इस प्रकार कठोर किन्तु सौम्य शब्दोंमें नेने कहा। यह कथन मर्मभेदक तो था ही किन्तु प्रजाको राजाके के विषयमें प्रश्न पूछनेका अधिकार था और राजाको उसका र भी देना होता था, इस बातको भी सिद्ध करता है। वानरराज्यमें इस प्रकारका अधिकार प्रजाको था, तो आर्यराज्यमें तो वह य होगा ही। बालिके इस कथनका उत्तर रामने किस प्रकार दिया वह देखिये—

'हे बालि! धर्म, अर्थ, काम एवं लौकिक व्यवहारका विचार किये तू व्यर्थ ही यह सब बोल रहा है। मनुने पृथ्वीके इस सम्पूर्ण को इक्ष्वाकुवंशके राजाओंके लिये प्रदान किया है। तबसे यह इसी वंशके अधिकारमें चलता आया है। इस राज्यके अन्तर्गत नगर और अरण्य हैं उनमें रहनेवाले समस्त प्राणियोंपर निग्रह अनुग्रह करनेका सम्पूर्ण अधिकार इक्ष्वाकुवंशका है। इस समय राज्यका शासन करनेवाला भरत इस पृथ्वीका पालन कर रहा है। , नियम, सत्य और पराक्रम, ये सब गुण राजा भरतमें पूर्णतः मान हैं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तस्य धर्मकृतादेशा वयं अन्ये च पार्थिवाः ।
चरामो वसुधां कृत्स्नां धर्मसन्तानमिच्छवः ॥ ९ ॥
यस्मिन्नृपतिशार्दूले भरते धर्मवत्सले ।
पालयत्यखिलां पृथ्वीं कश्चरेद्धर्मविप्रियम् ॥ १० ॥
ते वयं मार्गविभ्रष्टं स्वधर्मे परमे स्थिताः ।
भरताज्ञां पुरस्कृत्य चिन्तयामो यथाविधि ॥ ११ ॥
त्वं तु संक्लिष्टधर्मश्च कर्मणा च विगर्हितः ।
कामतन्त्रप्रधानश्च न स्थितो राजवर्त्मनि ॥ १२ ॥
तदेतत्कारणं पश्य यदर्थं त्वं मया हतः ।
भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनम् ॥ १८ ॥
अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
रुमायां वर्तसे कामात्स्नुषायां पापकर्मकृत् ॥ १९ ॥
तद्व्यतीतस्य ते धर्मात् कामवृत्तस्य वानर ।
भ्रातृभार्याभिमर्शेऽस्मिन् दण्डोऽयं प्रतिपादितः ॥ २० ॥
न च ते मर्षये पापं क्षत्रियोऽहं कुलोद्भवः ।
औरसीं भगिनीं वापि भार्यां वाप्यनुजस्य यः ॥ २१ ॥
प्रचरेत नरः कामात्तस्य दण्डो वधः स्मृतः ॥ कि० स० १८

'इस भरतराजाकी आज्ञासे हम तथा और भी दूसरे राजा इस पृथ्वीपर धर्मकी रक्षाके लिये संचार कर रहे हैं। अरे ! धर्मवत्सल, नृप-श्रेष्ठ भरतके पृथ्वीपालक होनेपर ऐसा कौन है जो धर्मनाश करनेके लिये तत्पर होगा ? राजा भरतकी आज्ञासे हम सब ' धर्मका त्याग करके आच-रण करनेवालेको उचित दण्ड देनेके लिये ही हम फिरते हैं।' तू तो निन्दित कर्म करनेवाला, कामके ही पीछे पडा हुआ धर्मका नाश कर रहा है और खुल्लमखुल्ला राजधर्मके विरुद्ध आचरण कर रहा है। तेरे वधका यही कारण है। तूने सनातन धर्मका परित्याग किया है और अपने भाईकी स्त्रीसे कामसम्बन्ध कर रहा है। छोटे भाईकी स्त्री तेरी बहूके बराबर है। बहूके साथ सम्बन्ध रखना पाप है। यही पाप तू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रहा था। अपने धर्मका तूने परित्याग किया, कामातुर होकर भाईकी स्त्रीसे सम्बन्ध रखा; अतएव हमने तुम्हें यह दण्ड दिया है। मैं कुलीन क्षत्रिय हूँ, अतः तेरे पापोंकी ओर दुर्लक्ष्य करना मेरे लिये सम्भव नहीं। कन्यासे, बहनसे अथवा भाईकी स्त्रीसे जो इस प्रकार अनुचित सम्बन्ध रखेगा उसे वधका दण्ड देना ही मैं उचित समझता हूँ' इस प्रकारका करारा जवाब रामने बालिको दिया। गुप्त स्थानपर बैठकर बाण चलानेके विषयमें रामने कहा—

न मे तत्र मनस्तापो न मन्युर्हरिपुङ्गव।
वागुराभिश्च पाशैश्च कूटैश्च विविधैर्नराः॥ ३८॥
विध्यन्ति विमुक्तांश्चापि न च दोषोऽत्र विद्यते॥ ४०॥

कि० स० १८

'तुझे छिपकर मारनेके विषयमें मुझे जरा भी पश्चात्ताप नहीं है। क्योंकि जालबांधकर कपटी उपायोंसे मृगोंको मारते ही हैं' तू भी एक प्रकारका मृग ही है। अतः इस प्रकारके तेरे वधसे मैंने कुछ भी अपराध नहीं किया है। तू दूसरेसे युद्ध कर रहा था, यह सच है किन्तु वानर तो तू बन्दरही है। अतः तेरा इस प्रकारसे वध करनेपर भी मुझे किसी प्रकारका अनौचित्य प्रतीत नहीं होता। जो कुछ मैंने किया है वह सर्वथा उचित ही किया है।

उपर्युक्त रामके वक्तव्यमें वानर जातिके विषयमें थोडासा तिरस्कारका भाव दिखाई पड रहा है। अमेरिकन गोरे आदमी काले नीग्रोको जीवित जलाते हैं, बर्छियाँ चुभाकर मार डालते हैं और दूसरी ओर समता और मानवताका ढिंढोरा भी पीटते हैं। उनकी यह मानवता केवल गोरे व्यक्तियों तक ही सीमित रहती है। काले, पीले और मिश्रवर्णके विषयमें उनके मनमें समता नहीं रहती। वानर विद्वान् और शिक्षित थे, उनमें वैवाहिक बन्धन विद्यमान थे, और किन्हीं विशेष नियमोंका वे पालन भी करते थे। यद्यपि वह आर्योंके समरूप सभ्य न थे तथापि वे पशु भी नहीं थे। 'तू वानर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है और इस प्रकारके वानरादिको जाल डालकर पकड़ते हैं, अतः छिपकर यदि तेरा वध कर दिया है तो उसमें कौनसा अनर्थ हो गया ?' यह कहकर वानर जातिके प्रति जो तिरस्कार व्यक्त किया गया है वह जातीय दृष्टिसे उचित नहीं है। रामको वानरोंके सहायकी आवश्यकता थी। उनकी सहायताके बिना सीताकी खोज होना कठिन था। अभी अभी सुग्रीवसे मित्रता हुई है। ऐसे नाजुक समयमें सुग्रीव और हनुमानके समक्ष 'तू तो शाखामृग है, दूसरेसे युद्ध करनेमें रत होनेपर छिपकर यदि तेरा वध कर दिया तो उसमें कौनसी बुरी बात हुई!' आदि कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

स्वकीयोंसे विरोध तथा परकीयोंसे स्नेह

किन्तु रामका उपर्युक्त कथन आपसी शत्रुताके कारण सम्भवतः सुग्रीवके ध्यानमें नहीं आया। मेरी जातिके विषयमें तुच्छता व्यक्त की जा रही है यह बात उसे समझमें ही नहीं आई।

यूरोपीय लोग जब यहाँ आकर बसे और जब उन्होंने राजकीय दृष्टिसे अपना सिर ऊँचा उठाना शुरू किया उस समय हिन्दु और मुसलमान लोग उनके यहाँ नौकरके रूपमें रहने लगे, उनकी सेनामें भर्ती होने लगे और अपने देशबन्धुओंके गले काटने लगे और इस प्रकार इन्होंने अपना सारा देश यूरोपीय लोगोंके हवाले कर दिया। उस समय भारतीयोंकी जो प्रवृत्ति दिखाई दी वही (स्वदेशियोंसे विरोध तथा परदेशियोंसे स्नेह) वृत्ति सुग्रीवके व्यवहारमें दिखाई दे रही है।

भले ही अपने भाईका वध होवे, अपनी जातिको क्षुद्र माना जावे, अनुचित रीतिसे भाईको मार दिया जावे; किन्तु मुझे राज्य मिल जाय बस यही एकमात्र स्वार्थपूर्ण विचार सुग्रीवके मनमें उत्पन्न हुआ दिखाई देता है।

अस्तु, दूसरी ओर बालिके चरित्रपर यदि दृष्टि डालें तो उसका भी यही हाल है कि वह अपने भाईसे मित्रता करनेके लिये तैयार नहीं है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

की प्रियतमा पत्नीकी कही हुई और सुझायी हुई बातको भी वह मान्य कर देता है और सुग्रीवको यौवराज्यपर अधिष्ठित नहीं करता तथा उसके साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करनेके लिये भी वह तैयार नहीं भाईसे शत्रुता और परदेशी, विजातीय रावणसे स्थायी सख्य !!! भारतीयोंकी सी ही मनोवृत्ति वानरजातिमें यहाँ स्पष्ट दिखाई पडती है।

भारतमें रजवाडोंके यहाँ नौकरी करनेवाले यूरोपीयन (उस समय) भारतीय और यूरोपियनोंमें युद्ध होनेपर यूरोपियनोंके विरुद्ध युद्ध करनेके इन्कार कर दिया करते थे। किन्तु भारतीयोंमें वैसी बात नहीं थी। अपने भाइयोंके विरुद्ध भी लडनेके लिये तैयार हो जाते थे, क्योंकि की मान्यता थी कि 'जिसका अन्न खाया जाय उसकी नौकरी बजानी चाहिये।' यूरोपीयन यूरोपमें ही जब आपसमें लडते हैं तो वे इतनी क्रूरतासे कभी नहीं लडते। उनमें पारस्परिक स्पर्धा थी; किन्तु उसके कारण उन्हीका संहार होता हो, ऐसी बात नहीं थी। किन्तु भारतीयोंकी तलवारोंसे भारतीय ही काटे जाते थे। यह जातीयभावनाके अभावका ही परिणाम है। भारतीयोंमें केवल यही भाव जाग्रत था कि हम व्यक्तिशः जीवित रहें। राष्ट्र और जाति जीवित रहे, यह भाव नहीं था। यही स्थिति वानरोंकी भी दिखाई दे रही है। परायोंकी सहायतासे अपनोंका विनाश हुआ तब भी चल सकता है! वानरजाति शूर थी, साहसी बलवान् थी, और युद्धकलामें प्रवीण थी। किन्तु भाइयोंसे वैर और परायोंसे मैत्री करनेमें उन्हें कुछ भी अनुचित प्रतीत नहीं होता था। यह था राजकीय और जातीय उच्चताका स्तर। इस दृष्टिसे बालि और सुग्रीव दोनों एकसी ही भूमिकापर अवस्थित थे।

राम आदर्श पुरुष था। इसमें श्रेष्ठताकी दृष्टिसे किसी प्रकारकी कमी नहीं थी। किन्तु आर्योंके मनमें वानरोंके विषयमें जो तुच्छताका भाव था वह यहाँपर रामके मुँहसे सहजतया निकल पडा है। राम, सुग्रीव और हनुमानकी मैत्रीका महत्त्व जानता नहीं था, ऐसी बात नहीं है, किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जानते हुए भी और सुग्रीवका गौरव बढानेकी इच्छा होनेपर भी वानर जातिके विषयमें तुच्छताकी भावना सहज ही उसके मुँहसे व्यक्त हो जाती है।

राजकीय सत्य

यहाँ रामने बालिसे कहा है कि— भरत राजा है, उसने मुझे दुष्टोंको दण्ड देनेके लिये जंगलमें भेजा है और इसी प्रकार उसने अन्य राजाओं तथा अधिकारियोंको भी भेजा है। अतः मुझे तेरे जैसोंको वध-दण्ड देनेका अधिकार है। तूने अपने भाईकी स्त्रीको अपने पास रखा है तथा और भी बहुतसे अपकृत्य किये हैं। अतएव मैं भरतराजाके प्रतिनिधि रूपमें तुझे यह वध-दण्ड दे रहा हूँ। यह सबकुछ राजकीय सत्य है। वास्तवमें स्थिति तो यह है कि राम कैकेयीकी महत्त्वाकांक्षाके कारण वनवासी हुआ था तथा हद्‌पार हुआ था। भरतके मनमें यह बात थी कि दशरथकी मृत्युके पश्चात् राम अयोध्यामें आवें तथा राज्य संभाले। किन्तु रामने यह बात स्वीकार नहीं की। दशरथकी प्रत्यक्षतः यह आज्ञा रामके लिये नहीं थी कि राम वनवासको जावे। हाँ, परिस्थिति कुछ ऐसी अवश्य थी कि जिससे विवश बने दशरथकी वनवासके लिये मूक संमति मानी जा सकती है। दशरथके पश्चात् भरत राज्य सिंहासनपर नहीं बैठा है। रामका राज्य है और मैं उसका प्रतिनिधि हूँ; यह मानकर भरतने राज्य व्यवस्था संभाली है। अतः जंगली जातियोंके नियन्त्रणका कार्य न दशरथने रामको सौंपा था और न ही भरतने। भरत तो इस मनःस्थितिमें ही था कि वह रामको किसी प्रकार ऐसा आदेश दे। कैकेयीकी यह इच्छा अवश्य थी कि राम, लक्ष्मण सीता वनमें जाँय और १४ वर्षोंमें इधर भरत राज्यपर पूरा अधिकार जमा ले। यदि रामका वनमें विनाश भी हो जाता तो उससे कैकेयीको आनन्द ही हुआ होता। ऐसी स्थितिमें 'मैं भरत राजाका प्रतिनिधि हूँ और मैं वन्य जातियोंके दुराचारका दण्ड देनेके लिये यहाँ भ्रमण कर रहा हूँ' यह रामका वक्तव्य राजकीय दृष्टिसे ही शोभनीय है। राजकीय दृष्टिसे ऐसे समय क्या बोलना चाहिये और करना चाहिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बात यहाँ स्पष्ट हो जाती है। भारतीयोंको अब राजकीय दृष्टिकोणसे ...त रहना है, अतः इसी प्रकारके राजकीय सत्यका उन्हे पालन करना ...ये। अब यहाँपर बालिको छिपकर मारूं या नहीं, इस प्रकारके विचार ...ब करके बगलें झांकनेसे काम नहीं चलेगा।

...लि जैसोंको छिपकर या अन्य किसी प्रकार भी कपटद्वारा क्यों न मारना चाहिये और इस प्रकारके कार्यके लिये जरा भी पश्चात्ताप करनेकी ...श्यकता नहीं है, अपितु ऐसा कार्य करनेके बाद यही समझना चाहिये ...ने यह जो किया है वह सर्वथा उचित है। यही राजनीति है। आर्य ...क्य अपने राजनीति शास्त्रमें इसी नीतिका समर्थन करते हैं। आज अनेक प्रकारके भीरुहृदय हिन्दु है जो रामके इस कृत्यको सहन नहीं करते। ... पास अनेक ऐसे पत्र आये हैं और उसमें ये ही भाव व्यक्त किये ... रामने बालिको छिपकर मारा, यह अच्छा किया अथवा बुरा? ...ओंको राजनीतिके पाठ अभी पढने हैं। इन्हें ऐसा लगता है कि ...सम्बन्धि दांवपेंचके कार्य बिल्कुल सीधेसाधे और भोलेपनसे ही किये हैं।

...हाँ यह विचार करना चाहिये कि बालि अत्यन्त प्रबल, अत्यन्त हठी घमण्डी राजा था। उसकी फौज बहुत बडी थी तथा वानरजाति अर्ध-...न एवं जंगली होनेके कारण बडी साहसी और सहनशील थी। ...की आज्ञा होते ही बडेसे बडा दुःसाहस भी यह कर सकती थी। स्वयं ... इतना प्रबल था कि उसने रावणका भी पराभव कर दिया था। ...का पराभव करना कोई साधारण बात नहीं थी। रावणका पराभव ... उसके साथ उसने अग्निसाक्षिक सख्य किया था। स्वयं होकर कोई ...र आक्रमण न करे तथा यदि कोई दूसरा आक्रमण करे तो उसकी ...ताके लिये अवश्य पहुँचे। इस प्रकारकी यह सन्धि बालि और ...के बीच हुई थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अकेला बालि भी सरलतासे पराभूत होना कठिन था और उसके साथ यदि रावण भी रहता तो फिर इन दोनोंको तो पराभूत करना और भी कठिन रहता। यह स्थिति सरलतासे ध्यानमें आसकती है। बालि स्वभावतः हठी और घमण्डी था। यदि रामने बालिसे सहायता मांगी होती तो बालिको ऐसी क्या पडी थी जो रामको मदत देता ? बालि रामको स्पष्ट इन्कार कर सकता था और आवश्यकता पडनेपर रावणसे सहायता भी मंगा सकता था; ऐसी सुदृढ परिस्थिति बालिकी उस समय थी। राम कितना भी श्रेष्ठ हुआ तब भी इस समय वह राज्यभ्रष्ट, वनवासी, असहाय, अपहृत पत्नी था। यह थी रामकी स्थिति और बालि ठीक इसके विपरीत स्थितिमें था। वह स्वयं बलिष्ठ, हठी, घमण्डी, एक सशक्त और प्रचण्ड सेनाका अधिपति, सम्पूर्ण राष्ट्रका प्रिय, आवश्यकता पडनेपर रावण जैसोंकी सहायता प्राप्त करनेवाला था। इस प्रकार सर्वथा अनुकूल परिस्थितिवाला था बालि और दूसरी ओर था अनेक विपत्तियोंसे घिरा हुआ राम। तब बालिको क्या पडी थी जो राम जैसोंको सहयोग दे ? दूसरी बात यह भी थी कि क्या राम जैसे आपत्तिग्रस्तकी सहायता करके क्या रावणकी मित्रतासे हाथ धो लिया जाय ? ऐसा सम्भव ही न था।

सुग्रीवकी स्थिति बालिकी तुलनामें भिन्न थी। राम और सुग्रीवकी विपत्ति एक जैसी थी। दोनों ही राज्यभ्रष्ट, दोनों ही असहाय, दोनों ही अपहृत-पत्नी; अतः दोनों ही समानशील थे और इसीलिये दोनोंकी मैत्री सम्भव थी। सुग्रीवको राज्यप्राप्ति करा देनेपर उसका राज्य, खजाना और सम्पूर्ण सेना रामको प्राप्त हो सकती थी। बालिकी तो मित्रता भी सम्भव नहीं थी; किन्तु सुग्रीवकी मित्रता सुलभ थी। अतः बालिको मारकर वानर-राज्यकी सुग्रीवको प्राप्ति करा देना रामके लिये एकप्रकारसे अनिवार्य था जब कि रावणके साम्राज्यको नष्ट करना था तो उसके लिये उसके मित्र बालिका वध करके उसकी आधि शक्ति नष्ट करना आवश्यक ही था। रामने यही किया और वह सर्वथा उचित ही था। इसके अतिरिक्त दूसरा और कोई उत्तम मार्ग ही न था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बालिका वध निर्दोष है।

अब यह प्रश्न आता है कि बालिको छिपकर मारना चाहिये था अथवा नहीं? इस विषयमें यह कहा जा सकता है—भगवान् श्रीकृष्णके सामने उनकी अनुमतिपूर्वक पितामह भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि शत्रुपक्षीय वीरोंका विनाश कपटपूर्वक ही हुआ है। शत्रु प्रबल हो, सरल उपायोंसे मारा न हो तो जिस किसी उपायसे उसे मारा जा सके उसे मारना ही चाहिये। यही राजकीय सत्य है। ऐसे अवसरपर कदम पीछे हटाना उचित नहीं है। यही बात रामने बालिवधका उदाहरण उपस्थित करके सिद्ध की है।

दशरथने जो अश्वमेध यज्ञ किया था, उसमें ऋषियोंने रावण साम्राज्यके विनाशका प्रस्ताव पास किया था। उस समय वहाँपर कुछ देववीर भी उपस्थित थे। रावणी साम्राज्यका विध्वंस तथा आर्यराज्यकी स्थापनाका उपक्रम तबसे चल रहा था। नासिकमें रावणकी सेना थी और वह आर्य एवं वानरोंके बीच सन्धि नहीं होने देती थी। रामने नासिक आकर प्रथम उसी सेनाका विनाश किया। इस कारणसे रावणकी शक्ति बहुत कम हो गई। इसके पश्चात् बालिका वध किया। यह रावणका एक श्रेष्ठ मित्र था। यदि इसे न मारा जाता तो रामके पैर दक्षिणमें जमना कठिन हो जाता। क्योंकि दक्षिणभारत बालिके अधिकारमें था। उसमें आर्योंका प्रवेश होना भी कठिन था। बालिकी मृत्युसे रावणका आधा बल क्षीण होना था। राम यदि बालिके सन्मुख युद्धके लिये खडा रहता तो उसे लाखों सैनिकोंका सामना करना पडता। अकेले रामके लिये उस संगठित बडी सेनाका सामना करना लगभग असम्भवसा ही था। तथापि यदि यह भी मान लिया जाय कि रामने बालिकी सब सेना विनष्ट कर दी और बालिको भी मार दिया होता तो फिर रावणके साथ युद्ध करनेके लिये उसे कौनसी सेना मिलती? अतः अवस्था यह थी कि सेनाको सुरक्षित रखा जावे तथा बालिका कांटा सदाके लिये दूर कर दिया जाय और यह सब रामने जैसा किया उसी पद्धतिपर होना सम्भव था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रत्यक्षतः जब कि बालि राज्य कर रहा हो और ऐसी स्थितिमें उसके साथ युद्ध आरम्भ हो जाय और उसकी प्रचण्ड सेनाका सामना करना पड़े तो इसे कैसे टाला जा सकता है और वह रामकी बात सुनेगा भी किस लिये ? इन सारी आपत्तियोंको टालनेके लिये छिपकर बालिको मारनेका एकमात्र मार्ग रामके सम्मुख था और इसी मार्गका बुद्धिमत्ताके साथ रामने अवलम्बन किया। उनका यह आचरण सर्वथा निर्दोष है। राजनीतिक दृष्टिसे रामने यदि अन्य किसी भी मार्गका अवलम्बन किया होता तो वह अप्रशस्त ही सिद्ध होता।

रामने इस प्रकारसे बालिका वध करके रावणका आधेसे अधिक बल कम कर दिया; अपितु इससे तो रावणकी कमर ही टूट गई और उसके साम्राज्यकी जड़ें खोखली हो गईं। सम्पूर्ण दक्षिण दिशा सुग्रीवको राज्यमें मिल जानेके कारण आर्योंके आवागमनके लिये खुली और सुरक्षित हो गई। वानरोंकी तैयार सारी सुरक्षा सेना सम्पूर्ण युद्ध सामग्रीके साथ रामको मिल गई और अपने पक्षकी जरा भी हानि नहीं हुई। रावण दुष्ट था उसका साम्राज्य तोडना ही था। अतः उसके आसपासके हितसम्बन्धोंका विच्छेद करना भी आवश्यक था ही। इन सब बातोंको देखते हुए राजनीतिक दृष्टिसे बालिका वध सर्वथा समर्थनीय एवं उचित ही है।

बालिके वधका कारण बताते हुए रामने उसपर 'भाईकी स्त्रीसे सम्बन्ध रखने' का आरोप लगाया है जो राजनीतिक दृष्टिसे सर्वथा उपयुक्त है। यह आक्षेप जिस प्रकार और जिस भाषामें व्यक्त किया गया वह तदनुसार ही उचित था। बालिवधके औचित्यको सिद्ध करनेके निमित्त रामका जो भाषण हुआ वह राजनीतिक दृष्टिसे उत्तम भाषण था, ऐसा निःसंकोच कहा जा सकता है। किन्तु यदि वास्तवमें देखा जाय तो वही दोष सुग्रीवमें भी था। सुग्रीव जब राजा बन गया तो तारा उसीके समीप रही है। ज्येष्ठ भ्राताकी मृत्युके पश्चात् उसकी स्त्री छोटे भाईके पास रह सकती है, 'देवरः कस्मात् द्वितीयो वर उच्यते' (निरुक्त.) इसका समर्थन निरुक्तके इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नके आधारपर सम्भवतः कोई कर भी सकता है। किन्तु यह कोई दार समर्थन नहीं हुआ। तथापि सुग्रीवने इसी मार्गका अनुकरण किया; कि उसे कहनेवाला कौन था ? बालिके वधके समय सुग्रीव निर्दोष ही , ऐसा नहीं कहा जा सकता। अस्तु। ये सारी घटनायें राजनीतिक कोणसे देखनी चाहिये। क्योंकि यह राजनीतिक दृष्टिकोण आर्योंके लिये दर्श बने, इसीलिये रामने यह ऐतिहासिक उदाहरण प्रत्यक्ष उपस्थित के दिखलाया। भारतीयोंको इसपर विचार करना चाहिये और इसे ने जीवनमें ढालना चाहिये। राजनीति राजकीय उथलपुथलके लिये प्रयोगमें आती है। उसे दैनिक नागरिक व्यवहारमें न उतारना हिये।

रामके जीवनकी एकमात्र घटना

इस प्रकारसे राजनीतिका आश्रय ग्रहण करके व्यवहार करनेका अवसर के जीवनमें बालिवधका ही एक मात्र था। शेष सम्पूर्ण जीवनमें वान् रामचन्द्र अपने वचनोंपर दृढ रहनेवाले, एक पत्नीव्रती तथा दर्शमय ही रहे हैं। उनका जीवन अत्यन्त कठोर रहा है। बालिवध ऐसा महत्वपूर्ण कार्य था कि इसीपर जगदुद्धारका कार्यक्रम सफल या असफल होना निर्भर था। रामने जिस कार्यके लिये जन्मग्रहण था वह महत्कार्य था। इसके द्वारा उन्हें सज्जनोंका परित्राण तथा का निर्दारण करके धर्मकी व्यवस्था करनी थी। बालिका वध नहोता तो का बल बढ जाता। क्योंकि बालि और रावणके बीच सन्धिके समय यह हुआ था कि युद्धके अवसरपर बालि रावणको ही मदत करेगा। इधर की इतनी शक्ति नहीं थी कि ससैन्य बालिसे युद्ध कर सके। ऐसीस्थितिमें युद्धके सम्पूर्ण नियमोंका पालन करके जगदुद्धारके कार्यक्रममें बाधा करना उचित भी नहीं था। अतः ऐसे समय छिपकरही बालिका वध गया और इस प्रकार राजनीतिक दृष्टिसे रामने एक बहुत बडी विजय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्राप्त की । इस घटनासे रावणके विरुद्ध विप्लव करनेवाले ऋषियोंको तो ऐसा लगा कि अब रावणवध हो ही जाएगा और यही देवताओंने भी अनुभव किया ।

अपने जीवनमें जिसने कभी भी धर्म नियमोंका उल्लङ्घन नहीं किया उसीने इस विकट अवसरपर द्वन्द्व-युद्धके नियमोंको तोड दिया । यह दूषण वह न होकर जो उचित था वही हुआ ।

जिन राजनीतिज्ञोंपर ऐसे अवसर आवें उन्हें ऐसे समय राम जैसा ही व्यवहार करना चाहिये । क्योंकि श्रेष्ठ पुरुषोंका आचरण ही हमें धर्मका योग्य मार्ग दिखाते हैं ।

'भरत साम्राज्यका यथावत् पालन कर रहा है । उसीकी आज्ञासे हम इस वनकी रक्षा कर रहे हैं । यहाँ तूने अपने भाईकी स्त्रीसे (जिसे तुझे अपनी पुत्रवधूके समान मानना चाहिये) सम्बन्ध रखा है; अतः तू पापी है । इसी पापका यह वधरूप दण्ड हमने तुझे दिया है और वह सर्वथा उचित है । इस कृत्यके विषयमें हमें जरा भी पश्चात्ताप नहीं है ' इस प्रकार रामने बडे स्पष्ट शब्दोंमें कहा । इसे सुग्रीवने भी भलिप्रकार सुना । और—

शाखामृगो त्वयसि । कि० १८।४१

'आखिर तो तू शाखामृग ही है ' अतः तेरा वध छिपकर करें या सामनेसे करें । किसी भी प्रकारसे वध करनेपर कोई दोष नहीं है । अतः हमने जो किया है वह उचित ही किया है । और भी एक बात ध्यानमें रखो कि—

दुर्लभस्य च धर्मस्य जीवितस्य शुभस्य च ।
राजानो वानरश्रेष्ठ प्रदातारो न संशयः ॥ ४२ ॥
तान्न हिंस्यान्न चाक्रोशेन्नाक्षिपेन्नाप्रियं वदेत् ।
देवा मानुषरूपेण चरन्त्येते महीतले ॥ ४३ ॥
त्वं तु धर्ममविज्ञाय केवलं रोषमाश्रितः ।
विदूषयसि मां धर्मे पितृपैतामहे स्थितम् ॥ ४४ ॥ कि. स. १८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'राजा प्रजाके लिये दुर्लभधर्म, जीवन और अभ्युदयकी प्राप्ति करा हैं। ऐसे राजाकी हिंसा न करनी चाहिये, उसकी निन्दा नहीं करनी हिये, उसका अपमान न करना चाहिये तथा उन्हें जो कुछ भी अप्रिय हो भी किसीको नहीं करना चाहिये। क्योंकि राजालोग प्रत्यक्ष देव हैं और भूतलपर मनुष्यरूपसे ही संचार किया करते हैं। धर्मके विषयमें तो पूरा बुद्धू है और मैं तो परम्परासे चले आते धर्मका पालन करता हूँ। होनेपर तू ही उलटे मेरी निन्दा कर रहा है, यह तेरे लिये सर्वथा नुचित है।'

इस प्रकार रामने बालिको मुंहतोड उत्तर दिया। तब बालिके मनपर इसका परिणाम हुआ और जब उसने देखा कि अब परिस्थिति नहीं ल सकती और मेरी मृत्यु भी शीघ्र ही हो जाएगी तो उसने कहा—

प्रतिवक्तुं प्रकृष्टे हि नावकृष्टस्तु शक्नुयात्। कि० स० १८।४७

हे राम! तेरे जैसे श्रेष्ठ पुरुषके सामने मेरे जैसा निकृष्ट व्यक्ति भला उत्तर दे सकता है?' अतः मैंने जो कुछ तेरे सामने कहा है उसके ते तू मुझे क्षमा कर और—

न चात्मानमहं शोचे न तारां नापि बान्धवान्।
यथा पुत्रं गुणज्येष्ठमंगदं कनकांगदम्। कि० १८।५२

'मुझे अपने विषयमें बुरा नहीं लगता, मुझे तो अपनी पत्नी ताराके यमें खेद हो रहा है और प्रियपुत्र अङ्गदके विषयमें भी मुझे बडी ता हो रही है। आप मेरे इस प्रियपुत्रकी रक्षा करेंगे तो मुझे सन्तोष तथा ताराका अपमान सुग्रीव न कर सके, ऐसा प्रबन्ध करेंगे तो मुझे न्द होगा।'

ताराका शोक

बालिकी मृत्यु रामबाणसे होगई, यह समाचार पाते ही उसकी तारा वहाँ आई और मरणोन्मुख स्थितिमें पडे हुए उसे देखकर शोक ने लगी—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

' तेरे जैसे श्रेष्ठ राजा लोग भूमिपर शयन नहीं किया करते... ... सुग्रीवकी पत्नीका अपहरण करके उसे निकाल देनेका ही यह फल हुआ है। (कि० २४।१, ११) हे सुग्रीव ! अब तुझे अपनी पत्नी रुमा प्राप्त होगी और उसके साथ तू आनन्दपूर्वक राज्यका उपभोग कर।'

ताराके इस शोकोद्गारमें स्पष्टरूपसे यह उल्लेख मिलता है कि सुग्रीवकी पत्नी रुमा बालिने पास रखली थी और अब वह सुग्रीवके पास लौट जाएगी इसका उसे विश्वास था। अपहृत स्त्रियोंको इस जातिमें पुनः ले लिया जाता था, ऐसा यहाँ स्पष्ट प्रतीत हो रहा है। भाईके पास रही हुई स्त्री पुनः दूसरे भाईके पास लौट आये तो उसमें कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हो जाता; ऐसी वानरजातिकी मान्यता दिखाई पडती है। वानरोंका नैतिकस्तर उस समय इस कोटिका था। राजघरानेकी रुमा और तारा जैसी विशिष्ट स्त्रियाँ भी इस प्रकारसे दोनों भाइयोंके पास रही हुई दिखाई देती हैं। फिर निम्नस्तरके लोगोंमें क्या परिस्थिति थी, इसकी कल्पना पाठक स्वयं कर लें। तारा और रुमा विदुषी स्त्रियाँ थी, अशिक्षित न थी। उनके लिये यह इस प्रकारकी अदलाबदली सह्य थी।

सुग्रीवका शोक

बालि और सुग्रीव भाई भाई थे। बालि बडा था और सुग्रीव छोटा। राज्यका वास्तविक अधिकारी बालि था। छोटा होनेके कारण सुग्रीवको राज्याधिकार नहीं था। बालि जब कि युद्धमें व्यस्त था तब किन्हीं अघटित घटनाओंके कारण ' बालि मर गया ' ऐसा सुग्रीवको और उसके मन्त्रीमण्डलको लगा। उन्होंने बालिको मरा जानकर सुग्रीवको राज्यपर आरूढ किया। बादमें विजयी होकर जब बालि लौटा तो सुग्रीवको राजगद्दीपर बैठा देखा बहुत क्रोधित हुआ। उस समय किसीकी एक भी बात न सुनकर सुग्रीवको उसने निकाल दिया और स्वयं राज्यपर बैठ गया। जो सुग्रीवके हितैषी थे उन्हें बन्दी-गृह-वास भोगना पडा। अतः सुग्रीवने बालिके कंटकको दूर कर राज्यको हथियानेका निश्चय किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

…ीका अपहरण हुआ, हाथमें आया हुआ राज्य चला गया, स्वयंको …सन प्राप्त हुआ, ऐसी समानस्थितिको प्राप्त हुए राम और सुग्रीवकी …होगई। रामने सुग्रीवकी सहायता की और बालिका कांटा एक बाणसे …लकर दूर फेंक दिया। बालि जबतक मरा नहीं तबतक सुग्रीवको …ा लग रहा था, किन्तु बालिकी मृत्यु होते क्षण ही बन्धुप्रेमकी हूक …वके अन्तःकरणमें उठी और वह रोने लगा। इसे कहते हैं सगे सम्ब- …योंका सहजस्नेह। वास्तवमें इस समय सुग्रीवको राज्य और स्त्री …का आनन्द होना चाहिये था। किन्तु आनन्द होना तो दूर रहा, … इस बन्धु वियोगसे वह एकदम दुःखी होगया और, अपनी …निन्दा करने लगा तथा बालिके गुणोंको स्मरण करके आक्रोश करने …ा। वह कहने लगा—

"हे राम! मुझे अपना भाई मरा देखकर बहुत ही दुःख हो रहा है। …मूक पर्वतपर कैसी भी विपन्न अवस्थामें रहनेपर मुझे आनन्द ही था। …तु अब प्रत्यक्ष भाईको मरा हुआ देखकर मुझे बहुत ही असह्य दुःख हो … है...... मैं तेरा घात न करूंगा, तू यहाँसे चला जा (न त्वा …ांसामि, चरेति) ऐसा उसने मुझे कहा था। उसका यह कथन …ने बडप्पनका था...... किन्तु मैंने उसका वध करवा दिया। सारांश … कि बन्धुत्व, बडेपना और धर्मका पालन बालिने तो किया, किन्तु …वानरस्वभावही व्यक्त किया।"

भ्रातृत्वमार्यभावश्च धर्मश्चानेन रक्षितः।
मया क्रोधश्च कामश्च कपित्वं च प्रदर्शितम्॥

कि– २४।१२

'मैंने भ्रातृवधरूप इस कुलनाशके कार्यको किया है; अतः मैं इस …के योग्य नहीं है' इस प्रकार अत्यन्त पश्चात्ताप करके वह बोलने … और अन्तमें अग्निप्रवेश करके मर जानेकी अनुमति उसने रामसे …ी। सुग्रीवके उस शोकको देखकर रामकी आंखोंमें भी आंसू आगये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एक ओर सुग्रीवका शोक, दूसरी ओर ताराका आक्रोश और तीसरी ओर अङ्गदका दुःख देखकर रामको कुछ भी सूझ नहीं रहा था। ताराने तो रोते रोते रामसे कहा—'राम! तू यह जानता है कि स्त्रीविरहका दुःख कितना दारुण होता है। तूने बालिका वध करके मुझसे उसे वियुक्त कर दिया है और विरहदुःखमें डुबा दिया है। अब मेरा भी वध कर दे, जिससे मैं भी बालिसे मिल जाऊँ और उसके दुःखको दूर कर सकूं।' (कि. २४।३५-३७)

इस प्रकार जब सर्वत्र शोक व्याप्त था; तब रामने कहा-(न शूरपत्न्यः परिदेवयन्ति) वीरोंकी स्त्रियाँ शोक नहीं किया करती। हे तारा! तू वीर पत्नी है; अतः तुझे शोक नहीं करना चाहिये।

बालिकी और्ध्वदेहिक क्रिया

रामने सबकी सान्त्वना की और कहा कि जो होना था वह हो चुका, शोक करते रहनेसे वे सुधर नहीं सकतीं। अब मृतका और्ध्वदेहिक कृत्य आरम्भ कर देना चाहिये। रामके इस कथनका वहाँ एकत्रित सब व्यक्तियोंने पालन किया, क्योंकि अन्य कोई उपाय ही नहीं था। बालिको एक पालकीमें श्मशानतक ले जाया गया और वहाँ—

ततोऽग्निं विधिवद्दत्वा सोऽपसव्यं चकार ह। कि २५।५०

'अंगदने उसे अग्नि दी, अपसव्य प्रदक्षिणा की।' समस्त वानर उदक देनेके लिये नदीपर गये और वहाँ उन्होंने बालिको जल देकर तर्पण किया।

उसके पश्चात् सुग्रीवका राज्याभिषेक किया गया, अंगदका यौवराज्याभिषेक हुआ। सुग्रीवके अत्यन्त आग्रह करनेपर भी राम अपनी प्रतिज्ञा (१४ वर्ष नगरों या घरोंमें न रहकर वनोंमें ही रहूँगा) के कारण किष्किन्धा नगरीमें नहीं गये। वनमें ही उन्होंने मुकाम किया। किन्तु लक्ष्मण राज्यारोहणके अवसरपर उपस्थित रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुग्रीवका राज्याभिषेक

सुग्रीवके राज्याभिषेककी तैयारी कितना उत्तम हुई थी उसे देखिये--

रत्नैर्वस्त्रैश्च भक्ष्यैश्च तोषयित्वा द्विजर्षभान् ॥ २९ ॥
मन्त्रपूतेन हविषा हुत्वा मन्त्रविदो जनाः ॥ ३० ॥
प्रासादशिखरे रम्ये चित्रमाल्योपशोभिते ॥ ३१ ॥
प्राङ्मुखं विधिवन्मन्त्रैः स्थापयित्वा वरासने ।
नदीनदेभ्यः संहृत्य तीर्थेभ्यश्च समंततः ॥ ३२ ॥
आहृत्य च समुद्रेभ्यः सर्वेभ्यो वानरर्षभाः । कि० स० २६

'रत्न, वस्त्र और भोजनद्वारा ब्राह्मणोंको सन्तुष्ट किया। मन्त्रवेत्ता ब्राह्मणोंने मन्त्रोंद्वारा हवन किया। राजभवनमें श्रेष्ठ आसनपर सुग्रीव बैठाया गया तथा नद, नदी एवं पवित्र तीर्थोंसे लाये गये जलोंसे उसका अभिषेक किया।'

इस प्रकार राज्य प्राप्त होनेपर तथा प्रिय पत्नी रुमा मिल जानेपर सुग्रीवको अतिशय आनन्द हुआ। इधर बन्धुके समीप रहनेवाली रुमाको पत्नी और रानीके रूपमें सुग्रीव स्वीकार करता है और उधर वहीं समस्त ब्राह्मण उसके घर जाते हैं, समन्त्र राज्याभिषेक करते हैं भोजन भी करते हैं। यह भोजन ब्राह्मणोंद्वारा ही बनाया हुआ माना जाय तब भी रुमाको पुनः स्वीकार करनेकी निन्दामात्र किसीने नहीं की है।

सुग्रीव, रुमा और तारा

वालिका वध 'वह भाईकी स्त्रीके साथ सम्बन्ध रखता था' इस दोष-कारण रामने किया। किन्तु सुग्रीव भी वहीं कर रहा है। देखिये—

स्वां च पत्नीं अभिप्रेतां तारां चापि समीप्सिताम् ।
विहरन्तमहोरात्रं कृतार्थं विगतज्वरम् ॥ ४ ॥
मन्त्रिषु न्यस्तकार्यं च मंत्रिणामनवेक्षकम् ॥ ५ ॥ कि० स० २९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तारया सहितः कामी सक्तः कपिवृषस्तथा।

कि० स० ३१।२३

' सुग्रीवको अपनी प्रियपत्नी रुमा प्राप्त हुई तथा इष्ट तारा भी प्राप्त हुई। अतः निश्चिन्त होकर उन सब स्त्रियोंके साथ वह रातदिन रमण करने लगा। सम्पूर्ण राज्यकारभार मन्त्रियोंपर डाल दिया तथा उनपर निरीक्षण करनेका कार्य भी उसने छोड दिया।'

भाईकी स्त्रीसे सम्बन्ध रखना यदि बालिका पाप माना गया और इसी कारण ' उसका वध हमने (सम्राट्के प्रतिनिधि रूप होकर) किया और यह कार्य सर्वथा उचित है। हमें इसका जरा भी पश्चात्ताप नहीं है। रामका यह कथन यदि सत्य माना जाए और धर्मकी रक्षाके लिये ही उसने ऐसा किया, इस बातको स्वीकार किया जाए तो सुग्रीव रामके सामने ही बालिकी स्त्रीको अपने पास रख रहा है और राज्यव्यवस्थाकी ओर ध्यान भी नहीं दे रहा है। किन्तु यह सब प्रत्यक्ष होनेपर भी राम सब कुछ सहन कर रहा है। इसीलिये हमने पहले कहा था कि बालिके वधके लिये जो कारण उपस्थित किये गये थे वे राजकीय दृष्टिसे सत्य हैं।

सुग्रीवने ताराको स्वीकारा, ऐसा वाल्मीकि ऋषिने स्वीकार किया है तथा तारापर (तारां समीप्सितां) उसका मन पहलेसे ही था, यह भी कहा है। किन्तु बालिकी मृत्युके पश्चात् तारा निराधार होचुकी थी अथवा उसका कोई सम्भालनेवाला नहीं था इसलिये सुग्रीवने उसे स्वीकार किया यह तर्क सुग्रीवके पक्षमें रखा जा सकता है। रुमापर जब बालिने अधिकार जमाया था तब सुग्रीव जीवित था। इसलिये बालि दोषी सिद्ध होता है किन्तु सुग्रीव इसलिये दोषसे मुक्त माना जा सकता है क्योंकि बालिके जीवित न रहनेपर उसने ताराका स्वीकार किया है। वैसे तो पहले जब बालि मरा हुआ मान लिया गया था उस समय भी तारा सुग्रीवके पास थी और (यही जानकर कि बालि जीवित नहीं है) अतः यह कृत्य क्षम्य हो सकता है। वैसे तो वानरजातिमें वेदवेत्ता एवं संस्कृत भाषापर प्रभुत्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वाले विद्वान् थे, तारा स्वयं विदुषी और चतुर राजनीतिज्ञा थी मृतकसंस्कार एवं राज्यारोहण संस्कार भी वेदमन्त्रोंद्वारा ही होते किन्तु फिर भी उनकी कौटुम्बिक रीतिनीति यह इस प्रकारकी थी। बात यहाँ स्पष्ट हो जाती है।

सूज्ञ हनुमान्

मन्त्रियोंमें हनुमान् अत्यन्त बुद्धिमान् था। बालिका वध वर्षाके मध्यमें होनेके कारण सीताकी खोजवर्षामें होना सम्भव नहीं है। अतः गुफामें रामलक्ष्मण तथा अन्तःपुरमें सुग्रीव चार महिने चुपचाप बैठे और यह स्वभाविक भी था। वर्षा समाप्त होते ही मित्रकार्य आरम्भ होना चाहिये, ऐसी सूचना हनुमान्ने सुग्रीवको दी और समस्त वानर-वीरोंको अमुक अवधितक किष्किन्धामें आजाना चाहिये, ऐसी आज्ञा दूतके द्वारा सर्वत्र भिजवा दी और यह उचित ही हुआ। इस व्यवस्थाकी सूचना रामको भी देनी चाहिये थी; किन्तु वह न दी गई। इस कारण रामको बुरा लगना स्वभाविक ही था। वह लक्ष्मणसे झुंझलाकर कहता है—

अनाथो हृतराज्योऽयं रावणेन च धर्षितः।
दीनो दूरगृहः कामी मां चैव शरणं गतः॥ ६७॥
इत्येतैः कारणैः सौम्य सुग्रीवस्य दुरात्मनः।
अहं वानरराजस्य परिभूतः परंतप॥ ६८॥
स कालं परिसंख्याय सीतायाः परिमार्गणे।
कृतार्थः समयं कृत्वा दुर्मतिर्नावबुध्यते॥ ६९॥ कि० स० ३०

दुष्ट सुग्रीव ऐसा समझ रहा है, कि राम अनाथ हो गया है. उसके स्त्रीका अपहरण हो चुका है, रावणने उसका अपमान किया है, उसका घर बहुत दूर है, कामविकारसे यह पीडित है; अतः दीन होकर वह मेरे शरणमें आया है। यही जानकर वह दुष्ट सुग्रीव मेरे कार्यके प्रति उपेक्षा करता दिखाई पड रहा है। इसीलिये वचन देनेपर भी वह सीताके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शोधके कार्यमें अभीतक लगा हुआ नहीं दीखता। अतः हे लक्ष्मण तू किष्किन्धा नगरीमें जा और सुग्रीवसे कहना कि– 'मेरे बाणका चमत्कार देखनेकी इच्छा क्या तुझमें भी उत्पन्न हो गई है ?'

न स संकुचितः पन्था येन वाली हतो गतः ।
समये तिष्ठ सुग्रीव मा वालिपथमन्वगाः ॥ ८१ ॥
एक एव रणे वाली शरेण निहतो मया ।
त्वां तु सत्यादतिक्रान्तं हनिष्यामि सबांधवान् ॥ ८२ ॥
कि० स० ३०

'जिस मार्गसे बालि गया है, वह मार्ग छोटा नहीं है। तेरे जैसे हजारों लोग जा सकें, इतना विस्तृत है वह मार्ग। मेरे बाणसे अकेला बालि ही मरा है; किन्तु क्रोध आनेपर सगे सम्बन्धियोंके साथ तेरा पूरा विनाश भी हो सकता है, ऐसा समझ।'

रामका यह भाषण सुग्रीवके लिये कठोर चेतावनी था। इससे रामका आत्मविश्वास और बहादुरी झलकती है। सुग्रीव कामी बनकर अन्तःपुरमें ही रहता था और राज्यशासनकी ओर दुर्लक्ष्य किये था, यह सत्य है। किन्तु हनुमान्‌की सूचनानुसार सीताकी शोधके लिये वानरोंको एकत्रित होनेका आदेश भी वह दे चुका था। रामको यह बात मालूम न थी। अतः रामको क्रोध आना स्वाभाविक था। क्रोधित होकर रामने जब यह सन्देश लक्ष्मणद्वारा भिजवाया तो स्वभावतः क्रोधी लक्ष्मण तो और भी आगबबूला हो गया और कहने लगा कि (निहन्मि सुग्रीवं असत्यं अद्य कि० स० ३१।४) 'असत्य प्रतिज्ञा करनेवाले सुग्रीवको अभी मार डालता हूँ।' तब रामने शान्त रहनेका उपदेश देकर कहा कि 'इतना क्रोधित मत हो, जो कुछ कहना हो वह शान्तिपूर्वक ही कहना।' तब भी लक्ष्मणका क्रोध काम न हुआ। किन्तु रामकी आज्ञा मानकर वह शान्तिपर्वक वहाँसे चल दिया। उस समय उसकी उग्रता देखनेवालोंको भयभीत कर देनेवाली थी। उस अवस्थामें जाते हुए लक्ष्मणको जिसने भी देखा वह एक बारगी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गया। इतनी उग्रता उसके चेहरेपर झलक रही थी। ऐसी अव-
ं ही वह राजमहलमें प्रविष्ट हुआ। सुग्रीवके राजभवनतक पहुँचनेके
लक्ष्मणको सात चौक पार करने पडे। तब कहीं आठवे चौकमें जहाँ
व था वहाँ लक्ष्मण पहुँच सके। वहाँ स्त्रियाँ थी, अतः लक्ष्मण
स्थानपर खडा हो गया जहाँ स्त्रियाँ नहीं थी और वहींसे अपने धनुषपर
र करने लगा। धनुषकी टंकार सुनकर सुग्रीव होशमें आया और
े समीपस्थ ताराको कहने लगा कि तू ही आगे जा और लक्ष्मणके पास
कर मुस्कुराते हुए मीठे शब्दोंमें उसका क्रोध प्रथम शान्त कर। सज्जन
ोंको देखकर क्रोध नहीं करते।

ो तारा बालिके शवके साथ मरनेके लिये तैयार हो गई थी वही तारा
ानसे (मद विह्वलाक्षी) बेहोश हुई, अस्तव्यस्त हुई हुई, जिसके
इधर उधर खिसक गये हैं, ऐसी सुग्रीवकी आज्ञा पाकर बीचबचाव
े लिये लक्ष्मणके सामने जाने लगी! बालिकी मृत्युके पश्चात् इसी
ा प्राणान्तिक आक्रोश लक्ष्मणने सुना था। वही लक्ष्मण इस
सुग्रीवका हित करनेके लिये तत्पर हुई उस ताराको देखकर मनमें
सोचता होगा ?

मोहक स्त्री

ग्रीवने ताराको ही आगे जानेके लिये जो कहा उसका कारण यह
के वह (प्रियदर्शनां तारां) दिखनेमें भी अत्यन्त सुन्दर थी।
स्त्री सामने आजानेपर उसकी मोहकताके कारण मनुष्य चाहे जितना
त हो तब भी उसका क्रोध कम हो जाता है। इसीलिये सुग्रीव-
ाको आगे जानेके लिये कहा और लक्ष्मणके क्रोधको शान्त करनेके
आग्रह किया।

ग्रीव और तारा दोनों ही मद्यपानसे बिलकुल बेसुध थे। उनके लिये
खडे रहना भी कठिन था। इतना मद्यपान होनेपर उनके सम्बन्ध
प्रकारके रहे होंगे इसकी कल्पना की जा सकती है। प्रातः स्मरणीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

पंचकन्याओंमें इस ताराकी गणना की गई है, ऐसा बहुतोंको लगत है। किन्तु पंचकन्याओंमें निर्दिष्ट तारा कोई दूसरी होनी चाहिये ऐस प्रतीत होता है।

यही तारा लक्ष्मणके समीप जाकर मुस्कुराहटके साथ बोली– 'आ क्यों क्रोधित हुए हैं? आपकी आज्ञाका कौन भला उल्लङ्घन क सकता है!'

यह सुनकर लक्ष्मणने तारासे कहा– (भर्तृहिते युक्ते ते भर्ता काम वृतः लुप्तधर्मार्थ संग्रहः। कि० ३३।४३) पतिका हित करनेके लिये तत्पर हे तारादेवि! तेरा पति कामलुब्ध होकर अपने कर्तव्यका पालन नहीं कर रहा है। क्या तुझे इस बातका पता नहीं है? यहाँ तारासे बोलते हुए लक्ष्मण 'तेरा पति' इन शब्दोंका प्रयोग करता है। इससे सुग्रीवक ताराके साथ जो सम्बन्ध है वह स्पष्ट हो जाता है। अर्थात् बालिकी यह स्त्री सुग्रीवको पति मानकर रही है। यह बात स्पष्टरूपसे लक्ष्मणत पहुँच चुकी थी।

ताराने बडी चतुरतासे लक्ष्मणको प्रसन्न किया और उसे वह अन्तः पुरमें ले गई। चलते चलते उसने लक्ष्मणको सूचित किया कि सुग्रीवने मुख्य मुख्य वानरोंको बुलावा भेजा है और वह इस चिन्तामें है कि सीता का किस प्रकार शोध किया जाए।

इस प्रकार वार्तालाप करता हुआ लक्ष्मण अन्दर जा रहा है। इतनेमें रुमाको आलिङ्गित कर मदहोश हुआ हुआ सुग्रीव उसे दिखाई पडता है। सुग्रीव और लक्ष्मणकी दृष्टि मिलते ही सुग्रीवकी क्या हालत हुई होगी, इसकी कल्पना पाठक ही कर लें। बादमें जब दोनों मिले तो लक्ष्मणने सुग्रीवको सचेत करते हुए कहा कि—

न स संकुचितः पन्था येन वाली हतो गतः
समये तिष्ठ सुग्रीव मा वालिपथमन्वगाः ॥ १८ ॥

कि० स० ३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बालि जिस मार्गसे गया है वह अभी बन्द नहीं हुआ है। अतः ग्रीव! तू अपनी प्रतिज्ञाका पालन कर। बालिका अनुसरण न कर।

क्रोधित हुए लक्ष्मणको शान्त करनेके लिये इस समय ताराने बडी चतुराईसे अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट समझा जा सकता है कि राम और सुग्रीवको परस्पर सहयोगकी कितनी आवश्यकता है, सुग्रीवके अकेले रामके द्वारा रावणका पराभव होना कितना कठिन है, यह सारी स्थिति अत्यन्त युक्तिपूर्वक वर्णनकी गई; साथ ही इस समय राम और सुग्रीवकी मित्रता बढनी ही चाहिये; जिससे इष्ट कार्यकी सिद्धि शीघ्र संभव है, यह बात भी बडी सावधानीसे ताराने लक्ष्मणके सामने रखी। ताराकी यह सारी चतुराई देखने जैसी है।

इसके बाद लक्ष्मण शान्त हुआ। सुग्रीव और लक्ष्मणकी सीताकी खोजके विषयमें बातचीत हुई और थोडे ही समय बाद दोनों रामके पास गये। राम तथा सुग्रीवने बातचीत की। इस बातचीतमें सुग्रीवने बताया कि– 'सीताकी खोजमें जो वानरसेना हमें भेजनी है वह आचुकी है। अब तुम्हें अपना कार्य हुआ हुआ ही समझना चाहिये। सीता चाहे जहां हो, ये वीर उसे अवश्य ही खोज निकालेंगे और फिर उस दुष्टके नाशका कार्य हमें करना है।'

यह सुनकर रामको बहुत आनन्द हुआ। सुग्रीवने अपने साहसी वीरों-को चुनचुनकर चारों दिशाओंमें भेज दिया और इस प्रकार सीताकी खोज आरंभ होगई।

दक्षिण दिशाकी ओर हनुमान् अंगद आदि वानर गये। उनके मार्गमें कितनी सी बाधायें आईं; किन्तु उन सबको दूरकर वे दक्षिण समुद्र पर्यन्त गये। उससे पूर्व सम्पातीने लङ्काके विषयमें बहुत सी जानकारी उन्हें दी। यह जानकारी लेकर दक्षिण समुद्रको पार करनेके लिये वानरोंने योजना की। समुद्रको पार करनेके विषयमें काफी बहस होती रही और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्तमें यह निर्णय हुआ कि यह कार्य हनुमान् करें। इस प्रकार समु लांघनेके लिये हनुमान् तत्पर हुआ।

अंगदकी सुग्रीवविषयक भावना

अंगद किसी समय हनुमान्‌से कह रहा है—

स्थैर्यमात्ममनः शौचं आनृशंस्यमथार्जवम् ।
विक्रमश्चैव धैर्यं च सुग्रीवे नोपपद्यते ॥ २ ॥
भ्रातुर्ज्येष्ठस्य यो भार्यां जीवतो महिषीं प्रियाम् ।
धर्मेण मातरं यस्तु स्वीकरोति जुगुप्सितः ॥ ३ ॥
कथं स धर्मं जानीते येन भ्रात्रा महात्मना ।
युद्धायाभिनियुक्तेन बिलस्य पिहितं मुखम् ॥ ४ ॥
सत्यात्पाणिगृहीतश्च कृतकर्मा महायशाः ।
विस्मृतो राघवो येन स कस्य सुकृतं स्मरेत् ॥ ५ ॥
लक्ष्मणस्य भयेनेह नाधर्मभयभीरुणा ।
आदिष्टा मार्गितुं सीता धर्मस्तस्मिन् कथं भवेत् ॥ ६ ॥
तस्मिन्पापे कृतघ्ने तु स्मृतिभिन्ने चलात्मनि ।
आर्यः को विश्वसेज्जातु तत्कुलीनो विशेषतः ॥ ७ ॥
राज्ये पुत्रं प्रतिष्ठाप्य सगुणो विगुणोऽपि वा ।
कथं शत्रुकुलीनं मां सुग्रीवो जीवयिष्यति ॥ ८ ॥ कि० स० ५

सुग्रीवके विषयमें अंगदके मनमें कौनसे विचार घुल रहे थे यह बात उसके भाषणसे स्पष्ट होती है। अतः यहाँ उसका भाषण देखिये

" विचारोंकी स्थिरता, मनकी पवित्रता, सज्जनता, सरलता, पराक्रम एवं धैर्य आदि गुण सुग्रीवमें थे ही नहीं। ज्येष्ठ बन्धुकी पत्नी (पट्टराणी धर्मसे माताके समान होनेपर भी, जेष्ठ बन्धुके जीवित रहते हुए भी ज उसका स्वीकार करता है वह किस प्रकार धर्मकी पर्वाह कर सकता है मेरे पिता जब शत्रुओंसे युद्ध करनेमें निमग्न थे और इसे द्वारपर रक्षा लिये छोड गये थे उस समय इस दुष्टने उस गुहाका द्वार बन्द कर दि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुग्रीव प्रकार हस्तान्दोलन पूर्वक जिसके साथ मित्रता की उस रामको
ार भी जो भूल जाता है, जिसने धर्मरक्षणके लिये नहीं, अपितु
के डरसे हम वानरोंको सीताकी खोजके लिये भेजा है उस व्यक्तिमें
कृता कहाँसे भला सम्भव है ? पापी, दुरात्मा, कृतघ्न, चंचल इस
पर कौन भला विश्वास रख सकता है ? सुग्रीव सद्‌गुणी हो अथवा
ी हो शत्रुकुलोत्पन्न मुझको राज्य देकर कभी भी जीवित नहीं
ा।'

र्थात् मुझे मर जाना चाहिये, यही भाव उसके मनमें थे। ये विचार
पुत्र अङ्गदके हैं। इससे यह पता लग जाता है कि सुग्रीवके विषयमें
एवं अङ्गदके पक्षके लोगोंके क्या भाव थे। और फिर यह स्वाभाविक
ो है कि जिसने पिताका वध करवाया, पूर्वजोंके राज्यपर कब्जा कर
उसके प्रति अंगद अथवा उसके पक्षके लोगोंको अच्छा कैसे लग
ा है। सुग्रीवने अङ्गदको यौवराज्य पर अधिष्ठित कर दिया था तथापि
द उसके स्थायित्वपर विश्वास नहीं करता था। किसी न किसी प्रकार
मेरा विनाश अवश्य करेगा, ऐसा विश्वास उसके मनमें घर कर गया
वैसे व्यवहारकी दृष्टिसे ऐसे विचारोंका होना औचित्यपूर्ण ही था।

स किष्किन्धाकाण्डके मुख्य दो भाग हैं। एक तो रामकी सुग्रीवके
मित्रता होना तथा दूसरा बालिका वध करना। रावण साम्राज्यके
के लिये इन दोनों कार्योंका होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बालिकी
थे कारण रावणका आधा बल कम हो गया था और सुग्रीवकी मैत्रीसे
यों बल दूना बढ गया था। उपर्युक्त दो घटनाओंके कारण रामका
क्यं बढा और रावणका कम हुआ। राजनीतिज्ञोंको इसी प्रकार
नी बल बढाना चाहिये और शत्रुका बल कम करना चाहिये तथा ऐसे
करने चाहिये जिससें विजय निश्चितरूपसे प्राप्त हो। इस काण्डमें
है भी बहुतसी छोटी मोटी बातें हैं। पाठकोंको उस ओर भी
ा देना चाहिये और राजकीय दृष्टिसे इस इतिहासका निरीक्षण
ा चाहिये।

❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बैलकी उपमा

राम लक्ष्मणको जो बैलकी उपमा दी गई है वह इस प्रकार है—

वृषभश्रेष्ठविक्रमौ ॥ १० ॥
समदाविव गोवृषौ ॥ १४ ॥ कि० ३

हनुमान जब राम लक्ष्मणके पास आया तो वह उनसे कहता है कि तुम दोनों श्रेष्ठ बैल जैसे दिखाई दे रहे हो। आज कोई किसीको सहसा यदि इस प्रकार बोल दे तो सुननेवालेको ऐसे शब्द सहन न होंगे। वेदोंमें इन्द्र आदि देव वीरोंको 'बैल' कहकर पुकारा गया है। इस प्रकारकी उपमा आज किसीको भी नहीं रुचेगी। जिस युगमें गाय और बैलका बहुत सन्मान था उस युगकी ये उपमायें हैं। आज हममें गाय और बैलके विषयमें भक्ति कम होगई है और जब खेतोंकी जुताई ट्रैक्टरोंसे होने लगेगी तब इससे कम बैलोंके विषयमें भक्ति हो जावेगी।

सुवर्णका रंग

शरीर वर्णनमें आया हुआ 'सुवर्ण' शब्द सोनेका सूचक न होकर 'सुशोभित वर्ण' का सूचक है।

धैर्यवन्तौ सुवर्णाभौ ॥ ८ ॥ कि० स० ३

श्री रामचन्द्र श्यामवर्ण थे तथा लक्ष्मण गौरवर्ण। इन दोनोंमें कोई भी सुवर्ण जैसी आकृतिवाला नहीं था। तथापि यहाँ 'सुवर्णाभौ' ऐसा कहा गया है। अत एव इसका अर्थ 'उत्तम शरीर कान्तिवाला' ऐसा है। 'सोने जैसे रंगवाला' यह अर्थ नहीं है।

वानर वेष

वानर जातिका बन्दरों जैसा वेष था। हनुमान् जब रामलक्ष्मणसे मिलनेके लिये ऋष्यमूक पर्वतसे नीचे उतरा तब उसने तपस्वीका वेष धारण किया। देखिये—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान्मारुतात्मजः ।
भिक्षुरूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः ॥ १ ॥ कि. स. २

म लक्ष्मणके पास जानेके समय हनुमान्ने वानर वेष निकाल कर रख और भिक्षु वेषका रूप धारण कर लिया । मैं कौन हूँ, इसका पता लक्ष्मणको न लगे इसलिये हनुमानने ऐसा किया । इससे यह सिद्ध है कि यह एक प्रकारका वेष हुआ करता था । रामलक्ष्मणसे भेंट जब यह सुग्रीवके पास पुनः लौटा तो उसने भिक्षु रूप छोडकर रूप धारण कर लिया । इन सबसे यह सिद्ध होता है कि यह वेष है।

भिक्षुरूपं परित्यज्य वानरं रूपमाश्रितः ॥ ३४ ॥ कि. स. ४

भिक्षुरूप छोडकर हनुमान्ने पुनः कपिरूप धारण कर लिया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किष्किन्धा काण्ड की

सूक्तियाँ

१ नेदृशानां मतिर्मन्दा भवत्यकलुषात्मनाम्— विशुद्ध अन्तः-करणवाले पुरुषोंकी मति कभी भी मन्द नहीं होती। (८१।११६)

२ अतिस्नेहपरिष्वंगात् वर्तिरार्द्रापि दह्यते— अति स्नेह सम्बन्ध होनेपर गीली बत्ती भी जलने लगती है। (१।११७) [स्नेह तेल, प्रेम]

३ स्वास्थ्यं भद्र भजस्व, आर्य त्यज्यतां कृपणामतिः— धैर्य अवलंबन कर, हे कल्याणसंपन्न श्रेष्ठ पुरुष! ये धैर्यनाशक विचार छो दे। (१।११२)

४ उत्साहो बलवान्, आर्य, नास्त्युत्साहात्परं बलम्— आर्य! उत्साहका सामर्थ्य अधिक है। उत्साहके सदृश दूसरा बल न है। (१।१२२)

५ सोत्साहस्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्- उत्साही मनु को इस लोकमें कुछ भी दुष्प्राप्य नहीं है। (१।१२२)

५ उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु— उत्साही पु कठिनसे कठिन कार्यमें भी धैर्य नहीं छोडते (१।१२३)

७ बुद्धिविज्ञानसंपन्न इंगितैः सर्वमाचर— बुद्धि व ज्ञानसे यु होकर तू सर्व कर्तव्य करता जा। (२।१८)

८ न ह्यबुद्धिं गतो राजा सर्वभूतानि शास्ति— बुद्धिका अव-लंबन न करनेवाला राजा सर्व प्रजापर अधिकार जतानेमें समर्थ नहीं हो (२।१८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विश्वासो नात्र हि क्षमः— अपरिचित मनुष्यपर विश्वास न रखना च्छा है। (२।२१)

अरयश्च मनुष्येण विज्ञेयाश्छद्मचारिणः— कपटपूर्ण व्यवहार वाले शत्रुओंको पहचान लेना चाहिये। (२।२२)

विश्वस्तानामविश्वस्ताश्छिद्रेषु प्रहरन्त्यपि— विश्वास निश्चिन्त रहनेवालों पर ये शत्रु छिद्र देखकर प्रहार किया करते हैं। २२)

भवन्ति परहन्तारस्ते ज्ञेयाः प्रकृतैर्नरैः— संधि साधकर करनेवाले शत्रुका जनसाधारण द्वारा शोध होना चाहिये।

गुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः तस्य सिध्यन्ति र्थाः— जिसके पास सर्व गुणसंपन्न कार्यकर्ता होते हैं उनके सब कार्य होते हैं (३।६५)

व्यसने वार्थकृच्छ्रे वा भये वा जीवितान्तगे। विमृशंश्च बुद्धया धृतिमान्नावसीदति॥- कष्ट होनेपर धनकी हानि होनेपर जीवितके नाशका भय प्राप्तका होनेपर भी जो स्वतःकी बुद्धिसे विचार है वह धैर्यवान् मनुष्य नाश प्राप्त नहीं करता (८।९)

बालिशस्तु नरो नित्यं वैक्लव्यं योऽनुवर्तते। स मज्जत्यवशं भाराक्रान्तेव नौर्जले— जो मूर्ख मनुष्य सदैव दुःख करता है वह बोझ अधिक हुई नौकाके समान शोक सागरमें डूब जाता है। १०)

शोकेनाभिप्रपन्नस्य जीविते चापि संशयः— शोकमें सदैव रहनेवाला अपने जीवनके विषयमें भी शङ्का करने लगता है।

शोकं त्यज, धैर्यमाश्रय केवलं—शोक छोड एवं शुद्ध धैर्य धारण (८।१३)

निश्चला भवति प्रीतिः धैर्यं आत्मवतां— स्वावलंबी पुरुषोंकी एवं धैर्य स्थायी हुआ करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१९ रजतं वा सुवर्णं वा शुभान्याभरणानि च । अविभक्तानि साधूनामवगच्छन्ति साधवः— स्वर्ण, चांदी और आभूषणोंमें श्रेष्ठ मनुष्य परस्पर अपना पराया भाव नहीं रखता ।

२० आढ्यो वापि दरिद्रो वा दुःखितः सुखितोऽपि वा । निर्दोषश्च सदोषश्च वयस्यः परमा गतिः— मित्र संपन्न हो या दरिद्री हो सुखी हो या दुःखी हो, निर्दोष हो या सदोष हो, वही आश्रय है । (८।८)

२१ धनत्यागः सुखत्यागो देशत्यागोऽपि वानघ । वयस्यार्थे प्रवर्तन्ते स्नेहं दृष्ट्वा तथा विधम् ।— जहाँ प्रेमके दर्शन होते हैं ऐसे मित्रके लिये धन, सुख एवं देशका भी त्याग किया जाता है ।

२२ उपकारफलं मित्रं, अपकारोऽरिलक्षणम्— उपकार मित्रका और अपकार शत्रुका लक्षण है ।

२३ दुःखितः सुखितो वापि सख्युर्नित्यं गतिः— दुःखी हो अथवा सुखी, मित्र ही मित्रका आश्रय है । (८।४०)

२४ नयश्च विनयश्चोभौ निग्रहानुग्रहावपि । राजवृत्तिरसंकीर्णा न नृपाः कामवृत्तयः ॥— न्याय, विनय, शत्रुका निग्रह सज्जनोंपर अनुग्रह करना राजाका कर्तव्य है, राजाको स्वेच्छाचारी न होना चाहिये । (१७।३२)

२५ राजहा ब्रह्महा गोघ्नः चोरः प्राणिवधे रतः । नास्तिकः परिवेत्ता च सर्वे निरयगामिनः ॥ सूचकश्च कदर्यश्च मित्रघ्नो गुरुतल्पगः । लोकं पापात्मनामेते गच्छन्ते नात्र संशयः ॥— राजाका घात करनेवाला, ब्रह्मघातकी, चोर, प्राणियोंका वध करनेवाला, नास्तिक, ज्येष्ठ भाईके पूर्व विवाह करनेवाला, कृपण, मित्रघातकी, गुरुपत्नीमें रत होनेवाला, ये सब नरकमें जाते हैं । (१७।३६।३७)

२६ ज्येष्ठो भ्राता पिता वापि यश्च विद्यां प्रयच्छति । त्रयस्ते पितरो ज्ञेया धर्मे च पथि वर्तिनः— ज्येष्ठ भाई पिता एवं विद्या सिखानेवाला, ये तीनों धर्मपूर्वक रहनेवालेके लिये बाप हैं । (१८।१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२७ यवीयानात्मनः पुत्रः शिष्यश्चापि गुणोदितः। पुत्रवत्ते श्चिन्त्याः— छोटाभाई, स्वयंका पुत्र और गुणी शिष्यको पुत्रवत् ना चाहिये।

२८ औरसीं भगिनीं वापि भार्यां चाप्यनुजस्य यः। प्रचरेत कामात्तस्य दण्डो वधः स्मृतः॥— स्वयंकी कन्या, बहन तथा भाईकी पत्नीसे जो रममाण होवे उसका वध करना चाहिये। (१८।२३)

२९ राजभिर्धृतदण्डाश्च कृत्वा पापानि मानवाः। निर्मलाः मायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा॥— मनुष्यसे पाप होजानेपर द्वारा उन्हे दण्ड मिलना चाहिये, जिससे वे पुण्यवानोंके समान ही जाते हैं।

३० शासनाद्वापि मोक्षाद्वा स्तेनः पापात्प्रमुच्यते। राजा त्व-सन्पापस्य तदेवाप्नोति किल्विषम्॥— राजाके द्वारा दण्डित पर या मुक्त होजानेपर चोर या पापी पाप मुक्त हो जाता है। पापी ष्यको दण्ड न देनेवाला राजा पापी होता है(१८।३२)

३१ प्रायश्चित्तं च कुर्वन्ति तेन तच्छाम्यते रजः— जो प्रायश्चित्त हैं उनके पाप दूर हो जाते हैं। (१८।३५)

३२ प्रतिवक्तुं प्रकृष्टे हि नापकृष्टस्तु शक्नुयात्। श्रेष्ठके आगे मनुष्य उत्तर देनेमें असमर्थ रहता है। (१८।४७)

३३ दण्ड्ये यः पातयेद्दण्डं दण्ड्यो यश्चापिदण्ड्यते। कार्य-कारणसिद्धार्थावुभौ तौ नावसीदतः।— जो अपराधीको दण्ड देता और जिस अपराधीको दण्ड देता है वे दोनों ही कार्यकारण संबंधके पतित नहीं होते।

३४ नैवं विधाः शेरते हि भूमौ नृपतिसत्तमाः— श्रेष्ठ राजा पर यों नहीं सोया करते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

३५ गुणदोषकृतं जन्तुः स्वकर्मफलहेतुकम् । अव्यग्रस्तदवाप्नोति सर्वं प्रेत्य शुभाशुभम् ॥— गुण दोष उत्पन्न करनेवाले जो शुभाशुभ मनुष्य करता है वह मनुष्य उनका शुभाशुभ फल प्राप्त करता है। (२१।२)

३६ कश्च कस्यानुशोच्योऽस्ति देहेऽस्मिन् बुद्बुदोपमे।— बुदबुदेके समान इस शरीरके लिये कौन दुःख करेगा ? (२१।३)

३७ शोच्यः शोचसि कं शोच्यम् ?– स्वयं शोचनीय स्थितिमें होने पर दूसरेका किसका दुःख मनावें ? (२१।३)

३८ दीनं दीनोऽनुकम्पसे— स्वयं दीन बना हुआ दूसरे दीनपर कैसे दया कर सकेगा ? (२१।३)

३९ न चाति प्रणयः कार्यः कर्तव्योऽप्रणयश्च ते । उभयं हि महादोषं तस्मादन्तरदृग्भव ॥– अतिहर्ष भी अच्छा नहीं और अति उदासीन भी नहीं होना चाहिये । दोनों बातें अनर्थका कारण हैं । अतः मध्य मार्गका अवलम्बन करे । (२२।२३)

४० शूराय न प्रदातव्या कन्या खलु विपश्चिता—बुद्धिमान मनुष्य वीरको अपनी कन्या न दे।

४१ पतिहीना तु या नारी कामं भवतु पुत्रिणी। धनधान्य समृद्धाऽपि विधवेत्युच्यते बुधैः ॥– जिसका पति मर चुका है वह पुत्र वती एवं धनधान्यसंपन्न होनेपर भी विधवा ही कही जाती है। (२३।१२)

४२ अनन्यरूपाः पुरुषस्य दाराः— स्त्री पुरुषसे भिन्न नहीं है (२४।३८)

४३ न शूरपत्न्यः परिदेवयान्ति— वीरोंकी स्त्रियाँ रोया नहीं करती। (२२।४४)

४४ धात्रा विधानं विहितं तथैव- विधाताका विधान ही वैसा था। (२४।४४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४५ सर्वंसुखदुःखयोगं तेन कृतं विधात्रा— सारे सुखःदुखों
योग उसी विधाताने किया है ।

४६ न शोकपरितापेन श्रेयसा युज्यते मृतः— शोक संताप
से मरे हुए मनुष्यको शुभगति प्राप्त नहीं होती । (२५।२)

४७ लोकवृत्तमनुष्ठेयं— लोक व्यवहारके अनुकूल बर्तना चाहिये
२५।३)

४८ न कालादुत्तरं किंचित्परं कर्म उपासितुम्— समय निकल
नेपर कोई भी काम ठीक प्रकारसे नहीं किया जा सकता । (२५। ३)

४९ नियतिः कारणं लोके, नियतिः कर्मसाधनम् । नियतिः
भूतानां नियोगेष्विह कारणम्— संसारमें भाग्यपर समस्त कारण,
और योग अवलंबित है । काल ही सबकुछ करता है । (२५।४)

५० न कालः कालमत्येति, न कालः परिहीयते । स्वभावं
समासाद्य न किंचिद्तिवर्तते ॥— कालका अतिक्रमण कोई भी नहीं
सकता । होनेवाली बात पहले या बादमें नहीं होती ! भाग्यको कोई
नहीं सकता । (२५।६)

५१ न कालस्यास्ति बन्धुत्वं न हेतुर्न पराक्रमः । न मित्रज्ञाति
बंधः कारणं नात्मनो वशः ॥— काल पक्षपात नहीं करता । उसे
नेका कोई उपाय नहीं है । वह मित्र या जातिको नहीं जानता । उस—
किसीका अधिकार नहीं चलता । (२५।७)

५२ धर्मश्चार्थश्च कामश्च कालक्रमसमाहिताः- धर्म अर्थ एवं
म कालक्रमसे प्राप्त होते हैं । (२५।८)

५३ एषा वै नियतिः श्रेष्ठा ॥— यह कालकी गति अपरिहार्य है ।
२५।११)

५४ तदलं परितापेन— अब शोक करना बंद करो । (२५।११)

५५ समुन्मूलय शोकं त्वं व्यवसायं स्थिरीकुरु- शोक छोड और
द्योग कर (२७।३७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

५६ **उपकारेण वीरो हि प्रतीकारेण युज्यते**– उपकार करनेवाले पर वीर पुरुष अवश्य ही प्रत्युपकार किया करता है । (२८।६४)

५७ **अकृतज्ञोऽप्रतिकृतो हन्ति सत्त्ववतां मनः**— उपकार करनेवालोंपर जो प्रत्युपकार नहीं करता वह कृतघ्न सामर्थ्यवानके मनको मार देता है; अर्थात् उसकी मैत्री नहीं रहती । (२८।६४)

५८ **यो हि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चापि वर्तते**— अवसरको जाननेवाला जो मनुष्य मित्रसे अच्छा व्यवहार नहीं करता उसका राज्य, कीर्ति और प्रतापकी अभिवृद्धि होती है । (२९।११)

५९ **यस्य कोशश्च दंडश्च मित्राण्यात्मा च भूमिप । समान्येतानि सर्वाणि स राज्यं महदश्नुते ॥**– कोश, दण्ड, मित्र और आत्मबल, ये सब जिसके आधीन रहते हैं वह बडे साम्राज्यको प्राप्त करता है ।(२९।१२)

६० **यो हि कालव्यतीतेषु मित्रकार्येषु वर्तते । स कृत्वा महतोऽप्यर्थान्न मित्रार्थेन युज्यते ॥**— समय निकल जानेपर जो मित्र कार्य करने लगता है उसे कार्य करनेपर भी यश नहीं मिलता । (२९।१५)

६१ **नहितावद्भवेत्कालो व्यतीतश्चोदनादृते**– पुनः सूचना प्राप्त होने तक कार्यका समय निकल गया, ऐसा नहीं मानना चाहिये । (२९।२०)

६२ **चोदितस्य हि कार्यस्य भवेत्कालव्यतिक्रमः**— यदि पुनः सूचना करनेकी आवश्यकता पडे तो समझना चाहिये कि कामका समय निकल चुका है । (२९।१५)

६३ **न चाग्निचूडां ज्वलितामुपेत्य न दह्यते कश्चित्**— प्रज्वलित अग्निकी लपटोंमें पडकर जले बिना कौन रहेगा ? (३०।१८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

६४ अर्थिनामुपपन्नानां पूर्वं चाप्युपकारिणाम् । आशां [कृ]त्य यो हन्ति स लोके पुरुषाधमः ॥— जिसने पहले उपकार [कि]या हो वह किसी आशाको लेकर यदि आवे और उसे आश्वासन देकर कोई तदनुसार बर्ताव न करे तो ऐसे मनुष्यको अधम समझना चाहिये। [३]०।७१)

६५ शुभं वा यदि वा पापं योहि वाक्यमुदीरितं । सत्येन परि-[पा]ति स वीरः पुरुषोत्तमः ॥— मुँहसे निकली हुई बातको (चाहे अच्छी हो या बुरी) जो आदमी पूरी करके दिखला देता है वह वीर [पुरु]षोंमें उत्तम माना जाता है ।(३०।७२)

६६ कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये । तान्मृतानपि [क्र]व्यादा कृतघ्नान्नोपभुञ्जते ॥— मनोरथ पूर्ण हो जानेपर भी जो [मि]त्रके कार्यके लिये उपयोगी नहीं होते उन्हें मर जानेपर श्वापद भी नहीं [खा]ते । (३०।७३)

६७ कोपमार्येण यो हन्ति स वीरः पुरुषोत्तमः— उत्तम विवेकसे क्रोधका नाश कर देता है वही वीर पुरुषोंमें श्रेष्ठ है । (३१।६)

६८ मित्रं त्वस्थानकुपितं जनयत्येव संभ्रमम्– मित्र बिना कारण [क्रु]द्ध हो जाए तो वह भी भयका कारण बन जाता है । (३२।६)

६९ सर्वथा सुकरं मित्रं, दुष्करं प्रतिपालनम् । अनित्यत्वात्तु [चि]त्तानां प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते ॥– मित्र प्राप्त करना सरल है; [पर]न्तु मित्रता निभाना कठिन है । क्योंकि अन्तःकरण स्थिर न होनेके [का]रण तुच्छ कारणसे भी वह नष्ट हो सकती है । (३२।७)

७० पानादर्थश्च कामश्च धर्मश्च परिहीयते— मद्यपानसे धन, [का]म, तथा धर्मका नाश हो जाता है । (३३।४६)

७१ धर्मलोपो महांस्तावत्कृते ह्यप्रतिकुर्वतः— उपकार करनेवाले [का] यदि प्रत्युपकार न किया गया तो धर्मका लोप नहीं होता । (३३।४७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

७२ अर्थलोपश्च मित्रस्य नाशे गुणवतो महान्—गुणवान मित्रकी मित्रता टूट जानेसे बहुत बडी अर्थहानि होती है। (३३।४७)

७३ मित्रंह्यर्थगुणश्रेष्ठं सत्यधर्मपरायणम्— कार्य सिद्ध करनेवाला और सत्यपरायण मित्र होना चाहिये। (३३।४८)

७४ सत्वाभिजनसंपन्नः सानुक्रोशो जितेन्द्रियः। कृतज्ञः सत्यवादी च राजा लोके महीयते॥—सत्त्वस्थ, कुलीन, दयालु, जितेन्द्रिय, कृतज्ञ, सत्यवादी राजाका इस लोकमें कीर्ति बढती है।

७५ यस्तु राजा स्थितोऽधर्मे मित्राणामुपकारिणाम्। मिथ्याप्रतिज्ञां कुरुते को नृशंसतरस्ततः॥— जो राजा अधर्माचरण करता है और उपकार करनेवाले मित्रोंको झूठे वचन देकर धोखा देता है, उससे अधिक दुष्ट भला कौन होगा ? (३४।८)

७६ कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः।— कृतघ्नके लिये प्रायश्चित्त नहीं है। (३४।१२)

७७ विधिः किल नरं लोके विधानेनानुवर्तते— कर्मोंके फल दैवीघटनानुसार प्राप्त होते हैं। (५६।४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किष्किन्धा कांड की

उपमा

१ हाटकप्रतिच्छन्नान् नरान् पीतांबरानिव— सुवर्ण भूषण धारण किये हुए पीताम्बरधारी पुरुषके समान (यह वृक्ष दिखाई दे रहा है) कि० १।२१

२ विभ्रमोत्सिक्तमनसः सांगरागा नरा इव - श्रृंगारसे जिसका मन आनंदित हो चुका है तथा जिसके शरीरपर चंदनका उबटन लगा है, ऐसे पुरुषके समान यह वृक्ष दिखाई पड रहा है। (१६०)

३ निःश्वास इव सीताया वातिवायुर्मनोहरः— सीताके श्वासो-च्छ्वासके समान यह मनोहर वायु बह रहा है। (१।७२)

४ द्रुमान् इमान् लताः समनुवर्तन्ते मत्ता इव वरस्त्रियः— वृक्षोंको श्रेष्ठ मत्त हुई स्त्रियोंके समान लतायें चिपटी हुई हैं। (१।८५)

५ पुष्पैः नगसानुषु विस्तीर्णाः पीतरक्ताभाः प्रस्तराः कृताः— पुष्पोंद्वारा पर्वत पर लाल और पीले रंगकी फैली हुई तह फैले हुए बिछौनेके समान दीखती है।

६ भाराक्रान्तेव नौर्जले मज्जति- अधिक भारवाली नौकाके समान मनुष्य शोकमें डूब जाता है।

७ वर्षास्विव सुक्षेत्रे सर्वं संपद्यते— वर्षाकालमें अच्छी जमीनमें बोया बीज जिस प्रकार उत्तम रूपमें उगता है। (८।२०)

८ वाष्पवेगं तु सहसा नदीवेगमिवागतं— नदीके वेगके समान आंसुओंका वेग आपेसे बाहर होता है।

९ अमर्षः वर्धते प्रावृड्वेग इवांभसः- मेरा क्रोध बरसातके पानीके समान बढ रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१० युगान्त इव भास्करः-- युगका अन्तकारी सूर्य जिसप्र होता है । (११।२)

११ गगने ग्रहयोर्घोरं बुधाङ्गारकयोरिव— आकाशमें बुध मंगलके घोर युद्धके समान इनका युद्ध हुआ है । (१२।१७)

१२ अन्योन्यसदृशौ वीरावुभौ देवाविवाश्विनौ— आश्वि कुमारोंके समान वे दोनों वीर दिखाई पडने लगे ।(१२।१९)

१३ मालयेव बलाकानां ससंध्य इव तोयदः— संध्याकाल मेघ बगुलोंसे जिस प्रकार शोभित होता है तद्वत् वह सुग्रीव उस माल सुशोभित होने लगा । (१२।१४)

१४ पर्वतानिव जंगमान्— चलनेवाले पर्वतोंके समान (हाथी वनमें थे) (१३।११)

१५ एष मेघ इव आकाशे वृक्षषण्डः प्रकाशते- आकाशके मेघके समान यह वृक्ष समूह चमक रहा है । (१३।१४)

१६ मेघजाल प्रतिच्छन्ना वैडूर्यगिरयो यथा— मेघोंसे आच्छा वैडूर्य रत्नके पर्वतोंके समान (ये वृक्ष दिखाई दे रहे हैं) (१३।२४)

१७ विपरीत इवाकाशे सूर्यो नक्षत्रमालया— नक्षत्र माला वेष्टित सूर्य जिस प्रकार आकाशमें शोभता है (वैसे सुग्रीव इस लता सुशोभित हो रहा है) (१४।९)

१८ राजदोषपरामृष्टाः कुलस्त्रिय इवाकुलाः— राजाके दोष कारण कुलीन स्त्रियाँ शत्रुके अधिकारमें जाकर जिस प्रकार व्याकुल होती हैं (१४।२०)

क्षीण पुण्य हुए ग्रह जिस प्रकार आकाशमेंसे टूटकर गिर जाते हैं उस प्रकार पक्षी आकाशमेंसे पृथ्वीपर पडने लगे ।

समाप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection